दिदवल



प्रभास कुमार चौधरी

'अहाँक कथामे दू टा बिन्दु रहैत अछि– पिता आ पत्नी आ कथाक नायक दुनूक बीच डोलैत रहैत अछि'– 'पिता' कथाक आरंभ करैत प्रभास कुमार चौधरी जीवकान्तक एहि उक्तिकेँ उद्धृत कयने छथि। से सत्ते । आइ कथाकारक जीवन-रेखाक दुनू बिन्दु पिता आ पत्नी (दिदवल) मेटा गेल अछि आ कथाकारोक जीवन-रेखा समाप्त भऽ गेल अछि । अपन चारिम कथासंग्रह अपन पत्नीकेँ समर्पित करबाक हुनक इच्छा पूरा नहि भऽ सकलनि ।

एहिमे प्रभासक कथायात्राक प्रस्थान-बिन्दु आ यात्रान्त दुनू अछि– बीचक मोड़सभ सेहो उभरैत अछि । 1956-98 एहि चारि दशकक मिथिलाक लोकवेदक कथा कहैत ई संग्रह पन्द्रह वर्षक प्रतीक्षाक बाद पाठककेँ भेटलैक अछि ।

प्रभासक कथा-संसारमे विचरण करब एक विशिष्ट अनुभवसँ साक्षात्कार करब थिक ।

दिदवल आ प्रभास– कृति आ कृती-दुनू एकाकार भऽ गेल छथि एहिमे। दुनूक स्मृतिमे सादर समर्पित आ अपनेक कर-कमलमे सविनय अर्पित अछि.....दिदवल

दिदवल

प्रभास कुमार चौधरी

प्रकाशक
ज्योत्स्ना प्रकाशन
पिण्डारुच (दरभंगा)

प्रकाशक :
ज्योत्स्ना प्रकाशन
पिण्डारुच, जिला-दरभंगा

प्रकाशन : स्वर्णदीप (सगर राति दीप जरय)
21-22 फरवरी, 2004

मूल्य : दू सय पचास टाका

प्राप्तिस्थान :
डॉ० वन्दना चौधरी
वन्दना मेटरनिटी हॉस्पीटल
मारवाड़ी स्कूल रोड
लालबाग, दरभंगा- 846 004

मुद्रक :
प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा
दूरभाष : 248421

DIDBAL
(Maithili Shortstories)
By *Prabhas Kumar Chaudhary*

Rs. 250.00

ई संग्रह

प्रभास कुमार चौधरीक छठम पुण्यतिथिपर प्रकाशित प्रस्तुत कथासंग्रह हुनका प्रति समस्त मैथिली जगतक श्रद्धांजलि थिक । 1990 मे 'प्रभासक कथा'पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलाक बाद अनेक ठाम ओ बाजल रहथि जे 'मन्दाकिनी' नामसँ हुनक चारिम कथासंग्रह शीघ्रे आबि रहल छनि । तकर बाद ओ हृदयाघातसँ पीड़ित भऽ गेलाह । कने ठीक भेलापर दोसर पारी शुरू करबाक जोरसोरसँ घोषणा कयलनि कि हुनक प्राणप्रिया पत्नीक अवसान भऽ गेलनि, हुनक जीवन ज्योत्स्नाविहीन भऽ गेलनि । जीवनज्योत्स्ना स्मृतिज्योत्स्नामे बदलि गेलनि । दीपमे तेल पड़ऽ लागल— अमर संस्मरणात्मक कथा दिदवल आयल, पतिबरता आयल, अष्टावक्रक शेषकथा आयल, प्रवासी त्रैमासिक पत्रिका आयल, कथादिशाक कथामहाविशेषांक आयल, कवितामहाविशेषांकक घोषणा भेल, अर्थात् पूरा वेगसँ मैथिली साहित्यान्दोलनमे कूदि पड़लाह, युवालेखनक रजतजयन्ती समारोह पटनामे आयोजित कयलनि । होइनि जे की-की करी, जे काल्हि करब से आइ करी, कि एक दिन ओ मशाल मिझा गेल ! तखन भेल जे ओ वेग मिझयबासँ पूर्वक लहक छल ! प्रभासजी चल गेलाह, सम्पूर्ण सारस्वत समाजमे स्तब्धता पसरि गेल, मानू मिथिलाक धरती कुहरि उठल !

'धरती कुहरि उठल' हुनक पहिल कथा थिक, जे वैदेहीक मार्च 1956क अंकमे छपल छल । एकतालिस वर्षक हुनक लेखन-कालमे तीन कथासंग्रह, पाँच उपन्यासक अतिरिक्त किछु कविता, किछु लेख, किछु संपादकीय टिप्पणी आ एकाध रेडियोरूपक स्फुट रूपमे अबैत रहल। बहुत दिन धरि हिन्दी-लेखनमे सेहो जमल रहलाह, कहानी लिखलनि, विभारानीकृत 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी'क हिन्दी-रूपान्तर अयलनि । अन्तमे 'अष्टावक्रक शेष कथा' कहि ओ चिरविश्राममे चल गेलाह । अशेष ऊर्जासम्पन्न प्रभासक असंकलित शेष कथाकेँ हुनक जेठ सन्तान बिन्नी (डॉ० वन्दना चौधरी) जोगाकऽ रखने रहलीह ।

कथा-आन्दोलन 'सगर राति दीप जरय'क पहिल आयोजन हुनके तत्त्वावधानमे भेल छल। यावत रहलाह, लगभग सभ बैसाड़मे सक्रिय सहभागिता रहिते छलनि, एकर रजत जयन्ती आयोजन अपने सोझाँ कोलकातामे समारोहपूर्वक सम्पन्न करौलनि । तेँ, ओकर स्वर्णजयन्ती समारोह, अर्थात् पचासम आयोजन हुनके पुण्यतिथिपर दरभंगामे आहूत करबाक निर्णय स्थानीय आयोजक संस्था 'जखन-तखन' लेलक । विभूति आनन्द आ अशोक कुमार मेहताक प्रस्ताव भेलनि जे ओहि अवसरपर प्रभासजीक शेष कथाक प्रकाशन होयबाक चाही । हमरालोकनि (ओ दुनू गोटे, फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' आ राजनन्दन लालदास) वन्दनाजी लग गेलहुँ । प्रस्ताव सुनि, स्वस्ति दैत, हुनक सभ कथा लगले समर्पित कऽ देलनि आ नीक जकाँ प्रकाशित हो, ताहि लेल सन्नद्ध भऽ गेलीह । आयुष्मती वन्दनाजीक लेल पितृवन्दनाक एहिसँ नीक विधि की भऽ सकैत छलनि ?

प्रभासजीक कथा-कौशलक सम्बन्धमे किछु कहब अनावश्यक । एहि युगक श्रेष्ठ

कथाशिल्पीमे हिनक अग्रणी स्थान छनि । जतबे सहजतासँ लोक हिनक कथा-लोकमे पहुँचैत अछि, ओहि परिवारमे रमैत अछि, ओकर अंग बनि जाइत अछि, ततबे कठिनता होइछ पाठककेँ पुनः अपन लोकमे घुरबामे । घुरियो अबैत अछि तँ मनसँ ओकर झटक हँटैत नहि छैक, ओकर आलोक मद्धिम होइत नहि छैक । प्रभासजीक कथा सोचल वा सुनल नहि, घटल लगैत अछि । ई कोनो पैघ बात नहि भेल, पैघ बात भेल जे ओहिमे अहाँ अपनहुँकेँ घटल पबैत छी । प्रभासक कथा तेज बुद्धिकेँ झिकझोरैत अछि, सामान्य बुद्धिकेँ खोड़ैत अछि, मन्दो बुद्धिकेँ अपना दिस मोड़ैत अछि । अर्थात्, पाठकक सभ वर्गमे हिनक कथा समान रूपेँ सम्मान्य अछि । हिनक कथा मैथिल परिवेशक कथा थिक, मैथिल जीवनक कथा थिक, मैथिल संस्कारक कथा थिक, किन्तु मानवीय संवेदना ततेक परिष्कृत रूपमे प्रकट होइत अछि जे एकरा असीम कऽ दैत अछि आ ई आधुनिक भारतीय वाङ्मयक उच्च मूल्यवत्ताक संग धऽ लैत अछि ।

प्रभासजीक कोनो कथा अप्रकाशित नहि छलनि । नव घर उठय पुरान घर खसय (1964)मे एगारह टा, कथा-प्रभास (1988)मे अठाइस टा तथा प्रभासक कथा (1989)मे सत्ताइस टा कथा संगृहीत भऽ चुकल छलनि । एकर अतिरिक्त वन्दनाजीक सहयोगेँ बीस टा कथा भेटल । निश्चित रूपेँ नहि कहल जा सकैछ जे एकर अलाबे कथा नहि छनि, कारण जे ओ छपलो कथामे परिष्कार करैत छलाह, शीर्षक बदलैत छलाह, अन्य नामसँ सेहो छपबैत छलाह । तेँ किछु कथा जे पत्रिकामे भेटल से भिन्न शीर्षकसँ पूर्वक संग्रहमे आबि गेल छल । अपन नामसँ छपल शेष कथा तथा छद्मनाम वा अन्य नामसँ छपल कथा, जकरा ओ नोट कयने छलाह, से सभ ताकि-हेरिकऽ आइ अपनेलोकनिक समक्ष राखल गेल अछि । जाहि कोनो कारणेँ पूर्वक कथासभकेँ पूर्व-संग्रहमे समावेश नहि कयने छलाह, तकरो समटि लेल गेल अछि । तेँ एहि अन्तिम संग्रहमे हिनक आदिकथा सेहो अछि, अन्तकथा सेहो अछि । शेष कथा समीक्षक लोकनि कहैत अयलाह अछि, कहैत रहताह, मैथिली साहित्यमे प्रभासक अशेष योगदानक विशेष मूल्यांकन चलैत रहत ।

प्रभासजीक घोषित शीर्षक 'मन्दाकिनी' नामसँ ई नहि जा रहल अछि, कारण वन्दनाजी कहलनि जे पापा कथासूचीक ऊपरमे मन्दाकिनी शीर्षककेँ काटि दिदवल लिखि देने छथिन ।

मन्दाकिनी मुदा मेटायल नहि । हिनक कथाउपन्यासेतर समस्त साहित्य एही नामे आबि रहलनि अछि ।

'सगर राति दीप जरय'क पहिल दीप यैह नेसने छलाह, आइ स्वर्णदीप (स्वर्णजयन्ती दीप) हिनके नामपर नेसल गेल अछि । ई दीप साहित्यमे सदा बरिते रहत, ज्योत्स्ना प्रभासित होइते रहत पपुअल-दिदवलक....

दरभंगा
प्रभास-स्मृतिदिवस
दि. 22 फरवरी 2004 ई०

भीमनाथ झा

पापा

प्रभास कुमार चौधरी– बाबाक कथा सुनिकऽ जनमल कथाकार, पिताक पोस्टकार्ड द्वारा गामसँ जुड़ल कल्पनाशील यथार्थक तरफदारी करऽवला कथाकार, बड़का ककाक अध्ययनशीलतासँ प्रभावित लेखनक प्रति प्रतिबद्धता जगजाहिर करैत कथाकार, किछु आपबीती किछु जगबीती सुनबैत कथाकार । हिनका विषयमे किछु लिखबाक योग्यता हमरामे नहि अछि । डाक्टर छी, हाथमे आला रहैत अछि । कलम पहिले बेर उठा रहल छी पापाक अन्तिम कथासंग्रह दिदवलक प्रकाशनक सन्दर्भमे ।

मन्दाकिनी (पापाक बहुचर्चित बहुआलोचित कथा)– ई नाम पहिने रखने छलाह पापा अपन चारिम कथासंग्रहक । एकर चर्चो भरिसक हरसंभव जगहपर कयने छलाह । दीदीक (हमर माय, जनिका पापा दिदवल कहैत छलाह) गेलाक बाद पापा टुटि गेल छलाह । दिदवल कहानी लिखलाक बाद अपन चारिम कथासंग्रहक नाम बदलि देलनि । 'दिदवल' नामसँ अइ कथासंग्रहक लिस्ट, जाहिमे बीस टा कथा छल, अपन फाइलमे लगा देलनि ।

दीदीक गेलाक बाद अपन स्वास्थ्यक प्रति लापरवाही बढ़ि गेल छलनि । ओही साल दुर्गापूजामे पापाक स्वास्थ्य देखि हम बिफरि उठल रही, ''पापा, अहाँ 'एस्केपिस्ट' भऽ गेल छी। अपन उत्तरदायित्व सभसँ जान छोड़ाकऽ भागऽ चाहैत छी । दीदी चल गेल आ अहाँ आब जयबाक तैयारी कऽ रहल छी । हम आब कहियो नहि आयब दुर्गापूजामे गाम ।'' ई कहि कनैत हम गाड़ीमे बैसि दरभंगा चल आयल रही । एको बेर पाछू मुड़िकऽ नहि देखलहुँ जे पापाक आँखिमे नोर डबडबायल छल । आ सत्ते, ओ अन्तिम दुर्गापूजा छल हमर पापाक संग । हम तँ बिगड़िकऽ अपन घर चल आयल रही, पापा बिगड़िकऽ घर-द्वार सभ-किछु छोड़ि कोन दुनियाँमे चल गेलाह, कतऽ चल गेलाह, नहि बुझि सकलहुँ ।

पापाक उत्तरदायित्व दू टा कुमारि बेटी, दू टा नाबालिग बेटा । चारू काका ठाढ़ भऽकऽ दुनू बेटीक बियाह करौलनि । कतहु नहि लागल जे पापा नहि छथि । दुनू भाइ आइ नोकरी करैत छथि ।

लेकिन, एक टा काज जे हमरासभकेँ करबाक चाहैत छल, ओहिमे बहुत देरी भऽ गेल । हमसभ अपन उत्तरदायित्वक निर्वाह समयपर नहि कऽ सकलहुँ । छौ टा लायक बेटा-बेटीक रहितहुँ पापाक 'दिदवल'क प्रकाशनमे छौ साल लागि गेल । ईहो आइ नहि संभव होइत यदि आदरणीय श्री भीमनाथझा (पापाक भीम भाइ), श्री विभूति आनन्द आ श्री अशोक कुमार मेहताक दिससँ आग्रह नहि भेल रहैत । पापाक मृत्युक छठम बरखीपर 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन आ ओहि अवसरपर 'दिदवल'क प्रकाशन– सुनिकऽ मन भरि आयल । पापाक सपना अन्ततोगत्वा पूर्ण भेल– देरिएसँ सही ।

प्रभासजीक परिवार हुनक साहित्यिक परिवारक सदा ऋणी रहत ।

वन्दना चौधरी

अनुक्रम

दिदवल

धरती कुहरि उठल

'समाज-शिक्षण-सप्ताह'क शुभ अवसरपर विद्यालयमे कथा, कविता, निबन्धादि प्रतियोगिताक आयोजन होमएवला रहए । हमरो इच्छा भेल किछु लिखक । डेरा अयलहुँ । कागत-कलम लऽकऽ बइसि गेलहुँ लिखक हेतु । परञ्च कोनो कथानक नहि भेटि रहल छले । घण्टो-भरि माथ खपाओल मुदा तइओ सएह । साइकिल लऽकऽ बाजार दिश बिदा भेलहुँ । बाटमे मँगरूसँ भेट भऽ गेल ।

ओकरा हम कइएक बरखसँ जनैत छी । ओ हमर पड़ोसी रिक्सावाला अछि । जमुनिआ रंग, पिच्चल नाक, पुरखाह ठोर, जाहिमे शतशः खेलाइत वेदना-भरल मुसकी, फाटल अङ्गासँ हुलकी दइत छातीक हाड़, काफी चओड़ा ललाटपर चिन्ताक अनेक रेख, असमये केशमे जवानी आ बुढ़ापाक द्वन्द्वक किछु उज्जर-कारी चेन्ह—इएह रूपरेखा छइ ओकर । परञ्च आइ हमर चिरपरिचित मँगरूक ठोरपर हँसीक रेख नहि छल । ओ कोनो सस्त फिल्मी गीत नहि गाबि रहल छल । कारण पुछलिअइ तऽ कहलक, आइ दू दिनसँ ओकर पत्नी एवं एकमात्र अबोध कनटिरबीकेँ अन्नक एको दाना नहि भेटलइ अछि । ओकर पत्नी एवं शिशुक आकृति नाचि उठल । हम देखल जे भूखसँ आकुल नेनिआ लपटि जाइत छैक माएसँ, माए अपन स्तन लगा दइत छइक ओकर मुँहमे, परञ्च ओ अपन मुँह हँटाकऽ कानि उठैत छइकं । भरिसक मासुक ओहि सुखायल लोथड़ामे रसक एको ठोप अवशिष्ट नइ छलइ । ओकर स्तनक दूध सुखा गेलइक अछि अभाव एवं गरीबीक ज्वालासँ । माए कानि उठइत अछि अपन विवशतापर, गरीबीपर अओर आकाशमे अहुरिआ कटैछ बच्चीक करुण क्रन्दन ।

विद्यालय-भवन लग आबि विचार-धारा टूटि गेल । सोझाँ प्रांगणमे हमर संगी सभ भॉलीबौल खेला रहल छलाह । आघात खाइत बौल निराधार ऊपर-नीचाँ आबि-जा रहल छल, गुड़कि रहल छल । सहसा हमरा लागल जे आइ मानवता अहिना आघात खाइत निराधार गुड़कि रहल अछि । ओकरा अपन मुँह नुकएबाक हेतु स्थान नहि भेटि रहल छइक । सर्वत्र अभाव एवं गरीबीक सत्ता अछि ।

सुनइत छी जे कथाकार कि कवि 'मगजक डाढ़ी खखोरि पन्नापर रखइ छथि ।' हम कोनो कविवर कथाकार नहि, परंच तइओ तखन हम साइकिलपर बाजार दिश जा रहल छी । अओर एकाएक लाखो प्रयत्नक उपरान्त हमर दू पैरक घोड़ाक टाप एक सैंडिलधारिणी देवीजीक कोमल चरणपर पड़ि गेलनि । अपरतिभ भऽ गेलहुँ हम । क्षण भरि लए मोन भेल जे अपन दू पैरक घोड़ा लऽकऽ ततेक तेजीमे पड़ाइ जेना पृथ्वीराज संयुक्ताक अपहरण कएने पड़ायल जा रहल हो । परंच साइकिलसँ उतरि ठाढ़ भए गेलहुँ । हमरा संगे जाइत मँगरू सेहो ठाढ़ भए गेल । हम जाधरि किछु कहबनि वा क्षमाचायना करबनि ओ अपन तामस मँगरूपर उतारि लेलन्हि । भरिसक हमरा साहबी ठाठमे देखिकऽ देवीजीक मुँहसँ फुलझड़ी झड़ल– बेहूदा कहींका ! अगर रिक्सा चलाना नही ओता है तो क्यों चलाता है ? क्यों धक्का लगा दिया इन्हें जो उनकी साइकिल से मेरे पाँव कुचल गए !

...अओर बिजुलीक तेजीसँ देवीजीक सैंडिल तड़ दऽ जा लागल मँगरूक गालपर, देवीजी नापल डेगे चलि गेलीह । हम हतप्रभ जकाँ ताकए लगलहुँ मँगरू दिश । हम देखल जे मँगरूक आँखिसँ नोरक दू टा बड़का ठोप ओकर गालपर हरिअर घावकेँ सिचइत धरतीपर चूबि पड़ल ।

...अओर धरती कुहरि उठल ।

[1956]

प्रतीक्षा

विद्यालयसँ अवकाश भेटितहि बूचड़खानासँ छूटल जानवर जकाँ नाङड़ि दबाकै डेरा दिश पड़ैलहुँ । दिन-भरि प्रचण्ड गर्मी छलैक । उपरसँ ओहि गर्मीमे केमिस्ट्री घोखनाइ आर अलजेबराक इनडिसेस आ शर्ड्समे माथ गरमौनाइ । मोन क्लान्त भै गेल छल । डेरोपर विश्राम नहि ! प्रचण्ड गर्मी, आकुल प्राण ।

अहुरिया कटैत कहुना साँझ भेल । डेरासँ विदा भेलहुँ । टहलैत शहरसँ दूर बहुत दूर चल ऐलहुँ । सम्पूर्ण वातावरण शान्त छल कोनो विप्लव वा बिहाड़िक सूचना दैत । उष्णताक उपरान्त शीतलता स्वाभाविक । धरतीकेँ वेदना-संतप्त देखि अम्बरपर पयोधरक आक्रोश चिकरि उठल । नयन-अग्नि-स्फुलिंग सभ चमकै लगलन्हि आ होमय लगलन्हि अविरल अश्रुपात ।

ऊपर तकलहुँ–उमड़ैत मेघ—उमड़िते आबि रहल छल । धरणी पियासलि छलीह । पयोधर अपन नयन-जलसँ हुनक पियास मिझाबक हेतु उद्यत छलाह । बरखा आरम्भ छल– अटूट धार ! आब भेल जे भीजि रहल छी । सर्वत्र व्याप्त छल अंधकार—निबिड़ अंधकार ! हाथकेँ हाथ नहि सुझैत छलैक । मनबोधक शब्दमे —

सुइ लै बेधिय गाँथिय ताग,
हाथ छुबिय तँ हाथहि लाग ।

बिजुरीक क्षणिक आलोकमे बढ़लहुँ, मुदा भुतिआ गेलहुँ । कपड़ा भीजिकऽ देहसँ सटि गेल । सामने एक टा घर देखि झट दै पहुँचलहुँ । जिंजीर खटखटौलहुँ । केबाड़ फूजल । आ हम हतप्रभ भै देखल लालटेन लेने ठाढ़ि एक सौम्य रमणी-मूर्ति ! ओ मूर्त्ति !

गीता सन पवित्र, गंगा सन निष्पाप एवं निष्कलंक, शिशुक हँसी सन निर्मल । पीअर मुखाकृति, पातर... लौंगिया मरचाइ सन लाल ठोर, आमक पात सन पैघ-पैघ आँखि । देखिकऽ श्रद्धा उत्पन्न भेल । भीतर प्रविष्ट भेलहुँ । लालटेनक मद्धिम इजोतमे हम देखल एक टा बूढ़ीकेँ । जीवनक शतशत आघातसँ क्लान्त-श्रान्त । भावहीन आँखि ।

युवतीकेँ देखल । एक ठाम अट्ठारह वासन्ती ग्रन्थि, सभमे सोना सन रंग लेने नवयौवना, दोसर समयक साठि पतझड़मे झमारल वृद्धा । तेसर क्यो दृष्टिगोचर नहि भेल । जिज्ञासा उपजल । के थिकी ई दूनू नारी ?

भीजल कपड़ाकेँ गारि वृद्धा लग आबि एक पीढ़ीपर बैसलहुँ । गप्पक क्रम चलाओल । वृद्धासँ ज्ञात भेल जे ई नवयौवना हिनक पुतोहु थिकीह । हिनक पुत्र माखन डेढ़ बरख भेलन्हि नोकरीक हेतु कलकत्ता गेल छलन्हि । आइधरि नहि ऐलन्हि अछि । चिट्ठी बराबरि अबैत रहैत छन्हि जे छुट्टी भेटिते आयब आ पाँच तारिख कऽ 30 रुपैयाक मनिआर्डर ।

कहैत-कहैत वृद्धाक कण्ठ अवरुद्ध भै गेलन्हि एवं नेत्र सजल । पाछाँ घूमि कै देखल– चौखटिपर ठाढ़ि छल मखनाक नवयौवना पत्नी । आँखिमे ज्वलित दाह ।

खिड़की बाटे तकैत मोन कातर भऽ गेल । बाहर मेघ गरजए । बिजुरी चमकि उठए । हम सोचै लगलहुँ जे वर्षा भै रहल अछि । धरती तृप्त भै रहल छथि । मुदा ई नारी, मखनाक ई नवयौवना पत्नी ! युगसँ पियासलि ! की ई बरखा एकर अवरुद्ध कण्ठकेँ सरस कै सकतैक ? ओकर हृदयमे प्रज्वलित विरहाग्निकेँ ई जल मिझा सकतैक ? किन्नहुँ ने ।

एतबेमे जिजीँर फेर खटखटा उठल । केबाड़ी फोलि हम देखल– ठाढ़ छल एक टा डाकपीन । बाजल— तार अछि । हम जल्दीसँ तार लेलहुँ । भीतर आबि लालटेमक मद्धिम इजोतमे हम तार पढ़ल— मोटर दुर्घटनामे मखना मरि गेल । स्तम्भित भै गेलहुँ ? बाहर बिजुरी जोरसँ कड़कल ! मखनाक पत्नीक हाथसँ लालटेन खसि कै मिझा गेलैक । घरमे व्याप्त भै गेलैक– सघन अंधकार । मोन भेल जे चिचियाकऽ कहिऐक ओइ बरसैत मेघसँ जे आइ तोहर बरसनाइ निष्प्रयोजन आ बेकार छौक । आइ कानै दहीक एहि अभागलिकेँ जकरा हेतु आब सदिखन भादवक अन्हरिये रहतैक, शरद्क पूर्णिमा कहिओ हेबे नहि करतैक ।

अंधकारक निस्तब्धता भंग करैत मखनाक पत्नी बाजलि– की लिखल छैक ? हठात् नहि किछु फुरल । की कहिअउ ? बोल नइ फूटल । की छइ? बजइ ने किए छी ? अन्धकारमे ओ आगाँ बढ़ि हमर गट्टा पकड़ि चिकरि कऽ बाजलि ।

नइ किछु, नीके अछि । दशमी छुट्टीमे अओत । मुँहसँ खसल ।

अंधकारमे हम सुनल ओकर हृदयक दीर्घ निःश्वास । आब जाइत छी– ई कहि उत्तरक अपेक्षा कयने बिना हम ओहि अन्हरिया रातिमे भीजैत बिदा भेलहुँ । बाटमे हमरा मोन धिक्कारलक– ई की ? तोँ ई की कहि देलहिक ? मखना मरि गेल छैक । आब ओ कहिओ नहि औतैक ।

हम अस्पष्ट स्वरमे अपन मोनकेँ कहल– हम की कै सकैत छलिऐक ? हमरामे एतेक साहस नहि छल जे ओकरा एहन हृदय-विदारक संवाद कहि दितिऐक । ओ जीवन भरि प्रतीक्षा करतैक ई बूझि जे हमर 'ओ'– हमर प्राणधन जीबैत छथि, किएक तँ प्रतीक्षा अजस्र, अनाद्यान्त, कालक नदीमे दीप थीक ।

[1957]

●

ग्राम सुधार समिति

फगुनहट सनकल रहैक, से पटनाककाकेँ दिनुका गप्प बड़ मोन पड़लनि। ताहि जमानाक गप्प, जहिया हुनको मोन सनकल रहनि, बुट्टी-बुट्टी फड़कल रहनि, हाथ-पयर कड़कड़ायल रहनि आ अंग-अंग कसकसा उठल रहनि। ओना, एखनो बुढ़यलाह नहि अछि, पचासो तँ नहि पुरलनि अछि। मुदा ताहि दिनुका गप्पे किछु आर रहनि। जेहने रूप-लावण्य, तेहने कड़कल यौवन। तुरत पालिस कयल पुरना करिया जुत्ता सन चमकैत मुखाकृति, कोनो पिलियाक टेढ़ नाँगड़ि जकाँ उपर दिस ऐंठल पियरौन भुल्ल मोंछ आ नवका फैशनक कारी बुश्शर्टमे लागल चौखुट उजरा पाकिट जकाँ जमुनिया चेहरापर बाहर निकलल एकटा चौखुटा चकचक दाँत। अटेनशनमे ठाढ़ होथि तँ अगिलग्गीमे जरल, माटिमे गाड़ल खोरनाठ सन लागथि आ बैसल रहथि तँ टेढ़ शिवलिंग सन लागथि। मुँहक बीहरिसँ हुलकी दैत उजरका दाँत लगनि जेना धोखासँ कोनो भक्त वा पुजेगरी महादेवकेँ लाल चाननक बदला श्वेत चानन लगा देने होनि। ठेहुनसँ पंजा धरि, दुनू पयरक रचना तेहन सन, जेना दू टा धनुष आमने-सामने सटाकऽ राखल हो, एकटा पूर्ण वृत्त बनबैत।

पटनाकका अतीतक खढ़ोड़िमे भुतिआयले छलाह कि उकाठी छौंड़ासभ कलपर जूमि गेल। सभ भूत बनल, ऊपरसँ नीचाँ धरि रङल, रंगसँ छछारल। सेहो एक रंगमे नहि, रंग-बिरंगमे, लाल, पीयर, हरिअर, आ कारी रंग। क्यो सीसीमे पानि भरलक, क्यो बाल्टीमे रंग घोरलक आ अस्त्र-शस्त्रसँ लैस भऽ टुनाइ बाबूक आँगनमे हमला कयलक, समवेत गर्जनाक संग। पटनाककाक कानमे लुकराक उमकल स्वर पड़लनि– "कहाँ गेलहुँ अय भौजी सभ ! निकलै जाउ बाहर। आइ सभके तेनाकऽ पटा दैत छी, जे साल भर लहलहाइत रहब।" आ पटनाककाक मोन बीस-बाइस किसिम के होमऽ लगलनि। हनहन-पटपट करऽ लगलाह। चौकीपर एक छोरसँ दोसर छोर धरि ढनमनाय लगलाह, बेङ जकाँ कुदकऽ लगलाह। सूपमँहक भाटा जकाँ ओंघराइत रहलाह। जेना छौंड़ासभ हुनके रंग देबऽ हेतु घेरने होइनि आ बचबाक हेतु ओ पैतरा बदलि रहल होथि !

विजयाक प्रसादसँ लाल कर्जनी सन आँखि टुनाइ बाबूक घरपर टहलैत रहलनि। अन्तर्मन टाट छड़पि-छड़पिकऽ टाटकेँ छेदि-छेदिकऽ आँगनक दृश्य देखऽ लगलनि। हे, टुनाइक जेठकी पुतोहु बहरयलथिन। छौंड़बा सब टूटि पड़ल। ओ बीच आँगनमे मुँह झाँपि बैसि रहलथिन। कपड़ा बोदरि भऽकऽ देहसँ सटि गेलनि। लुकरा अबीर मलि रहल छनि। कनुआ फुचकारीसँ गत्र-गत्रकेँ बोरि रहल छनि। कलुआ कान्हपर गुलाबी रंगक बुकनी छीटि रहल छनि। टुनाइक पुतोहु लाल-गुलाब बनल छथिन, रहि-रहिकऽ सिहरि उठैत छथिन, अकुला जाइत छथिन। पटनाककाक मोन सनसना उठलनि जेना ई सभ काण्ड आँखिक आँगा भऽ रहल होनि। टुनाइकेँ मोने-मोन दस हजार गारि देलथिन– 'डकूबा टाटमे कतहु फाँको तँ नहि छोड़ने अछि !'

ता कतहुसँ भसिआयल भजारकका जुमलाह। हुनका देखैत देरी पटनाकका बाजि उठलाह– एहि गामसँ भजार, लाज-धाख, सभ्यता, शिष्टाचार सभ उठि गेल। छौंड़बा सभ सभटा रंगमे घोरिकऽ बाटमे छिड़िया देलक। हमरोलोकनि कहियो जुआन-जहान रही आ जुआनीमे हमरालोकनिक जे लावण्य रहय से आइ-काल्हुक छौंड़ा सभमे कहाँ ? फगुआ हमरोलोकनि खेलाइत रही आ भाउज हमरोलोकनिकेँ छथि। मुदा ई रड़धुम्मस तँ कहियो ने मचौलहुँ। ई सरासर गुण्डागिरी थिक, अनाचार थिक।

पटनाककाक भजार हुनकासँ कनिको उनैस नहि। हरबाही पेना सन नाम आ ऊखड़ि सन गोल। डाँड़सँ खसैत धोती आ तह-पर-तह लागल धोधि। मतलब जे गोलघरक संक्षिप्त संस्करण। चालि किछु-किछु मधुबनिया एक्का सन आ अपनासँ एक बीत पैघ लाठी हरदम हाथे। पटनाककाक गप्प सुनि आगिमे पकाओल गोली सन अपन झरकल मुँह बाबि बैसला– से तँ यथार्थे भजार ! एहि तरहक पिहकारी आ होहकारा तँ छोटका लोकक धुरखेलोमे नहि होइत छैक। एना खुल्लमखुल्ला स्त्रीगणसभसँ पटकम-पटका कऽकऽ रंग खेलायब महान अनुचित आचरण थिक।

सह पाबि पटनाकका फाटल जुत्ता जकाँ नमरलाह– आब हद्द भऽ गेल भजार ! सुनलहुँ अछि जे लुटकुनक नवकी पुतोहुक मुँहपर कतेको नछोड़ छनि, भिल्लूक मँझली पुतोहुक आँगी तीरी-तीरी भऽ गेलनि आ लिल्लूक शशिपुरवाली पुतोहुकेँ सभ मिलि बीच आँगनमे बेपर्द कऽ देलकनि।

"छी-छी-छी" भजारकका आन्तरिक क्षोभसँ बजलाह। घोर कलियुग

आबि गेल अछि भजार ! बात-विचार तँ एकदम्मे उठि गेल । ई नवयुवक लोकनि गामकें डुबा छोड़ताह ।"

पटनाकका विश्वासपूर्वक बाजि उठलाह– "मुदा हमरा अछैत ई अनाचार नहि चलि सकैत अछि । हमरालोकनि एखन मुइलहुँ नहि अछि भजार ! नवयुवक लोकनि परकि गेलाह अछि। चारि-पाँच बरखसँ यैह ढाठी धयने छथि। मुदा जँ एकरा बन्द नहि करा दी, तँ हमरो नाम फल्लाँ चौधरी नहि ।"

"काज बड़ कठिन अछि भजार ! ई छौंड़ासभ कथा सुनऽवला नहि अछि। एकसँ एक अगियाबेताल सभ अछि, जे बड़ छोट से उनचास हाथ । कहीं सनकि जायत तँ कोनो कथा उठा नहि राखत ।" भजारकका बुझनुक जकाँ बजलाह । मुदा पटनाकका मामुली खेलाड़ी नहि । अखड़ियल, फेरल ओस्ताद । हुनकर गोटी काटब बड़ मुश्किल । एकटा गर्वपूर्ण हँसी हँसैत बजलाह– "हम अहाँ जकाँ अल्हुआ खाकऽ धोधि नहि फुलौने छी भजार ! एहि माथसँ टक्कर लेब कोनो सोझ गप्प नहि छैक । छौंड़बे सभकें चारू नाल चितंग नहि कऽ देलियनि तँ फेर कहब ।" आ आँगनमे हाक दैत फेर बाजि उठलाह– "कहाँ गेलह हौ बुलुर, कने कागज-कलम दऽ जाह ।"

छोटका बेटा बुलुर कागज-कलम राखि गेलनि । पटनाकका कागजपर किछु लिखऽ लगलाह । भजारककाकें कोनो अर्थ नहि लगलनि । उत्कण्ठा छान तोड़ऽ लगलनि । ढलइ माछ जकाँ मुँह बाबि पुछलथिन– "अरे किछु हमरो कहू भजार, की लिखि रहल छी ?" पटनाकका कागज थम्हा देलथिन आ ठोर पटपटाकऽ भजारकका पढ़ऽ लगलाह–

सूचना

तीससँ बेसी अवस्थाक प्रत्येक स्त्री-पुरुषसँ
प्रार्थना अछि जे आइ एक आवश्यक प्रश्नपर विचार
करबाक निमित्त एकत्रित होयबाक कष्ट करी ।

स्थानः चौधरीक बँगली
समयः 6 बजे सन्ध्या

निवेदक
ह० वं० चौधरी
21/3/62

भजारकका सूचना पढ़ि पुलकित भऽ गेलाह । पटनाकका पुछलथिन– "की भजार ?"

भजारकका भूकि उठलाह– ''मानि गेलहुँ भजार ! की दूरक कौड़ी फेकलहुँ अछि !''

पटनाकका गर्वसँ बजलाह– ''आब अहाँ देखैत ने रहू भजार ! एहि छौंड़ासभकें एक-एक घरसँ दुरदुरा दैत छियनि । बडे छुट्टा साँढ़ जकाँ बौआइत फिरैत छलाह ।'' फेर बेटाकें सोर पाड़ैत कहलथिन– 'कहाँ गेलहुँ बाउ ! कने ई नोटिस भरि गाम घुमा दिऔक ।'

बँगली खचाखच भरल छल । जेना पटनाककाक माथमे ढील सहसह करैत रहैत छनि । पटनाकका अपस्याँत छलाह । साँझ होइत देरी लाइट लेसबाकऽ बँगलीपर रखबा देलथिन आ शतरंजी ओछबौलनि । लोकसभ जुमऽ लागल, दुनू महालमे । मुदा मौगियाही महाल विशेष उत्साह आ सजधजसँ जूमल । संख्यामे तऽ दुन्ना छलीहे, उपरसँ साज समानसँ लैस । ककरो हाथ चरखा, ककरो हाथ तूर-बाँगक डाली । सभाक कार्यक्रम आरम्भ भेल । पटनाकका बजलाह– "प्रत्येक सभाक कार्यवाही सुचारु रूपसँ सम्पन्न करबाक निमित्त एकटा सभापतिक आवश्यकता होइत छैक । मुदा आजुक विषय स्त्रीगणक मान-मर्यादासँ विशेष सम्बन्ध रखैत अछि तँ हम प्रस्ताव करैत छी जे आजुक सभाक सभापतित्व श्रीमती प्यारी देवी करथि ।'' प्रबल करतल-ध्वनि भेल । पुरखाही महालमे पूर्ण उत्साहक संग, मुदा जनानी महाल मरहन्ना । पटनाककाक बैसैत देरी भजारकका बैसले-बैसल बजलाह– "भजार हमर मुँहक गप्प लोकि लेलनि । हम एहि प्रस्तावक हार्दिक अनुमोदन एवं समर्थन करैत छी ।" फेर थोपड़ी तड़तड़ायल आ प्यारी देवी सभापतिक पदपर आसीन भेलीह, पदगरिमाक पूर्ण प्रदर्शन करैत, मन्थर गतियें, गजगामिनी जकाँ, पृथ्वी दिस तकैत । पटनाककाक दुनू छोटका बेटा बुलुर आ धुदूर दौड़िकऽ हुनक गराँमे माला पहिरा देलकनि । बँगलीक चार थोपड़ीक स्वरसँ उड़िआय लागल । प्यारी देवी पूर्ण आत्मविश्वासक सँग मसलंगसँ ओठंगि गेलीह आ गराँसँ माला निकालि कार्यक्रमक सम्बन्धमे पटनाककाक संग किछु फुसफुसाय लगलीह, मुँहमे मुँह सटाकऽ । प्यारी देवी वस्तुतः समाजसेविका आ सुधारिका छथि एहि महान् कार्यक प्रत्येक योग्यतासँ ओ सम्पन्न छथि । पतिकें रहलासँ सुधारकार्यमे बाधा होइत छैक, तें स्वामीकें बीस बरससँ ऊपर भेलनि, छोड़ि चुकल छथि । संतान रहलासँ

मोहमायामे फँसबाक भय रहैत छैक, तेँ ओहू झंझटिसँ मुक्त छथि । समाजसेविकाक हेतु रूप आ यौवनक जे नितान्त आवश्यकता छैक तकर हुनकामे अभाव नहि, प्रचुरता । चालीसक धक्कामे होयती, मुदा चेहरा अखनो पनिगर छनि, देह एखनो ठोकले-ठाकल छनि । आ सभसँ पैघ गुण सामाजिक क्षेत्रमे होइत छैक– लोकप्रियता, ताहिपर हुनकर एकक्षत्र आधिपत्य छनि । अपन मधुर बोल आ अद्‌भुत कटाक्षक कारणेँ ओ गामक सभ्य, सुसंस्कृत एवं आचारवान पुरुषक हृदयराज्यक साम्राज्ञी छथि । खाली झोटहा पंच किछु भड़कल रहैत छनि । कोनो आँगन बाँचल नहि छनि, जकर मलकाइनसँ दू बेर उपरागा-उपरागी, कथा-कथान्तर आ अन्तमे भतंबरी नहि भेल होनि । मुदा ई सभ तँ साधारण बात थिकैक, होइते रहैत छैक, लोक देखियोकऽ अनठबिते रहैत अछि, बिसरिते रहैत अछि । असल गप्प तँ ई जे प्यारी देवी उदारहृदया सेहो छथि ।

हँ तँ सभापतिक पद ग्रहण कयलाक उपरान्त पटनाकका सभाक आयोजनक उद्‌देश्य स्पष्ट करैत बजलाह– "माननीया अध्यक्षजी, उपस्थित सज्जनवृन्द एवं महिलागण ! हमरालोकनि आइ एकटा महत्त्वपूर्ण विषयपर विचार करबाक हेतु एकत्र भेल छी । हमरा हार्दिक प्रसन्नता अछि जे हमर एकटा आह्वानपर अहाँलोकनि एतेक संख्यामे उपस्थित भेलहुँ अछि । हमरा विश्वास भऽ गेल जे आब हमर उद्‌देश्य सिद्ध होयत, गामक उपकार संभव होयत । कतेक लज्जा एवं ग्लानिक विषय थिक जे हमरालोकनिक पढ़ल-लिखल समाज जतऽ घर-घर बी० ए०, एम० ए० गोजल पड़ल छथि, ततऽ सामाजिक शिष्टाचार एवं अनुशासनक एतेक ह्रास भऽ जाय !"

ई विस्तृत भूमिका सुनि लमकी काकी अपन सखीक संग पुतोहुक कुचेष्टामे लागि गेलीह । दुनूकेँ अपन-अपन पुतोहुक कोटा रहनि, से गप्प तुरत जमि गेलनि । बानूछपरावाली काकी अपन चरखाक माल ठीक करऽ लगलीह। चनपुरावाली काकीकेँ बहुत दिनपर आकाशफल भेटि गेलथिन, से ओ अपन गप्पक पेटार खोलि देलनि । इरोतमे रहैत छथि, से भेटघाँट पावनिये तिहारे होइत छनि । बहुत दिनक बकियौता रहनि, से जल्दी-जल्दी अपन-अपन सुख-दुख नोन-अनोन, तीत-मधुर अनुभव एक दोसरकेँ साँठऽ लगलीह, पूर्ण मनोयोगक संग । तूर तुमऽवाली सभ अपन-अपन काजमे बैसि ध्यानस्थ भेली आ गति तेज भऽ गेलनि । पुरखाही दलमे तमाकू चूनाबऽक काज जोर पकड़लक आ एकटा हल्लुक चाटीक बाद तमाकूक धूकनि बंगलीमे पसरऽ लागल, एकक बाद दोसर,

लगातार । सभापतिकेँ बड़ जोर दोंक लगलनि, पटापट छींकऽ लगलीह । पटनाकका कननमुँह भेले जाइत छलाह कि मिसरीकका बात सम्हारलनि– "से की बात थिकैक बंगट, स्पष्ट बाजह, हमरालोकनिके अर्थ नहि लगैत अछि ।"

पटनाकका छड़पि उठलाह– ''बूझऽमे आओत कोना भाइ ! कानमे तूर देने सूतल रहू ! गाममे कतऽ की भऽ रहल अछि, तकर चिन्ता रहय तखन ने ! और, ई नवतुरिया-सभ पुरखाक नाम गोबर-माटिमे सानिकऽ छोड़ि देत, तैयो सुतले रहब ! बरखो परिश्रमसँ अर्जित कयल गामक नाम डबराक कादोमे लसाढ़िकऽ छोड़ि देत, तैयो ने सुगबुगायब ? अहाँलोकनि बड़्द बेचिकऽ सूतले रहब की ?"

एहि बेर बुढ़िया बाबी रोकलथिन— ''हमरा लोकनि तैयो ने किछु बुझलहुँ बंगट ! कने आर फरिछाकऽ बाजू ।"

पटनाकका जेना मर्मान्तक पीड़ासँ छटपटाइत बजलाह– "सभटा आँखिक सोझेमे भऽ रहल अछि, तैयो यदि हमरे स्पष्ट करऽ पड़त तँ सुनू ! एहि चारि-पाँच बरखसँ ई नवयुवक लोकनि फगुआमे जे कुकाण्ड करैत छथि, से की अहाँलोकनि नहि देखैत छी ? नव-नव आयल पुतोहु लोकनिक जे ईलोकनि दुर्गति करैत छथि, से की अहाँलोकनि नहि देखैत छी ? हमरा लोकनिक एकटा इज्जति अछि, मर्यादा अछि । हमर-अहाँक पुतोहु राड़क बऽहु सभक भौजी तँ नहि छथि । ई नवयुवक लोकनि हाँज बान्हि आङने-आङन रड़धुम्मस करैत छथि, कण्ठ फाड़ि-फाड़ि चिचिआइत छथि, अवाच्य कथा बजैत छथि, हमरा-अहाँक सोझाँमे लट्‌टम-पट्‌टा शुरू कऽ दैत छथि, से की अहाँलोकनि नहि देखैत छी ? की एहिसँ हमरालोकनिक नाम ओ इज्जतिपर बट्टा नहि लगैत अछि ? की एहिसँ हमरालोकनिक पुतोहु बेइज्जति नहि होइत छथि, तमाशा नहि बनैत छथि ? बाजू, जबाब दिय ?"

पटनाककाक ओजस्वी भाषणक प्रभाव सभापर जादू-टोना जकाँ पसरल । सभक हाथमे ब्रेक लागि गेलैक । कनफुसकी रुकि गेलैक, चरखाक घरघरी बन्द भऽ गलैक आ सभ अपन अपन घेँट ऊँट जकाँ ठाढ़ कयलक । बात सभकेँ जँचलैक । मुदा दू चारि टा छौंड़ी सभ सेहो तमाशा देखऽ आयलि छलि । ओकरा सभक मुँह बिचकि गेलैक । चानो बाजलि– "ई पटनाकका बड़ केहनदनि लोक छथि । रंग-अबीर खेलाइत अछि क्यो, तँ हिनकर छाती किएक फटैत छनि ? बड़ अनटोटल लगैत छनि, तँ अपन पुतोहुसँ लोककेँ नहि खेलाय

देथुन । सभक ठीका हिनके छनि ।" मूना संग देलकैक– ''से ई अपने केहन लोक छथि, से लोक नहि चिन्हैत छनि की ? अपने बुढ़ारियोमे खेलायल ताकथि आ छौंड़ा-छौंड़ी सभकेँ खेलाइत देखैत छथिन तँ हिनका काँट जकाँ गड़ैत छनि।" ई आलोचना रबर जकाँ नमरैत, मुदा बुढ़िया बाबी डाँटि देलथिन छौंड़ी सभकेँ– ''तोरा लोकनिक एतऽ कोन काज छह ! जाह-जाह ।"

छौंड़ी सभ मुँह बिचकाकऽ चुप भऽ गेलि मुदा डटले रहलि, गेलि नहि। बुढ़िया बाबी पटनाककाकेँ उत्साहित करैत बजलीह– "आगू कहू बँगट ! बात तँ यथार्थ कहैत छी । हुमहुँसभ देखैत-देखैत अन्हरा गेलहुँ । मुदा के सुनैत अछि !''

पटनाकका गरजलाह– "सुनऽ पड़तैक काकी ! हमरालोकनि आइ एही लेल एकत्र भेल छी जे सभ मिलिकऽ शपथ ली जे ई अनाचार मेटाकऽ छोड़ब। एहि गुण्डागिरिक रोकथाम हेतु एकटा ग्रामसुधार समितिक निर्माण हो । नियमभंग कयनिहारकेँ सामाजिक दण्ड देल जाइनि । स्त्रीगणक संग फगुआ खेलायब एकदम रोकि देल जाय । यदि अहाँलोकनिक विचार हो तँ समितिक निर्माण तुरत भैये जाय ।"

"अवस्स" । पटनाकका निर्विरोध समर्थन पाबि गद्गद भऽ उठलाह । तुरत एकटा कागजपर अपील लिखलनि । कागज सभामे घुमल । दस्तखत कऽ मेम्बर बनैत गेलाह, सदस्या भर्त्ती होइत गेलीह । सदस्यक संख्या काफी संतोषजनक । स्त्री सदस्य दुगुना । पुरुष सदस्य बीस आ स्त्री सदस्य चालीस । पटनाकका सर्वसम्मतिसँ समितिक सभापति निर्वाचित भेलाह । डालडाक पूरी जकाँ फूलि उठलाह पटनाकका । प्यारी देवी उपाध्यक्षा निर्वाचित भेलीह, नारी प्रतिनिधित्वक निमित्त । तदुपरान्त पुरखाही आ मौगिआही दुनू दलसँ भाषण भेल। टुनमुन काकी, बिलो पीसी आ बुढ़िया बाबी सेहो भाषण कयलनि । प्यारी देवी सभापतिक पदसँ भाषण करैत बजलीह– ''उपस्थित सज्जन वृन्द एवं महिलागण, अहाँ लोकनि हमरासन नितान्त अयोग्यकेँ जे गौरव दऽ अवसर देलहुँ, ताहि अवसरपर हम अपन टूटल-फूटल भाषामे दू आखर कहबाक लोभ संवरण नहि कऽ सकैत छी । बंगट बाबू जाहि काजक श्रीगणेश कयलनि अछि, से बड़ महान् कार्य थिक । एहि प्रकारक सुधारकार्य द्वारा समाज उपर उठैत अछि, चरित्रक निर्माण होइत अछि, सदाचार आ सभ्यता पनपैत अछि । समाजक उचित विकासक हेतु दुनू पहियाक दुरुस्त रहब परमावश्यक । ओ दुनू पहिया थिक– स्त्री आ पुरुष, जीवनरूपी बैलगाड़ीक दू पहिया । दुनूमेसँ कोनो एकोटाक भङठि गेलासँ प्रगति अवरुद्ध भऽ जाइत छैक । प्रगति रुकि जाइत छैक । जाहि कुकाण्डक उल्लेख बंगट बाबू कयलनि अछि, ताहिमे दोषी मात्र नवयुवक लोकनि नहि । नवफैशनक नवकी पुतोहु लोकनि सेहो कम दायी नहि छथि । ओ लोकनि नवयुवक वर्गकेँ प्रोत्साहित करैत छथिन । तेँ हमरालोकनिकेँ दुतरफका रोकथाम करऽ पड़त । महिला मंण्डलीक दिससँ हम बंगट बाबूकेँ आश्वासन दैत छियनि जे ओलोकनि दरबज्जा सम्हारथु, हमरालोकनि आङन सम्हारि लेब । एहि आश्वासनक संग हम अपन भाषण समाप्त करैत छी आ अहाँलोकनिकेँ, खासकऽ बंगट बाबूकेँ धन्यवाद दैत छियनि जे हमरा एतेक पैघ गौरव आइ देलनि ।''

तुमुल करतलध्वनिक संग सभा विसर्जित भेल । सभ टीका-टिप्पणी करैत अपन-अपन घर विदा भेल । टार्च लऽ पटनाकका प्यारी देवीकेँ पहुँचाबऽ चललाह । एकपेड़िया भेटलापर पटनाकका अपन भगजोगनी सन आँखि मिलमिलबैत बाजि उठलाह– ''अपन सभक फगुआ एहि बेर सुखले रहतैक प्यारी दाइ ?'' आ प्यारी देवी एक टा मोहक हँसी हँसि देलथिन आ आँखि एक टा कटाक्ष कऽ बैसलनि पटनाककापर । पटनाकका फुरफुरा उठलाह । डाँड़सँ अबीरक पुड़िया बहार कऽ प्यारी देवीक संग लुझुकि गेलाह । सौँसे मुँह लाल कऽ देलथिन अबीरसँ आ फेर पुड़िया बढ़ा देलथिन प्यारी देवी दिस । प्यारी देवी भरि बाकुट अबीर लऽ पटनाककाक मुँहमे मलऽ लगलीह ।

[1962]

अभिशप्त

मोहल्लाक एक टा अनेरुआ कुकुरकेँ बासि भात-रोटी खुआ-खुआकऽ सामनेक मकानक किरायादार पोसुआ बना लेलक अछि । अबैत-जाइत लोकपर भुकैत रहैत अछि । मुदा अखन, अइ उदास आ सुन्न दुपहरियामे ओहो चुपचाप बरण्डापर राखल चौकीक नीचाँमे दुबकल पड़ल ओंघा रहल अछि । हमर कोठलीक खिड़की खूजल अछि आ पडोसीक मकानक बरण्डामे एक टा कुकुर औंघा रहल अछि । आर कत्तहु किछु नहि । सम्पूर्ण मोहल्ला सुन्न—सभ टा खिड़की-दरबज्जा बन्द । अइ सुन्न दुपहरियामे अपन खूजल खिड़कीसँ बाहर तकैत कौखन भ्रम भेल अछि, जेना दुपहरिया नहि, राति बीति रहल हो आ सौंसे मोहल्ला छिड़िआयल इजोरियामे बेसुध पड़ल हो । मुदा प्रत्येक बेर खूजल खिड़कीसँ अबैत तीक्ष्ण आँच ई भ्रम तोड़ि देलक अछि । इजोरियामे एहन आँच किन्नहु ने भऽ सकैत छैक— बिरही प्रेमियोक हेतु नहि । आ प्रत्येक बेर एना सोचितहिँ ई उदास सुन्न दुपहरिया किछु बेशी सुन्न लागय लागल अछि । रोशनदानपर कचबचाइत बगड़ा सभक अनवरत स्वर अइ उदासीकेँ तोड़बामे असफल रहल अछि, मुदा ओकरा सभक अनवरत कचबचाहटि सुनि कतेको बेर एकटा दुष्ट विचार मनमे आयल अछि । मीरा एतय नहि अछि, आइये एकर खोताकेँ रोशनदानसँ उतारि फेकि दिऐक ! मीराक उपस्थितिमे जहिआ कखनो एहन विचार अबैत अछि, ओ झट रोकि दैत छथि– रहऽ ने दिऔक । अहाँक की बिगाड़ैत अछि बेचारा सभ ? कोठलीमे खर-पात खसा दैत अछि, उठाकऽ फेकि दैत छियैक । एतनी टा बात लेल ककरो बनल-बनाओल खोता कियैक उजाड़बैक ? आइ ओ नहि अछि । सोचैत छी, मौकासँ फायदा उठाबी । मुदा ई सोचियोकऽ नहि उठैत छी । पातक ढेरकेँ देखैत रहैत छी । बिना खोताक रोशनदानक कल्पनासँ अकारण त्रस्त भऽ जाइत छी ।

त्रस्त भऽ जाइत छी आ ओम्हरसँ दृष्टि हँटा फेर खिड़कीसँ बाहर ताकय लगैत छी । बरण्डापर चौकी तर औंघाइत कुकुर भरिसक नीक जकाँ सूति रहल अछि– कोना निश्चिन्त सूति रहल अछि ? मुदा तुरत 'श्वाननिन्द्रा'बला श्लोक मन पड़ि जाइत अछि आ अपन अकारण ईर्ष्यापर अपने हँसय लगैत छी– कुकुरक नीन कतहु मोट होइ ?

ओम्हरोसँ दृष्टि हँटा सम्पूर्ण शरीर ओछौनपर आर नीक जकाँ पसारि किछुओ काल सूति ली– मनमे सोचैत छी । मुदा आँखि बन्द होइतहिँ खूजल खिड़कीसँ अबैत रौदक धाही असह्य सन लागय लगैत अछि । देह घमायल जकाँ लगैत अछि– अनवरत नाचि रहल पंखोक नीचाँमे । हाथ बढ़ाकऽ खिड़कीक पल्ला ठेलिकऽ बन्द करय चाहैत छी । हाथ ओतय तक नहि पहुँचैत अछि । उठिकऽ खिड़की बन्द करबाक बात सोचियो कऽ नहि उठैत छी ।

अपन अइ असफल चेष्टापर मिनी मोन पड़ि जाइत अछि । ओहो अहिना फर्शपर ठाढ़ भऽ खिड़की छुबऽ लेल अपन छोट सन हाथ बढ़बैत अछि । मुदा अपन अइ चेष्टापर प्रत्येक बेर निराश भऽ जाइत अछि आ हमरा दिस तकैत अछि। हम ओकरा उठाकऽ खिड़कीपर ठाढ़ कऽ दैत छियैक आ तखन ओ बड़ी काल धरि खिड़कीक छड़ पकड़िकऽ खुशी-खुशी खेलाइत रहैत अछि । अखन एकाएक मिनी मोन पड़ि गेलासँ दुपहरिया फेर बेसी सुन्न लागय लगैत अछि । मिनी गुड्डीक रहलासँ कतेक हरबिरड़ो मचल रहैत अछि ! मीरा तऽ दुनूकेँ सम्हारैत अपस्याँत भऽ जाइत छथिन । सोचैत छी, साँझ खन जाकऽ ओकरा सभकेँ लऽ अनबैक ।

मुदा लऽ अनबाक विचारक संगहि आइ मीराक अइ तरहेँ चलि जयबाक बात फेर मोन पड़ि जाइत अछि । हम नहि रोकलियनि । बुझयबाक चेष्टा सेहो नहि कयलियनि । बुझाकऽ थाकि गेल छी । हुनकर अपने दुःख सभसँ पैघ छनि, आन ककरो ओ सुनय नहि चाहैत छथि । ओ मात्र एतबा जनैत छथि जे हमरा घरमे (अपन घर ओ कहिओ बुझबे नहि कयलनि अछि) अस्वीकृत छथि । घरक लोकक इच्छाक विरुद्ध अपन पसिन्दसँ विवाह कयने छी— हमर ई बात ओ हमरा घर आबयसँ पहिनेसँ जनैत छथि, एक्को दिन लेल बिसरल नहि छथि। आ टूटल-बिगड़ल आर्थिक दशा आ सुदीर्घ बीमारी सभक परेशानीमे बाझल लोकक असमर्थताकेँ अपन उपेक्षा मानि-मानिकऽ अपन धारणाकेँ आर पुष्ट करैत रहल छथि । एक्के घरमे, एक्के संगे एतेक दिनसँ रहियोकऽ ओ ओइ घरक कहियो ने भऽ सकल छथि जकरा ओ हमर घर कहैत छथि । आ मात्र एक आसपर जीबैत रहलि छथि जे एक दिन हम समर्थ भऽ एक टा घर बनायब, हमर

घरसँ भिन्न, जाहिमे ओकरो हिस्सा हेतैक आ जकरा ओ एहन बनओती जेहन ओ सपना देखैत रहलि छथि । आ समर्थ हम भऽ गेल छी, ओ जनैत छथि । बहुत रास आरो लोक सभ जनैत छथि । नीक नौकरी करैत छी, नीक कमाइत छी । प्रशिक्षणक हेतु जखन हम साल भरिक वास्ते दूर रही आ गुड्डी गर्भमे छलैक, तैयौ मीरा उदास नहि भेल छलीह । एक-एक दिनकेँ उत्साहपूर्वक कटने गेल छलीह । नव जीवनक आशामे बितैत दिनक संग एकटा नव प्रभातक किरण समीप अबैत जा रहल छलैक, जकरा ओ हाथ बढ़ाकऽ अपन बाँहिमे समेटि लेबय चाहैत छलीह । हमरा लग सुरक्षित प्रशिक्षण कालमे प्राप्त हुनक पत्र सभमे ओइ नवीन प्रभातक किरण आइयो बन्दी छैक ।

घर हम लेलहुँ आ मीरा आबि गेलीह हमरा लग । मुदा हुनकर सभटा उत्साह आ सपना टूटि गेलनि ई देखि जे हम एकसर नहि छलहुँ, हमरा संग छल 'हमर घर' (जकरा अप्पन घर ओ कहियो ने कहैत छथि) । ई नव घर सेहो ओहन नहि बनि सकल, जेहन ओ बनाबय चाहैत छली । आब भरिसक ओ बूझि गेल छथि जे हम एकसर नहि छी, हमर संग एक टा घर अछि जे हुनकर नहि छनि । ई बुझितहिँ ओ उदास भऽ गेल छथि आ हरदम उदास रहैत छथि ।

हम बुझेबाक चेष्टा कैने छी, मुदा हारि गेल छी । भरिसक ठीकसँ बुझाय नहि सकल छी । भरिसक ठीकसँ समये नहि भेटल अछि । भोरसँ दुखिताह सभक लेल दौड़-बरहा, दिन भरि आफिस, आ तकर बाद बिचली राति धरि दवाइ, पथ्य-परहेज आदिक व्यवस्था । नीक जकाँ गप्पो करबाक अवकाश नहि भेल अछि । राति बितलापर जखन बगलमे आबिकऽ पड़ि रहैत छथि, थाकल-ठेहिआयल रहलोपर किछु कहय सुनय चाहैत छी । मुदा दोसर बिछौनपर हमर छोट भाइ लल्लन आ रमन आ छोट बहिन लिली आ नीली जागल रहैत अछि । जखन ओ सभ सुतैत अछि, गुड्डी जागि जाइत अछि । अखन मात्र छौ मासक अछि, दूध पिबैत अछि । ओकरा दूध पिआबैत मीरा सूति रहैत छथि, मुदा हम्मर आँखिसँ निन्न जेना कतहु पड़ा जाइत अछि । बगलमे सूतलि मीरा हजारो-हजारो मील दूर लगैत छथि- सभ दिन दूर होइत । हम डेरा जाइत छी आ रातुक ओइ डेरायल एकसरपनमे बड़ी काल धरि जागल रहैत छी ।

आ भोरमे मीरा उदास रहैत छथि । दिन भरि उदास रहैत छथि, जेना भितरे-भीतर कोनो दुःख खयने जा रहल होनि । ओ ककरोसँ किछु कहैत नहि छथिन, मुदा अइ मौनक भाषा सभ बूझि रहल छैक । अइ मौनक भाषा जेना हम बुझैत छी, आर क्यो नहि बुझैत छैक । मुदा अपन बात दोसरकेँ बुझा सकबामे हम सभ दिन असमर्थ रहलहुँ अछि ।

मायकेँ कैन्सरक सन्देह छैक । दू माससँ एतय अछि । डाक्टर कहैत छैक, कैंसर नहि छैक । मुदा दर्द तऽ अखनो छैक । तँकर चिन्ता ओकरा नहि छैक । तैयो ओ चिन्तित रहैत अछि ।

बाबू डायबेटिज आ ब्लडप्रेसरक पुरान रोगी छथि । एक टा पैघ सन घाव भऽ गेल छनि दहिना पैरक औंठापर । दू मासक इलाजक बादो नीक जकाँ भरल नहि छनि । मुदा ओ तऽ डेड टिसू छैक, ओइमे दर्द नहि होइत छनि । दर्द होइत छनि कोनो जीवित टिसूमे, प्रत्येक जीवित टिसूमे आ ओ बेचैन रहैत छथि । उमा दस दिन पूर्व एक टा कन्याकेँ जन्म देलकैक अछि, कमजोर अछि, मुदा भौजीक मुँह देखिते ओकर कमजोरी आरो बढ़ि जाइत छैक । ओकरासँ पैघ इला स्वस्थ अछि, दिन भरि भनसाघरमे माय आ अपन भौजीक संग व्यस्त रहैत अछि, मुदा भनसाघरमे गुनधुन तरकारी कटैत वा फुलकी छनैत भौजीक मुँह देखि ओहो दुखिताहि होमय लगैत अछि । छोटका बच्चा सभ दुपहरियामे आइसक्रीम खयबाक जिदपर कौखन माय वा बाबूजीसँ डाँट सुनि ओतेक नहि सहमैत अछि, जतेक ओहन जिद करैत काल अपन भौजीक लग पहुँचि गेलासँ । मीराक मोनक भाषा सभ बूझि गेल छैक आ हम डेरायल रहैत छी ।

मुदा डेरायल रहिओकऽ ओ नहि रोकि सकलहुँ हम, जकर आशंका दू माससँ हमरा व्यग्र कयने छल । आइ ओ भैये कऽ रहल । छुट्टीक दिन अबितहिँ कतेक आलस दबा लैत अछि हमरा ! उठिकऽ हाथ-मुँह धोयबाक सेहो इच्छा नहि होइत अछि । बिछौनपर पड़ल रहैत छी आ मिनी छातीपर चढ़ल रहैत अछि । हमरासँ बड़ हिलि-मिलि गेल अछि, जाधरि डेरापर रहैत छी, एक्को क्षण छोड़ैत नहि अछि । आइओ हमर छातीपर सवार भऽ अपन बालसुलभ जिज्ञासासँ प्रश्न कयने जा रहल छल कि एकाएक भनसाघरसँ मायक जोर-जोरसँ बजबाक स्वर आबय लागल- "हमरा लोकनि सभ दिन अहाँक माथपर बोझ बनि बैसय नहि आयल छी कनियाँ ! साढ़े तीन हाथक बैसल छथि कमौआ । अखन हुनकर घाव द्वारे दू माससँ अगोरने छी, ने तऽ एना के रहत एक्को क्षण अहि ठाम ?" मायक बाजब क्रमशः कानबमे बदलि गेल आ फेर कोनो स्वर नहि । हम साँस रोकि प्रतीक्षा करय लगलहुँ । हरदम बकबक करयवाली मिनी सेहो अवाक् हमर मुँह ताकय लागल । मुदा ओम्हरसँ फेर कोनो स्वर नहि आयल । किछु काल

बाद मीरा लगभग दौड़ैत ओइ घरसँ अयली आ अबितहिँ बिछौन पर पड़ि रहली– मुह गेरुआमे नुकाकऽ । हमरा किछु पुछबाक साहस नहि भेल । मायकेँ एना पड़लि देखि मिनी टुकुर-टुकुर हमर मुँह ताकय लागल । ओकर प्रश्न पूछैत दृष्टिसँ हम कन्नी काटय लगलहुँ आ हटिकऽ हाथ-मुँह धोबाक बहाने बाथरूम जयबाक सोचय लगलहुँ कि दोसर कोठलीसँ बाबूजीक स्वर आयल– "साध पूर भऽ गेल । बड़ सेहन्ता छल संग रहबाक । घाव भेल छल, कोनो मरि नहि रहल छलहुँ ।" नहि जानि कोन शक्ति हमरा ओही क्षण उठाकऽ बाबूजीक सामने ठाढ़ कऽ देलक– "ई अहाँक अपन घर अछि, आनक नहि । बीमार-लाचार नहि रहितहुँ, तऽ नहि अबितहुँ एतय । ई गप्प कोना बाजि गेलहुँ अहाँ ?" अपन बातक प्रतिक्रिया उपस्थित लोकक चेहरापर बिना देखने हम अपन बिछौनपर घुरिकऽ पड़ि रहलहुँ ।

आ बीति रहल उदास दुपहरियामे खूजल खिड़कीसँ बेर-बेर बाहर तकैत हम बिछौनपर पड़ल छी आ सामनेक मकानक बरण्डापर चौकी तर एक टा कुकुर सूति रहल अछि । रोशनदानपर बगड़ा चीं-चीं कऽ रहल अछि । मुदा तीन पैघ-पैघ कोठलीबला हमर डेरामे कोनो आवाज नहि, कोनो चहल-पहल नहि । हमर पन्द्रह दिनक भगिनी सेहो एक्को बेर नहि कानल अछि आइ । एक टा मनहूस चुप्पी पसरल अछि । मीरा बिनु खयने-पीने मिनी गुड्डी केँ लऽ बापक डेरापर चल गेल अही शहरक दोसर मोहल्लामे । हम नहि रोकलियैक । क्यो नहि रोकतैक । मुदा मीराकेँ छोड़िओकऽ अइ डेरामे दस-बारह व्यक्ति अछि । आठ भाइ-बहीन हमरालोकनि, माय-बाबूजी, हमर दूनू बहिनोइ, नोकर-दाइ आ पन्द्रह दिनक एक टा भगिनी । मुदा लगैत अछि जेना एतय क्यो नहि हो, हम एकसर होइ अइ मकानमे ।

अपन कोठलीमे पड़ल छी । उदास दुपहरिया बीति रहल अछि । रौदक धाही लागि रहल अछि । मुदा हम नहि उठैत छी । गेरुआमे मुँह गाड़ि पड़ले रहैत छी ।

नहि जानि कतेक काल बाद दरबज्जा क्यो खटखटबैत अछि । पाँच बाजि गेल– सभ दिन माय पाँच बजे चाह लऽकऽ जगबैत अछि । आँखि मलैत उठैत छी आ दरबज्जा खोलैत छी । माय नहि, नोकर ठाढ़ अछि । चाह लऽकऽ बिछौनपर बैसि एक घोंट पीबैत छी । एकदम ठंढा । भरिसक बड़ी कालसँ दरबज्जा लग ठाढ़ छल । नौकरकेँ फेरसँ बजाकऽ चाह गरम करबाक बात सोचियो कऽ नहि कहैत छियैक । एक्के घोंटमे सौंसे प्याली खतम कऽ प्याली खिड़कीपर राखि दैत छियैक ।

उठिकऽ दोसर कोठलीमे अबैत छी, माय अपन नतिनीकेँ दूध पिया रहल अछि । लिली-नीली ओतहि बैसल अछि । उमा बिछौनपर पड़लि अछि, हमरा देखितहिँ आँखि बन्द कऽ लैत अछि । इला भरिसक भनसाघरमे व्यस्त अछि । धीयापुता सभ बाहर खेलाय गेल अछि भरिसक । हम किछु काल अनेरे ओइ कोठलीक चौखटिपर ठाढ़ रहैत छी । फेर बाहरवला कोठलीमे अबैत छी । हमर दुनू बहनोइ कोनो गप्प कऽ रहल छथि हमरा देखतहि चुप्प भऽ जाइत छथि । हम किछु काल ओहू ठाम गुमसुम रहैत छी । ओहो सभ चुप्प रहैत छथि । हम बाहर बरण्डापर आबि जाइत छी । बरण्डापर राखल चौकीपर बाबूजी सूतल छथि आ जोर-जोरसँ कोनो किताब पढ़ि रहल छथि । भरिसक शेल्फ महक कोनो अंग्रेजी नावेल थिकै । बाबूजीकेँ पलखति नहि रहैत छनि, पढ़बाक मौका कम्मे भेटैत छनि, मुदा जखन पढ़ैत छथि, ओहिना जोर-जोरसँ । साँझ भऽ रहल अछि। बाबूजीक आँखि कमजोर छनि, कतेको बेर चश्माक लेन्स बदलबाक चर्चा कऽ चुकल छथि । हम उठिकऽ स्विच आन कऽ छैत छियैक । बाबूजी चौंकैत छथि आ एक बेर हमरा दिस ताकि फेर पढ़य लगैत छथि ।

हम फेर बैसि जाइत छी । दू चारि पाँती सुनिकऽ लगैत अछि जेना बाबूजी 'डाक्टर जिवागो' पढ़ि रहल छथि । हमहूँ एक बेर एकरा पढ़ब– हम सोचैत छी।

भरि दुपहरिया चौकी तर ओंघाइत कुकुर नहि जानि कतय गलीमे लापता भऽ गेल छैक आ साँझक झलफलमे ओकर मलिकाइनक व्याकुल पुकार बेर-बेर गूंजि रहल छैक ।

बाहर अन्हार पसरल जाइत अछि । हम उठिकऽ फेर कोठलीमे आबि जाइत छी । मुदा लगैत अछि जेना कोठलीमे अखनो एक टा उदास जरैत दुपहरिया बन्द हो ।

मीराकेँ लेबय आयल छी । आइयो छुट्टीक दिन अछि— रवि ।

मिनी बड़ प्रसन्न अछि । पप्पा आफिससँ अयलैक अछि । बेचारी इएह बुझैत रहल अछि जे पप्पा आफिसमे छलैक । ओकरा कोरामे लऽ बेर-बेर चुम्मा लैत सोचैत छी जे कतेक सुन्नर भेल जाइत अछि दिन-दिन । गुड्डी सेहो मायक कोरासँ टुकुर-टुकुर तकैत अछि । ओकरो दोसरो हाथे घीचि कोरामे लैत छियैक । मीराक आँखिमे एक टा व्यंग्य स्पष्ट झलकि जाइत छैक– एतेक दिनसँ एक्को बेर

टेलीफोनोपर हाल पुछलियैक आ आइ दुलार चुआ रहल छी ! हम ओकरा देखियो कऽ अनठा जाइत छी ।

"चलब ?" हम अपन अयबाक उद्देश्य प्रकट करैत छी ।

"कोन फायदा ? चाह लबैत छी अहाँ लेल ।"

मीरा चल जाइत छथि आ हम दुनू हाथसँ दुनू बेटीकेँ सम्हारने बैसल रहि जाइत छी । मुदा चाह लऽकऽ मीरा लगले पहुँचैत छथि । हम चाह पीबि उठय चाहैत छी ।

"चलैत छी ।"

"खाकऽ जायब, माय कहलक अछि ।" कहिकऽ मीरा ओतहि ठाढ़ि रहैत छथि । मुदा हमरा नहि फुराइत अछि जे आगू कोन गप्प करी ।

आफिससँ छुटिकऽ देखैत छी सभ टा समान बान्हल आ सभ क्यो एक्के कोठलीमे बैसल । हम सभक मुँह ताकय लगैत छी । क्यो किछु नहि बजैत अछि । किछु काल बाद बाबूजी कहैत छथि— सँझुका स्टीमरसँ हमरालोकनि जा रहल छी । आइ पन्द्रह-बीस दिनुका बाद हमरासँ बाजल छथि । मुदा हमरा अखन आश्चर्य नहि होइत अछि । हम हुनकासँ किछु दिन आर रहबाक आग्रह सेहो नहि करैत छियनि । इहो नहि कहैत छियनि जे अहाँक घाव अखन ठीक नहि भेल अछि, मायक दवाइ सेहो चलिये रहल छैक, उमाक बच्चा छोट छैक, किछु दिन आर ठहरि जाउ । हम तऽ कोनो दोसरे चिन्तामे डूबि जाइत छी । हमरा एना गुमसुम चिन्तित देखि बाबूजी कहैत छथि— तोँ चिन्ता जुनि करह । गामपर लिखि देने छलियैक, कियाक टाका आबि गेल अछि ।

हम निश्चिन्त भऽ जाइत छी । हुनकालोकनिकेँ स्टीमरपर नीक जकाँ बैसा देलाक बाद बाहर अपनाकेँ बड़ विचित्र स्थितिमे पबैत छी । सभ गुम्मसुम्म, क्यो किछु नहि बजैत अछि । कहुना स्टीमरक घंटी बजैत अछि आ हम माय बाबूजीकेँ प्रणाम कऽ आ दुनू बहनोइकेँ नमस्कार कऽ स्टीमरसँ नीचाँ उतरि जाइत छी ।

स्टीमर दृष्टिसँ गायब भेलाक बादो बड़ी काल धरि जेटीपर ठाढ़ रहैत छी आ हिलकोरसँ थरथराइत गंगाकेँ देखैत छी । आ हमरा बेर-बेर मोन पड़ैत अछि बाबूजीक विदा दैत आँखिमे थरथराइत टूटल सपना ।

हँ, एक सपना हुनको टूटल छनि । समर्थ बेटाक कान्हपर सभ टा बोझ दऽ बुढ़ापा शान्तिपूर्वक बितैबाक सपना । आ समर्थ हम भऽ गेल छी, ओहो जनैत छथि । नीक नोकरी करैत छी, नीक कमाइत छी ।

ऑफिससँ टेलीफोन कऽ देने छलियनि, मीरा आबि गेल छथि । अबिते पुछैत छथि, हुनका लोकनिक जयबा काल हमरा खबरि नहि दऽ सकैत छलहुँ ?

"कोन फायदा ?" हमर मुँहसँ अनायास हुनके शब्द बहरा जाइत अछि । असरि बेशी होइत अछि । किछु काल ओ ओतहि मर्माहत ठाढ़ रहैत छथि आ फेर गुड्डीकेँ कोरामे उठा भनसाघर दिस चल जाइत छथि ।

मिनी पप्पाकेँ पाबि बड़ प्रसन्न अछि । झट हमर छातीपर सवार भऽ जाइत अछि ।

"पप्पा, खिस्सा कहू ।"

कतेक दिनसँ क्रम टूटि गेल अछि । झट कोनो मोने नहि पड़ैत अछि । मोन पड़ैत अछि एकटा पुरना खिस्सा जे हमर बाबी हमरा सभकेँ कहैत छल— एकटा भिखारी रहय, ओकरा एकटा देवताक श्राप रहैक । एक गाम माँगय तैयो एक्के तामा होइक आ सात गाम माँगय तैयो एक्के तामा... ।

खिस्सा सुनैत मिनी सूति रहैत अछि । मुदा ई पुरना कथा अपन मुँहसँ पहिल बेर कहैत काल एकटा नव अर्थबोध होइत अछि, जेना ओइ शापक मारल ओ भिखारिन नहि, सम्पूर्ण निम्नमध्यवर्गीय नोकरीपेशा लोक छैक, एक गाम मांगू तैयो एक्के तामा, सात गाम मांगू तैयो एक्के तामा ।

खयला-पीलाक बाद लाइट आफ कऽ मीरा बगलमे सूतैत छथि तऽ हमर हाथ अनायास छुबैत छनि । मुदा स्पर्शक भाषा जेना ओ बिसरि गेल छथि । अपना दिस घिचैत छियनि तऽ स्पष्ट विरोधक अनुभव होइत अछि । जोर करैत छियनि तऽ एतेक तेजीसँ ओ किछु एना देहसँ लागि जाइत छथि जेना कहि रहल होथि— ओही लेल बजौलहुँ अछि ने, लिअऽ ।

मास दिनक भितरे बाबूजी एक बेर फेर आबि जाइत छथि— अपन आफिसक काजे ।

हम अपनाकेँ अपराधमुक्त अनुभव करैत छी आ जहियासँ माय बाबूजी लोकनि गेल छलाह, हम एक टा अपराधभावसँ क्षुब्ध छलहुँ । बाबूजीकेँ फेर अयलासँ ओ भाव नष्ट भऽ जाइत अछि । हुनको व्यवहार खूब स्वाभाविक छनि । एकदम सहज, कृत्रिमता नहि, पछिला बेरक अप्रिय प्रसंगक कोनो गन्ध नहि । हम निश्चिन्त भऽ जाइत छी ।

ओहि दिन हमर परीक्षाक परिणाम आबि जाइत अछि । बाबूजीकेँ अइ परीक्षाक सम्बन्धमे किछु ज्ञात नहि छलनि । हम बुझा दैत छियनि जे एकटा डिग्री छैक जाहिमे ई पोस्ट छैक । एकरा हम कय गेल छी, तकरे परिणाम आयल अछि । दोसर पार्टक परीक्षा अक्टूबरमे छैक । दुनू पार्ट कयलासँ प्रमोशनमे फायदा हैत ।

बाबूजी उत्साहित भऽ जाइत छथि— दोसरो पार्ट दऽ दै ।

हम कोनो उत्तर नहि दैत छियनि । बाबूजी फेर अपन बात दोहरबैत छथि, तखन कहय पड़ैत अछि जे पछिला कर्ज सभ सधल नहि अछि । फीस अहि मासक बीस तारीखकेँ देबाक छैक आ दरमाहा भेटबामे दस दिन देरी रहत । सुनिकऽ बाबूजी चुप्प भऽ जाइत छथि । हम बात बदलि दैत छियैक ।

स्टीमर घाटपर रिक्शासँ उतरितहिँ बाबूजी अपन धोतीक गेठीसँ किछु मोड़ल-माड़ल मैल नोट बाहर करैत छथि, जकरा हमर हाथ सकुचायलो पर लऽ लैत अछि । आ हम शीघ्रतासँ तेसर श्रेणीक काउन्टर दिस दौड़ैत छी । बडका क्यू देखि हताश होमय लगैत छी । मुदा तखने लाइनमे ठाढ़ हमरे आफिसक एक टा कर्मचारी पूछि बैसैत अछि— "लाउ, हमरा दिअऽ सर, टिकट कीनि दैत छी, कतऽ जयबाक अछि ?"

'दरभंगा' कहि ओ मोड़ल-माड़ल मैल नोट ओकर हाथमे रखैत ओकर आकृतिकेँ हम खूब ध्यानसँ देखैत छी— मुसकिया तऽ नहि रहल अछि ।

ऑफिससँ छूटिकऽ जहिना कोठलीमे पैर दैत छी, मीरा नोटक एक टा गड्डी हाथमे रखैत कहैत छथि— "घरसँ आयल अछि ।"

हम चौँकैत छी । नोट देखिकऽ नहि, आ अहू बातपर नहि जे मीरा आइ एतेक दिनपर हमरासँ बाजल छथि । हम तऽ कोनो आर बातपर चौँकैत छी । मीरा खाली घरपरसँ आयल अछि, कहलनि अछि, अहाँक घरसँ नहि । मोनमे किछु लगैत अछि जकरा दबा हम नोट गनऽमे लगैत छी । दू सय रुपैया छैक, जकर बीचमे राखल मनीआर्डर कूपनपर लिखल छैक— किछु रुपैया पठा रहल छियऽ— फीस अबस्से जमा कऽ दिअहक ।

कनियाँ आ बच्चा सभकेँ आशीष ।

हम मीरा दिस तकैत छी । ओ माथा झुकौने ठाढ़ि छथि । मुदा हमरा लगैत अछि जेना अखने ओ किछु कहतीह जे सुनबाक हम कहियासँ प्रतीक्षा कऽ रहल छी ।

[1968]

यात्रा : हेरायल बाटपर

गामक सिमानपर आबिकऽ ओकर डेग थकमका गेलैक ।

सोचिये ने पाबि रहल छलि जे कोम्हर जाय । एक टा रस्ता नदी पार जयबाक छलैक । ओहि पार घाटपर नाव लागल छलैक । घटवार हाक दिते नाव एहि पार लऽ अनतैक आ ओहि पार पहुँचते दोसर गामक सिमान शुरू भऽ जयतैक । दोसर रस्ता पश्छिम जाइत छलैक— पहिने ब्लॉक कम्यूनिटी हॉल, फेर हाइ स्कूल आ फेर रेलवे लाइन । आ लाइनक ओहि पार दोसर गाम ।

ओकरा लेल दुनू रस्ता बराबरि छलैक । दुनू अनचिन्हार । गामक सिमान कहिओ नहि लँघने छल । कोनो कर-कुटुम्ब सेहो नहि छलैक— ने एहि कात ने ओहि कात । कोम्हर जाय । यैह सोचैत गामक सिमानपर विवश ठाढ़ि छलि ।

एक टा रस्ता आर छलैक । ओ रस्ता जाहि दऽकऽ ओ गामसँ बाहर आयलि छलि । पहिने कुम्भीसँ छारल पुरनी पोखरि, फेर भालसरिक बूढ़ धुथुर गाछ आ तखन शिव मन्दिर । एही बाटे ओ घरसँ बहरायलि छलि आ गामक सिमानपर पहुँचलि छलि । मुदा ओहि बाटे घुरबाक आब कोनो आशा नहि छलैक । आँगनसँ बहराइत काल ई आशा छलैक जे मीना ओकरा घुरा लेतैक, एना नहि जाय देतैक । एही आसपर ओकर डेग थमि-थमिकऽ उठल छलैक, सभक कुत्सित हँसीकेँ सहैत ओ घुरि-घुरिकऽ बेरि-बेरि पाछू तकने छलि । मुदा मीना आँखिसँ घृणा उगिलैत, मौन, मुदा कोनो पाथर जकाँ दृढ़ ठाढ़ि छलैक ।

निराश ओ डेग बढ़ा देने छलि । पोखरिक पुबरिया भीड़पर दने होइत, भालसरिक नीचाँसँ होइत ओ शिव मन्दिरसँ आगू बढ़ि गेलि छलि ।

गामक सिमानपर आबि मुदा फेर थकमका गेलि । दू टा अनचिन्हार बाटमे एक टा चुनबाक छलैक आ हीरा अनिश्चयमे पड़लि छलि ।

प्रात होयबामे बेसी विलम्ब नहि छलैक । मुदा अन्हार ओहिना जमकल छलैक । बाट धरि नीक जकाँ नहि सुझैत छलैक । मुदा एहि गामक प्रत्येक बाटसँ ओ तेना परिचित छलि जे नदीक कछेर धरि अनायासे पहुँचि गेलि छलि ।

आगू दुनू बाट अनचिन्हार छलैक । पाछू घुरबाक बाट बन्द छलैक । जाहि गाममे आइ धरिक तीस वर्ष शानसँ बितौने छलि, आइ ओतऽ घुरबाक बाट बन्द छलैक । आ बाट बन्द कयने छलैक मीना । ओ मीना जकरा नौ मास पेटमे रखलक, अपन शोणित पियाकऽ पोसलक । ओ कहिओ स्वप्नोमे नहि सोचने छलि जे मीना एना बदला लेतैक, ओकरा गाम-घर छोड़बापर विवश कऽ देतैक । ओकरा ओ सभ चेहरा मोन पड़लैक जे आइ मीनाक संग मिलि ओकरापर आङुर उठा रहल छलैक जेना ओहि चेहरा सभकेँ ओ चिन्हैत नहि होइ ! एक-एक कऽ असली चेहरा ओ देखि चुकलि छलैक । खाली हुनके सभकेँ उत्तर देबाक रहितैक तँ ओ दऽ देति । मुदा आइ तँ ओकरा सभक बीच मीना ठाढ़ि छलैक । ओकरा ओ की उत्तर दितैक ? चुपचाप मूड़ी झुका आङनसँ बाहर निकलि आयलि ।

मुदा जहिया मीनाक जन्म भेल रहैक आ गामवला सभ एहिना आङुर उठौने रहैक, तँ ओ मूड़ी तनने ठाढ़ि रहलि छलि । ओकर स्वामी दू सालसँ निपत्ता छलैक । गाममे सभकेँ बुझल छलैक । भरि गाम कनफुसकी चलि रहल छलैक ।

मुदा हीराक बाप महेश बाबू सभक वाके बन्द कऽ देलथिन । बीच गाममे ठाढ़ भऽकऽ गरजऽ लगलाह— "जकरा साहस छैक, कने सामने आबिकऽ बाजओ, तखन बुझबै । कने हमहूँ तँ ओकरासँ पुछियैक जे अहाँक जमाय कहिया गाम आयल आ कहिया बेटी सौरी-घर गेलि ? कने हिसाब मिलाकऽ तँ देखू ।"

ककरो साहस नहि भेलैक । महेश बाबूसँ सभ डेराइत छल । बड़ बजंता छलाह । ककरा कोन बात कखन कहि बैसथिन, तकर कोनो ठीक नहि । एक टा आरो बात छलैक । महेश बाबूसँ बेसी लोक सूदिपर रुपैया लेने छलनि आ चिट्ठी बना देने छलनि । कहिया ककरापर नालिश भऽ जयतैक, तकर कोनो ठीक नहि । सभ फैसला कयलक— गामक गप्प छैक, झँपले रहय ताहीमे गामक इज्जति ।

ओना, सदाचारक मामलामे महेश बाबू गाममे सभसँ आगाँ रहैत छलाह । कोनो अनैतिकतापर पहिल आङुर हुनके उठैत छलनि । सूतल गामकेँ सभसँ भोरे प्राती गाबिकऽ वैह उठबैत छलाह— 'जागिये कृपा निधान पंछी बन बोले !' शिव मन्दिरमे जलक पहिल लोटा हुनके ढराइत छल । आ सभ रविक कीर्त्तनमे मगन भऽकऽ वैह गबैत छलाह— 'कखन हरब दुख मोर हो भोला बाबा !'

ओना, भोला बाबा कोनो दुख नहि देने छलथिन । जमीन छलनि कम, मुदा

उपजैत छलनि बेसी । सूदिक रुपैया साले-साल बढ़नि । खाली एक टा बेटा नहि छलनि । बहु बेसी वयसमे एकटा बेटीकेँ जन्म दऽ सांसारिक बन्धनसँ मुक्त भऽ गेल छलथिन । मुदा हीराक मुँह देखि महेश बाबू सभ-किछु बिसरि गेलाह । ओकरा 'बेटा' कहैत-कहैत ईहो बिसरि गेलाह जे बेटीकेँ सासुर पठयबाक चाही, वैह ओकर स्थान छैक । तेहन जमाय ताकि अनलनि जे हीराकेँ कहियो विदा नहि करऽ पड़नि । ने घर-द्वार ने कोनो सम्बन्धी । एहन घरजमाय पाबि महेश बाबू निश्चिन्त भऽ गेलाह ।

हीराकेँ मुदा वर पसन्द नहि अयलैक । कारी मुँहपर बबक अनगिनती दाग आ देहपर घम्हौड़ीक मोट तह । पयरमे बेमाय फाटल आ हाथक तरहत्थी खुरदुर । हीराकेँ चतुर्थिये राति जी ओकाय लगलैक ।

मुदा महेश बाबू प्रसन्न छलाह । जमाय सभ टा भार सम्हारि लेलकनि । उपज बढ़ऽ लगलनि आ सूदिक रुपैया सेहो बढ़ऽ लगलनि । जमाय भरि दिन कोल्हुआ बड़द जकाँ खटनि । सभसँ अधिक महेश बाबूकेँ एकर प्रसन्नता छलनि जे जमाय मतिशून्य छलनि । एकदम सुधंग । दिन भरि खटनि आ जे किछु आगाँमे राखि देथिन, चुपचाप खा लेनि । कखनो बहस नहि, कोनो बातक रूसाफुल्ली नहि ।

हीराक पैघ-पैघ स्वप्न छलैक । ओकरा बापपर तामस भेलैक— एहिसँ तँ यैह ठीक होयतनि जे हमरा इनार-पोखरिमे डुबाकऽ मारि दितथि । मुदा, फेर ओ परिस्थितिसँ समझौता कऽ लेलक । अपन बाट ताकि लेलक । पतिक उपस्थिति-अनुपस्थिति ओकरा लेल नगण्य भऽ गेलैक ।

सुधंग पतिकेँ आर किछुसँ मतलब भलेँ नहि होइ, एक बातसँ खूब मतलब छलैक । आवश्यकता पड़लापर एक टा पत्नी ओकरा चाहिऐक— खाहे जेना होइ । खाहे जेहन होइ । मुदा हीराकेँ असह्य भऽ गेलैक । सभ दिन खटपट होमऽ लगलैक ।

महेश बाबूकेँ अनिष्टक आशंका भेलनि । हीराकेँ बुझौलथिन— "महादेव माटियोक महादेवे होइत छथिन । ओकर अवहेलना नहि करी ।"

हीरा हुनकर बातक मर्म नहि बूझि सकलनि । एक दिन साफ-साफ कहि देलकैक— "बाबू अहाँकेँ उठा अनलनि अछि, ठीक अछि । भरि पेट खाउ, पीबू आ सभक दृष्टिमे हमर स्वामी बनल रहू । एहिसँ बेसीक कोनो उम्मेद नहि राखू ।"

पतिकेँ प्राय: ई शर्त मंजूर नहि भेलैक । एक दिन रौद चढ़ि अयला धरि

माल-जाल बथानपर बान्हल रहलैक । भूखल-पियासल जानवर डिरिआय लगलैक तँ महेश बाबूकेँ चिन्ता भेलनि । भरि गाम ताकि अयलाह । खेत-खरिहान सेहो ताकि अयलाह । सभ ठाम लोक दौड़ौलनि मुदा निरर्थक । माथ धऽ बैसि गेलाह । भोरसँ साँझ धरि ओहिना बैसल रहलाह, मुदा जमाय घुरिकऽ नहि अयलनि ।

हीराकेँ निष्कृति भेटि गेलैक— जाय दे, बलाय टरल । सभ दिनक झिकझिकसँ मोन अकच्छ भऽ गेल रहैक । बड़ प्रसन्न भेलि ।

सत्रह वर्षक हीरा जाहि दिन मीनाकेँ जन्म देलकै, ओकर पति दू वर्षसँ निपत्ता छलैक । गामवला सभ आङुर उठौलकै, मुदा महेश बाबू सभकेँ चुप्प कऽ देलथिन । मुदा आङन आबि हीराकेँ एतबा अबस्स कहलथिन— "महादेव माटियोक महादेवे होइत छैक । ओकर अवहेलना नहि करी । हम कहने रही ने ! देखि लियऽ, आइ ओ रहैत तँ गामवलाकेँ बढ़ि चढ़िकऽ बजबाक साहस होइतैक ?"

एतेक दिनुका बाद बापक बातक मर्म ओ बूझि सकलि । सत्ते, आइ ओ रहितैक तँ कोनो बखेड़ ने होइतैक । बाबू ठीके कहैत छलाह ।

गामोक लोक मुदा झूठ नहि कहैत छलैक जे मीना गामक जमींदारक बेटा आनन्द बाबूक छलैक । ओहने आकृति, ओहने गोर अतत्तह । हीरा अपनो बड़ सुन्नरि छलि । मुदा मीनाक तँ जोड़ भेटब मस्किल छलैक । पहिने हीराकेँ कने-कने सन्देहो होइक, मुदा जेना-जेना मीना चेतन होइत गेलैक, आकृतिक समानता स्पष्ट होइत गेलैक । ओकर सन्देह विश्वासमे बदलि गेलैक । ठीक अपन द्विरागमनक दिन अपन कनियाँकेँ भीड़-भाड़मे छोड़ि आनन्द पछुआर देने आयल छलैक । हीराकेँ नीक जकाँ मोन छलैक सभ टा ।

तकर बाद किछु मोन नहि रहलैक । मीनाक जन्मक तीन साल बाद सोनाक जन्म भेलैक । ओकर रंग पिण्डश्याम छलैक, मुदा नाक-कान हीरे सन पोछल-पाछल । हीरा विश्वासपूर्वक किछुओ नहि सोचि सकलि ओहि बेर ।

सोनोक जन्मक पाँच बर्ष बाद लल्लूक जन्म भेलैक । महेश बाबू नातिक मुँह देखि अपन लालसा पूर कयलनि । मुदा एहि क्रमसँ आब हुनका डर लागऽ लगलनि । भरिसक अपन मृत्युक पूर्वाभास भेलनि आ ई सोचि आतंकित भऽ गेलाह जे हुनकर बाद हीरा एतेक सुरक्षित नहि रहि सकतनि । लोकक कनफुसकी कहियो ललकारमे बदलि जयतैक आ एकसरि हीरा ओकर मोकाबिला

नहि कऽ सकतनि । तेँ जखने मीना दस वर्षक भेलनि, एक टा वर ताकि अनलनि । छल तँ ओहो बिना घरद्वार आ सर-सम्बन्धीक मुदा देखैत बड़ सुन्नर । बीसक वयस आ गठल देह । हीराकेँ जमाय पसिन्न पड़लैक ।

आ जाहि दिन मीनाक विवाह भेलैक, सत्ताइस वर्षक सासु हीराकेँ बजा महेश बाबू कलथिन— "हमर आब कोनो ठीक नहि । बेटी-जमायक भविष्य तोरे हाथ छौक । गामवला जमायकेँ कान भरतौक, अण्ट-शण्ट सिखौतौक । मुदा तोँ अपना दिससँ होशियार रहिहेँ, कहियो कोनो बातक भनक नहि लगैक ।"

आ मीनाक विवाहक सालो ने पुरलैक कि सत्ते महेश बाबूक बजाहटि आबि गेलनि । आब भोरे पराती गाबिकऽ सूतल गामकेँ क्यो नहि उठबैत छल । भोरे प्रातस्नानक हेतु नदी दिस जाइत काल पंचदेवता आ पंचकन्याक नाम जोर-जोरसँ क्यो नहि उच्चरित करैत छल । शिवलिंगपर आब जलक पहिल लोटा रौद धिपलापर क्यो चढ़ा दैत छल आ रवि दिनक कीर्त्तन जखन क्यो 'कखन हख दुख मारे हो बाबा' गबैत छलैक तँ सभकेँ हुनकर अभाव खटकैत छलैक— ई नचारी के गाबि सकैत छल हुनका सन ?

हीरा खूब सम्हरि गेलि— आब के करितैक ओकर रक्षा मौका-कुमौका ? धीया-पूता छोट छलैक, जमाय बाहरी आदमी छलैक, ओकरा ईसभ बुझबोक नहि चाहिऐक । कोन ठेकान, विश्वास भऽ जाइ । गामोवला सभ पट्टी पढ़यबे करतैक ।

सोनाक जन्म बेर बड़ फसाद भेल रहैक । हरदम आङनमे भीड़ लागल रहैक । प्रत्येक स्त्रीकेँ सोनाक चेहरामे अपन पतिक चेहराक आभास बुझाइक । कतेको आङनमे महाभारत मचल । मुदा दिनेश बेचारा नाहक बदनाम भेल । ओ कलकत्तासँ आयल छल । हीराक लेल एक टा नीक सन साड़ी अनने छलैक, हीरा टाका पठौने छलैक । ओकर बक्सासँ जखन ओ बढ़ियाँ साड़ी बहरयलैक, ओकर पत्नी बड़ प्रसन्न भेलैक । मुदा ओ जखन ई बुझलकै जे ओ साड़ी हीरा लेल छलैक, छाती पीटऽ लगलैक । भीड़ जमा भेलैक आ ओही दिन सभकेँ सोनाक असली बापक पता लागि गेलैक । हीरा खूब हँसलि छलि— बेचारा, बदनाम, बेलज्जति !

आब मुदा कोनो काण्ड नहि होयबाक चाही । बाबू नहि रहलाह । गाम बैरी अछि । सम्हरिकऽ रहबाक चाही— हीरा फैसला कयलक ।

आइ गामक सिमानपर एकसरि विवश ठाढ़ि हीरा सोचि रहलि छलि जे

लाख चेष्टा कयलोपर ओ नहि बाँचि सकलि । आइ सौंसे गाम ओकर मुँहपर थुकलकैक । स्वयं ओकर बेटी ओकर मुँहपर थूकि कऽ घृणासँ धधकैत आँखिसँ तकैत रहलैक । जाहि मीनाकेँ अपन शोणित पियाकऽ पोसलक, ओ एहन भऽ जयतैक से नहि सोचने छलि । बारह बर्षक मीना कोना कऽ सकलैक एतेक पैघ काण्ड–ओकरा एखनो आश्चर्य भऽ रहल छलैक ।

नहि जानि, कोना दुनू गोटेक आँखि लागि गेलैक, समयक ठेकान नहि रहलैक । मीना बाहरसँ कोठलीक जिञ्जीर बन्द कऽ देलकैक आ सौंसे गामकेँ आङनमे बजा अनलकैक । आङनमे हल्ला-गुल्ला मचि गेलैक ।

हल्ला-गुल्ला सुनि ओकर आँखि खुजि गेलैक । लगमे फोंफ कटैत पुरुषकेँ देखलक आ दौड़िकऽ केबाड़क फाँकसँ आङनमे तकलक । डेराकऽ पाछू हटि गेल– आब कोन उपाय करू ?

ओकरा जगौलकैक । आङनमे खूब हल्ला मचल छलैक । ओ उठिते दरबज्जा दिस दौड़ल, मुदा फाँकसँ तकिते जेना हाथ-पयर सुन्न भऽ गेलैक । ओतहि लुद्द दऽ बैसि गेल ।

हीराकेँ महेश बाबू मोन पड़लथिन । आइ ओ रहितथिन तँ ककरो एना आङन पैसबाक साहस होइतैक ? ओ अपन घरमे सूतलि छलि— ताहिसँ अनका मतलब ? ओ ककरो घर हुलकी देबऽ जाइत छैक ?

मुदा भीड़मे सभसँ आगू ठाढ़ि मीनाक उत्तेजित चेहरा देखिकऽ गामवलाक प्रति ओकर तामस घटि जाइत छैक । गामवलाक कोन दोष ? आइ पन्द्रह वर्षमे एको बेर एहन साहस भेलैक ओकरा सभकेँ ? मुदा आइ तँ अपने बेटी सभकेँ बजा अनने छैक । गामवलाकेँ तँ जवाब दऽ देबैक, मुदा अपन बेटीकेँ की कहबैक ? हीरा किछुओ नहि सोचि सकलि ।

आङनमे भीड़ उत्तेजित भऽ रहल छैक । लालटेन सभ ऊपर उठल छलैक आ सभ ओकरा बाहर निकलबाक हेतु ललकारि रहल छलैक । आब कोनो दोसर रस्ता नहि छलैक । एक बेर जमीनपर सुन्न भेल बैसल पुरुषकेँ देखलक आ केबाड़ खोलि देलकैक ।

केबाड़ खुजिते पुरुष घरसँ बाहर पड़यलैक । मुदा आगूएमे ठाढ़ि मीना ओकर हाथ पकड़ि लेलकैक । भीड़सँ दू चारिटा अपशब्द बहरयलैक आ फेर सभ शान्त ।

हीरा अपन बेटीक साहस देखि दंग रहि गेलि । बीच आङनमे सभक बीच

अपन स्वामीक हाथ पकड़ने ठाढ़ि छलि । एक्के रातिमे कतेक बदलि गेलि छलैक ओ छौंड़ी, जेना एकदम अनचिन्हार भऽ गेल होइ ।

ओ कोठलीसँ बहरायलि । लालटेन सभ कने आर ऊपर उठौलक आ मुँहपर इजोत पड़लैक । भीड़मे सभक चेहरापर घृणापूर्ण हँसी छलैक । कखनो क्यो आगू बढ़ि जोरसँ चिचिग्रा उठलैक– "नीच, कुलटा ! निकल, निकल एखने ऐ गामसँ ।" हीरा तकर अवसर नहि देबऽ चाहैत छलैक । ओ स्वयं आङनसँ बाहर आबि गेलि । एक बेर सोचलक जे सोना आ लल्लूकेँ, दोसर कोठलीसँ उठा संग लऽ लेअय, मुदा पाछू ठाढ़ भीड़ आ आगू पसरल अन्हार देखि विचार बदलि देलक ।

बहराइत काल आस बाँकी छलैक जे मीना अबस्स रोकि लेतैक । मुदा ओ आगू बढ़ैत गेलि, क्यो पाछूसँ नहि बजौलकैक ।

पोखरिक कात धरि भीड़ संग अयलैक । मीना तखनो सभसँ आगाँ ठाढ़ि छलैक—पतिक हाथ ओहिना दृढ़तापूर्वक पकड़ने । हीराकेँ लगलैक जेना ओतऽ ओकर बेटी नहि, अपन पतिक हाथ पकड़ने एक टा दोसर स्त्री ठाढ़ि छलैक, जकरा आँखिसँ घृणा बरसि रहल छलैक ।

आस टूटि गेलैक । ओ डेग झटकारलक—भालसरीक गाछतर देने होइत, महादेवक मन्दिरक आगूसँ होइत ओ गामक सिमानपर आबि गेलि । मुदा आगूक दुनू बाट अनचिन्हार छलैक । पाछू घुरबाक बाट बन्द छलैक । हीरा अनिश्चयमे ठाढ़ि छलि ।

आब अधिक काल ठाढ़ो रहब संभव नहि छलैक । कनेक कालमे प्रात भऽ जयतैक नीक जकाँ आ बाट चालू भऽ जयतैक । प्रत्येक आबऽ-जायबला व्यक्ति ओकरा देखिकऽ घृणापूर्वक हँसतैक । ओकरा आगू बढ़ऽ पड़तैक—खाहे कोनो दिस । अधिक सोचबाक अवसर नहि छलैक । नहि जानि, किएक आइ ओकरा अपन पति मोन पड़ि रहल छलैक । एना पति कहियो ने मोन पड़ल रहैक । सुननामे आयल छलैक जे कोनो गाममे भनसीयाक काज करैत छलैक । एखन चेष्टो कयलापर ओहि गामक नाम मोन नहि पड़ि रहल छलैक । ओ मोन पाड़बाक चेष्टा कयलक । फेर अपने हँसी लगलैक एहि चेष्टापर । मोन पाड़िये कऽ की होयतैक ? ओतऽ कोन मुँह लऽ कऽ जायत ?

ओ फैसला कऽ लेलक । नदी पार जयबाक विचार छोड़ि देलक । घटबार ओहि पार सूतल छलैक । ओकरा के जगाबय चिचिया कऽ ?

ओ दोसर बाटे आगू बढ़लि । पहिने ब्लौकक कम्यूनिटी हौल, फेर हाइ स्कूल आ तखन रेलवे लाइन । लाइनसँ नीचाँ उतरैत काल एकाएक ओ अपन निश्चय बदलि लेलक । सिगनल झुकल छलैक आ दूरसँ गाड़ीक इजोत देखा रहल छलैक ।

दोसरे क्षण पटरीपर चित्त पड़लि छलि आ ओकर दुनू हाथ प्रार्थना-सन मुद्रामे जुड़ल छलैक ।

[1969]

संभावना

बिचला महलमे हमरालोकनिक अतिरिक्त एकटा बड़का हौलमे कालेजक किछु विद्यार्थी आ एकटा नवयुवक सिक्ख व्यापारी सेहो रुकल छल । कालेज बन्द छलैक, तेँ विद्यार्थी एको टा नहि छल आ ओ नवयुवक व्यापारी हफ्ताक हफ्ता गायब रहय । नाम छलैक सरदार जोगिन्दर सिंह । जहिया कहियो घंटा दू घंटा लेल आबय, बाबूजीक हालचाल पुछय आ जाय लागय तँ कहय– "ई नीचावाला सिनहा यदि कोनो बदमाशी करय तँ हमरा कहब ।"

हम हँसिकऽ टारि दिऐक । सिनहा लिलीक भाइक नाम छलैक । मकानक निचला हिस्सामे एक दिस ओ रहैत छल आ दोसर दिस एकटा बंगाली सज्जन रहैत छलाह । संघर्षरत, जर्जर । कोनो पोस्टआफिसमे किरानी । देखा-देखी कम्मेकाल होअय ?

मुदा ई सिनहा अजीव लोक छल । एकदम 'अनसोशल' । मासो संग रहलहुँ, मुदा ने गप्प-सप्प ने नमस्कार पाती । साँझमे नीचाँ उतरी । ओ लानमे कुर्सीपर बैसल भेटय । आरो कतेको कुर्सी खाली रहैक । बुदा बैसऽ कहियो ने कहय । हम तँ नवयुवक रही, ओकरासँ छोट रही । मुदा ओ तँ बाबूजीक सेहो लेहाज नहि कयलकनि कहियो । चुपचाप सिकरेट पिबैत बैसल रहय । क्यो आयल गेल धन्न सन ।

सिनहाक सम्बन्धमे बाबूजी अधिक काल कहथि जे एकर आकृति अंग्रेजीक कोनो प्रसिद्ध नाटकक पात्र सिनासँ मिलैत छैक जे क्रान्तिकारीक धोखामे पकड़ल गेल छलैक । ओ चिचियाइत रहल छल– 'आइ एजम सिना द पोयट । आइ एम सिना द पोयट ।' मुदा ओकर सुनबाइ नहि भेलैक आ हुकुम भेटलैक– "किल हिम फार हिज नेम ।"

आ ओही सिनहाक बहीन छलैक लिली । अपन भाइसँ कनियो कम विचित्र नहि । सिनहाक कोठलीसँ रेडियोक आवाज सुनि हम कौखन नीचाँमे थकमका जाइ । एकटा चेहरा खिड़कीक पल्लाक फाँकसँ किछु निहारय आ तुरत

रेडियो सीलोनक बदला 'आकाशवाणी कोलिकत्ता'सँ रवीन्द्र संगीतक स्वर आबऽ लागय । कौखन बाहरसँ घुमिकऽ आबी तँ दूरेसँ देखिऐक जे क्यो बाहर टहलि रहलि अछि । मुदा जखने समीप आबी कि तेना कऽ भीतर पड़ाय जेना कोनो गुण्डा बदमाश सामने पड़ि गेल होइ । मोन होअय जे पकड़िकऽ दू-चारि चाट दिऐक । खिड़कीसँ हुलकैत ओ आकृति, लानसँ पड़ाइत ओ छौँड़ी लिली छलि– मिस लिली सिनहा । सिनहाक छोट बहीन ।

मुदा लिलीक छोट बहीन गुलीसँ अनायास परिचय भऽ गेल एक दिन । हम नीचाँ ठाढ़ रही । सड़कपर एक झुण्ड स्कूल-कालेजक छौंड़ी सभ जा रहलि छलैक । तखने एकटा पुरुष ऊपरसँ दौड़ैत अयलैक आ सड़कपर जा ओकरा सभपर थूक फेकऽ लगलैक ! लड़की सभ चिचियाकऽ पड़ायलि । ओ आदमी अट्टहास करैत बेर-बेर थूकैत रहल ।

लगेमे लिलीक छोट बहीन ठाढ़ि छलि । बारह-तेरह बरखक । ओकरे पुछलिऐक– 'ई के थिक ?'

गुली आश्चर्य करैत बाजलि– अहाँ नहि चीन्हैत छियनि हिनका ? यैह तँ मकानमालिक छथि । ऊपर रहैत छथि । बेचारा बताह छैक । कहियो-कहियो झाँकमे एहिना छौंड़ी सभ पर थूकऽ लगैत छैक ।"

"तोरा डर नहि होइत छौक ?" हम हँसी कयलिऐक ।

"डर कथीक ? बेचारा एकदम गुम्मा छैक । ककरो किछु नहि कहैत छैक । चुपचाप अपन कोठलीमे पड़ल रहैत अछि आ कोठलीक देबालपर जूताक माला लटकौने रहैत अछि ।"

"जूताक माला ?" हम आश्चर्यसँ पुछलिऐक ।

गुली हमरोसँ अधिक आश्चर्य करैत बाजलि– "अहाँ नहि देखलिऐक अछि एखन धरि ? ओसारासँ नीचाँ उतरि ऊपर तकियौक, अपने देखबैक ।"

हम ओसारासँ उतरिकऽ ऊपर देखलिऐक ? रंग-बिरंगी जूताक माला कोठलीक बाहर टाङल छलैक । हमरा हँसी लागल– जोरसँ ।

तखने ओ बताह मकानमालिक सड़कसँ घुरल । हमरा ऊपर तकैत देखि बाजल– 'की देखयेन ? एरा सब हारामजादी ! ताइ हारामजादीक जन्ये जूतारे ई माला...'

ओ फेर पचसँ सड़क दिस थूक फेकलक आ दौड़ैत ऊपर चल गेल । मुदा एहि बेर हमरा हँसी नहि लागल । ओकर प्रलाप हमर कानमे गनगनाइत रहल – बड़ी काल धरि ।

गुलीसँ हमर दोस्ती पक्का भऽ गेल । ओ अधिक काल ऊपर आबय, आ हमरा सभसँ गप्प करय । अधिक काल दुपहरियामे आबय आ साँझ होयबासँ पहिने चल जाय । सिनहाक आफिस गेलाक बाद आबय आ सिनहाक घुरबासँ पहिने चल जाय ! जाइत काल कहय– चोली ! दादा बोकबे !

एक दुपहरिया ओ बड़ तमसायलि छलि । अबिते बाजऽ लागलि– "ई डब्लू दा सभ दिन आओत आ हमरा सभ दिन अहाँलोकनिकेँ अकच्छ करऽ पड़त !"

हम ओकरा पुचकारैत कहलिऐक– 'तोरा अयलासँ हमरा लोकनि अकच्छ किएक होयब ? तोँ सभ दिन आ, अबस्स आ ।'

गुली प्रसन्न भऽ कऽ विस्तारपूर्वक डब्लू दाक परिचय देबऽ लागलि । स्पष्ट छल जे ओकरा डब्लू दा पसिन्न नहि छलैक ।

ओहि राति गुली कनैत केबाड़ खटखटौने छलि । हम झट ओकर संग नीचाँ आयल छलहुँ–"दीदी दुखिताहि भऽ गेलि छलैक अकस्मात् आ दादा आफिसक काजसँ दू-चारि दिनक हेतु बाहर गेल छैक ।"

बिछौनपर लिली पीड़ासँ छटपटा रहलि छलि । हमरा देखिते गुली दिस जरैत आँखिसँ तकलकै । गुली सफाइ दैत कहलकैक– "बिगड़ नहि दीदी ! हमरा नहि देखल गेल तोहर दर्द । हिनका बजा अनने छी ।"

हमरा पहिने किछु नहि बुझायल । मुदा फेर सभ टा स्पष्ट होबऽ लागल। ओतेक राति कऽ मुस्किलसँ एकटा नर्स बजा अनलहुँ । भरि राति गुली दोसर कोठलीमे हमर कोरामे सूतलि रहलि आ बगलवाला कोठलीमे लिली कुहरैत रहलि ।

भोरे ओ नर्स चल गेलि ।

आ जखनसँ मिस्टर बोसक फ्लैटसँ घुरल रही, अतीतक स्मृतिमे भोतिआयल रही । बहुत रास अस्पष्ट छाया बन्द आँखिक सोझाँमे ठहरल रहय । तखने एक टा स्पष्ट छाया समीप आबि ठाढ़ भेल । आँखि खोलि देखलहुँ, मिसेज बोस ठाढ़ि छलीह ।

"तँ अहाँ हुनका सभकिछु कहि देबनि ?" प्रश्न कयलनि ।

"अहाँक की विचार ? हमरा कहबाक चाही कि नहि ?"

"हम अहाँकेँ बात पुछैत छी ।" हुनक स्वर तीव्र छनि !

"यदि कही 'नहि' तँ... ।

"अहाँक हकमे नीक होयत ।

"यदि कही 'हँ' तँ... ।

"अहाँकेँ निराशा होयत आ हमर कोनो अनिष्ट नहि । ओ हमरा प्राणसँ बेसी मानैत छथि । अहाँक विश्वास नहि करताह ।" ओ दृढ़तापूर्वक बजलीह।

"तखन तँ बेकार कष्ट कयलहुँ चिन्ताक कोन प्रयोजन !" व्यंग्य करबाक लोभ संवरण नहि भेल ।

"हम अहाँकेँ सावधान करऽ आयल छी जे अपन चेष्टासँ अहाँ हुनक दृष्टिमे नीच बनि जायब । हमर कोनो अनिष्ट नहि होयत ।"

"सहानुभूतिक हेतु धन्यवाद ।'' हम हँसिकऽ कहलियनि ।

ओ लोहछिकऽ पयर पटकैत चल गेलीह । हम हँसैत रहलहुँ, हँसिते रहलहुँ ! मुदा, कॉलेज जयबाक बात मोन पड़ल तँ हँसी रुकि गेल । तुरत तैयार भऽ सीढ़ीपर दौड़लहुँ । बीच सीढ़ीपर ककरोसँ जोरसँ धक्का लागल । क्षमा-चायना करैत ऊपर तकलहुँ तँ तकिते रहि गेलहुँ ।

सामने गुलीक डब्लू दा ठाढ़ छल ।

अन्हारमे अस्पष्ट पदचापक संग एकटा गर्म सांस हमर चेहराक समीप आबि गेल । हम उठबाक चेष्टा कयलहुँ ।

"घबड़ाउ जुनि । मिस्टर बोस बाहर गेल छथि आ हम तैयार भऽकऽ आयलि छी ।" मिसेज बोसक स्वर कानक समीप छल ।

"एकर अर्थ ?"

"बनू नहि ! अर्थ अहाँ जनैत छी । आइ दिनमे अहाँ सीढ़ीपर डब्लूकेँ देखने छलिऐक ! ई बात अहाँक पेटमे ओना नहि पचत । मुदा हम सौदा करबा लेल प्रस्तुत छी !" मिसेज बोस बेसी समीप आबि गेलि छलीह ।

"अहाँ कोना सोचलहुँ जे हमरा ई दाम चाही ?"

"हम नीक जकाँ जनैत छी । अहाँ राँचियोमे हमर कोठली दिस हुलकी-बुलकी दैत छलहुँ । अहाँक दृष्टि आइयो नहि बदलल अछि ।"

हमरा हँसी लागि गेल । अन्हारमे प्रायः ओ नहि देखि सकलीह । नहि तँ भभकि उठितथि ।

"अहाँ जबाब नहि देलहुँ !" किछु क्षण बाद हुनकर क्रुद्ध स्वर सुनलहुँ।

"जबाब देब हमरा आवश्यक नहि बुझाइत अछि ।"

हम पूर्ववत् हँसैत रहलहुँ । ओ पयर पटकैत चल गेलीह । गर्म साँसक कैदसँ हम छुटि गेलहुँ।

मुदा हम बेसी काल हँसि नहि सकलहुँ । हमर हँसी एकटा अट्टहाससँ दबि गेल । अन्हारमे एकटा जूताक माला झुलैत झलकल आ ओकर पाछाँ अट्टहास करैत एकटा विक्षिप्त चेहरा । अन्हारमे फेर सभ किछु बिला गेल आ एकटा नव चेहरा जूताक ओहि मालाक पाछाँ अट्टहास करैत बाजि उठल– से हारामजादीर जन्ये जूतोर ई माला...

एहि बेर ओ चेहरा हमरा मिस्टर बोस सन लागल ।

[1971]

समीकरण

बाहर बरखा भऽ रहल छलैक– टिपिर-टिपिर । भोरेसँ एहिना लधने छलैक– टिपिर-टिपिर आ सन-सन बसात। छुट्टीक दिन छलैक, बिछाओनपर पड़ल-पड़ल भरि दिन बिता सकैत छल, मुदा भोरे फैसला कऽ चुकल छल जे आइ दोसर डेरा अबस्से ताकि लेत । पार्टनर बैमानी कयने छलैक । गामसँ पत्नीकेँ आनि विधिवत् गृहस्थ बनि गेल छलैक आ ओकरा कोठली खाली करबाक नोटिस दऽ देने छलैक ! कोठली तँ ओ पहिने खाली कऽ चुकल छलैक, जाहिमे पार्टनर सपत्नीक अधिकार जमौने छलैक आ ओकरा भनसाघरनुमा बरण्डामे बर्त्तन आ चुल्हा सभक बीच ठेलि देने छलैक ! आब ई बरण्डो खाली करबाक छलैक । एक कोठली आ एकटा भनसाघरनुमा बरण्डाबला डेरामे आब ओकर गुजर नहि छलैक । भोरे टिपिर-टिपिर बरखेमे बहरा गेल छल आ संयोगसँ एक्के घण्टामे एकटा कोठलीक एडवांस दऽ घुरि आयल छल आ दोसर घण्टा पुरबासँ पहिने अपन बक्सा आ बिछाओन समेटि एहि कोठलीमे आबि गेल छलैक मुदा, कोठलीमे पयर दैते जाहि बहसक ध्वनि कानमे गेलैक जे एखन राति बितला धरि जारी छलैक आ बाहर लगातार टिपिर-टिपिर भऽ रहल छलैक ।

स्पष्ट छलैक जे गृहपति ओकरा नहि राखऽ चाहैत छलैक ! बेर-बेर एक्के बात दोहरा रहल छलैक– ''एखने एडवांस घुरा दैत छिऐक । अबस्से कोनो गुण्डा-बदमाश अछि । एकटा कोठलीक चालीस टाका किरायापर झट मानि गेल आ एडवांसो दऽ देलक । अहूँ बिनु किछु बुझने-सुझने एडवांस लऽ लेलिऐक । स्त्रीगणक तँ माथे औन्हल होइत छैक । तोँहू अपन मायक पक्ष लऽ रहल छेँ अमित्ता ?'' दोसर स्वर ओकर बेटीक छलैक– ''अहाँ अनेरो मायपर तमसा रहल छिऐक ! किरायादारक काज छल से रखा गेल, चालीस टाका मास देत, एडवांस, एहिसँ बेसी जनबाक एखने काज कोन अछि ? कोनो तेहन आदमी होयत तँ मास पुरलापर हटा देबैक । एखन निरर्थक माथ खपौलासँ की लाभ ?''

बहुत राति बितलापर ई घमर्थन शान्त भेलैक । ओकरा विश्वास भऽ गेलैक जे बेटीक बात बाप मानि गेलैक । कारण, ओकर मोटरी-चोटरी बाहर फेकबा लेल गृहपतिक आगनम नहि भेलैक । ओ आब निश्चिन्त भऽ बिछाओनपर पसरि गेल आ नीक जकाँ एक बेर फेरसँ अपन नव कोठलीकेँ देखलक । तीनटा दुआरि छलैक । दक्षिणसँ आबऽ-जायबला दुआरि छलैक बाहर खुजऽवला आ शेष दुनू उतरबरिया आ पछबरिया केबाड़ दोसर दिससँ बन्द छलैक । ओकरा खोलबाक वा बन्द करबाक हेतु ओकर कोठली दिससँ कोनो छिटकिल्ली नहि छलैक । बहस पछबरिया कोठलीमे भऽ रहल छलैक । बहस समाप्त भऽ गेल छलैक, मुदा तैयो पछबरिया कोठलीमे चहल-पहल छलैक जेना बहुत रास छौंड़ी सभ बाजि रहल हो । खाली छौंड़ी सभक स्वर– आ बीच-बीचमे मकान मलिकाइनक निषेध करैत चीत्कार । मुदा ओहि छौंड़ीक स्वर फेर नहि सुनि पड़लैक जकर नाम अमिता छलैक आ जे अपन बापसँ ओकर सिफारिश कयने छलैक । ओहि छौंड़ीक प्रति ओकर मोन कृतज्ञतासँ भरल छलैक । ओ बड़ी राति धरि ओकरे विषयमे सोचैत रहल आ विश्वासपूर्वक मानि लेलक जे ओ सुन्दरो होयतैक ! ओकर काल्पनिक आकृति ओकर आगाँमे ताधरि नचैत रहलैक जा धरि आँखिक पिपनी भरिगर नहि भऽ गेलैक ।

दू

राति भरिक टिपिर-टिपिर बरखाक बाद भोरे बड़ मोलायम आ प्रिय रौद पसरल छलैक । अपन कोठलीसँ बहराइते देखलक जे सौंसे परिवार बाहर दलानक नीचामे तितले घासपर पटिया बिछाकऽ बैसल छैक ! गृहपति ओकरा देखिते मुँह घुमा लेलकैक आ नमस्कारक उत्तर पर्यन्त नहि देलकैक । गृहस्वामिनी एक बेर गहिकी नजरिसँ ओकरा ऊपरसँ नीचा धरि देखि दोसर दिस ताकऽ लगलैक । छौंड़ी सभ ओकरा खूब प्रसन्न मने ताकि रहल छलैक जेना ओकरासभकेँ किरायादार पसिन्न पड़ल होइक । ओकर अन्दाज ठीक बहरयलैक– खाली छौंड़ी सभ छलैक । जेठकी बीस-बाइसक तँ छोटकी मात्र चारि-पाँच बरखक । बीचमे पाँचटा आरो क्रमशः सात, दस, बारह, चौदह आ सोलहक । किछु कमो-बेसी भऽ सकैत छैक वयसमे, मुदा छलैक बड़कीकेँ छोड़ि सभ फ्राक टा पहिरने, जाहिसँ बहरायल लम्बा-लम्बा पातर टाङ बड़ कोनादन लागि रहल छलैक । छलैक सभ पिण्डश्यामे मुदा बेस कटगर चेहरा सभक । ओ नीक जकाँ बड़की छौंड़ीकेँ निहारऽ लागल जे एकटा पुरान सन साड़ी पहिरने छलैक आ पटियापर टाङ मोड़ने छलैक । ओकर देहक त्वचा सभसँ अधिक स्निग्ध

छलैक आ मांसलताक कारणे दृष्टि ओकर देहपर जतऽ-ततऽ सटैत छलैक । एना एकटक देखैत पाबि ओ लजा गेलैक आ मूड़ी झुका लेलकैक, मुदा तैयो ओकरा लगलैक जेना ओ मुड़ी गोँतने मुसुकिया रहलि छैक । यैह अमिता थिक– ओ सोचलक आ रातिमे अपन बनाओल काल्पनिक तस्वीरसँ ओकर तुलना करऽ लागल ।

ओकर एहि अभद्र चेष्टापर गृहपतिकेँ अपन रतुका धारणाकेँ पुष्ट करबाक पूर्ण प्रमाण भेटि गेलैक । एक बेर ओकरा आग्नेय दृष्टिसँ ताकि चिचिया उठलैक– 'दीपा ! जो, भीतर जो !' एहि आकस्मिक आदेशक अर्थ बूझि दीपा लगभग दौड़ैत भीतर चलि गेलैक । मुदा गृहपतिक सम्बोधन ओकरा एकटा चिन्ता दऽ गेलैक । ओ दीपा छलि, तँ अमिता के छैक ? ओ बाँकी सभमे जेठकीकेँ ताकऽ लागल जकर पातर टाङ बड़ अप्रिय ढंगसँ फ्राकसँ बहरायल छलैक आ छातीपर झुलैत ओहि फ्राकक झालरि जकाँ वयस नुकयबाक चेष्टामे असफल भऽ रहल छलैक । ओकरा एना तकैत देखि ओ छौंड़ी अपन टाङ मोड़ि आ फ्राककेँ ससारि-ससारि सभ किछु झाँपि लेबाक निरर्थक चेष्टता करऽ लगलैक । गृहपतिक आकृति एहि बेर लहकऽ लगलनि आ ओ फेर जोरसँ चिचिया उठलाह– "सभ क्यो भीतर जाइ जो !"

जेठकी छौंड़ी सभ सकपकायलि आ छोटकी सभ अकचकायलि भीतर चलि गेलैक । ओहो सहमि जकाँ गेल । गृहपतिकेँ ओकर गुण्डा आ बदमाश होयबाक पूर्ण सबूत भेटि गेल छलैक । आब कोठलीमे टिकऽ नहि देतैक । एखने बोरिया-बिस्तर बाहर फेकि देतैक । मुदा से सभ किछु नहि भेलैक । गृहपति फेर ओकर उपस्थितिकेँ नकारि दोसर दिस तकैत रहलैक । गृहस्वामिनीक स्थूल काया पूर्ववत् अपन स्थानपर स्थिर रहलैक । एक बेर नीक जकाँ दुनू प्राणीकेँ देखलाक बाद ओकर अपन हँसी रोकब कठिन भऽ गेलैक । गृहपति एकटा रामनामा चादरि ओढ़ने छैक, मुदा ओकर कंकाल ओहि चादरिसँ नहि झपा रहल छलैक । गालक हड्डी उभरल, दाँत सभटा निपत्ता आ माथमे उज्जर पोचारा । काया तेहन जेना हड्डीक ढाँचापर पाथरसँ चाम खीचिकऽ चढ़ा देल गेल होइक । एकर विपरीत गृहस्वामिनी अपन देहमे यत्र-तत्र मासुक लोदा लटकौने बैसलि । जँ ओकर काया ओहन नहि रहितैक तँ ओकरा सन्देह होइतैक जे ओ फेर एक बेर सौरीघर जाय लेल तैयार बैसलि छैक । केश ओकरो आधासँ बेसी उज्जर आ जतऽ-ततऽसँ चानि झलकैत । दुनू प्राणीमे मात्र एकटा समता छलैक जे दुनूक वस्त्र फाटल आ मैल छलैक । एहि समतापर ध्यान जाइते ओकरा लगलैक जेना

एहि एक बातमे सम्पूर्ण घरमे समता छैक । मकानसँ लऽकऽ मकानमालिक आ ओकर सौंसे परिवारमे । खपरैल मकानक चारपर सभटा खपड़ा उजड़ल-उपटल छलैक । राति एक्को अछार जमिकऽ होइतैक तँ पता लागि जइतैक जे कोन कोनमे खाट रखलापर बिछाओन नहि भिजतैक । मैल-बदरंग देबालक हाड़ यत्र-तत्र उघरल छलैक आ रातिभरि जेना देबालसँ किछु झड़ि रहल छलैक । गृहपतिक फाटल चिप्पी लागल धोती, गृहस्वामिनीक रंगउड़ल साड़ी आ छौंड़ी सभक देहपर झुलैत बिन-साइजक फ्राक सभकेँ देखि सम्पूर्ण घरक आर्थिक स्थिति स्वतः स्पष्ट भऽ जाइत छलैक । एहि अनुभूतिक संग ओकर हँसी बिला गेलैक आ ओ पटियापर बैसल दुनू प्राणीकेँ सहानुभूतिपूर्वक ताकऽ लागल । मुदा ओ दुनू ओकर उपस्थितिकेँ स्वीकारबा लेल प्रस्तुत नहि छलैक । किछु काल ठाढ़ भेल ओ दुनूक उपेक्षा सहलक आ फेर अपन कोठलीमे घुरि आयल ।

कोठलीमे घुरिते ओकरा बुझबामे आबि गेलैक जे जल्दबाजीमे कोठली बदलि ओ गलती कयने छल । पयखाना आ कल दुनू प्रायः भीतर अङना दिस छलैक । कोठलीक एडवांस दैत काल ओकर उपयोगक सम्बन्धमे ओ कोनो शर्त्त नहि रखने छलैक । शर्त्त रखनो रहितैक तँ भोरे-भोर ओकर गुण्डपनी देखलाक बाद गृहपति ओ शर्त्त अवस्से बदलि दितैक । किछु काल दुविधामे पड़ल रहलाक उपरान्त कान्हपर गमछा लऽ ओ कोठलीसँ बाहर आयल । सामने सड़कपर म्युनिसपैल्टीक एकटा सार्वजनिक शौचालय छलैक आ जकरासँ किछु हँटिकऽ सड़कक कातमे एकटा कल सेहो छलैक सार्वजनिक । एखन ओतऽ भीड़ो नहि छलैक । कलपर एकटा बनिहारिन सन समर्थि मौगी नहा रहलि छलैक। ओ शौचालयसँ बहरायल, तैयो ओ मौगी कलपर छलैक । कलक चबुतरा पैघ छलैक । ओकरा आयल देखि ओ मौगी कनेक घुसकिकऽ किछु जगह खाली कऽ देलकैक । ओ नहाय लागल । बेराबेरी देहपर धार लेअय । कौखन एहि चेष्टामे दुनूक देह सटि जाइक । ओहि मौगीक सभटा कपड़ा भीजि देहमे सटि गेल रहैक आ देहक एक-एक टा बक्रता स्पष्ट भ गेल रहैक । मुदा ओ निश्चित भऽ नहा रहलि छलैक । देह सटलापर पहिने एक-दू बेर ओ सकपकायल । मुदा फेर ओहो निश्चिन्त भऽ सार्वजनिक कलपर नहयबाक आनन्द लेबऽ लागल । बीचमे एक बेर अपन कोठली दिस दृष्टि गेलैक । पटियापर बैसल दुनू प्राणीक जरैत दृष्टि ओकर प्रत्येक चेष्टाकेँ देखि रहल छलैक ।

तीन

आफिस जयबा लेल बहरायल तँ एकटा नव छौंड़ीकेँ मकानसँ बहराइत देखलकैक। छौंड़ी नहि, स्त्री कहब अधिक उचित होयतैक। पचीसक वयस, साफ रंग आ पातर देह। उज्जर साड़ीमे ओ कुमारिसँ अधिक विधवा लागि रहलि छलैक। ओकरा भेलैक– यैह अमिता थिक। ओहो लपकिकऽ संग भऽ गेल। बड़ी दूर धरि संग चलैत रहल, मुदा ओ ध्यान नहि देलकैक। विवश भऽ ओकरा टोकऽ पड़लैक– ''अहीं अमिता छी ने !''

ओ तेना चौंकलैक जे ओकरा विश्वास भऽ गेलैक जे एखनधरि ओकरा नहि देखने छलैक। शिष्ट स्वरमे बजलैक–''जी, कहू !''

ओ उत्साहित होइत बाजल– ''हम अहाँक बाहरबला कोठलीमे किरायेदार छी। अहाँकेँ धन्यवाद दैत छी जे राति अहींक कारणे बरखामे सड़कपर बौअयबाक स्थिति नहि आयल। हम अहाँलोकनिक गप्प सुनबाक अभद्रता कयने रही, ताहि हेतु क्षमा चाहैत छी।''

अमिता किछु नहि बजलैक। चुपचाप चलैत रहलैक। चौबटियापर आबि दोसर दिस जाय लगलैक तँ ओ फेर पुछलकैक– ''अहाँ पढ़ैत छी ?''

एहि बेर ओ हँसलैक– ''जी नहि, पढ़बैत छिऐक।''

ओ आर किछु पुछैक, ताहिसँ पहिने ओ जा चुकलि छलैक।

चारि

मास बीति गेलैक। दोसर, तेसर, छठम। फेर कहियो कोनो गप्प नहि भेलैक। ककरोसँ नहि। अबैत-जाइत आमने-सामने पड़ि गेला...। कहियो-कहियो कोनो छोटकी छौंड़ी गामसँ आयल पोस्टकार्ड ओकर कोठलीमे फेकि पड़ायलि चल जाइत छलैक। एना पोस्टकार्ड भेटलापर ओ तामसे छटपटा जाइत छल। दस पैसाक बचतिक हेतु लिफाफाक बदला पोस्टकार्ड पठयबाक नीतिपर ओ बिगड़िकऽ कतेको बेर गामपर धमकी दऽ चुकल छलैक। मुदा कोनो लाभ नहि भेलैक। आर नहि किछु तँ गामक पोस्टआफिसमे लिफाफ नहि भेटबाक फुसियाही लाथ। ओहिना पोस्टकार्ड अबैत रहलैक आ मासमे एक बेर पठाओल मनीआर्डरक प्राप्तिसूचनाक कूपन सेहो। जतेक बेर छौंड़ी सभ कोठलीमे पोस्टकार्ड फेकऽ अबैक, ओ ओकर सभक आकृतिपर दुष्टतापूर्ण हँसी तकबाक असफल चेष्टा करय। मुदा ओसभ तँ कार्ड फेकि तेना पड़ाय जेना कोनो हौआ होअय।

आ राति भरि अपन कोठलीमे पड़ल-पड़ल ओ रंग-विरंगक चित्र बनबय। बन्द केबाड़क ओहि पारक चित्र, अमिताक चित्र। ओना दिमागकेँ तंग करऽवला चेहरा आ देह दीपाक छलैक, मुदा नहि जानि किएक ओकर मोनमे बेर-बेर अमितेक चित्र साकार छलैक। ओकरा विश्वास छलैक जे उतरबरिया कोठलीमे अमिता रहैत छलैक। ओहि केबाड़ लग ओ हरदम अपन कान पथने रहैत छल, मुदा कहियो कोनो आहटि नहि भेटलैक। नहि जानि केहन गुमसुम स्वभावक छलैक। ने कखनो गुनगुनाहटि, ने गीत। ने हँसब, ने बाजब। एक दिन ओ केबाड़क फाँकसँ हुलकी देबाक चेष्टा सेहो कयने छलैक, मुदा ओहि कात तँ मोटका रंगीन पर्दा लटकल छलैक आ किछुओ देखब संभव नहि छलैक। एकर विपरीत पछबरिया कोठलीमे हरदम हलचल रहैत छलैक। हल्ला-गुल्ला, हँसी-ठठ्ठा, हँसब-कानब, चिकरब-डाँटब। एक राति ओहू केबाड़क फाँकसँ हुलकी देने छलैक। भरि कोठली देखि पड़ल रहैक। सभसँ कातमे दोसर दिस एकटा छोटछीन चौकीपर गृहपति पड़ल बीड़ी पीबि रहल छलैक। दोसर दिस चौकी सभ जोड़िकऽ बिछाओन कयल छलैक, जाहिपर छौ बेटीक संग गृह स्वामिनीक स्थूल काया विराजमान छलनि। ओकर कोठली दिस, सभसँ कातमे दीपा छलैक, जकर टाङ ठेहुन धरि उघार छलैक आ निन्नमे आँचर सेहो कतहु फेका गेल छलैक। तीव्र श्वासक उतार-चढ़ाव आ उघार टाङक चिकनाहटि देखबाक लोभमे ओकर दृष्टि केबाड़ीक फाँकमे सटिकऽ रहि जइतैक, मुदा तखने गृहस्वामिनीक स्थूलकाया सुगबुगयलैक। चारूकात साकांक्ष भेलि तकैत पयर दबने ओ गृहपतिक चौकी लग पहुँचलैक आ फेर 'स्विच ऑफ' भऽ गेलैक। अन्हारमे एक बेर गृहपतिक बीड़ी चमकलनि आ फेर जेना क्यो ओकरा माटिपर रगड़िकऽ फेकि देलकैक। ओ चुपचाप अपन बिछाओनपर घुरि आयल।

पाँच

ओहि राति अकस्मात् निन्न टूटि गेलैक। लगलैक जेना बिछाओनपर क्यो आर होइक। स्विच दिस बढ़ैत हाथकेँ क्यो बीचमे पकड़ि लेलकैक– ''बत्ती नहि जराउ ! हम अमिता छी ! अहाँक इच्छा नहि होअय तँ हम एखने घुरि जाइत छी !'' ओ जयबाक अवसर नहि देलकैक। भूखल जकाँ टूटि पड़लैक। बहुत दिनुका बाद एकटा नारी-शरीर बिछाओनपर उपलब्ध छलैक। ओकरा कातमे अमिता नहि, एकटा नारी-शरीर छलैक, समर्थि नारी-शरीर। एहिसँ बेसीक ओकरा इच्छो नहि छलैक।

अमिता दोसरो राति अयलैक । सभ राति अबैत रहलैक । शुरूमे ओ सन्तुष्ट आ अपन उपलब्धिपर गौरवान्वित छल । मुदा फेर लागऽ लगलैक जेना ओकरा खाली एकटा शरीर नहि, पूर्ण नारी चाहिऐक, एकटा स्त्री चाहिऐक जकरासँ ओ अपन सुख-दुःखक सेहो गप्प कऽ सकय । मुदा अमिता तँ जेना खाली एकटा शरीर बनि आयलि छलैक । पहिल राति अपन परिचय देलाक बाद, फेरि कहियो कोनो शब्द नहि बजलैक । अन्हारमे अबैक, अन्हारेमे चल जाइक । मात्र शारीरिक तुष्टि पाबि आब ओकरा सन्तोष नहि होइत छलैक । सभ राति बिछाओनपर उपलब्ध निर्जीव नारी-शरीर ओकरा असह्य लागऽ लगलैक । ओ सम्पूर्ण नारीकेँ चाहऽ लागल । नहि जानि ओकर अन्तर्मनमे कोना ई विश्वास जमि गेल छलैक जे नहियोँ किछु बजलापर एहि नियमित शारीरिक सम्पर्कक कारणे अमिता मोनोसँ ओकर बहुत समीप आबि गेल छलैक, मात्र मुखर स्वीकृति नहि दऽ रहल छलैक ।

ओहि राति अमिताकेँ अबिते टोकलकैक– "आब हमरालोकनिकेँ विवाह कऽ लेबाक चाही ।"

अमिता मौन रहलैक । बड़ी काल प्रतीक्षाक उपरान्त ओ कनेक खिसिआयल सन बाजल– "हमर प्रश्नक उत्तर नहि देलहुँ !"

किछु कालक मौनक बाद मन्द मुदा स्पष्ट स्वर अयलैक– "हमरा अहाँक बीच एहन शर्त्त तँ कहियो नहि छल ।"

एहि कठोर उत्तरोपर उत्साहित होइत ओ बाजल– 'शर्त्त नहि छल तेँ की? एना कहिया धरि चलत ? आब हमरालोकनिकेँ विवाह कऽ लेबाक चाही ।"

"मुदा हम विवाह नहि कऽ सकैत छी, कहियो नहि ।"

ओकर उत्तरसँ आहत होइत ओ बुझयबाक चेष्टा कयलकैक— किएक ने कऽ सकैत छी ? आब हमरालोकनिक विवाह सिन्दुर देबाक अतिरिक्त बाँकिए की अछि ? अहाकेँ हम पसिन्द नहि छी ?

अमिता किछु क्षण चुप रहलैक आ फेर ओहिना सहे-संयत स्वरमे बजलैक– "बात पसिन्द-नापसिन्दक नहि छैक । एहिपर सोचबाक प्रयोजने नहि अछि । बात छलैक आवश्यकताक । हम एक दोसराक शारीरिक आवश्यकताक पूर्ति करैत रहलहुँ– हमरा अहाँक बीच यैह मौन समझौता छल । ओहिसँ आगू बढ़बाक संभावना आइयो नहि अछि ।

अमिताक एहि रूपक कल्पना ओ नहि कयने छल । इच्छा भेलैक जे धक्का दऽकऽ बिछाओनपरसँ खसा देअय । मुदा जखन ओ स्वयं चुपचाप उठिकऽ जाय लगलैक तँ नहि जानि कतऽ नुकायल एकटा जानवर ओकरापर सवार भऽ गेलैक । ओकरा एकदम बर्बरतापूर्वक घीचिकऽ सम्पूर्ण अमानवीयतासँ भोगलाक बाद तृप्तिक चरम क्षणमे कोठलीक माटिपर पिच दऽ थुकैत बाजि उठल– "वेश्या !"

अमिता तैयो किछु नहि बजलैक । चुपचाप उठिकऽ चलि गेलैक । मुदा ओ निश्चित बूझि गेल जे ई जायब अन्तिम छलैक । आब अमिता नहि ओतैक ।

छओ

अमिता सत्ते नहि अयलैक । ओकरा क्षमा नहि कयलकैक । दू-एक बेर रास्तामे बाट छेकि ओ किछु कहऽ चाहलकैक, मुदा ओकर आकृतिपर पसरल अपरिचयक भाव देखि ओकरा किछु कहबाक साहस नहि भेलैक । अमिताक सामीप्यमे उजड़ल आ बदरंग देवालबला कोठली बड़ आत्मीय आ प्रिय लागऽ लागल छैक । मुदा अमिताकेँ अपमानित कऽ जाहि राति बिदा कयलकैक ताहि रातिसँ ई कोठली फेर एकदम अपरिचित आ अप्रिय लागऽ लगलैक । सभ दिन सोचैत छल जे नव कोठली ताकि ली, मुदा नहि जानि किएक ओकरा कार्यरूप नहि दऽ सकल । कतेको बेर सोचलक जे छुट्टी लऽ गामेसँ भऽ आबी, बड़ दिन भऽ गेल । मुदा अपन एहि विचारपर अपने खौंझायल सन सभ मास मनीआर्डरटा पठबैत रहल मात्र ।

दिन आफिसमे कटि जाइत छलैक । मुदा राति जेना जनमारा नमती लऽ अबैत छलैक– खतमे नहि होइत छलैक । अन्हारमे भीतरसँ बन्द उतरबरिया केबाड़पर टकटकी लगयबाक अतिरिक्त आर कोनो काज नहि छलैक ।

मुदा ओहि राति जेना सभ आस टूटि गेल रहैक । सबेरे सूति रहल छल। नहि जानि कतेक राति बितलापर निन्न टुटलैक तँ लगलैक जेना बिछाओनपर एकसर नहि छल । ओहि राति अमिताकेँ बड़ दुलार कयलकैक । राति भरि दुलारैत रहलैक, क्षमायाचना करैत रहलैक । मुदा अमिता किछु नहि बजलैक । भोर होयबासँ पूर्व उठिकऽ जाय लगलैक तँ ओकर धैर्यक बान्ह टूटि गेलैक । ओकर हाथ पकड़ि विनयपूर्वक कहलकैक– "कमसँ कम एतबा तँ कहैत जाउ अमिता जे अहाँ हमरा माफ कयलहुँ । हम फेर विवाह लेल नहि कहब कहियो, मुदा एना, एतेक दिनधरि बिगड़ल नहि रहब हमरापर ।"

किछु क्षणक बाद अन्हारमे स्वर फूटल– ''अमिता नहि, हम छी दीपा ।''

ओ चौंकिकऽ हाथ छोड़ि देलकैक । फेर बकार नहि फुटलैक, मुदा एहि बेर दीपा बाजि उठलैक– अहाँ डराउ जुनि, हम सभ जनैत छी । हमरा ईहो बूझल अछि जे अहाँ विवाहित छी, तीन बच्चाक बाप छी । गामसँ आयल अहाँक पोस्टकार्ड सभ हम पढ़ैत आयलि छी । तैयो यदि अहाँ विवाह करऽ लेल कहब तँ हम तैयार छी ! नहियो कहब तँ कोनो हर्ज नहि । खाली हमरा अयबासँ मना नहि करब ।''

दीपा अन्हारमे बिलीन भऽ गेलैक आ केबाड़ प्रायः ओम्हरेसँ बन्द भऽ गेलैक । ओ अन्हारमे स्तब्ध ठाढ़ रहल । अमिता आ दीपामे बड़ अन्तर छलैक । अमिता कहियो किछु नहि बजलैक, दीपा पहिले दिन एतेक बाजि गेलैक । अमिता ओकरा विषयमे किछु नहि जनैत छलैक, प्रायः दीपा सभ किछु जनैत छलैक । ओ विस्तारपूर्वक दुनूक विषयमे सोचैत जा रहल छल, मुदा फेर लगलैक जेना एतेक सोचब बेकार छैक । वस्तुतः अमिता आ दीपामे कोनो अन्तर नहि छैक ।

[1972]

पुनरावृत्ति

दोसर कोठलीमे अलार्म बड़ी काल धरि कड़कड़ाइत रहलैक ।

हुनकर इच्छा भेलनि जे ओहि कोठलीमे जाइ आ अलार्म बन्द कऽ दियैक । मुदा ओ बैसले रहलाह आ अलार्म बन्द भऽ गेलैक– प्रायः पूर्ण अवधि धरि चिचियाकऽ । इहो भऽ सकैत छैक जे महेन्द्रक कनियाँ उठि गेलि हो आ अलार्म बन्द कऽ देने हो । मुदा अलार्म नहियो बन्द होइतैक, ओहिना कड़कड़ाइत रहतैक, तैयो ओ ओहि कोठलीमे जा सकितथि ? महेन्द्र एकसरे तऽ नहिं होइतैक कोठलीमे ?

सटल दोसर बिछाओनपर विभा निन्नमे बेसुध छैक । अलार्मक अनवरत कड़कड़ाहटि ओकर निन्नमे बाधक नहि बनि सकलैक । काल्हिये तऽ घुरलैक अछि दिल्ली, कानपुर, आगरा नहि जानि कतऽ कतऽ बौआकऽ ? नहि जानि कोन-कोन बोर्डक मीटिंग छलैक ! काल्हि घुरलै तऽ थाकल आ पस्त बुझाइत छलैक । आबिते सूति रहलैक । एखनधरि सूतलि छैक । लगातार दस घंटाक निन्नक बादो ओकर चेहरापर क्लान्ति आ ठेहीक स्पष्ट चिन्ह छलैक । ओ तऽ कतेको बेर मना कऽ चुकल छथिन । एहि बीचमे आब एतेक बौअयनी, एतेक मात्रा सह्य नहि होइत अछि अहाँकेँ, स्वास्थ्य चौपट भेल जाइत अछि दिनानुदिन, छोड़ू ई जंजाल आ विश्राम करू घरेपर । मुदा जत्ते सहजतासँ ओ सभटा जंजाल फेकि देबाक गप्प कहि देलथिन, ओतेक सहजतासँ विभा ओहि सभकेँ छोड़ि नहि सकलीह । प्रायः नहि छोड़ि सकतीह । दू माससँ यत्र-तत्र बौआ रहलि छथि। मीटिंग, मीटिंग आ मीटिंग । नहि जानि कतेक संस्था, कतेक बोर्डक अध्यक्षता आ सदस्यता अपन माथपर लादि लेने छथि– ओ विभापर खौंझा उठलाह, एकटा स्नेहपूर्ण क्रोधसँ भरि गेलाह ।

मुदा तुरत लगलनि जे ई अन्याय थिक, ई क्रोध आ खौंझाहटि अर्थहीन आ अन्यायपूर्ण थिक । विभाकेँ अहि व्यस्तता दिस के धकेलि देलकैक ? के उत्तरदायी अछि एकर ?

एहि प्रश्नक संग ततेक रास गप्प मोन पड़ऽ लगलनि जे ओ घबड़ाकऽ कोठलीसँ बाहर आबि गेलाह । बीतल बातकेँ मोन पाड़ब, ओकर पुनर्मूल्यांकन करब सदिखन अप्रिय लगैत छनि हुनका । मुदा नहि जानि किएक आब अतीतक अनेक बातक औचित्य आ सार्थकता संदिग्ध लागऽ लागल छनि । लगैत छनि जेना सभकेँ ओ स्वयं एकटा तेहन बाट धरा देलथिन अछि, जाहिपर चलैत अनायास सभ क्यो हुनकासँ दूर आ फराक भऽ गेल छनि । ओ एकाकी रहि गेल छथि । मुदा ओ घुरऽ लेल ककरो नहि कहि सकैत छथिन । रस्ता सभटा हुनके चुनल छनि आ सभकेँ ओ बाट धरा स्वयं अग्रसर करौने छथिन ।

कोठलीसँ बाहर निकलैत ओ एहि भावकेँ दबा देलनि मोनमे । बरण्डापर कुर्सी सभ राखल छलैक, एकटा कुर्सी कातमे खीचि बैसि गेलाह । भोरका बसात तुरत नहायल देहपर बड़ प्रिय लगलनि, सभ दिन जकाँ आइयो भोरे एक मील टहलि, स्नानादिसँ निवृत्त भऽ चुकल छलाह । सोझाँक सड़क एकदम निर्जन छलैक । ओहुना एहि सड़कपर बेसी भीड़भाड़ नहि रहैत छैक । घंटा आध घंटामे एकटा ट्रक वा बस, कखनो कोनो टेम्पू । रिक्शा-ताङा एकदम नहि । शहरक बाहर एकांतमे पड़ैत छैक ई स्थान । ओ अकारण सड़क दिस तकैत रहलाह ।

महेन्द्रक कनियाँ एकटा ट्रेमे चाह लेने बाहर बरण्डामे अयलैक । पछिला तीन माससँ, जहियासँ एहि घर अयलैक अछि, भोरे अपनेसँ चाह बनाकऽ लबैत छनि । शुरूमे एक-दू दिन ओ मना कयलथिन । नहि मानलकनि । ओकर ई अवज्ञा सुखद लागल छलनि, लगैत छनि ।

एकटा गोल टेबुल लग आनि ट्रे रखैत छनि आ चाह बना हाथमे दऽ पयर छुबैत छनि । ओ ठोरेमे बुदबुदाकऽ किछु कहैत छथिन आ चाह पीबऽ लगैत छथि ।

चाहक खाली प्याली आ ट्रे उठा ओ चल जाइत छनि आ पुतोहुकेँ देखि हुनका लगैत छनि जे ओकरा प्रति हुनकासँ अन्याय भऽ गेल छनि । बेटाक विवाहमे जाइत काल लागल रहनि जेना कोनो आनक बरियातीमे गेल होथि । विभा कहलकनि– ''महेन्द्रकेँ पसिन्न छैक, अपन जातिक छैक, पढ़लि आ सुन्दरि छैक, नोकरियो करैत छैक, कोन बेजाय छैक ! आ कनेक सोचू जे मनो कयलापर महेन्द्र नहि मानय, विवाह कऽ लिअय तँ केहन लागत ?'' हुनका झुकऽ पड़लनि । विवाह भऽ गेलैक । हुनकर इच्छाक विरुद्ध, यद्यपि ओ स्पष्ट विरोध कतहु नहि कयलथिन । मुदा सभ एहि विरोधकेँ बुझि गेलनि ।

मुदा जहियासँ पुतहु घर आयल छनि, एहन सन लागि रहल छनि हुनका

जेना ओकर अयबासँ पूर्व सत्रह कोठलीवला ई विशाल मकान मात्र एकटा 'रेस्ट हाउस' छलनि जतऽ घुरबाक जल्दी ककरो ने रहैत छलैक । मुदा आब सभकेँ जल्दी भऽ गेल छलैक चाहे 'प्राइवेट क्लिनिक'मे बैसऽवला साठि वर्षक बूढ़ हो वा 'फर्स्ट इयर'मे पढ़ऽवला सुरेन्द्र । आ पहिल बेर जखन ई अनुभव भेलनि, अतीतक बहुत रास घटना आ निर्णय प्रश्नचिह्न बनि सामने झूलऽ लगलनि । काजमे मोन नहि लगलनि । रोगी सभकेँ जल्दी-जल्दी भगा देलथिन । 'मूड' बिगड़ल देखि कम्पाउंडरो कोनो कोनमे दबकि गेल । हवाक झोंकपर 'क्लिनिक'क मोट-मोट परदाक संग मोनमे जमल मोट-मोट तह एक-एक कऽ फड़फड़ाइत, उधिआइत रहलनि ।

क्लिनिकसँ घुरलापर दिनक दू बजे आ राति एगारह बजे देखैत छलाह जे विभा एकसरि जागल किछु पढ़ि रहलि अछि । घरमे कोनो पैघ नहि, कोनो बच्चा नहि । कोनो सम्बन्धी नहि । लगलनि जेना विभाक प्रति अन्याय भऽ रहल छनि। विवाहक बाद विभाक पढ़ाइ छुटि गेल छलैक, हुनका एकटा उपाय सुझि गेलनि।

''कालेजमे नाम लिखा दियऽ ? पढ़ब ?'' एक दिन पूछि बैसलथिन । ''जे अहाँ कही ।'' विभाक स्वरक उत्साह स्पष्ट छलैक ।

विभा कालेज जाय लगलनि । दिनुका भोजनक समय अनुपस्थित रहऽ लगलनि । नोकर-चाकर परसि देनि । नीकसँ नीक वस्तु कुस्वाद लागऽ लगलनि ।

क्रम चलैत रहलैक । विभा एम.ए. कयलक । एहि बीच महेन्द्र आ नीताक जन्म भेलैक जकरा हेतु फराकसँ नोकरनी राखऽ पड़लैक । विभाकेँ एकटा कालेजमे लेक्चररशिप भेटि गेलैक । जीवनक ओ क्रम स्थायी भऽ गेलैक । दिनुका भोजन कहुना कण्ठ तर धसा लेथि । मुदा साँझसँ सभ किछु नीक लागऽ लगनि । विभा घरमे रहनि आ बच्चा सभ, नीताक बाद वीरेन्द्र आ सुरेन्द्रक सेहो जन्म भेलैक । सामाजिक, राजनीतिक काजमे, सभा, संस्था आ बोर्डक चक्करमे विभा ओझराइत चल गेलैक, कोनो बोर्डक सदस्या, कोनोक चेयरमैन । आब दुनू साँझ नोकर-चाकर रान्हि कऽ राखि देअय आ ओकरा गीड़ि लेथि कोहुना । कहियो विभा स्वयं किछु करबा लेल तैयार होथि तँ ओकर चेहरापर व्याप्त क्लान्ति देखि ओ स्वयं मनाकऽ देथिन । ओकरापर दया आबि जानि ।

बच्चा सभ पैघ भेलनि । महेन्द्र डॉक्टर बनि गेलनि आ नीता सेहो । वीरेन्द्र आ सुरेन्द्र सेहो कालेज जाय लगलनि । भोरमे जलखइ कऽ सभ बहरा

जाइत अछि । आ राति कऽ नओ बजेसँ पहिने क्यो नहि घुरैत अछि । हुनका मोनमे कतेको बेर विचार अयलनि जे अपन मकानक नाम 'विभा भवन' सँ बदलि 'रैन-बसेरा' कऽ दिऐक । मुदा सोचियो कऽ ई प्रस्ताव सभक समक्ष नहि राखि सकलाह । विभा की सोचितनि ? धीया-पूताकेँ केहन लगतैक ?

ओहि दिन क्लिनिकमे बैसल ई सभ सोचैत-सोचैत, इहो बुझबामे नहि अयलनि जे कखन 'हार्न' बजलैक आ कखन वर्मा साहेब क्लिनिकक भीतर आबि गेलाह । सोझाँक कुर्सीपर बैसैत वर्मा साहेब हँसी कयलथिन– ''डाक्टर साहेब कोन सोचमे पड़ल छी ? एहि वयसमे एहन ध्यान ककर भऽ रहलैक अछि ! भौजीकेँ समाद दियनु ?''

ओ चौंकि कऽ सचेष्ट भेलाह । सम्हरि कऽ हँसैत कहलथिन– ''हमरा लेल तँ क्लिनिके मन्दिर अछि आ रोगी सभ देवी-देवता । आर ध्याने ककर कऽ सकैत छी ?

''तँ आइ सभ देवता कतऽ पड़ा गेलाह अपन पुजेगरीकेँ एकसर छोड़ि ?'' वर्मा साहेब फेर हँसी कयलथिन ।

''आइ हमही सभकेँ जल्दी विदा कऽ देलिऐक । मोन किछु भारी बुझाइत अछि ।''

''मोन भारी अछि तँ डेरा जाउ, विश्राम करू । आब कथीक हाय-हाय लागल अछि । आर की चाही अहाँकेँ– 'ए प्राउड एण्ड हैप्पी फादर ।' आँखि सगर्व चमकि उठलनि– ''नीता नीक जकाँ अछि, इंगलैंड सँ चिट्ठी आयल अछि । कनेक 'होम-सिक' भऽ गेल अछि । आखिर बेटी ककर छैक ? हम तँ दुइये मासमे डिग्रीक चिन्ता छोड़ि पड़ा आयल रही । तेँ हरदम डर लागल रहैत अछि । कहीं हमरे जकाँ घुरि ने आबय ।''

''घुरि किएक आओत ? अहाँ तँ फेल होयबाक डरेँ पड़ायल रही । नीता बेटी अहाँ जकाँ बदगोबर थोड़े अछि !'' वर्मा साहेब फेर हँसी कयलथिन आ दुनू गोटे खूब हँसलाह । हँसिते-हँसिते वर्मा साहेब बात बदलि देलथिन– ''पुतोहु केहन अछि ? बेटा अपन मोनसँ विवाह कयलक तँ की भेल, पढ़लि-लिखलि सुन्नरि आ काज करऽवाली पुतहु अछि । अहाँ तँ खूब प्रसन्न होयब ।''

ई चर्चा हुनका वर्माक मुँहे अप्रिय लगलनि । वर्मा अपन बेटीक हेतु महेन्द्रकेँ बहुत पहिने मांगि चुकल रहनि, एक तरहेँ ओ वचनबद्ध छलाह । मुदा स्थिति बदलि गेलैक । ओ किछु नहि कऽ सकलाह । ओ स्वयं वर्माक समक्ष लज्जित छलाह । मुदा ओकर मुँहेँ ई चर्चा एखन अप्रिय लगलनि । कनेक कटु होइत कहलथिन– 'ई अहाँकेँ के कहलक जे विवाहमे हमर स्वीकृति नहि छल ? ओकर अयलासँ घरक नक्शे बदलि गेल अछि । आब तँ नोकरियो छोड़ि देलक अछि ।

'किएक ? नोकरी मे की हर्ज छैक ?' वर्मा फेर प्रश्न कयलकनि ।

'हर्ज कोनो नहि, मुदा घर देखऽवला तँ क्यो चाही । नोकरीक काजे कोन छैक ?' ओ आर कटु भऽ गेलाह ।

मुदा वर्मा हुनकर स्वरक रुच्छतापर ध्यान नहि दैत कहलकनि– 'घर देखबा लेल भौजीक नोकरी किएक नहि छोड़ा दैत छहुन ? बुढ़ारीमे समय काटऽ लेल अहूँक संग तँ ककरो चाही ! पुतहु की संग देत ? ओकर अपन आशा आ उमंग छैक, काज करऽ दियौक ।'

बिनमांगल परामर्श वर्मा साहेब बड़ी काल धरि दैत रहलथिन । ओ अनिच्छापूर्वक सुनैत रहलाह ।

मुदा वर्मा साहेबक गेलाक बाद ओ सोचऽ लगलाह जे प्रायः ओ ठीक कहैत छलनि । विभोक नोकरी किएक ने छोड़ा देल जाय ! एतेक मेहनति आ यात्रा आब ओकरा लेल ठीक नहि छैक । आखिर एतेक भागा-भागी किएक ? कोन चीजक कमी छैक ? मुदा तुरत लगलनि जे ई बात कहलासँ कोनो लाभ नहि छनि । विभा मानतनि ? ओ 'डीन' बनऽवाली अछि, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवनमे ओकर अपन स्थान छैक । एहि सभकेँ छोड़ि गृहस्थीक एकान्त ओकरा पसिन्न होयतैक ? ओ स्वयं एकदिन गृहस्थीक एहि एकान्तसँ बाहर कऽ ओकरा व्यस्त जीवनमे ठाढ़ि कऽ देने छलथिन । आब ओहीमे घुरबा लेल पुनः कोना सोर पाड़थिन ? ई एकान्त आब एकसरे काटऽ पड़तनि ।

मुदा नहि ? आब एकसरपन नहि । 'रेस्ट हाउस'क एकसरपन आ अनचिन्हार सन वातावरण आब नहि । पुतहुकेँ आबि गेलासँ कतेको बीतल अग्रिम वर्षक क्लेन्म टूटि गेल छनि । आब 'रेस्ट-हाउस' नहि, घर जयबाक छनि आ हुनका जल्दी जयबाक चाहियनि । ई सोचिते सभटा उदासी दूर भऽ गेलनि आ अतीतक छायाकेँ झटकि ओ शीघ्रतापूर्वक डेरा दिस विदा भऽ गेलाह ।

आ आइ चाहक प्याली उठा जाइत पुतोहुकेँ देखि फेर ओहि दिनुका बहुत रास गप्प मोन पड़ि गेल छलनि । पुतोहु 'ट्रे' प्याली लऽ जा चुकल छली आ ओ नहायल देहपर भोरका हवाक सुखद स्पर्शक आनन्द लऽ रहल छलाह ।

चारूकात रौद पसरऽ लगलनि । कुर्सी कातसँ हटा देबाल लग लऽ अनलनि । अखबारवला अखबार दऽ गेलनि, पन्ना उनटबैत रहलाह ।

विभा बाहर अयलीह । नहा-धोकऽ । एकदम तैयार । जेना बाहर जयबाक होनि । हुनका आश्चर्य भेलनि– 'आइयो जायब ? आइ थाकल छी, आराम करू !'

नहि गेलासँ कोना होयत ? कालेजसँ पहिने कतेक छुट्टी लऽ चुकल छी आ साँझ कऽ बोर्डक 'मीटिंग' अछि । नहा-धोकऽ तैयार भेलोपर ओ थाकलि आ सुस्त लागि रहल छलीह ।

फेर ओ मना नहि कऽ सकलथिन । चुपचाप अखबार पढ़ैत रहलाह । विभा दोसर कुर्सीपर बैसि गेलीह ।

कनेक कालक बाद महेन्द्र बहरायल– 'जलखै तैयार अछि, भीतर चलू ।'

टेबुलपर सभ जुटल छल । वीरेन्द्र आ सुरेन्द्रकेँ कालेज जयबाक छलैक आ महेन्द्रकेँ अस्पताल । विभा बाहर जाय लेल प्रस्तुत छलैक आ ओ स्वयं क्लिनिक जयताह । मुदा पुतोहु घरमे छलनि । पूछि-पूछिकऽ सभकेँ दऽ रहल छलैक– सुस्वादु आ स्वस्थ भोजन । ओ एकबेर सगर्व अपन पुतोहुकेँ देखलनि ।

जलखैक बाद सभ क्यो जूता कपड़ा पहिरि बाहर आबि गेल । वीरेन्द्र आ सुरेन्द्र कारक अगिला सीटपर बैसि गेल आ महेन्द्र स्टीयरिंग ह्वील सम्हारि लेलक । विभा हुनका संग पाछू बैसि गेलीह । मुदा महेन्द्र कार स्टार्ट नहि कयलक, जेना ककरो प्रतीक्षा होइ ।

'की बात छैक ? चलैत किएक ने छैँ ?' ओ टोकलथिन ।

महेन्द्र आस्तेसँ बाजल– 'सुधा आबि रहल अछि, ओकरो जयबाक छैक ।'

'कोनो समान अनबाक छैक बजारसँ ?' प्रश्न करैत मकान दिस तकलनि जे पुतोहु आबि रहल छनि वा नहि ।

'ओकरा ज्वाइन करबाक छैक । तीन माससँ बैसलि अछि । सभटा छुट्टी खतम भऽ गेलैक । महेन्द्र फेर आस्तेसँ बाजल ।

ओ चौंकलाह । मुदा महेन्द्रपर हुनका क्रोध नहि भेलनि, दया भेलनि । अगिला सीटपर बैसल अपन ज्येष्ठ पुत्रकेँ ओ बड़ सहानुभूतिपूर्व दृष्टियेँ ताकऽ लगलाह । ओ बुझि गेलाह जे आइ एकटा एहन क्रमक प्रारंभ भऽ रहल अछि जकरा महेन्द्र बादमे चाहियो कऽ तोड़ि नहि सकत । ओ की नहि चाहने छलाह ?

सुधा बाहर अयलैक । विभा कनेक घुसकि जगह बना देलकैक आ ओ सासुक बगलमे बैसि गेलि । ओ एक बेर अपन पुतोहुक मुँह देखऽ चाहलनि, मुदा ओ मुड़ी गोंतने बैसलि छलनि ।

महेन्द्र कार स्टार्ट कयलक । कार जखन अहातासँ बाहर भऽ रहल छलनि, एक बेर पाछाँ तकलनि ओ । सत्रह कोठलीवला हुनकर विशाल मकान फेरसँ कोनो 'रेस्ट-हाउस' लागि रहल छलनि ।

आब एतय फेर सभ खाली राति कटबाक हेतु औतैक, एतऽ घुरबाक जल्दी आब ककरो नहि रहतैक । ककरो नहि ।

[1972]

●

सीमाबद्ध

जेना कोनो हेरायल वस्तु भेटि जाय– अकस्मात् ! दू वर्षक बाद भेटल छल । तीनो वर्ष भेल होअय, नीक जकाँ स्मरण नहि अछि ! एके शहरमे संग-संग (?) रहैत लोक कोना दूर-लग भेल रहैत अछि ! काल्हि धरि कतेक दूर बुझाइत छल, मुदा ओ भेटि गेल तँ लागल, जेना ओहिना लग हो ।

घेँट तेना अपन बाँहिमे लपेटलक जे साँस औनाय लागल । पेटमे मुक्का मारैत बाजल– ई की ?

हम घेँट छोड़ा अपन नमरल धोधिपर हाथ फेरैत नाटकीय गंभीरतासँ कहलिऐक– ''राष्ट्रिय समस्या ! वर्त्तमान कालमे देशमे दुइयेटा प्रधान समस्या छैक– बर्थ कंट्रोल आ गर्थ कंट्रोल !''

ओ भभाक हँसल– एकदम परिचित हँसी । कतेको वर्ष बितलोपर ई हँसी ओहिना परिचित छल । हँसिते बाजल– ''तोँ ओहिना छेँ दुष्ट ! इन्टलेक्चुअल पाजी ! हमर वाइफ अरुणक संगवला ग्रूपफोटोमे तोरा देखिकऽ हरदम कहैत रहैत छथि– अपन ऐ दोस्तसँ भेँट कराउ ने ! खूब इन्टेलेक्चुअल बुझाइत छथि। कोनो दिन आ ने हमर डेरा दिस !''

हमरो हँसी लागि गेल । ई इन्टेलेक्चुअल आ ग्रूपफोटोवला गप्प बड़ पुरान छैक । तहिया हमरालोकनि पढ़िते रही । ओकरो विवाह नहि भेल रहैक। मुदा ओकर अपने शब्दमे, बहुत रास 'गर्ल–फ्रेण्ड्स' रहैक ओकर । तहिया कतेको बेर कहने रहय– ''हमर गर्लफ्रेण्ड तोहर फोटो देखिकऽ कहैत छलौक, ई खूब इन्टेलेक्चुअल बुझाइत छथि, कहियो भेँट करा ने ! सम्भवतः ई गप्प तहियो ओतबे झूठ छलैक जतेक आइ छैक । मुदा कौखन झूठो कतेक प्रिय लागि जाइत छैक ! बरखो बाद एहि झूठक दोहरायब हमरा आनन्द दैत अछि ।

'अयबेँ ने !'' एकाएक ओ हड़बड़ायल जकाँ जल्दीमे पुछैत अछि ।

''हँ, हँ, अयबौ !'' हमहूँ ओहिना शीघ्रतासँ उत्तर दऽ दैत छिऐक ।

ओ चल जाइत अछि हाथ हिलबैत । हमहूँ हँसैत हाथ हिलबैत रहैत छिऐक । दू-तीन वर्ष पहिलुको भेट प्रायः एहिना समाप्त भेल छल । डेराक पता ने हम पुछले छलिऐक, ने ओ कहने छल । अयबाक कोनो दिन ने ओहि बेर निश्चित भेल छल, ने आइ भेल ! ''कहियो आ ने हमर डेरा दिस ।'' ई आग्रह फेर कोनो दोसर आकस्मिक भेटमे दोहराओल जयतैक । शहर एखन ततेक महानगरीक विस्तार नहि पौलक अछि । साल-दू सालमे एहि तरहक आकस्मिक भेट करा दैत छैक । लोक एहि तरहक आकस्मिक आत्मीय भेट लेल प्रस्तुत नहि रहैत अछि । मुदा तैयो कतेको बेर एहन स्थिति भऽ जाइत छैक जे पाँच-दस मिनट ठाढ़े-ठाढ़ सड़कपर गप्प कऽ परिचित सन लागऽवला आकृति आगू बढ़ि जाइत छैक आ ई मोन पाड़बाक चेष्टा करऽ पड़ैत छैक जे ओहि परिचितक नाम की छलैक । हमरा-ओकरा बीच एखन ई स्थिति नहि आयल अछि । दू चारिटा एहि प्रकारक भेट भेलापर ओ स्थिति प्रायः आबि जाय ! एकदम अप्रस्तुत नहि रहबाक चाही एहनो स्थितिक हेतु ।

हमरा गामक एक टा घटना मोन पड़ि जाइत अछि । बहुत दिनपर गाम गेल रही । कक्काक पयर छूबि ठाढ़ भेल रही तँ ओ बड़ी काल धरि मुँह तकलाक बाद बाजल छलाह– मुँह तँ देखल सन बुझाइत अछि, मुदा चिन्हलहुँ नहि बाउ !''

हम हँसिकऽ नाम कहलियनि तँ बजलाह– 'ई तँ होयबे करत ! एतेक-एतेक दिनपर गाम आयब तँ एहिना होयत । अहाँ लोकनि तँ गाम-घरसँ सम्पर्के तोड़ने जाइत छी ।''

ओहि दिन लागल छल, कक्का ठीके कहैत छथि । सम्पर्के ने राखब तँ लोक चीन्हत कोना ? आइ लगैत अछि जे सम्पर्के रखने की वस्तुतः लोककेँ चीन्हल जाइत छैक ? एहि शहरसँ, शहरक लोकसँ, एकर प्रत्येक वस्तुसँ कतेक पुरान सम्पर्क अछि, मुदा तैयो दिन-दिन सभ टा अनचिन्हारे भेल जाइत अछि । एक टा अपरिचित बन्धनमे ओझरायल एहि शहरमे बौआ रहल छी ।

बन्धनक नामपर पत्नी मोन पड़ि जाइत छथि । सम्पर्कसँ परिचय होइतैक तँ सभसँ बेसी परिचित वैह भऽ गेल रहितथि । सभदिना सम्पर्क अछि । ''एम्हर आउ'' हम कहैत छियनि आ हमर बिछाओनपर चल अबैत छथि । हमर देह लागल पड़लि रहैत छथि । हमर सन्तानक माय बनैत छथि, मुदा परिचित आइ धरि नहि भेलि छथि । हुनकर शरीरक रोम-रोमसँ परिचित भैयो कऽ अपरिचयक पर्वत दिन-दिन उत्तुंग भेल जा रहल अछि । धीयापूता एहि अपरिचयक बीच सेतु

बनल अछि । सभसँ पैघ सेतु शारीरिक माङ ! एकटा अपरिचित, मुदा मजगूत सन बन्धनमे जकड़ल छी । अप्रिय नहि लगैत अछि ।

आजुक बुझनुक लोक सभ हमर बातपर, हमरालोकनि सन लोकक बात पर हँसैत छथि । हुनका विचित्र लगैत छनि ई बात जे लोक अपरिचितो रहिकऽ कोना जिनगी भरि संग रहि लैत अछि । हुनकालोकनिक विचारेँ हमरा सन लोककेँ गोली मारि देबाक चाही । सुविधा होइनि तँ ओ लोकनि अबस्से गोली मारि देताह । मुदा गोली खयबाक डरेँ हम झूठ तँ नहि बाजब । ओना, हुनका लोकनिक दृष्टिमे हम कायर छी, समझौतावादी छी । बिनु प्रेम कयने पत्नीक संग रहैत छी । मुदा पत्नीक अतिरिक्त आन कोनो स्त्रीसँ प्रेम कहाँ भेल अछि ? अपरिचित रहियो कऽ अप्रिय नहि छथि ओ !

मुदा लगैत अछि, जेना बहुत रास विरोधी बात हम एक्के संग अपनामे जोड़ने जा रहल छी । हम ओ नहि छी जे लोक बुझैत अछि । ओहो नहि छी जे बनऽ चाहैत छी । एकटा विचित्र स्थितिमे अपनाकेँ ओझरौने जा रहल छी । नित्य सोचैत छी, आजुक लोक बनब, व्यावहारिक बनब । मुदा दोसरे दिन भेट भेलापर पूर्ववत् आत्मीय व्यवहार कऽ बैसैत छी । नित्य सोचैत छी जे एहि कमजोरीसँ बाँचब ! आत्मीयताक बाढ़िकेँ नहि उमड़ऽ देबैक । औपचारिक सम्बन्धक अभ्यास करब । मुदा सभ दिन ई निश्चय बहि जाइत अछि । कोनो परिचित चेहरा भेटिते आत्मीयताक उद्वेगमे बहि जाइत छी । सभ दिन लगैत अछि, जेना पत्नीक संग आब साफ-साफ गप्प करब, एना अपरिचयक बीच संग रहब ठीक नहि । मुदा घर अबिते सभ दिन जकाँ चुपचाप संग साटि लैत छियनि। आफिस जयबासँ पूर्व नित्य सोचैत छी जे आब काजक प्रति सेहो 'एप्रोच' बदलऽ पड़त, विद्रोह करऽ पड़त ! मुदा आफिस पहुँचिते सभ दिन जकाँ अनवरत शुरू भऽ जाइत छी– स्पन्दनहीन मशीन जकाँ । सत्ते, बड़ कायर आ समझौतावादी भेल जा रहल छी हम !

यैह सभ सोचैत सड़कपर नहि जानि कतेक काल ठाढ़ रहि जाइत छी। मित्रक गेला कतेक समय बीति जाइत अछि आ हम गुनिधुनिमे पड़ल सड़केपर ठकमल रहि जाइत छी । यैह तँ दुनू गोटेमे अन्तर अछि– आजुक सकल व्यावहारिक लोक आ हमरा सन कायर समझौतावादीमे । ओ हाथ हिला विदा होइते हमरा सम्बन्धमे सभ बिसरि गेल होयत, एहि आकस्मिक भेटकेँ बिसरि गेल होयत । ओ एतऽसँ कोनो होटल गेल होयत । बियर वा ह्विस्की पीबि रहल होयत वा पत्नीक संग क्लब चलि गेल होयत ! आ हम एहि आकस्मिक भेटकेँ

एतेक तूल दऽ अपन सम्पूर्ण सम्बन्धक व्याख्यामे लीन छी । बीच बाटमे अड़कल छी । एहन भेटक कोनो महत्त्व नहि होइत छैक । पीठ मोड़िते एकरा बिसरि जयबाक चाही । मोन पाड़बा लेल आरो बहुत रास गप्प अछि । डेरापर बच्चा सभ दुखित अछि, ओकर सभक दवाइ आनऽ पड़त ! दवाइ तँ भरिसक आइ भरिक होयबो करतैक । मुदा तरकारी तँ आनहि पड़त । परिचय-अपरिचयक गुनिधुनिमे लागल रहब निरर्थक थिकैक । असल परिचय थिक दवाइ आ तरकारी । ओहिमे कोनो गुनिधुनि नहि ।

हम डेग झटकारैत छी । डेरा पहुँचि जुत्ता खोलि पयरमे चट्टी दैत छी तँ पत्नी चाह राखि जाइत छथि । चाह पीबि झोरा लऽ उठऽ चाहैत छी । तँ पत्नी टोकि दैत छथि– आइ बेसी थाकल बुझाइत छी, रहऽ दियौक, बेसन अछि, बड़ी बना लेब ।''

हम पत्नीक मुँह देखैत सोचैत छी जे हम बीच बाटमे घण्टो अँटकल हिनके अपरिचित होयबाक सम्बन्धमे सोचैत रही ! ओ हमरा एहना तकैत देखि अकचका जाइत छथि– की बात थिकैक ?

हम झोरा मोड़िकऽ तहियबैत उठैत छी– ''किछु नहि, थकनी कथीक ? तुरन्त लऽकऽ आबि जाइत छी !''

बाहर अयलापर बेस स्फूर्ति बुझाइत अछि । पैघ-पैघ डेग दैत बजार दिस विदा होइत छी । हलुआइ हमरा नमस्कार करैत अछि आ फलवला आदाब ! बनिया अपन गद्दियेपरसँ हाथ जोड़ैत अछि आ दर्जी लम्बा सलामी दैत अछि । तरकारीवाली हमरा देखिते हँसिकऽ पुछैत अछि– ''झोरा लाउ मालिक, आइ की सभ लेबैक ?

तरकारी लऽ घुरैत काल शहर हमरा खूब परिचित आ छोट-छीन बुझाइत अछि ।

[1972]

गुण्डपनी

आवा-जाही नियमित भऽ गेल छलैक । भोर-साँझ ! भोर कने अन्हरोखे आ साँझ कने अन्हार झुकलापर । मुदा अइ झलफल आ अन्हरियामे किछु नुकाइत नहि छलैक । सभ टा बेश देखार आ बूझल-जानल ।

ओना लागत जे जानल किछुओ नहि, बुझबा जोगर कनिओ नहि । भोरक इजोतमे हुनकर त्रिपुण्ड चानन, धपधप उज्जर खद्दरक धोती-कुर्त्ता आ हाथक घड़ी लोक देखैत छनि, मुदा ई नहि देखैत छनि जे हुनकर डेग किम्हर ससरैत छनि सभदिन । वसूली ! सभ डरे दबकल रहैत अछि, कहीं इम्हरे ने अँटकि जाथि आ तगादा भऽ जाय । भने जाइ छथि, जाय दिअनु । सरकारीक खेत क्यो चरय, ओइमे हिसाब-हिस्साक कोन काज ! सुतार छैक, जकरा लहि जाइ ।

तहिना साँझक झलफलमे हुनकर चारि बैटरीवाला टार्चक प्रकाश जखन गामक सीमाक भीतर पड़ैत अछि, गामक मुखियाक दरबज्जापर वेश जमघट रहैत अछि । सभ टोलक लोक । मुदा टार्चक ओइ चिन्हार रोशनीकेँ सभ देखिओ कऽ अनठा दैत छैक । ध्यान देबा जोगर आर बहुत रास गप्प सभ होइत रहैत छैक सभदिन ।

''अइ गामक एक टा फराक व्यक्तित्व रहलैक अछि सभदिन अइ इलाकामे ।'' निरसू बाबू कहैत छथिन— खाली जमींदारीक आ धनक चलते नहि, एकर विचार आ संस्कारक चलते, त्याग आ आदर्शक चलते ।''

''से तऽ ठीके ! नहि तऽ आइ कहाँ अछि धन-बीत ? मुदा इलाकामे सम्मान ओहिना अछि, ककरो मजाल छैक जे अइ गामक इज्जतिपर ढेप फेकत, एकर परतर करत ?'' फेकन चौधरी गर्वपूर्वक कहैत छथिन ।

सभक ध्यान पोखरिक भीड़पर चमकैत टार्च दिस जाइत छनि, मुदा फेर सभ अनठा-पनठा कऽ गप्पमे लागल रहैत छथि ।

फेकन बाबू अपन वक्तव्य जारी रखैत छथि— एक बेरक खिस्सा कहैत छी । हमर बाप-पित्ती जीबैत छलाह । गामक एक टा गरीब ब्राह्मण छोट पाँजिमे

अपन बेटीक विवाह ठीक कऽ अयलाह । हमर पित्ती हुनका बजाकऽ चारि खड़ाम मारलखीन जे ऐरू-गैरूकेँ जमाय बना गाममे कोना अनबह ?''

मुदा, गामक नवतुरियाकेँ अइ वक्तव्यमे रुचि नहि छलैक । ओकरा सभकेँ सभ रातिक टार्चक रोशनी असह्य भेल जाइत छलैक । जहिना ओ रोशनी आङनमे जा विलीन भेलैक, सभ टा छौँड़ा जुमि गेल आङनमे । गर्दमगोल । क्यो लात, क्यो जूता, क्यो थापर । एक गोट टॉर्च छीनि ओकरे डन्टा जकाँ बजारि देलक माथपर । शोणितक धार । एक्के क्षणमे ई काण्ड कऽ छौंड़ा सभ निपत्ता भऽ गेल !

मुखियाजीक दरबज्जापर बैसल लोकसभ अइ काण्डक भनकी पौलक । दोगा-दोगी देखलक । मुदा क्यो ने टसकल । एहन सन क्रम जेना किछु भेले ने होइ ।

मुदा प्रात भने बहुत किछु होमऽ लगलैक । रमेशकेँ अलगू बाबू बजौलखीन– ''तोहू छलऽ ?''

रमेश चुप्प रहल । अलगू बाबू क्रोधे गरजि उठलाह– ''एही लेल तोरा पढ़ा-लिखाकऽ मनुक्ख बनौने छलहुँ ! एम.ए. पास कऽ दू सालसँ हमर कोँढ़ खा रहल छऽ । उपरसँ ई गुण्डपनी ! तोरालोकनिमे ने विचार छऽ ने चरित्र । आइये सूदिक तगादा आबि गेल । आब कोन उपाय करू ?''

अरुणक बाप हाथे उठा देलकैक । अनधुन पीटैत कहऽ लगलैक ''इएह इंजीनियरी करैत छें तोँ गाममे ? सय-पचासक मास्टरियो ने देलकौ क्यो ? बैस हमर छातीपर आ करैत रह काण्ड सभ । आइ दोकानसँ पुर्जा घुरा देलक, उधार नहि देत । आब खाइ जो हमर करेज !''

घुटराक अँगनामे आरो पैघ काण्ड भेलैक । ओकर बाप कहलकै– ''तोँ सभ की जानऽ गेलहिक रक्षा करब ! रक्षा तऽ हमसभ कैलियैक एतेक दिन । स्वामी कतऽ चल गेलैक ? ओकर बाद चारिटा संतान भेलैक । सभ टाकेँ डेबलियैक हमरा लोकनि । कहियो कोनो हल्ला भेलैक ?''

घुटरा कने उद्दण्ड छल । बापकेँ लपेटैत बाजल– ''तऽ से ने कहू जे स्वामीकेँ अहीँ लोकनि भगा देलियैक आ ओकर चारू संतान हमरे लोकनिक बैमात्रे अछि !''

बाप क्रोधान्ध भऽ लाठी चला देलकै आ घुटरा ईंटा उठा बापक कपार फोड़ि गामसँ भागि गेल ।

फेर शान्त भऽ गेलैक– सभ किछु । रमेश नोकरी ताकऽ पटना चल गेल । अरुण गामे बैसल सड़ैत रहल– अखबारमे इंजीनियर सभकेँ सरकारी ठेका भेटबाक खबरि पढ़ैत रहल । घुटरा अपन सासुरमे छल । बाकी छौँड़ा सभ अपन-अपन बाप-पित्तीसँ फराक गोल बनौने साँझ-परात किछु दिन बौआयल । फेर सभ अपन-अपन घर धयलक । गोल टूटि गेलैक ।

तगादा किछु दिन जनमारा रहलैक । फेर बुझनुक लोकनि दौड़लाह, कनफुसकी कयलनि । दोकानक पुर्जा आबऽ जाय लगलनि । तगादा शान्त भऽ गेलनि ।

पोखरिक भीड़पर टार्चक रोशनी फेर चमकल । आवा-जाही नियमित भऽ गेलैक । साँझक झलफलमे आ भोर अन्हरोखे ।

आ गामक किछु उद्दंड आ विद्रोही छौँड़ाक गुण्डपनीक चर्चा मुखियाजीक दरबज्जाक बैसकमे किछु दिन तक नित्य होइत रहलैक ।

[1972]

●

बीति जयबाक खुशी

आफिससँ क्लान्त घुरल छल । पत्नी प्रतीक्षामे छलैक । मुदा, ओकर अनुरोध ओ बिसरि गेल छलैक । आइ तेसर दिन छलैक एहि तरहेँ बिसरि जयबाक । मुदा ताहिपर कोनो विशेष ग्लानि नहि भेलैक । मुदा पत्नीकेँ क्रोध आ दुःख भेलैक । किछु काल बजलैक, फेर बजैत-बजैत काज-धाज करऽ लगलैक । अपन कर्म-कपारकेँ दोष देबऽ लगलैक । बीचमे ओहो एक बेर बमकि उठल । पत्नी सहमिकऽ चुप भऽ गेलैक । फेर नोर खसबऽ लगलैक । बड़ी काल धरि खसैत रहलैक । अपराधी जकाँ ओ देखैत रहल । चुप करबाक इच्छा भेलैक, मुदा अपन स्थानसँ नहि हिलल । खा-पी कऽ क्लान्तिक अछैतो ओ आँखि खूजल राखि बिछानपर पड़ल रहल । धीया-पूताकेँ सुता पत्नी बिछानपर अयलैक । ओ अपन दिस झिकलकै ओ देहमे सटि गुम्म पड़लि रहलैक । फेर देह-हाथ लोथ भऽ गेलैक आ पिपनी बन्न । भोरमे ओ बिछानपर एकसर छल । काज-धाजमे लागल पत्नीक आकृतिपर तनाव आ रोष छलैक । मुदा एकटा दिन बीति गेल छलैक । ओ बिछान छोड़ि सोचलक जे अजुका दिन बितलाहासँ भिन्न होयतैक ।

[1974]

●

विशेषाधिकार

बड़ा साहब ओकर छुट्टीक आवेदनकेँ उपेक्षापूर्वक 'पेपर वेट' सँ दबा टेबुलक एक कात राखि देने छलथिन। ओ तैयो आशामे ठाढ़ छल। किछु काल बाद मूड़ी उठाकऽ कहलथिन– 'एना छुट्टी किएक नष्ट करब ? आइ-काल्हि तँ बोखार-सर्दी चलले छैक। अहाँ कोनो डाक्टर तँ छी नहि। डेरापर रहियोकऽ की करबैक ? ठीक छै नै ?''

बड़ा साहबक बातपर ओ तीन दिनसँ 104 डिग्री बोखारमे पड़ल अपन बेटाक आकृति बिसरबाक चेष्टा करैत बाजल– ''जी सर !''

तखने टेलीफोनक घण्टी बजलैक। टेलीफोन राखि बड़ा साहेब चिन्तित भऽ उठलाह। ''घरसँ टेलीफोन छल। एकाएक मिनीकेँ एक सय बोखार भऽ गेल छैक। हम जाइत छी, अहाँ सभ टा सम्हारि लेब।''

ओ पेपरवेट तरमे दबल अपन आवेदन उठबैत हड़बड़ाइत बाजल– ''अहाँ जल्दी जाउ सर, एतुक्का चिन्ता जुनि करू।''

[1974]

●

बाप-कठबाप

–''अहाँ बैसू, हम चाह लेने अबैत छी।

बिनु ओकर उत्तरक प्रतीक्षा कयने अचला कोठलीमे बिला गेलैक ! बाहर अखरा चौकीपर गगन ओहिना बैसल रहल। अचलाक हठात् चल गेनाइ ओकरा अधलाह नहि लगलैक। फक्क दऽ जोरसँ साँस छोड़लक। बड़ी कालसँ लागि रहल छलैक जेना साँस चलब बन्न भऽ गेल होइ ! जखनसँ आयल छल, ओहिना साँस रोकने बैसल छल– शून्यमे स्थिर दृष्टियेँ तकैत। अचला दिस तकबोक साहस नहि भऽ रहल छलैक। मात्र एहि ठाम चल अयबाक अपन साहसपर आश्चर्य आ ग्लानि भऽ रहल छलैक। नहि जानि, कोन शक्तिसँ घिचायल अचलाक पाछाँ-पाछाँ एतऽ धरि आबि गेल छल। बजारमे देखने छलैक अचलाकेँ आ पाछाँ लागल एतऽ धरि चल आयल छल। ओकरा एतऽ बेसी आश्चर्य आ ग्लानि भऽ रहल छलैक।

अचलाक चल गेलासँ ओहि ग्लानि-भावनासँ जेना मुक्ति भेटलैक। लटकलहा पयरकेँ नीक जकाँ झमारिकऽ पलथा मारिकऽ चौकीपर बैसि गेल। घण्टा भरिसँ लटकल पयर लोथ जकाँ भेल जा रहल छलैक। जखनसँ आयल, ओहिना बैसल छल। घरक मुँहथरि लग आबि अचला घूरिकऽ पाछाँ तकने छलैक आ ओकरा देखिते ओकर दृष्टि किछु क्षणक लेल ओकरेपर जेना जड़ भऽ गेल छलैक। ओहि दृष्टिमे की छलैक– घृणा, आश्चर्य, तिरस्कार वा स्वागत–गान नहि बूझि सकल। स्वयं आगू बढ़ि अखरा चौकीपर घरक बाहरे बैसि गेल। घरक भीतर जयबाक साहसे नहि भेलैक। अचला बड़ी काल धरि सुन्न जकाँ भेलि घरक मुँहथरियेपर ठाढ़ रहलैक। दोबारा फेर ओकरा दिस नहि तकलकैक। आस्ते-आस्ते टघरिकऽ चौकीक दोसर कोनपर बैसि गेलैक। फेर दुनू एक घण्टा धरि बैसल रहल। दुनू एक-दोसराक दृष्टिसँ बचैत केम्हरो शून्यमे तकैत रहल। बीचमे पाथर-सन चुप्पी। गगनक साँस बन्द जकाँ भऽ गेल छलैक।

मुदा, आब अचला घरक भीतर छलैक आ बाहर अखरा चौकीपर गगन पलथा मारि बैसल छल। अगल-बगलक घरसँ आ कोनो-कोनो बाट चलैत लोक ओकरा देखि अनेरो मुसकिया दैत छलैक। प्रायः पहिनो मुस्किआयल होयतैक,

मुदा घण्टा भरि ओ कहाँ किछु देखि सकल छल ? दृष्टि जेना पथरा गेल छलैक। एना मुस्किआइत किएक अछि लोक— गगन सोचैत अछि, मुदा किछु बेसी सोचबासँ पूर्व ओकरा एकटा दोसर मुसकी मोन पड़ि जाइत छैक— मधुर भाइक मुसकी !

साँझक झलफल आ कौखन रातुक अन्हारोमे, कौखन धारक कछेरसँ, कौखन कोनो बाड़ी आ कौखन कोनो मन्दिरक पछुआरसँ मधुर भाइ बहराइत छलाह । ठोरपरक मुसकी अन्हारोमे सभ देखैत छलनि, गगनो देखने छलनि कैक बेर । मधुर भाइक पिण्डश्याम रंग, भुल्ल मोछ आ कुइर आँखि आ दुढेकिया धोतीपर चरखाना हाफ-कमीज आ पानसँ रङल ठोरक मुसकी गामक सभ लोककेँ चीन्हल छलैक । शनि दिन कीर्त्तनमे आरतीक सराइ कपारपर लऽ नाँचि जायब, झालि बजा मौगियाही स्वरमे गीत गायब, मेला-ठेलामे चिन्हार-अनचिन्हार मौगी सभक गोलमे सन्हिया जायब— मधुर भाइक विशेषता छलनि । मुदा गगन ताहिसँ प्रभावित नहि छल । ओ तँ प्रभावित छल मधुर भाइक ओहि रहस्यमय मुस्कीसँ जे धारक कछेरसँ ऊपर अबैतकाल मन्दिरक पछुआर आ अन्हार बाड़ीसँ बहराइत काल मधुर भाइक ठोरपर पसरि जाइत छलनि— आइ रम्भा आयलि छलि... । आइ मुन्नी... आइ कौशल्याक पार छलनि... । गगनक किशोर हृदय एहि जादूपर मुग्ध होइत छलैक आ मधुर भाइक भुल्ल मोछ, कुइर आँखि आ पतराह पिण्डश्याम देहक चमत्कारक तुलना अपन गोर-नार, हृष्ट-पुष्ट देहसँ बेर-बेर करैत छल ।

मुदा, ओकरा क्यो ने भेटलैक । ने साँझक झलफलाइत धारक कछेरमे, ने मन्दिरक एकान्त पछुआड़मे आ ने बाड़ी-झाड़ीक डेराओन अन्हारमे । किशोरसँ नवयुवक होइत गगन बेर-बेर ओहि स्थान सभक चक्कर लगबैत रहल । कालेजक छुट्टीमे गाम आबि घण्टो धारक कछेर आ मन्दिरक पछुआड़मे बौआइत रहल । कहियो क्यो नहि अयलैक । कहियो क्यो ने बजौलकैक । अपनेसँ ककरो बजयबाक साहसे ने भेलैक ।

मुदा, गगनकेँ ई अपमान सहन नहि भेलैक । भुल्ल मोछ आ कुइर आँखिवलाकेँ ओतेक रास आ ओकरा लेल एक्को टा नहि ? मोन होइक जे शहर-बजारमे बाट चलैत ककरो हाथ पकड़ि लेअय । मुदा, साहसे ने होइक । हारिकऽ फेर गामेक झलफलाइत धारक कछेर, मन्दिरक पछुआड़ आ बाड़ी-झाड़ीक अन्हारमे ताकऽ लागल आ एक राति अचलाकेँ जबर्दस्ती घीचि लेलकैक अन्हारमे । विरोध नहि कयने छलैक अचला, चिचिअयलो नहि छलैक । ओकर

बाद सभ राति आयलि छलैक आ गगनक आहत अहं तुष्ट भऽ गेल छलैक । लगलैक जेना मधुर भाइसँ जीति गेल ।

मुदा फेर हारि गेल । ओहि राति अचला हिचुकि-हिचुकिकऽ कानऽ लगलैक । चारि मास भऽ गेल छलैक— आब सौँसे गाम बुझतैक । गगनकेँ बकार बन्न भऽ गेल छलैक । मधुर भाइकेँ तँ एना कहियो ने भेलनि, ककरो संग नहि भेलनि ? एहिमे ईहो सभ होइत छैक से तँ नहि कहने छलथिन मधुर भाइ । मुदा, आब तँ सौँसे गाम कहतैक ! अचला सभकेँ कहि देतैक, कहिया धरि चुप्प रहतैक ।

एक राति दुनूकेँ जेना-जे हाथ लगलैक हँसोथि कऽ पड़ायल । पड़ाइते चल गेल.... ।

— "चाह लियऽ ।" दुनू हाथमे दूटा प्याली लेने अचला ठाढ़ि छलैक । ओ अपन कप ओकरा हाथसँ लैत ओकरा आँखिमे सोझ तकलकैक । अचलाक आँखिमे की छलैक— तैयो ने बुझयलैक— घृणा, तिरस्कार, उपेक्षा, तटस्थता । एहि बीच प्रायः मुँह-हाथ धो-पोछि आयलि छलि अचला । किछु बेसी सहज लागि रहल छलैक । अपन प्यालीसँ चाह पीबैत ओहो चौकीक दोसर कोरपर बैसि गेलैक ।

बीचमे फेर एक टा चुप्पी । जेना एक-दोसरसँ पुछबा-कहबा लेल किछु नहि होइ । अचलाकेँ ध्यानसँ देखलकैक गगन । देह खूब भरि गेल छलैक आ रंगो जेना आर साफ भऽ गेल होइ । देखलासँ एहनो ने लागि रहल छलैक जेना बड़ सुखमे होइक आ ने यैह बुझाइत छलैक जे बड़ दुखेमे होइक । एक बेर फेर ओकरा एतऽ अयबाक अपन निर्णयक भावुकता आ निरर्थकतापर ग्लानि भेलैक । ओ एतऽ किएक बैसल अछि ? अचला ओकरासँ किछु ने पुछतैक, किछु ने कहतैक । ने ओकर देह डोलाकऽ कनतैक, ने कण्ठ फाड़िकऽ गारि-सराप देतैक । ओकर उपस्थिति जकाँ ओकर अस्तित्वो आब अचलाक लेल अर्थहीन छैक । एक दिन चोर जकाँ पड़ायल छल गगन, हत्या कऽ पड़ायल छल— सेहो नहि कहतैक अचला । मुदा, आइ कोना चोर जकाँ पड़ायत ओ । सामने बैसल छैक अचला आ साँझो ने भेल छैक । अबैत-जाइत लोक ओकरा दुनूकेँ बैसल देखि मुसकियाइत कनफुसकी करैत चल जाइत छैक आ अगल-बगल घरसँ ताकि अनेरो क्यो खिखिया दैत छैक । ओ उठबाक सोचैत अछि, मुदा पयर जेना एकदम लोथ भऽ गेल छैक । पलथा मारल पयरकेँ सोझ कऽ नीचाँ

जमीनपर टेकैत अछि । मुदा, तखने घरक भीतर कोनो बच्चा कानि उठैत छैक। ओकर हाथसँ खाली प्याली लैत अचला भीतर चल जाइत छैक ।

मुदा ओकरा जेना करेन्ट लागि जाइत छैक । ई बच्चा कोना कनलैक ? ओकर कानबकेँ सर्वदाक लेल शान्त कऽ देने छलैक ओ अपने हाथे । फेर ओ कानि कोना रहल छैक ? गगन बताह जकाँ आँखि फाड़िकऽ कोठलीक भीतर देखबाक चेष्टा करैत अछि । ई किन्नहु ने भऽ सकैत छैक । एकरा तँ हम अपने हाथे...

मुदा, फेर होश होइत छैक । ई तँ पाँच वर्ष पहिलुका गप्प छैक । बेसिये भेल होयतैक । मुदा, जहिया अचलाकेँ लऽ एही शहरक एकटा दोसर छोट-छीन मोहल्लामे ठहरल रहय, अचलाकेँ पाँचमे मास लागल रहैक । किछु दिन खूब मौज रहलैक । फेर अचलाक पेट फूलिकऽ डम्फ भऽ गेलैक । संग सूतऽमे मोश्किल होबऽ लगलैक । इच्छा भेलोपर अचला टारि जाइ, अपनो मोनमे होइ । मोन खोँझायल रहऽ लगलैक । अनेरो झगड़ा होबऽ लगलैक । अचला पीयर ढाबुस भऽ गेलैक, सौँसे देह फूलल । गगन पछताय लागल । कहाँ फँसि गेल ? कोनो ओकरे टा संग अन्हारमे सूतलि होयति अचला ? गाममे तँ कतेको छलैक । मधुर भाइ तँ छलथिने । अनेरो अचलाक नोकर देखि डेरा गेल ओ ? ई माथपरक जंजाल । ई फूलल पीयर-पसरलि माउगि ! एकरा लऽ की करत ओ ? फेर हाथो महक सभटा पाइ समाप्त भऽ गेल । आब तँ पेटोपर आफत । कोन फेरामे पड़ि गेलहुँ ?

आ, जहिया एक टा नेनाकेँ जन्म देलकैक अचला, मरणासन्न भऽ गेलैक । उठबा-बैसबा योग्य नहि रहलैक । छातीमे दूध नहि । नेनाकेँ दूध चाहिऐक । गगन कतऽसँ अनैत ? अचलाकेँ देखिकऽ ओकरा घृणा आ डर होबऽ लगलैक । बच्चाकेँ भूखे कानब ओकरा बताह बना देलकैक । एक दिन अचलाकेँ आँखि लागल छलैक आ आस्तेसँ नेनाक नरेटी दबा देने छलैक गगन....

फेर सभ टा शान्त भऽ गेलैक । अचला चिकरलै-भोकरलै नहि । रोगी देह जेना एकदम सुन्न भऽ गेलैक । निष्प्राण पड़ल रहलैक तीन दिन । ने मुँहमे अन्न-पानि, ने वाक् । मुइल नेनाकेँ गंगामे बहा, घरमे बताह जकाँ, अपराधी जकाँ राति-राति भरि टहलैत रहल गगन आ अचला निर्वाक्-निश्चेष्ट पड़लि रहलैक । ओकरा डर होबऽ लगलैक जेना नेनाकेँ नरेटी दबबैत ओकरा देखि लेने छलैक अचला । पुलिसकेँ बजा ओकरा जहल पठा देतैक । आ, तेसर राति ओ बेजान पड़ायल छल आ गाममे माय-बाप लग ठोहि पारिकऽ कानऽ लागल

छल– अचला उढ़री छलैक । ओकरा ठकि पटना लऽ गेलैक आ ओतऽसँ फेर ककरो अनका संग पड़ा गेलैक ।

कोठलीक भीतरसँ एकटा नेनाकेँ कोरा लेने अचला बाहर आबि रहलि छलैक । गगन माथ हिलाकऽ अपन मोनक भ्रम झाड़ऽ चाहलक– मुइल बच्चा कोना जीतैक ! पाँच बरख भेलैक ! ई तँ.... ! नीके भेलैक । अचलो कोनो ठेकान पाबि गेलैक । पाँच बरखसँ अनेरो ओ बेर-बेर अपराध-बोधसँ ग्रस्त आ उद्विग्न होइत रहल अछि, अपने दृष्टिमे अपने हेय बनल रहल अछि । आजुक बाद ओ सभटा बिसरि सकत आ सहज भऽ कऽ जीबि सकत । अचलाक संग कयल गेल अपन विश्वासघातक अपराध-बोध आब चौबीस घंटा ओकरा दुत्कारैत नहि रहतैक । अचला सुखी छैक, परिवारक संग छैक ।

अचला बच्चाकेँ कोरा लेने फेर चौकीक ओही कोरपर बैसि नि:संकोच दूध पियाबऽ लगलैक । गगनकेँ नीक लगलैक । ओकर मुँहकेँ नीक जकाँ देखैत बाजल– "एकर बाप कखन ओतैक ?"

अचला हँसलैक । कोनो उत्तर नहि देलकैक । ओहि हँसीक अर्थ गगनकेँ नहि लगलैक । ओ फेर कने काल निरर्थक एम्हर-ओम्हर तकैत रहल । अचला ओकरा दिस नहि ताकि रहलि छलैक । गगन भावुक होइत बाजल– "तँ हमरा तोँ माफ कऽ देलेँ अचला ?"

अचला एक बेर मूड़ी उठा ओकर मुँह दिस तकलकैक आ फेर चुपचाप दोसर दिस ताकऽ लगलैक । कोनो उत्तर नहि । गगन बेसी भावुक होइत बाजल– "हमर अपराध अक्षम्य छल । विश्वासघात आ हत्या । बच्चाकेँ...

एहि बेर बाजि उठलैक अचला– "ओकर चर्चा नहि करू ।"

मुदा गगन नहि मानलकैक– "आइ हमरा कहऽ दे अचला ! हमर मोनक बोझ हल्लुक होयत । हम जनैत छी जे तोरा सभ बुझल छौक, तैयो हमरा कहऽ दे आइ ! हम खाली विश्वासघातिये नहि, हत्यारा सेहो छी अचला ।"

"नै, ई चर्चा बन्न करू आब । हमरा नहि सुनबाक अछि किछु ।"– अचला बीचमे फेर टोकलकैक ।

–"मुदा हमरा कहबाक अछि अचला ! नहि जानि फेर कहियो भेट होअय वा नहि । छातीपर एकटा बोझ रहि जायत । हमरा कहि लेबऽ दे । तोँ क्षमा नहि कऽ सकहिँ तँ नहि करहिँ । हम जोर नहि देबौक । तोँ सुखी छेँ । हम जे तोरासँ छीनि लेने छलियौक से सभ आइ तोरा भेटि गेल छौक । से देखि

आइ हम बड़ प्रसन्न छी । हमर पापक विचार होयत, मुदा तोरा हम मोनसँ आशीर्वाद दैत छियौक, सुखी रह ।''

अचला तैयो चुप्पे रहलैक । गगनकेँ सेहो आगू बजबा लेल किछु ने फुरयलैक । दुनू फेर गुम-सुम बैसल रहल— शून्यमे तकैत । मुदा आब गगनक साँस रुकल नहि छलैक । सहज आ हल्लुक लागि रहल छलैक मोन । बैसल-बैसल साँझ भऽ गेलैक । अचला बाहरक बत्ती जरा देलकैक । गगनकेँ उठबाक कोनो लाथ नहि भेटि रहल छलैक ।

''एक बेर आरो चाह दियऽ ?'' — एहि बेर अचले टोकलकैक ।

''नहि, रहऽ दे । आब जायब ।'' — जयबाक बात बाजियोकऽ गगन बैसले रहल । ओकरा नहि जानि किएक आशा छलैक जे अचला जिद करतैक आ फेर चाह लऽ अनतैक । मुदा, अचला चुप्प भऽ गेलैक आ ओकरा लगलैक जे आब बिनु ऊठिकऽ विदा भेने कोनो उपाय नहि छैक ।

तखने क्यो धड़फड़ायल अयलैक आ कोठलीक भीतर जा जोरसँ चिचिया उठलैक— 'जल्दी आ ।'

गगनक ठोरपर हँसी आबि गेलैक— ''बड़ मानै छौ तोरा ! अबिते आफन तोड़ऽ लगलौ ! जो, हमहूँ जाइत छी ।''

आ, फेर जेना मोनमे किछु कसकि उठलैक । आङुरसँ अचलाक कोराक नेनाक गाल छुबैत कहलकैक— तोहर बापसँ दोसर बेर भेट करबौ ।

मुदा, ओकर ठाढ़ होयबासँ पहिने अचला ऊठिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक । एकटा विचित्र हँसी हँसैत बजलैक— ''आब जखन आबिये गेल छी तँ कने काल आरो बैसू । एखन तँ साँझे पड़लैक अछि । एकर एक टा बाप आबिकऽ आफन तोड़ि रहल छैक । एखन अगल-बगल ककरा लग रखबैक ? कने एकरा रखियौक । हम एकर बापकेँ खलास कयने अबैत छी ।''

बच्चाकेँ गगनक कोरामे दऽ अचला कोठलीक अन्हारमे बिला गेलैक आ गगन फेर सुन्न भेल बैसल रहल । किछु काल बाद कोराक बच्चाक मुँह देखिते जेना चेहा उठल । लगलैक जेना जकरा अपने हाथेँ नरेटी दबा गंगामे फेकि आयल छलै, कोरामे अपन वैह बच्चा हँसि रहल होइ । दुनू हाथेँ बच्चाकेँ कोरासँ उठा करेजसँ साटि लेलकैक गगन आ एक टा दृढ़ निश्चयक संग ठाढ़ होइत जोरसँ बाजल— ''अचला, जल्दी बाहर आ ।''

[1975]

ककरो आङनमे

ओकरा आङनक मुँहथरिपर देखिते लोक साकांक्ष भऽ जाइत छल । आइ अबस्से एही अङनाक पार छैक— लोक बूझि जाइत छल आ धपायल रहैत छल । मुदा, कनेक आँखिक अढ़ होइ कि यैह ले' वैह ले'... । गर्द करैत लोक ओकर आङन धरि पहुँचि जाइत छल, घर-आङन, बाड़ी-कोनटा सभ टा देखि जाइत छल, मुदा जेना निपत्ता कऽ दैत छलैक । लऽ गेल वस्तु फेर घूरिकऽ नहि अबैक ।

मुदा, से तँ बादमे भेलैक । पहिने ओकर बाप अबैक दरबज्जापर तँ लोक डेरा जाय— अबस्से ठेकनाबऽ आयल अछि, राति चोरबासभकेँ नोतत । आब वयसाहु भेलैक, अपने नहि सकैत अछि, मुदा एखनो चोरक मेट वैह अछि । गाम भरिक लोककेँ पक्का विश्वास छलैक । जाहि टोलमे बौकू झा भोरमे पयर देथि, ताहि टोलक लोक राति भरि जगले रहि जाय ।

गामक कतबैमे घर छलनि बौकू झाक । जंगल आ बँसबिट्टीसभक बीचमे बिनु असोराक दूटा फुसकी टाटक घर । पश्चिम आ दक्षिण दिस जंगल आ बँसबिट्टी आ उत्तरबारी कात एक टा कुम्भीसँ छारल, विष्ठासँ गन्हाइत डबरा । पूब दिस, घरक आगूमे कने दूर घास छीलल चिक्कन माँटि-दरबज्जापर बैसबाक जगह । पाहुन-परक आबि जाइनि तँ ओही चिक्कन माँटिपर पटिया बिछा देथिन । ओहि चिक्कन माटिक बाद गाम दिस जाइत एक टा एकपेड़िया— सोझे पूब दिस जाइत, ओ एकपेड़ियाक दुनू कात माँटि, सिक्कटि आ अनेरुआ गाछसभ । दिन-देखार ओहि एकपेड़ियापर, ओहि डबराक कातमे, ओहि बँसबिट्टी लग आ ओहि आङन-दरबज्जापर अजोध साँपसभ फोँफ कटैत पड़ल रहैत छलैक । कतेको बेर लोकसभकेँ अभरल छलैक । मुदा, बौकू झा राति-बिराति भोर-साँझक झलफलोमे खाली पयर, ठेहुनसँ ऊँच धोती पहिरने आ देहपर एक टा मैल जोलही गमछा लेने, हाथमे बिना कोनो ठेङा वा इजोत लेने ओहि बाटे प्रति दिन दस-बीस बेर अबैत-जाइत छलाह । जीवो-जन्तु हुनका अन्हारोमे चीन्हि लैत छलनि । हुनक पोसुआसभ छलनि । पोसुआक कोन डर ?

ओना, अन्हारमे बौकू झाकेँ चीन्हब कठिन काज । चाकर, सियाह, कारी भुजुंग देह– बुढ़ारियोमे एकदम सोझ ठाढ़ । आगूक दाँतसभ निपत्ता । किछु वयस, किछु तमाकूक कृपासँ । ठाढ़ मुदा टुनगी लग मुड़ल नाक आ पैघ-पैघ कान । मैल जनौ आ त्रिपुण्ड्र चानन । डाँड़सँ लटकल बटुआमे तमाकू आ चुनौटी ।

मुदा, असल चिन्हलकनि लोक ओहि दिन, जहिया दिन-देखार बंशू बाबूक करजानमे केराक घौर कटैत पकड़ि लेलकनि । आ, फेर तँ बात साफ ! दस साल पूर्व गाममे जे चोरि भेल छलैक । वा तकर बाद गाममे जतेक चोरि भेलैक, बौकू झा, ओहिमे अनिवार्य रूपसँ छलाह– गौआँक धारणा छलैक । ओना, केराक घौर काटब छोड़ि कहियो कोनो चोरि करैत हुनका क्यो ने पकड़लकनि ।

तीन टा बेटा भेलनि । तीनू बेराबेरी चल गेलनि– बेस चेतनगर भऽभऽकऽ । बौकू झा सभ लग कनलाह– ''नीक जकाँ दबाइ-पथ्य नहि कऽ सकलिऐक । मलेरिये तँ छलैक, बाँचि जाइत ।'' मुदा, गामक लोककेँ कोनो दुख नहि– 'ईश्वर न्याय कयलथिन ! चोरिक दण्ड !' बुढ़ाड़ीमे एक टा बेटी भेलनि आ सैह बेटी जखन लोकक आङनक मुँहथरिपर ठाढ़ि होइत छलनि तँ लोक साकांक्ष भऽ जाइत छल । बेफानक झोलङा पैन्ट आ चिप्पी साटल चितकाबर फ्राक पहिरने दस वर्षक सुनयनाकेँ देखिते लोक आङनमे छिड़िआयल वस्तुजात समेटऽ लगैत छल ।

पहिल बेर पकड़लथिन बुन्नूक माय । भात रान्हिकऽ भनसाघरमे राखि कने बाड़ी दिस गेलीह कि सौँसे बट्टुक भात एक टा कठौतमे उझिलि लंक लगौलक सुनयना । बुन्नूक माय गर्द मचौलनि, अपनहु पाछाँ दौड़लीह । दिन-देखार छलैक, पकड़लि गेल सुनयना आ, फेर गर्दामे ओंघरायल भरि कठौत भातक संग सुनयनोक लतमर्दनि भेलैक ।

आ, तकर बाद तँ सभदिना गप्प भऽ गेलैक । आइ फूल बाबीक फुलही थारी आ लोटा तँ काल्हि नेङुरी काकीक पितड़िया डोल । आइ ओसारापर टाङल नवकी कनियाँक छपुआ साड़ी तँ काल्हि अरगनीपर पसारल धोती ।

भरि गाम उपद्रव मचा देलकैक । बेर-कुबेर गाममे बौआइत सुनयनाक आँखिमे एक टा घात रहैत छलैक– कने आँखिक अऽढ़ कि निपत्ता । दरबज्जा लग दने ओकरा जाइत देखिते लोक आङन दौड़ि सभकेँ चेता दैत छलैक ।

मुदा, चन्नू बाबू तँ हद्द कऽ देलथिन । बाड़ीमे गाछपर चढ़ि थुर्री लताम तोड़ने छलनि । पकड़िकऽ जरनिघरामे बन्द कऽ देलथिन । रातिमे कखन ओकरा छोड़लथिन, से देखऽ तँ गामक लोक नहि गेलनि, मुदा दिन भरि जरनिघरामे बन्न ओहि चोरनीक मुँह देखबाक लेल गाम भरिक लोकक लाइन लागल रहलैक ।

आ, तकरे बाद एक टा अचम्भा भेलैक । ओहि दिनसँ आन देहक बेफान झोलङा पैन्ट आ चिप्पी साटल चितकाबर फ्राक पहिरने घरे-घर बौआइत चोरनीकेँ क्यो नहि देखलकै ।

प्रात भेने कि तकर प्रात कि तकर दस दिनका बाद बौकू झाक आङनसँ बहरयलैक एक टा मौगी– चाकर पाढ़िक पुरान साड़ी आ छीटक ब्लाउज पहिरने आ आँखि काजरसँ रङने । तकर बादे ओकरा आङनक मुँहथरिपर देखिकऽ आङनबाली साकांक्ष भेलि, मुदा ओकर आङनमे छिड़िआयल वस्तु-जात समेटबाक हलदिली नहि भेलैक । कपैत कोँढ़सँ ओ देखलक जे ओकर पुरुष कतऽ छलैक, आङनमे कि दरबज्जापर, आ ओ की कऽ रहल छलैक । कारी चामक मुँहपर एकटा तेहन चमक आबि गेल छलैक जे एकसँ एक रूपगर्विताकेँ ईष्यालु आ सशंकित कऽ दैत छलैक । सुनयना तकर बादो आङनमे ओहिना बौआइत छलि । ओकर आँखिमे आब मौका पबिते किछु उठाकऽ लंक लगयबाक घात नहि रहैत छलैक । ओहिमे रहैत छलैक एक टा मारुक मुस्की, जकरा देखिते बहुत रास करेज काँपि जाइत छलैक आ जकर संग-संग गाममे पसरैत छलैक नव-नव खिस्सा, नित्य नवे खिस्सा, नित्य नवे गप्प ।

मुदा, ओहि दिन जे काण्ड कयलकै सुनयना, तकर लोककेँ कल्पनो नहि छलैक । सेहो राति-विराति नहि, एकदम दिन-देखार, बीच दुपहरियामे । कोना कण्ठ फाड़ि-फाड़िकऽ चिचिआयलि रहैक ! आधा घंटा धरि चिचिआइत रहलैक, ता धरि चिचिआइत रहलैक, जा धरि ओकर आङनमे गामक सभ स्त्री-पुरुष-बच्चा जमा नहि भऽ गेलैक । बुढ़ बौकू झा जमीनपर मरणासन्न पड़लि अपन स्त्री लग दोसर घरक चौकठिपर ठाढ़ छलाह– सुन्न आ अवाक्, आ सौँसे आङन थहाथही लोक जमा छलनि । अपन कोठलीक जिंजिर बाहरसँ बन्न कऽ चौकठि लग ठाढ़ि सुनयना लगातार चिचिया रहलि छलि । रौद एकदम माथपर छलैक । आङनमे जमा लोक घामे-पसेने तर छल । मुदा नव तमाशा देखबाक लोभमे उत्सुकतासँ आङनमे एम्हर-ओम्हर ससरि रहल छल ।

सेन्हमारा बौकू झाक चोरनी बेटी सुनयना नहि, आन देहक बेफानक

झोलङा पैन्ट आ चिप्पी साटल चितकबरा फ्राक पहिरऽबाली सुनयना नहि, पन्द्रह वर्षक बुझनुक माउग सुनयना अपन बन्न कोठलीक चौकठि लग ठाढ़ि एक बेर नीक जकाँ देखलनि जे आङनमे सभ जमा भऽ गेल वा नहि । क्यो छुटल तँ नहि। तखन एकदम साफ कण्ठ आ मृदु, मुदा प्रखर स्वरमे बजलीह– ''अपन-अपन आङनमे हमर तमाशा तँ अहाँलोकनि बेर-बेर देखलहुँ । आइ अपने आङनमे अपन तमाशा देखबऽ लेल अहाँसभकेँ बजा अनने छी । सभ क्यो नीक जकाँ देखि लियौनि– यैह सेन्हमारा बौकू झाक आङन थिकनि । वैह, ओहि कोठलीमे माटिपर हुनक स्त्री मरणासन्न पड़लि छथिन । कने भीतर कोठलीमे पैसिकऽ देखियौन जे कतेक सोना-चानी जमा कयने छथि, कोन कोठीमे अन्न सभ भरल छनि । कने देखियौनि घरक चार आ अन्दाज करू जे आखिरी बेर कहिया छराओल गेल छलनि । पुछियौनि जे अहाँक बाड़ीसँ काँच केराक घौर किएक कटने छलाह ? पुछियौनि जे तीनू बेटा किएक मरि गेलनि ? ओतेक टा पिल्ही छलैक ओकरसभक पेटमे, तँ फेर भूख किएक लगैत छलैक ? नहि पुछबनि ?.... किएक पुछबनि ? अहाँलोकनि तँ एक टा चहटगर तमाशा देखऽ आयल छी, अण्ट-सण्ट पूछऽ आ सूनऽ नहि । अहाँ सभ किएक कोनो बात पुछबैक ? अहाँ लोकनिसँ कोनो बात नुकायल अछि ? सभ जनैत अछि ई सभ ?

आङनक लोकमे कने कछमछी पसरऽ लगलैक । एतेक रौदमे ई भाषण सुनऽ जमा भेल छल क्यो ? ओकरा तँ कोनो नव आ चहटगर गप्प चाहिऐक ।

सुनयनाकेँ जेना सभ दिस ध्यान छलैक । कने थम्हिकऽ बेराबेरी सभ दिस देखैत बाजलि– ''मुदा आइयो हम अहाँलोकनिकेँ निराश नहि करब । अहाँ तमाशा देखऽ आयल छी, से अबस्से देखायब । मुदा, कने पुरना तमाशासभ मोन पाड़ू जे कहियो एहि सुनयनाकेँ क्यो दिन भरि जरनिघरामे बन्न कऽ देने छलैक । राति बितलापर ओ कखन आ कोन हालतिमे घर घुरलि, से अहाँसभ क्यो ध्यान देलिऐक ! बुझलिऐक जे दस वर्षक सुनयना प्राते भेने माउग कोना बनि गेलि ? ओकर देहपर झोलङा पैन्ट आ चिप्पीवाला फ्राकक बदला पढ़िया साड़ी कतऽसँ आबि गेलैक ? मुदा से सभ अहाँलोकनि किएक देखबैक ? अहाँकेँ तँ चाही तमाशा । अहाँ तँ देखलिऐक जे सुनयनो आब बेस कड़गर...

लोकसभ तमसाकऽ आ अगुताकऽ पाछाँ हँटऽ लागल । भाषण आ गारि सुनऽ क्यो नहि आयल छल । फेर, सुनयना के थिकैक ईसभ कहऽबाली ? ओकर एहन मजाल ?

मुदा, सुनयनापर जेना ओहि तामस आ अगुताइक कोनो असरि नहि भेलैक । ओ कोनो निश्चयक संग अपन कोठलीक चौकठि लग ठाढ़ि छलि आ घरमे बाहरसँ जिंजिर लागल छलैक । ओ एक बेर फेर चारू कात तकैत स्पष्ट स्वरमे बाजलि– ''अपन मोनसँ हमर तमाशा बड़ देखलहुँ, आइ हमरो मोनसँ एकटा तमाशा देखू । एक दिन क्यो अप्पन जरनिघरामे हमरा बन्न कऽ देने छल, आइ हमहूँ अपन सुतबाक कोठलीमे ककरो बन्न कऽकऽ रखने छी । जिंजिर खोलि दियऽ हमहीँ कि अहाँलोकनि अपन खोलि लेब....''

ई सुनैत देरी पाछाँ हँटैत भीड़ एकदम आगू ससरऽ लागल । सुनयना अपनेसँ जिंजिर खोलि देलकैक । मुदा कोठलीसँ क्यो नहि बहरयलैक । एक टा छौँड़ा आगू बढ़िकऽ कोठलीमे पैसल, मुदा लगले खिखियाइत घूरि गेल । फेर दोसर पैसल, फेर तेसर, फेर चारिम । धक्कमधुक्की मचि गेलैक । कोठलीमे हुलकी आ खिखिआयब आ फेर कानोकान फुसफुसी... नङटे छैक... एकदम नङटे...

सभटा तमाशा देखैत सुनयना आब चौकठिक कातमे ठाढ़ि छलि । ओकरा लोक बिसरि गेल छलैक । भीतर हुलकी दऽदऽकऽ ठिठिया रहल छलैक, काने-कान नाम पसरि रहल छलैक– चन्नु बाबू छैक... वैह चन्नु बाबू....

एकाएक सुनयना जोरसँ चिकरि उठलैक– 'एकटा नाम लेलासँ की होयत ? ई नाम तँ ककरो भऽ सकैत अछि । अहूँक भऽ सकैत अछि... हुनको भऽ सकैत छनि...

सुनयना बेराबेरी भीड़ दिस आङुर देखबऽ लगलैक । सौँसे भीड़ स्तब्ध रहि गेल । ई की बाजि रहलि छलैक सुनयना ! अपने आङनमे बेपर्द कऽ रहलि छलैक । चन्नु बाबूक बात काल्हि नहि तँ परसू लोक बिसरि जयतैक । मुदा सुनयना...

सुनयनाकेँ कथूक चिन्ता नहि छलैक । ओ अहिना निश्चयपूर्वक स्थिर ठाढ़ि सभकेँ ललकारि रहलि छलैक– ''नीक जकाँ तमाशा देखू, कोनो कसरि ने रहि जाय । भुखायल पेटक लेल उसिनल काँच केरो केहन अनूप भऽ जाइत छैक, से देखऽ तँ अहाँ एहि आङनमे नहि आयल रही । रातिक अन्हारमे दस वर्षक बेहोस बेटीकेँ कान्हपर लादि जखन एक टा बाप एहि आङनमे आबि पुक्की पाड़ि कानल छल, तैयो अहाँ एहि आङनमे नहि आयल रही । मुदा, आइ तमाशा नीक जकाँ देखू । दुआरि खूजल अछि आ सुनयनाक सुतबाक कोठलीमे

एक टा नाङट पुरुष बैसल अछि । सेन्हमारा बौकू झाक बेटीक बियाहे नहि होयतनि, हुनक दरबज्जापर बरियाती नहि औतनि, हुनक बेटीक सुतबाक घरमे एहिना नाङट पुरुषसभ औतनि...

आब लोकसभक ठिठिआयब बन्न होबऽ लगलैक । भीड़ आस्ते-आस्ते पाछाँ ससरऽ लागल । ससरैत भीड़क संग सुनयनो आङनसँ बाहर आयलि आ अपन-अपन आङन दिस पड़ाइत लोकसभकेँ देखि जोरसँ हँसैत बाजलि— कने जल्दी-जल्दी जाउ । बेटी-पुतहु अहूँसभक आङनमे अछि । काल्हि ई तमाशा अहूँक आङनमे भऽ सकैत अछि ।

[1975]

मन्दाकिनी

सुतली रातिमे गर्द मचल छलैक ।

बरबज्जी ट्रेनक पुक्की गामक लोक सुनने छलैक, तकर कनिये कालक बाद रातुक निस्तब्धताकेँ चीरि पिहकारी आ ठहक्काक स्वरसभ चारू कात पसरऽ लगलैक । ओही गर्दमगोलपर मनोजक निन्न टूटि गेलैक ।

बीच आँगनमे चौकीपर चितंग पड़ल छल । गुमार बेसी छलैक । आँगनमे राखल चौकियेपर माय बिछौन करबा देने छलैक । गुमारक द्वारे सभक बिछौन आँगनेमे लागल छलैक । आँगनक मड़बाक उतरबारी कात ओकर चौकी छलैक, जकर पौथान लग राखल चौकीपर ओकर मायक संग दीयर आ सुधा सूतल छलैक— ओकरासँ छोट बहिनक बेटा-बेटी । मड़बाक पुबारी कात राखल चौकी पर प्रदीप सूतल छलैक । पाँच भाइमे वैह टा गाम रहैत छैक आ गामेसँ कालेज जाइत छैक । छोटकी बहिन मुन्नीक बिछौन पुबारी घरक पछबरिया ओसारापर छैक आ मड़बाक माँटिपर निभेर सूतल छलैक ओकर चरबाह गेनमा । उतरबरिया घरमे काका रहैत छथिन, जकर पछबरिया अलंग झड़ि गेल छैक । आ मात्र एक टा कोठली फूसक कहुना ठाढ़ छैक । दछिनबरिया घरक तीन कोठलीमे भाइक परिवार रहैत छनि ।

आँगनमे इजोरिया छिड़िया गेल छैक । मनोज जखन आँगन आयल छल, नीक जकाँ अन्हरिया जमकल रहैक । सभ सूति रहल छलैक । खाली माय जगले, मुदा ओँघाइत एक टा चौकीपर बैसलि छलैक । थारी परसैत कहलकै— बड़ राति भऽ गेलौ । कतऽ छलऽ अन्हारमे ?'

मायक ओइ बातपर ओकर मोन पाछाँ... बहुत पाछाँ उधिआय लगलैक । छोट... बहुत छोट होइत चल गेल ओ । अधिक काल साँझ पड़लोपर आँगन घुरबामे देरी भऽ जाइक । मुदा, गामक जइ कोनो आँगनमे रहय आ चाहे जतबा अबेर होइ, आँगन दिस जयबा लेल जखन बिदा होबऽ लागय... लालटेन लेने चरबाह ठाढ़ रहैक । ओकरा देखि अनेरो मनोजक मोन लोहछि जाइ । चरवाह

ओकर मोनक बात जेना बूझि जाइ । –हमरापर किए बिगड़ै छी बौआ ? मालिक नै माननलनि । कहलनि– ताकि लबहुन जतऽ होथि । अन्हारमे कोना घुरताह ?'

आ, तामसे मुँह धुआँ कयने जखन मनोज अपन घर दिस विदा होअय, दरबज्जेपर लालटेन लेने टहलैत भेटि जाथिन दादा (पिता) । हुनका देखि ओकर क्रोध आर बढ़ि जाइ । दादा ओकर मोनक बात नहि जानि कोना बूझि जाथिन– अनेरो तमसैलासँ की हेतऽ ? समयपर नहि घूरि सकैत छऽ तऽ कम्मसँ कम्म टार्च लऽकऽ जा । सेहो नहि होइत छऽ तऽ कहिकऽ जा जे कोन आंगनमे रहब ? घरे-घर ताकऽ तऽ नहि पड़तैक एना ।'

अही घरे-घर तकनीपर ओकर मोन लोहछि जाइ । जेना ओ कोनो दुध-पिब्बा नेन्ना रहय । प्रात भेलापर ओकर तामस आर बढ़ि जाइ । जेम्हरे जाय, सभ पूछऽ लगैक– राति कहाँ चलि गेल रही मनोज ! चरवाह हमरो आंगन ताकऽ लेल आयल रहैक ।'

मुदा मनोज कतबो तमसाय, दादाक व्यवस्थामे कोनो अन्तर नहि होइत छलनि । साँझक बाद गामक कोनो आंगनमे रहय वा धार पार पेठिया-बजारमे अँटकि जाय, जखने विदा होइत छल लालटेन लेने चरबाह ठाढ़ रहैत छलैक । आ, अपन दलान लग दोसर लालटेन लेने दादा टहलैत रहैत छलथिन ।

मायक बातपर मनोजकेँ ओ पुरना बात मोन पड़ि गेलैक । आब ने ओ गाममे रहैत अछि, ने घरे-घर क्यो लालटेन लेने ठाढ़ रहैत छैक । दलान-दरबज्जा सुन्न रहैत छैक । दादा नहि छथिन आब । ओकर संग ओकर छोटका भाइसभ सेहो बाहरे रहैत छैक । गाममे रहैत छैक– माय, एक टा छोट भाइ, एकटा छोट बहिन आ भागिन-भगिनी...

आइ दिनेमे गाम पहुँचल छल । दलान सुन्ने छलैक । आंगनमे पैसि गेल छल । भनसाघरमे व्यस्त माय देखिते दौड़िकऽ आंगन आयलि छलैक आ हाथ पकड़ि शंभूनाथ आ भगवतीक घर लऽ गेलि छलैक । ओकरा खाली हाथ प्रणाम करैत देखि ओकर आँजुरमे किछु फूल आ दूटा टाका राखि देने छलैक । भगवतीक बाद मायकेँ प्रणाम कऽ आँगन आयल ता उतरबरिया घरसँ काका बहार भेलथिन– कखन अयलऽ ? ने कोनो समाद ने चिट्ठी । कुशल-क्षेम कि ने !'

ओ पयर छूबैत कहलकनि– आफिसक काजसँ दरभंगा आयल रही । एक दिन लेल गामो चल अयलहुँ ।''

– ''एक्के दिन लेल ?'' काकाक स्वर उदास भऽ गेलनि– ''एतुक्का हाल तऽ देखिते छी । पचहत्तरि बखरक बूढ़ आ जीर्ण रोगी । आब ई बबासीर एक्को क्षण चैन नहि लेबऽ दैत अछि ।'' एतबा कहि ओ शोणितसँ भीजल धोती देखबऽ लगलथिन ।

ताबत माय पछबरिया ओसारापर बिछौन कऽ देने छलैक । चौकीपर आबिकऽ जहिना बैसल, गेनमा पंखा हौकऽ लगलैक । कने टा हथपंखा । ओकरा फेर एकटा पुरना गप्प मोन पड़लैक । दादाक व्यवस्था आ हुनकर नियम । जहिना शहरसँ क्यो आयल कि बड़का पंखा लऽ गेनमाक पित्ती टुनमा ठाढ़ भऽ जाइत छलैक । अढ़ाइ हाथक डण्टा लागल बड़का पंखा ! टुनमाक हाथ तैयो लगातार चलैत छलैक– घण्टो ।

पछबरिया घरक ओसारापरक चौकीपर जखन चाह पीबि आ जलखै कऽ पड़ि रहल, बहुत रास पुरना बात मोन पड़लैक । भाइ गाममे नहि छलथिन । दक्षिणबरिया घर जा भौजीकेँ प्रणाम कऽ अयलनि । धीया-पूता सभ स्कूल-कालेज चल गेल छलैक । माय भनसाघरमे भानस-भातमे व्यस्त छलैक । असगर चौकीपर पड़ल ओकर मोन बौआइत रहलैक ।

आँगनक सभ टा चीज चीन्हल, मुदा तैयो नवे सन लगैक । ओना, नव होयबाक सती सभ चीज पुरनाए गेल छलैक आँगनमे । पछबरिया कोठे टा नव छलैक, जकर ओसारापर राखल चौकीपर ओ पड़ल छल । मुदा, ओकरो दुनू कोठली आ सौँसे ओसारामे एखनो माँटिए-माँटि छलैक । कोठली ओसाराक संग भनसाघरकेँ सेहो सीमेन्ट करबा देबाक दादाक बड़ इच्छा रहनि आ ओहूसँ पैघ इच्छा रहनि पछबरिया घरक कोठापर चढ़बा लेल सीढ़ी बना देबाक । माय कहियो काल दाबल स्वरे बजैत छैक– एतबो नै पार लगैत छऽ तोरासभकेँ । अपना नहि काज छऽ, मुदा बापक आत्माकेँ शान्ति भेटतह, हुनको लेल तऽ एतबा करबा लैह । ओ एकसर एतेक कऽ गेलथुन, तोरालोकनि तँ पाँच छऽ..

सत्ते, ओकरा बुते किछुओ कहाँ संभव भेल छैक ? पछबरिया घरक सीढ़ी आ सीमेन्टक कोन कथा, पुबारि घरक मरम्मति पर्यन्त पार नहि लागल छैक । चारू कोठली बरसातमे पोखरि बनि जाइत छैक– एक्को बुन्न बाहर नहि । ओहो पक्के देबाल छैक, मुदा छतमे टीन पाटल छैक ।

दादा सभ वर्ष ओकर नट-बोल्ट बदलि, पोलटिस लगबा दैत छलथिन.. बीच-बीचमे कोनो चदरा बदलबा दैत छलथिन । आब वर्षक वर्ष भऽ जाइत

छैक। पुबारि घरक उतरबरिया आ दछिनबरिया कोठलीक देबाल वर्षाक पानिसँ अलगि गेल छैक । देबाल टेढ़ भऽ गेल छैक, कहियो खसि सकैत छैक ! दुनू बिचला कोठलीक आसमानी रंगक देबालपर पानिक टघारसँ विचित्र-विचित्र रेखाकृति बनि गेल छैक । पुबारी कातक ओसारा जे दलानक काज करैत छैक, एकदम बदरंग भेल छैक। किरमिची रंग धोखड़ि गेल छैक आ फर्शपरक सिमटी ठाम-ठाम उखड़ि गेल छैक ।

मुदा, माय आब एकर सभक चर्चा नहि करैत छैक ओकर गाम अयलापर। पहिने करैत छलैक । ओइ चर्चापर ओ उत्साहित भऽ सभ टा बजट बना लैत छल । सीढ़ीक बजट, सिमटीक बजट, मरम्मतिक बजट । फेर गामसँ चल जाइत छल । अगिला बेर फेर बजट बनैत छलैक । मुदा आब ओकर चर्चा नहि होइत छैक । मायकेँ दोसरे चिन्ता छैक– 'जेहो खेत बाँचल छऽ, परतिए रहतह । तोरालोकनि देखबह नहि, तऽ हम आंगनसँ कतेक की देखबह ! एक टा बड़दसँ कतहु खेती भेलैक अछि ? भाँजवला बड़ झंझट करैत अछि । गाममे पाइयो देलापर आब हर लेल क्यो बड़द नहि दैत छैक । दाउन करबा लेल बड़द नहि होइत छैक। सभ झरबा लैत अछि बोझाकेँ ।'

मायक ईहो बात कैक बेर सुनने छल मनोज आ ओकरो बजट बनल छलैक । तकर बाद तीन खेप गाम आयल अछि । ने माय चर्चा करैत छैक, ने ओ मुँह खोलैत अछि।

पछबरिया घरक ओसारापर पड़ल-पड़ल मनोज यैह सभ सोचि रहल छल। माय एक बेर आरो चाह दऽ गेलैक। ओ तैयो ओहिना पड़ल छल। दोसर बेर भनसेघरसँ माय टोकलकै– एना पड़ल किए छऽ ! नहा-सोना कऽ गामक लोक सभसँ भेट कऽ आबऽ ।'

तैयो ओ ओहिना पड़ल रहल । नहयला-खयलाक बादो बिछौनेपर पड़ल रहल । किम्हरो जयबाक इच्छा नहि भेलैक खयला-पीलाक बादो । माइयो आबिकऽ ओही ओसारापर पटिया बिछा बैसि गेलैक । ओकरा ओहिना पड़ल देखि पुछलकै– नोकरक कोनो इन्तजाम भेलऽ की नहि ।'

ओ मूड़ी डोला देलकै । माय चिन्तित होइत कहलकै– तखन तऽ बड़ झंझट होइत हैतनि । चिलकाउरि छथि, दुनू नेन्ना छोटे छनि । उपरसँ एतेक टा परिवारक भानस-भात । ऐ गाममे तऽ आब आगि लागल छैक । क्यो छोटका लोक बाते नहि सुनैत अछि । क्यो तैयारो भेल जयबाक लेल तऽ ओकर पट्टीक

मालिक झट बहका दैत छथिन– खबरदार जौँ गेलेँ । बसबेँ हमर जमीनमे आ काज आन पट्टीक । एहन-एहन पट्टीदार सभ छथुन । तोहर पट्टी तऽ सफाचट छऽ । लोके कम्म ओ जेहो छऽ से बाहर जाय लेल तैयार नहि । गाममे भुखले रहत, मुदा बाहर नीक-निकुत नहि जुड़तैक । एकटा तैयार भेल छथुन । छथि तऽ ब्राह्मणे, मुदा भानसक संग अइँठ-कूठ सेहो करऽ लेल तैयार छथि । पछिलो बेर तोरा कहने रहियऽ ।

– ककरा दऽ कहै छेँ ? मनोज मोन पाड़ैत पुछलकै ।

'वैह, मन्दाक बेटा... ।'

मनोजकेँ मोन पड़ि गेलैक । पछिला बेर माय चर्चा कयने छलैक । मन्दाक नाम सुनि ओ चौँकल छल । मन्दाकिनी ओकरे गामक छलैक, ओकर संग खेलायल छलैक । ओकरा बेटाक नाम सुनि ओकरा आश्चर्य भेल छलैक– मन्दाक बेटा किएक भनसीयाक काज करतैक ! ओकर वर तऽ कलकत्तामे कमाइत छैक । सासुरोमे खेत-पथार छैक ।'

माय कने घृणासँ कहलकै– सभ टा अपन चालि आ कर्म । वर छोड़ि देने छैक, घरोसँ निकालि देने छैक । चारिटा धीयापूता छैक । वर्ष दिनसँ बापक लग पड़लि अछि । गरीब बाप-माय अपने बेटा सभपर आश्रित छैक । चारि गोटेक पेट कोना भरतैक ? दुनू जेठका मंजूरी करैत छैक– अपनो ढहनायल फिरैत अछि, चालि सुधरै तखन ने ?''

सूनिकऽ आश्चर्य आ दुःख भेलैक । मन्दा ओकरासँ जेठि छलि वयसमे। कनिया-वरक खेलमे कहियो काल ओ ओकरो कनिया बनैत छल । ओना बेसी काल ओकर कनिया बनैत छल मोना । ओ जेहने सुन्नरि छल, तेहने शान्त । कनिया बनि खपटाक बासन सभमे काँच बालु आ तरकारीक बतियासभ राखि ओकरा लेल भानस करैत छल आ फेर स्कूलक कोठलीक माटिमे ओकर कनियाँ बनि चुपचाप ओकरा संग सूति रहैत छलि ।

मन्दा सुन्दर नहि छलि । रंग ओकर कारी नहि तऽ गोरो नहि छलैक । केश भुल्ल छलैक जकरा कतबो तेल-कूड़ दैत छलैक, भुल्ले रहैत छलैक । आँखि छोट-छोट छलैक मुदा शैतानीसँ नचैत । ने बेसी दुब्बर ने, मोट । चालि फुर्तिगर छलैक, हरदम बुझाइ जेना पड़ायल जाइत होअय । गाल फूलल-फूलल आ लाल पातर ठोर रहैक, जकरा अधिक काल ओ बिचकाबैत रहैत छलि । ओ जहिया ओकर कनियाँ बनैक, अकच्छ करऽ लगैक । जाहि कोठलीमे सभ

कनिया-वर पड़ल रहैक, ततऽ नहि सुतैक । कहियो कोनो झोँझमे, तऽ कहियो कोनो कोनटामे लऽ जाइ आ बुझनुक जकाँ बजैक– वर-कनियाँ कतौ सभक सामने सुतलैक अछि संगे !'

मुदा संग सुतैत देरी ओ तंग करऽ लगैक– एना कल्ल-बल्ल की पड़ल छें ! वर-कनियाँ एना नहि पड़ल रहैत छैक चुपचाप ।

– तऽ गप्प करऽ ने कोनो ! मन्दा तऽ कतेक रास गप्प करैत अछि ।'

–ओ बकलेल अछि । वर-कनियाँ खाली गप्पे करैत रहि जायत तऽ बिआह कथी लेल करत, संगे किएक सुतत ?' मन्दा बुझनुक जकाँ बजैक ।

– 'तऽ तोहीं कह, वर-कनियाँ की करैत छैक !'

झिक्का-झोरी होबऽ लगैक । कहुना अपन पैण्ट सम्हारैत ओ उठिकऽ पड़ाय तऽ मन्दा खूब हँसैक– लाज होइ छैक मौगाके ।

पड़ाइत मनोजकेँ मोना भेटैक तऽ मुँह कनौन आ आँखिमे नोर– हम नहि बनबैक कमलेशक कनियाँ ! नङरियाबऽ लगै अछि । ओकर कनियाँ मन्दा बनतैक । हम तोरे कनियाँ बनबौक ।

मुदा बीच-बीचमे मन्दा शैतानी करैक आ मोनाकेँ कमलेश लग पठा दैक आ अपने मनोजक संग लागि जाइ– हम एकरे कनिया बनबैक, मौगाकेँ लाज होइत छैक ।''

आ, एकसर होइत देरी ओ झट पैण्ट खोलि, फ्रॉक उनटि लैक आ मनोज लंक लऽकऽ पड़ाय ।

मुदा, ओहो फ्राक उनटाबऽवाली मन्दाक जखन विवाह भेलैक, चारि टा मौगी टाङिक कोबहरघर लऽ गेलैक आ सभक नूआ चिरी-चोंत कऽ देलकै आ मुँह-कान नछोड़ि लेलकै ।

आ, ओही मन्दाकेँ वर घरसँ निकालि देलकै आ बेटा मजूरी करैत छैक, से सुनि ओइ दिन मनोज स्तब्ध रहि गेल छल । मायकेँ तत्काल कोनो जबाब नहि दऽ सकल छलैक । साँझखन मन्दा अपने आयलि छलैक । माय कोम्हरो गेलि छलि । मन्दा लग आबि ठाढ़ि रहलैक, कहलोपर बैसलैक नहि । एक टा फाटल नूआमे सौँसे देह झाँपल । दोसर कोनो वस्त्र नहि । आँगियो नहि । शरीर सुखायल, आँखिक नीचाँ कारी छाँह आ ठोरो करिआयल । मनोजकेँ मोन पड़लैक जे मन्दाक ठोर कतेक पातर आ लाल रहैक । ओकरा एकटक देखैत

देखि मन्दा कहलैक– ''की देखै छेँ एना ! अनचिन्हार लगै छियौ हम ?''

– 'नै... से बात नै ! देखै छलियौ जे तोहर ई हाल किएक भेलौ ? केहन तऽ सुखी छलेँ अपन घरमे !'

मन्दा हँसलैक– से तोँ कोना जानऽ गेलेँ जे सुखी रही । विवाहक बाद की पहिनो घुरिकऽ कहियो पुछले जेँ कोना छेँ मन्दा ? नेनामे पैन्ट खोलि दैत छलियौक, ताहि डरेँ जे पड़ाइत छलेँ, से डर भरिसक लगले रहि गेलौक ।''

मनोजकेँ लाज भेलैक । मन्दा ठीके कहैत छैक । ओकरा नहि जानि मन्दासँ किएक बाजि नहि होइत छलैक । मन्दा जखन कने पैघो भेलैक, ओकर चारू कात घण्टो बौआइत रहैत छलैक । पोखरिक जाहि घाटपर ओ नहाइत छल, ठीक ओकरे नहयबाक समय सभ दिन ओ पानिमे पैसि घण्टो चुभकैत रहैत छलै। मनोज हेलिकऽ जाठि लगसँ भऽ आबय, मुदा ओ ओहिना छाती भरि पानिमे डूबल घण्टो ठाढ़ि रहैक । जाहि आंगनमे ओकर ताश-कौड़ीक अड्डा जमैक, मन्दो ओही ठाम भेटि जाइक । मुदा वर-कनियाँक खेलमे जे ओकरासँ डेरायल, से डेरायले रहल मनोज ।

मन्दा ओही बातपर हँसी कयलकै आ मनोजकेँ लाज भेलैक । अपनाकेँ स्वाभाविक बनयबाक चेष्टा करैत कहलकै– से बात नहि छलै मन्दा ! तोहर हाल तऽ बुझिते छलियौ, जा धरि गाममे रही । आब तऽ अपने गाम अनचिन्हार भेल जाइए । कहियो काल अबै छी । मुदा तोरा दऽ सुनिकऽ बड़ दुख भेल । मिसरक मति एना किएक खराब भेलनि ? एहि वयसमे, धीया-पूताक संग किएक त्यागि देलथुन तोरा ? झगड़ा भेल छलौ ?

मन्दा फेर हँसलै– संग रहिते कहिया छलौँ जे झगड़ा होइत ? ओ कलकत्ता, हम गाम । कहियो काल वर्षमे एक बेर, पाँच-सात दिन आबि जाइत छलाह । झगड़ो करबाक बेर कहाँ भेटैत छल ?''

–'तखन की भेलौ ?' मनोजक प्रश्नपर ओ फेर हँसल– गामक लोक एखन धरि नहि कहने छौक ? सभकेँ बूझल छैक । जकरेसँ पुछबहिक, सैह कहि देतौक–हम कुलटा छी, किदन छी । एही कलंकक संग घरसँ विदा कयने छथि। मुदा हम तऽ कहियो ने कहने रहियनि जे हम पतिवरता आ सदवरता छी।'

मनोज केँ अवाक् देखि ओ आगू बाजलि– तोरा कहबामे लाज नहि ! तोरा लगमे नेन्नेमे अपन फ्रॉक उघारि लैत रही आ तोँ पड़ा जाइत रहेँ । सभ

पुरुष तोरे सन नहि होइत अछि । जहिया गामक सभ स्त्रीगण उठाकऽ हमरा कोबरामे ठेलि देने छल, तोहर मिसरकेँ बड़ हडबड़ी भऽ गेल रहनि । जहिया कहियो वर्ष दू वर्षपर गाम अबैत छलाह, एक्के क्रियाक हड़बड़ी रहैत छलनि । तकर बादे किछु ।'

मनोज रोकैत कहलकै– तऽ एहिमे कोन हर्ज छलैक ! स्वामीक अधिकार छलैक ओ । एहिमे घरसँ निकालबाक कोन बात भेलैक ?'

मन्दा फेर हँसलि– बात तकरे बाद भेलैक । ओ सटल रहि पाँच-सात दिनमे चल जाइत छलाह । आंगनमे एकसर हम स्त्रिगण ! ने सासु, ने ननदि । कतेक बेर कहलियनि हमरो कलकत्ता लऽ चलू, मुदा नहि लऽ गेलाह । लऽ कोना जैतथि ? बापक माथपर भार छलियनि । कहुना छुट्टी पौलनि । जमाय अनलनि मूर्ख, अफिसमे दरबान । घर रहनि तखन ने लऽ जैतथि कलकत्ता ! मास-दू मासपर मनीआर्डर पठा निश्चिन्त भऽ जाइत छलाह ।

मनोज फेर टोकलकै– 'ई तऽ भेलैक नौकरीक विवशता । टाका तऽ पठा दैत छलथुन, तखन फेर की भेलौक ?'

मन्दाक हँसी आर बढ़ि गेलैक– तखने तऽ असली बात भेलैक । सुन्न आंगनमे एकसर मौगीक खोज-खबरि लेबऽवला, सहानुभूति देखाबऽवलाक संख्या बढ़ैत गेलैक । पहिने अयलाह एकटा पितिऔत देयोर । भौजी-भौजी करैत एक दिन नहि छोड़लनि । फेर परकि गेला । हमहूँ परकि गेलहुँ । मुदा हुनका रोकलकनि अपने स्त्री । तखन आयल गामक सम्बन्धे एक टा भातिज । काकी-काकी करैत ओहो ओहने... ।

मनोज बीचमे रोकि देलिकैक–''आ तोरा नीक लगैत गेलौ, परिकल गेलँ। तखन तऽ वाजिबे निकालि देलथुन तोरा । कोनो पुरुष सैह करैत !''

ओकर आँखि क्रोधसँ भभकि उठलैक– ठीके कहै छेँ ! सभ पुरुष एहिना करैत अछि । ओकरा दूरि कऽ किम्हरो चलि दैत अछि आ मौगी एकसर ओकर बाट देखौ, अपनाकेँ झाँपि-तोपिकऽ राखौ । हमहूँ झाँपि-तोपिकऽ रहैत रही । मुदा चारू कातसँ हाथ लपकल । मुदा से उघार होयबा लेल तऽ नहि निकललहुँ ओइ घरसँ । निकलल छी ओइ घरमे पच्चीस वर्ष बिता जखन हमरा संग रहबाक इच्छा तोहर मिसरकेँ नहि होइत छनि । ओ एकटा नव राखि लेने छथि, कलकत्तेमे । कमाइयो बढ़ि गेल छनि । आब हमर काज नहि छनि । चालीसक वयस पार भेलाक बाद, पन्द्रह वर्षक बेटाक माय बनलाक बाद हम छिनारि बनि

गेल छी । आब चारूमे कोनो सन्तान हुनकर नहि छनि, ओ ककरो बाप नहि छथिन । सभ अनजनुआक जनमल आ टूअर अछि । बड़काकेँ राखि लही तोँ, सभ काज कऽ देतौक । ने तऽ हमरे राखि ले, भानस-भाँत, टहल-टिकोरा सभ कऽ देबौक, तोहर नेन्नो सभकेँ खेला-खुआ कऽ पोसि देबौक ।

मनोज कोनो उत्तर नहि दऽ सकलिकैक । तावत माय आबि गेलै । ओ मायोकेँ एक बेर फेर विनती कयलकै आ चल गेलि । माय ओकर जाइते पुछलक– 'की कहैत छलऽ तोरा ?''

– 'वैह अप्पन बेटाकेँ, चाहे अपने राखऽ दऽ कहैत छल । भानस-भात, टहल-टिकोरा सभ गछैत छल ।''

माय एकदम्म निषेध कयलकैक– एहन काज किन्हु ने करिहऽ ! बेटाकेँ रखबह तऽ राखि लैह । मुदा अपना नहि । प्रमोद लऽ गेल छलथिन अपना संग धनबाद । भारी काण्ड मचि गेलनि । बड़का अड्डा बनि गेलनि डेरा । कनियासँ नित्य झगड़ा होबऽ लगलनि । हारि कऽ पठा देलथिन ।

आ अइ बेर गाम अयलापर माय फेर कहलकै– 'ओ जायब गछैत छथि, वैह मन्दाक बेटा ।'

मायकेँ तखनो कोनो जबाब नहि दऽ सकलैक । साँझ धरि ओहिना पछबरिया घरक पुबरिया ओसारापर पड़ल रहल । धीया-पूता सभ स्कूलसँ घुरि गोड़ लगलकै ।

आँगनसँ बाहर आयल तखन अन्हार नहि भेल रहैक । उतरबरिया घरक दरबज्जापर काकाक संग लाल काका बैसल छलथिन । गोड़ लगलकनि तऽ आशीर्वाद दैत कहलथिन– 'अखन रहबऽ ने !'

– 'ने काका । काल्हिए चल जायब । छुट्टी नहि अछि ।'

मनोजक जबाबपर लालकाका पैघ साँस लैत कहलथिन– नीके करैत छऽ । ई गाम आब रहबा जोगर छऽहो नहि ! हमरालोकनि बूढ़-अथवल, जकरा कोनो उपाय नहि अछि, पड़ल रहैत छी । लऽ चलऽ हमरो सभकेँ ! दू साँझ खयबह आ धीयापुताकेँ खेलबैत पड़ल रहबह । किताब-पत्रिका जमा कऽ दिहऽ, पढ़ैत पड़ल रहब ।'

मनोज हँसैत कहलकनि– तऽ चलू ने लाल काका ! अहाँ तऽ सब बेर एहिना कहैत छी, मुदा माया छोड़ैत अछि ? अबितो छी कहियो काल, तऽ दोसरे

दिनसँ मोनमे हल्दिली पैसि जाइत अछि– गाममे कोना की हैत ! पड़ा अबै छी लगले ।'

लाल काका ओहिना पैघ साँस लैत कहलथिन– ठीके कहै छऽ हौ ! कहाँ छोड़ैत अछि माया ? ई गाम रहबा जोगरक अछि आब ? नर्कसँ बत्तर । ने सभ्यता, ने शिष्टाचार । नवका-छौँड़ा सभक उद्दण्डताक कथे कोन, बुढ़बोलोकनिक आचरण देखि दंग रहै छी । इएह, मोन नहि लगैत अछि तऽ भाइ लग आबि बैसैत छी । आर कतहु जाइ छी हम ! देयर आर ब्रोयेलस इन योर भिलेज नाउ !

लाल काकाक बातपर मनोज चौंकल नहि छल । ओकरा पछिलो बेर ई बात सुनल छलैक । उतरबारि भीड़पर घरे-घर रातिकेँ अड्डा जमैत छैक । सेठ मुरली मिसरकेँ सभ घर नोत होइत छनि । अही गाममे रहैत छथि आब मुरली । अपन घर नहि जाइत छथि । भोलाझाक विधवा बेटी हुनका स्वामी मानि लेने छथिन, गामो मानि लेने छनि, मुदा खाली भोलाझाक बेटीसँ सेठ मुरलीक मोन नहि भरैत छनि । टोलक सभ घरमे हुनकर अड्डा जमैत छनि । गामक नीक-नीक लोक ओइ बैसारमे शामिल होइत छथि । लाल काकाकेँ बर्दाश्त नहि होइत छनि ।

मुदा, गामक लोककेँ सभटा रुचैत छैक ! बूढ़-सभक संग छौंडो सभ ओइ बैसार सभमे हुलकी दैत अछि । सभ भोरका ट्रेनसँ दरभंगा जाइत अछि कालेज आ कहियो सतबज्जी, तऽ कहियो बरबज्जी गाड़ीसँ गाम अबैत अछि । छुट्टी आ शनि-रविकेँ गाममे हल्ला-गुल्ला कयलक, पिहकारी मारलक आ राति-विराति चोर-चाहर आ छिनरपन कयलक ! कथूक लेहाज नहि छैक । लाल काका पछिलो बेर कहने छलथिन ।

ओकरा कोम्हरो जयबाक मोन नहि भेलैक । बेसी ठाम एहने गप्प, ने तऽ गोलैसी आ पाटा-पाटीक गप्प ! ओ सोझे लाइब्रेरी दिस गेल । ओतऽ साँझसँ ब्रिजक खेलाड़ी सभ जुटैत अछि ! पेट्रोमेक्स जरा, ने तऽ लालटेनो लेसिकऽ ओहो बाजीपर बाजी खेलाइत चल गेल ।

जखन घुरल, सौंसे गाम निसबद छलैक । आंगनोमे कोनो सुगबुगी नहि । खाली एकसरे जागलि माय ओंघाइत बैसलि छलैक ! परसिकऽ थारी आगूमे दैत कहलकै– बड़ अबेर भेलऽ । कतऽ चल गेल छलऽ अन्हारमे ?

आ, ओकरा बहुत रास बात मोन पड़लैक । दादा मोन पड़लैक आ मोन पड़लैक आंगने-आंगन लालटेन लऽ तकैत अपन चरवाह । ओही स्मृतिमे भोतिआयल आँखि लागि गेलैक ।

बरबज्जी ट्रेनक पुक्कीक किछुए कालक बात गाममे कचबच-कचबच होबऽ लगलैक । ओकर निन्न नीक जकाँ टूटि गेलैक । बीच आंगनमे चौकीपर चितंग पड़ल छल । ऊठिकऽ आवाजक अख्यास कयलक । बुझयलैक जेना बहुत रास लोक पुबारी दिस आबि रहल होइ । ओ ऊठिकऽ आंगनसँ बाहर आयल ।

भीड़ ओकरे दरबज्जा दिस आबि रहल छलैक । बड़का ठहक्का लागि रहल छलैक आ बीच-बीचमे पिहकारी । मनोजक उत्सुकता बढ़िते गेलैक ।

भीड़ लगले नहि पहुँचलैक ओकर दलानपर । सभ आंगनमे गेलैक आ अन्तमे ओकर दरबज्जा दिस बढ़लैक । दृश्य देखि ओ अवाक् रहि गेल ।

दू टा छौंड़ा दुनू दिससँ मन्दाक बाँहि मोड़ि पकड़ने छलैक । ओ ओकरा धकिया-धकिया आगू ठेलि रहल छलैक । मन्दाक आँखिमे ने नोर छलैक, ने याचना । एकटा विचित्र सन पथरायल दृष्टि जेना जे किछु भऽ रहल छलैक, तकर कोनो ज्ञान नहि होइ ओकरा । कोना यंत्रचालित पुतला जकाँ भीड़क संग आगू ठेला रहलि छलि । छौंड़ा सभक संख्या गोड़ दसेक । तकरा पाछाँ किछु गामेक लोक भीड़क तमाशा देखबा लेल संग भेल ।

मन्दाक हाथ मोड़ने ठाढ़ रमेश आ दीनूकेँ मनोज डँटलकै– छोड़ि दहक हाथ ! एना क्यो स्त्रिगणक संग व्यवहार करैत अछि ! लाज नहि होइत छौ तोरा लोकनिकेँ ?'

दुनू ओकर हाथ छोड़ि देलकै आ आर आगू आबि दीनू बाजल– 'हमरा सभकेँ किएक लाज हैत ? लाज तऽ एकरा हेबाक चाहिऐक । अपना संग गामक इज्जति बजारमे नीलाम करैत अछि । आइ हमरा सभकेँ सतबज्जी ट्रेन छूटि गेल । बरबज्जीक आसामे रही कि देखैत छी एकरा प्लेटफार्मपर एकटा मोछियल बुढ़बाक संग टहलैत । दुनू एकटा घरमे पैसल । हमहुँ सभ पछोड़ धऽ लेलिऐक । पकड़ि लेलिऐक ठामहि । ओतहिसँ सभकेँ कहैत आयल छिऐक । गामोमे घरे-घर सभ ठाम लऽ जाकऽ कहलिऐक । मुदा, देखू, एकरा । लाज छैक कोनो गत्रमे ? एक्को बुन्द नोर छैक पश्चात्तापक कतहु ?'

सत्ते, से नहि छलैक कतहु ! मुदा जे छलैक से देखि मनोज डेरा गेल । ओ सर्द.... भावनाहीन आँखि दिस देखैत ओ सिहरि गेल । तैयो साहस कऽ कहलकै– ''किएक करै छेँ एना मन्दा ? तोरा कनियो लाज नहि होइ छौ सत्ते ?''

ओकर बात पर मन्दाक स्थिर आँखिक पुतली कने हिललैक ! सोझे मनोजक आँखिमे तकैत कहलकै– ''सत्त कहियौ ! ठीके हमरा कनियो लाज नहि होइए । ओ तऽ कहिया ने मरि गेल । मरि गेल देहक भूख ! सभटा सुखा गेल । मुदा पेटक भूख नहि मरल । ओ अखनो लगैत अछि । तखन ई देखबाक फुरसति कहाँ रहैत अछि जे बुढ़बा मोछियल अछि कि निमुच्छा छौंड़ा ? नहि होइ छौ विश्वास तोरा ? हम करा देबौक विश्वास तोरा, लाज हमरा कनियो नहि होइत अछि । एही छौंड़ा सभमे देख ने ! बेसी हमर बड़कासँ कनिये छोट पैघ हैत ! मुदा हमरा एकरो सभक संग लाज नहि । भूख हमरा अखनो लागल अछि। पाइ आ अन्न हमरा चाही । जकरासँ ई हमरा भेटत, तकर नाम-धाम, मुँह-कान नहि देखैत छिऐक हम । ठाम-कुठामक ध्यान नहि रहैत अछि । हमरा लेल बन्न कोठली आ गामक एहि बाटमे कोनो अन्तर नहि । आबि जो, जकरा मोन होउ !

आ, सभकेँ आश्चर्यसँ विस्मित करैत मन्दा ओही ठाम माँटिपर चित्ते पड़ि रहलि । बहादुर छौंड़ा सभ भागऽ लागल । भागि गेल ! मुदा मन्दा ओहिना पड़लि छलि, सुन्न अकाशक नीचाँ, गामक सड़कपर छिड़िआयल इजोरियामे ओ चितंग पड़लि छलि ! निर्विकार ! ओकर आँखिमे कोनो भाव नहि छलैक ! ने वासना, ने आमंत्रण, ने कातर-याचना । सम्पूर्ण भावविहीन छलैक ओकर आकृति आ आँखिक पुतली स्थिर छलैक– ऊपर अकाश दिस उठल ।

मनोजक मोन कोनादन कऽ उठलैक । ठेहुनिया दऽ ओकर मुँह लग बैसैत कहलकै– उठ मन्दा ! झाँपि ले अपन देह ! सभ पड़ा गेलौ, खाली हमही टा छियौक ।

मन्दाकेँ जेना होश भेलैक ! स्थिर पुतली हिलऽ लगलैक आ नहि जानि कहाँसँ बाढ़ि आबि गेलैक ओइमे ? अपन देह झँपैत उठि बैसल । मनोजक आँखिमे नोर देखि हँसबाक चेष्टा करैत कहलकै– 'तोँ कोना ठाढ़े रहि गेलैँ रौ ? तोँ तऽ हमरा एना देखिकऽ नेन्नोमे पड़ा जाइत छलैँ ।'

मनोज कोनो जबाब नहि देलकै ! कने काल दुनू आमने-सामने ठाढ़ छल– निःशब्द ! तखन मनोज कहलकै– तोँ अपन आँगन जो मन्दा ! भोरमे बड़काकेँ पठा दियहिक । अपना संग पटना लऽ जयबैक ।

[1979]

इजोतमे हेरायल लोकसभ

साँझे शहरमे मशाल जुलूस बहराएल छलैक– इजोते-इजोत । शहरक बिजुरीक इजोत ओइ मशाल सभक आगाँ मन्द पड़ि गेल छलैक । हजार-हजार हाथमे उठल जरैत मशाल । जागल लोक आब कोनो अन्याय, कोनो बैमानी नहि सहतैक । ओकरा हाथमे जरैत मशाल छैक, आ मशालमे अन्हारकेँ डाहि देबाक शक्ति छै ।

राति गहीर भऽ गेल छैक । प्लेटफार्मपर असंख्य लोक ओंघराएल छैक। एक टा जनानी अपन संगक जनानीसँ कहैत छैक– ''अहू ट्रेनसँ नै जा सकली। घरमे कन्टिरबा-कन्टिरबी किलोल करैत होत ।''

दोसर जनानी बुझनुक जकाँ कहलकै– ''ताहि से हम गामेमे कहलियौ, पहिने टाका धरा ले, फेनू चल । तीन घंटा घिसरी कराके आधा टाका देलकौ ।'' पहिलकी जनानी बजलैक– ''जाय दहीक, अही माघे जाड़ ने चल जयतै । बोंगहा फेनु औतै ।''

बसस्टैंड लग आरो बेसी भीड़ । चारू कात पटोटन देने लोक । मुनरा पेट दबबैत बाजल– ''आब नै रहल जाय हय हौ भाइ ! भूखे पेट ममोड़ने हय । साथे अनली सतुआ से दिने खयली । लिल्लू बाबू नै जानि किन्ने निपत्ता हो गेल। गामे से ठकैत आयल, चल देबौ आगू । आ आब देखू ने ताल । फूटि गेल हाँडी सलाम भाइ चूल्हे... ।''

जगेसरा डँटलकै– ''आब कोना कानून छाँटै हय, गाममे सभसे आगू इहे हल्ला कयले रहय- चलै चल...लिल्लू बाबू सबकेँ देतौ तीस-तीस गो टाका... ले अल्हुआ'' आब मुनरा ओहिना पेट दबबैत बाजल– ''जाय दहीक भाइ ! अही माघे जाड़ नै चल जयतै । बोंगहा फेनू औतै...''

बोंगहा फेनू औतै । आ इहो सभ फेर औतै । हाथमे झण्डा आ मशाल लेने औतै । लोक जागि गेल छैक । आब कोनो अन्याय आ बैमानी नहि सहतै ।

सभटा अखबार हब्बर-हब्बर आन्दोलनकेँ प्राप्त विशाल जन-समर्थनक समाचार छापि रहल छलैक ।

[1980]

दिदवल

राति भोर दिस ससरि गेल अछि ।

टी. वी. पर एगारह बजे रातिमे शुरू भेल सिनेमा बड़ी काल पहिनहि समाप्त भऽ चुकल छैक । टी. वी. पर अखनो किछु कार्यक्रम चलि रहल छैक, मुदा हमर ध्यान ओइ दिस नहि अछि । भरिसक पिक्चरो चलैत काल हमर ध्यान बौआयले छल । डेरा साँझ झुकितहिँ शान्त भऽ गेल छल जेना हमरा अलावा क्यो आन नहि हो डेरामे । ओना कहबा लेल अखनो छौ प्राणी डेरामे छी । दादा जी (हमर श्वसुर) साँझ होइतहिँ अपन कोठलीमे बन्द भऽ जाइत छथि । बन्द हेबाक ई अर्थ नहि जे कोठलीक दरबज्जा बन्द भऽ जाइत छनि । खूजल दरबज्जा रहितहुँ ओ अपन कोठलीमे बन्द जकाँ रहैत छथि । साँझ होइते डेरामे घुरि अबैत छथि । आँखिक मोतियाबिन्द आब बेशी तंग कऽ रहल छनि । साँझक बाद बाट चलबामे दिक्कति होइत छनि । अधिक काल घूमऽ लेल जयबाकाल भोलूकेँ संग कऽ लैत छथिन । भोरका टहलान एकसरे करैत छथि । साँझखन घुरलाक बाद कोठलीमे चौकीपर बैसल कखनो कोनो कुण्डली, कखनो ज्योतिष पत्रिका आ कखनो गीता आ रामायण पढ़ैत । कखनो बिछौनेपर आसन लगा आँखि बन्द कयने बैसल नहि जानि कोन ध्यानमे मग्न । एक बेर नौ–दसक बीच कोठलीसँ बहराइत छथि । विनोद दूध, रोटी आ तरकारी परसि दैत छनि । कखनो चीनी, तऽ कखनो गुड़ वा मधुर । आस्ते-आस्ते चिबबैत बड़ी काल धरि भोजनक टेबुलपर एकसर खाइत रहैत छथि ।

विनोदक अतिरिक्त डेरामे दस-एगारह बजे राति धरि रहैत अछि भरत । जाधरि हम नहि घुरल रहैत छी, बाहर बरण्डामे कोनो अखबार लेने बैसल रहैत अछि वा विनोद संगे टी.वी. देखैत बैसल रहैत अछि । भोलू अपन कोठलीमे किताब लेने गुमसुम पढ़बामे व्यस्त वा पढ़बाक चेष्टामे लीन । टोलू कखनो नौ-नौ बजे राति धरि पड़ोसमे निपत्ता, कखनो टी. वी. वा पावर हाउसमे लीन आ कखनो काल कोनो किताब लेने पढ़बामे लीन वा पढ़बाक चेष्टामे लीन । पहिनहि जकाँ अखनो आफिससँ घुरबामे विलम्ब भऽ जाइत अछि । मुदा पहिने

जकाँ एहि विलम्बपर टोकऽबला क्यो नहि रहल । टोलू कखनो काल अपन माय जकाँ बाजि उठैत अछि । आब बेर भेल अछि घर अयबाक ! आब तऽ क्यो टोकहोवाला नहि रहल । खूब रहू बाहर आ ख़ाउ जतऽ ततऽ ! कतेक वजन बढ़ि गेलए से देखाइत अछि !

हम हँसिकऽ टोलूकेँ टारि दैत छियैक । ई सभ भाइ-बहिन मायक नहि रहलापर हमरा लेल किछु बेसिए चिंतित रहऽ लागल अछि । डेरा घुरितहिँ सभ लुधुकि जाइत अछि । क्यो कपड़ा आ चप्पल लऽ अनैत अछि । क्यो जूता खोलऽ लगैत अछि तऽ क्यो चाह लऽ अनैत अछि । मुदा पहिने से नहि छल । हम डेरामे प्रवेश करी तऽ कोठलीमे एकसरि मुँह झँपने पड़ल हुनका देखिअनि । मुँहपरसँ चादरि हँटाकऽ देखियनि तऽ सूतल नहि जागलि पड़लि । देखिकऽ आँखिमे नोर डबडबा जानि– 'भऽ गेल अयबाक बेर !'

हमरा मोनकेँ अपराध-बोध आ लज्जबोध एक्के संग जकड़ि लिअय– ''भऽ गेल कने देरी । ओ ओहू अवस्थामे कने बिहुँसैत छथि– कोन नव बात ?'' आँखिमे नोर ओहिना झलमलाइत छनि ।

हम पुछैत छिअनि– ''एना किएक पड़ल छी एकसरि ? ड्राइंग रूममे सभ सिनेमा देखि रहल अछि, अहूँ किएक ने देखै छी ओ ?''

ओ मुँह फेरि लैत छथि– ''किछुओ ने नीक लगैत अछि । आब जाय दिअऽ ।'' हमरो आँखिमे भरिसक किछु झिलमिला जाइत अछि जकरा ओ देखि लैत छथि– ''फेर वैह बात । कनैत छी... हमरा सन स्त्री लेल कनैत छी !''

हम कोठलीसँ बाहर आबि जाइत छी । किछु काल बाद फेर कोठलीमे अबैत छी । सभटा दवाइ खुअबैत छिअनि । जबर्दस्ती दू कौर अन्न सेहो । आधा रोटी, कने दहीक पानि आ ओलक तरकारी । रसगुल्ला, पनीरक तरकारी किछुओ कण्ठतर नहि जाइत छनि । खाइत देरी मोन अकसका जाइत छनि जेना दम ऊपरे रहि गेल हो, फेर छटपटी... रद्द, बड़ी कालक बाद छातीमे गाय घी, सर्द भेल हाथ पयरमे ब्राण्डी आ माथमे तेल मलैत छिअनि बड़ी काल धरि । तैयो निन्न नहि होइत छनि । देहसँ सटल किछु काल पड़लि रहैत छथि आ फेर करोट फेरिकऽ बिछौनपर दूर चल जाइत छथि । –''आब जाय दिअऽ हमरा । छोड़ू सभटा दवाइ पथ्य । किछुओ ने नीक लगैत अछि आब ।'' मुदा मइमे जखन बम्बइ जाय लागल रही, हाथ पकड़ि कऽ लटकि जेना गेल रहथि– ''ककरो सँ देखा दिअऽ हमरा । एना कतेक दिन बिछौनपर पड़ल रहब ।''

आइ बिछौन सुन्न छनि । सुन्न नहि, टोलू, हमर छोट बालक सूतल छथि ओइपर, सभसँ छोट छथि पन्द्रह वर्षक । जहिआसँ माँ गेल छथिन हमरे बिछौनपर हमरे लग सुतैत छथि । आइयो सूतल छथि । सौंसे घर निशबद्द अछि । बगलवला कोठलीमे जेठ बालक भोलू आ आंगनक अन्दरवाला कोठलीमे दादाजी । ड्राइंग रूममे विनोद आ भरत । सभ सूति गेल अछि । खाली हमही टा जागल छी ।

राति प्रात दिस ससरि गेल अछि । सामनेमे हुनकर फोटो सभ छनि–जहिआ जिनगीमे आयल छलीह आ जहिआ गेलीह । सामने टेबुलपर मूड़ी झुकाकऽ हम दिन जोड़ि रहल छी जे ई कहिआ अयलीह आ कहिआ गेलीह । 1963 सँ 95 जिनगीक साढ़े एकतीस वर्ष नहि जानि कोना ससरि गेल । आइ फेर एकसर भऽ गेल छी ।

घरे-आंगन नहि, बाहर सड़क सेहो शान्त भऽ गेल अछि । कतहु कोनो स्वर नहि । खाली कखनो काल हड़हड़ाइत ट्रेन पाछाँक रेलवे लाइनसँ गुजरैत अछि आ सौंसे डेरा हिलि जाइत अछि । नव-नव अइ डेरामे आयल रही तऽ जखने ट्रेन जाइ चौंकि कऽ उठि बैसथि—दुर जो, केहन डेरा लेलहुँ अहूँ । लगैत अछि जेना छातीपरसँ ट्रेन जा रहल हो । फेर सभकेँ अभ्यास भऽ गेलैक । कतेक बेर ट्रेन जाइत पतो नहि लगैक, यद्यपि घरक देबाल-फर्श ओहिना थरथराइ । हमरा तऽ किछुओ ने बुझायल जे कतेक राति बितलैक । कखनो-कखनो सामनेवला आ बगलवला डेराक पोसल एलसीसियन आ सड़कपर अनेरुआ कुकुर सभ झौहरि करैत । हम कुर्सीसँ उठिकऽ बिछौनपर पड़ि सुतबाक नेयार करऽ लागल रही, टी. वी. बन्द कऽ देने रहियैक कि पाछाँ सँ क्यो टोकलक—खूब करै छी ! एहिना धीयापुताकेँ देखबै ? राति-राति भरि जगरना ! नौ बजे मसहरी तर चल जयबाक डाक्टरक हिदायति बिसरि गेल पपुअल !

हम अकचकाकऽ पलटैत छी—''दिदवल !''

बिछौन सुन्न अछि । टोलू सूतल छथि जतऽ हम सुतैत रही । जतऽ ओ सुतैत छलीह से स्थान खाली पड़ल अछि । ओतहि हम सुतैत छी । फेर के टोकलक ? हम सामनेक फोटो सभकेँ देखैत छी—एहिमेसँ तऽ नहि बजलीह ! कतहु कोनो उचावच्च नहि । तखन के बाजल ? हमरे काल बाजि रहल छल प्राय: । ओतऽ सामनेमे फोटोमे निश्चिन्त आँखि मूनने पड़ल छथि । ई कोना बजलीह ? फेर मोन पड़ल इएह तऽ ढब छनि ! दस बेर टोकबनि, आँखि बन्द कयने पड़ल रहतीह । अकच्छ भऽ छोड़ि दिअनु, तऽ किछु काल बाद हाथ

बढ़ा कपार हँसोथय लगतीह— ''निन्न नहि होइत अछि पपुअल ! माथ दबा दिअऽ !''

हमरा हँसी लागि जाय । जखन स्वस्थ आ नीकेँ रहथि तैयो आ बादमे दू वर्ष बिछौन धयने रहलीह तैयो । हमरा माथ दबबैत छलीह तऽ हम हरदम कहिअनि—अहाँ जखन जाँते छी, तऽ बाबी मोन पड़ि जाइत अछि । ओकरे बिछोनपर सुतैत रही नेनपनमे । सुतली रातिमे देखी जे पैर दबा रहल अछि। हमरा आँखि खोलैत देखि टोकि दिअय- सूतल रहऽ । दू हाथ दैत छिऔक । कतऽ-कतऽ बौआइत ढहनाइत रहै छैँ । नीक लगतौ ।

हमर पैरदुक्खी की छूटत, गुदगुदी लागि जाय । बाबीक बूढ़ हाथ आ ओकर कोमल दबाब । तहिना दिदवलक हाथ आ हुनकर पैर दबौनाइ । हमर बात सुनियोकऽ ओ हाथ नहि रोकथि, पैर-माथ दबबिते रहथि ।

इएह तऽ छलनि हुनकर रूप । कतबो थाकलि रहतीह, भानस-भात, बर्तन-बासन, कपड़ा-लत्ता सभटा अपने खींचि, नातिकेँ सुता जखन बिछौनपर औतीह, तऽ एक्के प्रश्न—निन्न नहि होइत अछि पपुअल जी ! माथ दबा दिअऽ !

से दिदवल नहि छथि । हमर सभटा चिन्ता बिसरि चलि गेलीह । हम नहि रोकि सकलियनि । हारि गेलहुँ । मुदा अहाँ कोना हारलहुँ दिदवल ? अहाँ तऽ हमर बाद जयबाक शर्त लगौने रही ! सभटा उन्टा-पुन्टा भऽ गेल । चाहैत रही शुरूसँ सभ किछु कहऽ, मुदा बीच-बीच महक किछु-किछु कहा गेल ।

चारि बहिनमे सभसँ पैघ छलीह । सभ कहनि दीदी । अपनो पहिने चारू बेटिये भेलनि । सभ कहऽ लगलनि दीदी । बादमे अयलाह भोलू-टोलू—तऽ मम्मी कहयबाक सौख पुरलनि ।

सभ कहनि दीदी, तऽ हम कहऽ लगलिअनि दिदवल । ओ झटसँ जबाब तकलनि पपुअल । संगी साथी सभ सेहो कहऽ लगलनि दिदवल जी ।

मुदा से बादक गप्प छैक । जहिया नव आयल रहथि जीवनमे, नाम राखि देलियनि—बिलाइ । आँखि कने कुइर नहि, हलुक रंगक रहनि । बिलाइ सुनला पर पहिने भड़कि जाथि तऽ हम कहियनि—ओनाहो तऽ बिलाइये छी, बात-बात मे काटऽ दौड़ैत छी । फेर कहिओ विरोध नहि कयलनि, मुदा एतेक नीक लागऽ लगलनि से कहिओ ने बुझलियनि । जहिआ हुनकर गेलाक बाद बिछौनक गद्दा हटबौलियनि तँ तरमे पड़ल पूरा फाइल । 1966-67मे नागपुरमे लिखल हमर समस्त पत्रक फाइल ओहिना सिरमातर छलनि—गीता, रामायण, हनुमान चालीसा,

बाबाक भभूत आ घामचन्दनक संग पड़ल ओ फाइल । बिलाड़ि—कारी बिलाड़ि ! कारी बिलाइपर पहिने भड़कि जाथि—हम किएक रहब कारी ? फेर हँसऽ लागथि—अहाँ सामने तऽ ठीके कारी छी ।

हमरा सामने ओ हरदम छोट बनि जाथि । छलीहो छोटछीन, दुब्बरि, मुदा दृढ़तासँ भरल । एक बेर हम दुनू गोटे बजारमे घुमैत रही तऽ किछु छौंड़ा सभ देखिकऽ हँसल । हम कहलियनि– ''देखू की कहैत अछि छौंड़ा सभ जे हिन्दुस्तानक नक्शाक संग श्रीलंका जा रहल छैक ।'' ओहो ओहिना हँसैत कहलनि– ''ओ छौड़बा हमरो बड़ी कालसँ अखिऔने छल । आजिज भऽ हम अहाँ दिस आंगुर देखा देलियै जे देखहिक, केहन छैक संगमे ।'' तखनसँ जे सटकल से सटकले अछि ।

इएह आत्मविश्वास आ दृढ़ता हुनकर चरित्रकेँ फराक कऽ दैत छलनि । अस्पतालमे जखन बच्चाक जन्म हेतु लऽ जैअनि, छौ-छौ बेर गेलीह, सभ बेर जेनरल वार्डमे । ओतुक्का दाइ, नर्स, डाक्टर अवाक् । कतबो दुखमे एक्को बेर कानब नहि, कुहरब नहि । निःशब्द सहब । बाहर आबिकऽ हमरा कहय– "दुबली-पतली है, पर है बड़ी जीवटवाली आपकी मिसेज ।"

से सत्ते छलीह । कतबो भीड़भाड़ होइ डेरामे, नोकरो-चाकर नहि रहनि, तैयो सभकेँ खुआ-पीआ, चौका-बरतन कऽ कहिओ एक रोटी वा कहियो सेहो नहि खा जखन ओ बिछौनपर अबैत छलीह-मोन कनियो मलिन नहि, देहमे थकनीक नाम नहि । कखनो काल तऽ सोझे चैलेंज दऽ देथि— ''ई अहाँवला फोंक देह नै छैक, निस्सन हड्डी छैक । एकर चिन्ता अहाँ नहि करू ।'' से तऽ कहिओ करबो ने कयलिअनि हम । कखनो काल हँसी कऽ दैत छलीह— ''सालमे दू टा नूआ तऽ दाइ नौड़िनकेँ सेहो भेटैत छैक, हमरा तऽ सेहो नहि दैत छी अहाँ ।'' बड़ लाज होइए हमरा । मोन नहि अछि जे कहिआ हुनका लेल साड़ी किनलियनि । बाप-माय छलथिन—सालमे दू-चारि टा भैये जाइत छलनि। वैह सूती साड़ी पहिरि कतहु विदा भऽ जाइत छलीह । गला कान हाथ सुन्न । कोनो गहना नहि । कानमे खाली एकटा बाली । गरामे सोहागक चेन्ह लेल कोनो नकली माला वा कारी डोरा गाँथिकऽ पहिरि लैत छलीह । जखन देखियनि मोन कानऽ कानऽ सन भऽ जाय । गराक हार बाप देने रहथिन । गाम जाइत काल कहलियनि— दादा दुखिताह छथि । एहि बेर पूजामे धीयापूताकेँ कपड़ो-लत्तो नहि भऽ सकलैक । झट गरासँ निकालिकऽ देलनि— ''लऽ लिअऽ सभटा, गाम जायसँ पहिने ।''

गराक ओ हार बन्हक रहि गेल । किछु दिन बाद कहुना एकटा हार बनबा देलियनि ओकर बदलामे । दोसरे वर्ष ओहिना दुर्गापूजामे ओहो बन्हक आ फेर कहिओ वापसी नहि । विवाहे वर्ष, सीथी, औंठी आ झुमका बकसासँ चोरा लेलकनि गुलजारबागमे । तकर बाद भरि जीवन ओहिना रहलीह । कोनो गहना सँ कोनो मतलब नहि । कोनो विवाहदानमे अपनासँ जूनियर सभक स्त्रीकेँ गहनासँ लादल आ हिनका गरामे एकटा कारी डोरी बन्हने देखिअनि तऽ मोन कोनादन करऽ लागय । ओ बूझि जाथि– अहू लेल क्यो मोन छोट करैत अछि ! गहना-तहनाक हमरा कहिया सौख भेल ।

मुदा एकटा सौख हुनका छलनि शुरुएसँ । एकटा छोटछीन घर बनयबाक इच्छा । हम कहिअनि की करब जमीन आ घर ? चारि टा बेटी अछि, अपन अपन घर जायत । के रहत घरमे ? तहिआ भोलू-टोलू नहि भेल रहथि । दुनू भाइक जन्मक बाद कहथि– भगवान ठाढ़े सुनैत छलाह । दू-दू टा बेटा पठा देने छथि । आबो तऽ कोनो जोगार करू ।

जोगार हमरासँ नहि भऽ सकल । जखन आखरी क्षण छलनि, नाड़ी झीकि लेने रहनि । दादाजी कानमे बेर-बेर विष्णु सहस्रनाम आ गीताक पाठ करैत छलथिन । हम सभकेँ बिछौनक चारू कात बजा लेने रहिअनि । ई माय अछि गोड़ लगिऔ... फेर कोनो जन्ममे कोनो कष्ट नहि हैत । ई सुभाष, प्रतिभा, भोलू और प्रकाश, आभास आ' धीयापुता ऋचा आ निधि । सभकेँ आशीर्वाद दिऔक । आ हमरा माफ कऽ दिअऽ, हम किछुने कऽ सकलहुँ अहाँ लेल, एक टा घर तक नहि बना सकलहुँ । ई चारू भाइ छथि, क्यो यदि घर बनौताह तँ अवश्ये ओकर नाम रखताह– ज्योत्स्ना । हम नहि कऽ सकलहुँ एतबो । हमरा माफ कऽ दिअऽ । बिनी हमर जेठकी बेटी अपस्याँत छलीह । पाँच दिनसँ मायकेँ सेवामे लागल-लागल अपनो तड़मड़ायपर वृत्त । डाक्टर साहब (हमर जमाय) काल्हिए चल गेलाह, लाख रोकलोपर नहि रुकलाह । प्रसन्न छलाह वा हमरा प्रसन्न रखबा लेल कहि गेल छलाह— मम्मी ठीक भऽ रहल छथि, डेरापर लऽ जइयनु । अगिला साल दिल्लीमे पोस्टिंग लियऽ, ओतहि इलाज चलतनि ।

हम अगुताइक पक्षमे नहि रही । जहिआ अयला डाक्टर साहब, नर्सिंग होममे भर्ती लेल तत्पर भऽ गेलाह । हम दू-चारि दिन डेरामे राखऽ चाहैत छलियनि । डाक्टर साहब अड़ल रहला- पैरालीसिस के अटैक छैक । डेरामे की सुविधा हेतनि ? नर्सिंगहोममे भरती भेलीह । भरती कऽ देलियनि आ दोसरे दिन साँझ कहलक जे बचबाक कोनो उम्मीद नहि छनि ।

एतबा कहि डाकटर चल गेल आ प्रीति नर्सिंगहोमक बाहर ठाढ़ कानऽ लगलहुँ । कनिते ठाढ़ रहलहुँ ! चारू कात लोक जमा भऽ गेल आफिसक, परिवारक, की भेल एना कनैत किएक छी ?

हम कोनो जवाब नहि देलियनि । मिश्राजीकेँ कहलियनि— आब समय नहि छनि । सभकेँ टेलीफोन कऽ दिअनु । भोर तक सभ पहुँचि जाथि ।

एतबा कहि ओतहि राखल एकटा कुर्सीपर बैसि गेल रही, जेना पयरमे कोनो ताकत नहि रहि गेल हो । ठाढ़ रहब तऽ ओंघरा जायब । खाली नोर । दहोबहो ! नहि जानि कतऽ नुकायल रहय एतेक नोर एहि दिन लेल ।

यद्यपि हमरा लेल ई कोनो नव सूचना नहि छल । डाक्टर नायक पन्द्रह मास पहिने कहने छलाह । हमहीं पुछने रहियनि संजय गांधी अस्पतालक ओइ वातानुकूलित कक्षमे । हमरा कछमछी पैसि गेल रहय । पेसेन्टक बेडकेँ चारू कातसँ छेकने डाक्टर अपनामे विमर्श करैत हमरा कोठलीसँ बाहर कऽ देलक । फेर सभ बहरायल आ विदा भऽ गेल । हम खेहारिकऽ डाक्टर नायककेँ रोकलहुँ— हमरा किछु कहू डाक्टर ! की ई खतम केस अछि ? कोनो आस नहि ?

डाक्टर नायक शान्त भावेँ देखैत कहलनि— सिरोसिसमे बेशी आस नहि होइत छैक आ हमरा कनियो सन्देह नहि अछि जे लीवर सिरोसिसक केस नहि थिक !

ओ तैयो जाय लगलाह हम फेर घेरलियनि— कतेक दिन आर उम्मीद राखू डाक्टर ?

डाक्टर कने थकमकयला । प्राय: सोचि रहल छलाह जे कहू वा नहि कहू। बजला टू फाइव इयर्स । (दूसँ पाँच वर्ष)

डाक्टर चल गेलाह । हमर सौंसे देह थरथरा गेल— बस दूसँ पाँच वर्ष ! दिदवल चललीह । दवाइक हाथे मारल गेलीह ।

पहिने देखलथिन डाक्टर शर्मा । एक्सरे करौलाक बाद टी. बी.क पूरा कोर्स देलथिन । कोनो सुनवाइ नहि—पन्द्रह दिन मास भरि ने वजन बढ़लनि ने खा होनि । भूख लागल, मुदा खयबामे असमर्थ, सौंसे मुँह छाला पड़ल । जबर्दस्ती खयलोपर रद्द, कण्ठ फाड़ि-फाड़िकऽ रद्द ।

डाक्टर शर्मा कहलनि— कोनो सीनियर डाक्टरसँ सेहो राय-विचार लेल जाय । डाक्टर वी. के. झा देखलथिन, रिटायर्ड प्रोफेसर आफ मेडिसिन । ओहो

सैह दवाइ देलखिन । गोलीक बदला सुइ देलखिन । पहिले सुइसँ हाथ-मुँह ऐंठऽ लगलनि । खाली गोली सभ एक मास चललनि । कोनो लाभ नहि । पेटमे कोनो अन्न नहि । जीह पातर भेल । किछुओ छन दऽ लगनि । सौंसे मुँह घाव । देहक वजन आर घटल जाइत । मइ 93 सँ जुलाइ 93 अबैत-अबैत हालत एकदम खराब भऽ गेलनि । मुदा तैयो मोनमे बड़ साहस रहनि– "अहाँ बेकार घबराइत छी, हमरा किछुओ ने हैत ।"

डा० वाजपेयी सहो कहलनि— किछु नै हेतनि । इएह दवाइ सभ चलऽ दिअनु । पूरा कोर्स नहि खयतीह तऽ ठीक नै हैतनि ।

हम रोकने रहिअनि— पेसेण्ट एतेक कमजोर छथि, लीवर कमजोर छनि, ताहिपर एतेक कड़ा दवाइ ।

ओ विश्वासपूर्वक कहलनि— चिन्ता नहि करू । लीवरक दवाइ दऽ देने छिअनि । सभ ठीक भऽ जयतनि ।

तीन मास बीति गेल । अगस्तसँ अक्टूबर । दुर्गापूजामे गामो लऽ गेलियनि, मुदा कोनो फायदा नहि । ओहिना कमजोर आ खयबा-पीबामे असमर्थ।

अक्टूबरसँ वैद्यराज सभक दवाइ शुरू भऽ गेलनि— ब्रजमोहन दीक्षित, यदुनन्दन उपाध्याय, रमानाथ द्विवेदी सन-सन वैद्यराज । योग्य आ अनुभवी । अवस्थाक कारण प्रैक्टिस छोड़ने, मुदा हिनका देखैत छलथिन । किछु दिन फायदा, फेर सब पूर्ववत् । फरवरी 94मे डा० पी. के. श्रीवास्तव लग पहुँचलहुँ आ ओ ऊपरेमे लिखलनि लीवर सिरोसिस । हमर प्राण सुखा गेल ।

ओहो पढ़लनि ओ पुर्जा । पहिल बेर क्चिलित बुझयलीह– ठीक होइ वला रोग नहि छैक की ?

हम आश्वासन देलियनि– के कहलक अछि अहाँकेँ ? एकर रोगी तऽ दस-दस, बीस-बीस वर्ष जीवैत अछि । परहेज नीक जकाँ होबऽ चाहियैक । दवाइ तऽ किछु ने छैक ।

ओ हमरा दिस तकैत हँसलीह– बात तऽ एके भेलैक ने ! जीवि सकैत छी, मुदा ठीक नहि हैब । एहन जीलासँ फायदा !

हम बुझौलियनि– फयदा छैक दिदवल ! अहाँ बाँचल रहब सैह बड़की टा फायदा छैक । ओ विरोध कयलनि— एना बिछौन धयने, किछुओ करबा जोगर नहि । एहन जिनगीसँ मृत्यु नीक ।

दवाइ तैयो चलैत रहलनि । डाक्टर आ वैद्य दुनू । डाभ, कमलनालक डंटी, अर्क, मकोई, झाड़फूक, बाबा, फकीर क्यो नहि छुटलाह । असरि उल्टा । फरवरी 95 अबैत-अबैत उठब-बैसब मुस्किल भऽ गेलनि । सूतलमे ब्लडप्रेशर ठीकठाक, बैसलापर खूब कम्म आ ठाढ़ होइत देरी 40-50 चक्कर आ आँखिक आगू अन्हार, पाखानो बाथरूम पकड़ि कऽ जाय पड़य ।

जहिया पहिल दिन पकड़िकऽ बाथरूम लऽ गेलियनि, कानऽ लगलीह— आब अहू सभ जोग नहि रहलहुँ । जाय दिअऽ आब ?

कोना जाय दिअनु ! ई कोनो बेर भेलनि अछि जयबाक ! ई दवाइसँ क्षतिग्रस्त लीवर लाइलाज । डाक्टर कहैत छथि ई अपनेसँ बढ़ि-घटि सकैत अछि। नीक जकाँ खुऔबिअनु... इलाज नहि छैक कोनो ।

तैयो इलाज तकैत रहैत छी— आयुर्वेद, होमियोपैथिक, एक्यूपन्चर आ एलोपैथिक । लखनउ, दिल्ली, बम्बइ सभ चक्कर लगा अयलहुँ । जहिया लखनउमे भर्ती करौलियनि, बड़ आस रहए, मुदा डाक्टर नायक कहलनि टू टु फाइब इयर्स । भरिसक टू इयर्स कहऽ चाहैत छलाह । हमर मुँह देखिकऽ पाँच वर्ष बाजि गेलाह । कनैत-कनैत हुनकर कोठलीमे गेलहुँ । बिछौनसँ सटिकऽ बैसि गेलहुँ । कतबो रोकबाक चेष्टा कयलहुँ नोर बन्दे ने होअय । रोकबाक चेष्टामे सम्पूर्ण शरीर काँपि उठय आ थरथराइत रहय । माथापर हाथ राखि देलनि— एना किएक कनैत छी ? हमरा सन स्त्री लेल कनैत छी...

जिद धऽ लेलनि जे आइये अस्पतालसँ चलू । एकरा सभ बुते किछु नहि हेतैक । बनारस घुरि चलू । डाक्टर सभ कहथि— रुकि जाउ, वायप्सी करा दिअनु । हम पुछलियनि— लाभ ? ओ कहलनि— प्रोफेसनल जिम्मेदारी । पता लागि जायत जे क्रोनिक हिपैटाइटिस छनि वा सिरोसिस ।

—जानलासँ लाभ ? हम प्रश्न कयलियनि । इलाजमे कोनो फर्क पड़तनि ? ओ कहलनि— नहि ।

हम कहलियनि— तखन रहऽ दिऔ अखन । बादमे जुलाइमे करबा लेब, तीन मासक बाद । आ लऽ अनलियनि । भरि बाट कनिते रहलहुँ । सभटा आस टूटि गेल छल । बड़ उम्मीद लऽ कऽ संजय गांधी लऽ गेल रहिअनि। भेटल दस पैकार एकटा गोली, दूसँ पाँच वर्षक जिनगीक सूचना ।

हमरा कनैत देखि डेरामे सभ हाक्रोश करऽ लागल— दूनू बेटी टिनी आ

टुकू, दुनू बेटा भोलू आ टोलू । छोट जमाय प्रकाश ओ सिमी सेहो कानऽ लागल । सभ छतपर आबि गेल रहए । ओ नीचाँमे अपन कोठलीमे रहथि । सभकेँ कहलियनि— मम्मी जाइत छथुन । जतबा दिन छथुन, खूब ध्यान रखहुन जे कोनो बातक कष्ट नहि होनि । धीयापुता सभ हमरामे लपटिकऽ तेना आर्तनाद कयलक जेना आइये चल गेल होथिन । ओ जेना सभ-किछु बूझि गेलीह । देखितहिँ बजलीह— कतऽ चल गेल रही सभ क्यो ! जयबाक तऽ अछिए, अखने छोड़ि देब अहाँ सभ ?

—नै दिदवल । नै छोड़ब, अहाँकेँ नै जाय देब । लड़ब हम अहाँक बीमारीसँ । बदली भैये गेल अछि । चलू इलाहाबाद । जगह बदललासँ जरूर फैदा हैत, हमर मोन कहैत अछि । ओ हँसऽ लगलीह—हमरा परतारैत छी । बँचि जायब तेँ भरि बाट कनैत आयल छी ! एतेक तंग आबि गेल छी हमरासँ !

हम ओतऽसँ पड़ा जाइत छी । ओहि शहरसँ भागि अबैत छी जतऽ सैकड़ो लोककेँ ओ अपना संग बाबा विश्वनाथक आरती देखौलथिन, पूजा करबौलखिन। विन्ध्याचल लऽ गेलखिन, संकटमोचन घुमा अनलथिन । जतऽ सभ मास हमरा लेल सन्तोषी माइक व्रत करैत रहली, दुखित हेबाक पूर्व चारि वर्ष धरि । 1989मे हमरा पटनामे इन्टेन्शिव केयरमे भर्ती होबऽ पड़ल छल । पाँच दिन रही । छौ हफ्ता रेस्टमे रही, तीन हफ्ता बेडरेस्टमे । हर्ट अटैक भेल रहय । आ दिदवल एकदम डरा गेल रहथि । आतंकित आ भयभीत । तीनटा बेटी कुमारि, दुनू बेटा अबोध । कतहु रहबाक स्थान नहि, बैंकमे कोनो टाका-पैसा नहि । गहनो-गुड़िया एक्कोटा नहि । ओ भविष्यक आशंकासँ थरथरा गेल रहथि... जखन हमरा सामने आबथि, हुनकर डरायल आँखिमे हमरा अपन मृत्यु स्पष्ट देखाय ।

हम बुझौलियनि— अनेरो डराइत छी । किछु ने हैत हमरा । भैयो गेल तऽ की ? चारि भाइ छथि हमर बाद । सभ बेटे जकाँ छथि, सभ कमाइ छथि। तीनू बहिन आ भोलू-टोलूकेँ देखबा लेल समर्थ छथि । जहिआ दादा गेलाह (हमर पिता), आठ भाइ-बहिन रहथि आ हम एकसर रही । आइ ओ चारि छथि। बेटी-जमाय सेहो डाक्टर छथि । शहरमे जमीन घर नहि लेलहु तेँ की ? इएह चारू भाइ बैंकबैलेंस छथि । जमीन-जथा छथि । अहाँ निश्चिन्त रहू ।'

मुदा ओ प्रायः निश्चिन्त नहि भऽ सकलीह । सन्तोषी माताक व्रत शुरू केलनि । घण्टो देवी-देवताक सामने बैसऽ लगलीह आँखि मुनने । भरिसक अपन जीवन दऽ हमर जिनगी माँगैत रहलीह । जतऽ कतहु जाइ-संग जाथि ।

बाथरूममे रही तऽ बाहर ठाढ़ि रहथि । कनियो देरी होअय तऽ दरबज्जा ठोकैत छलीह– 'बड़ देरी भेल पपुअल !' सुतली रातिमे उठि-उठिकऽ हमर छातीपर हाथ रखैत छलीह । हरदम हमरे लऽकऽ चिंतित रहैत छलीह ।

हम एकदिन हँसीमे कहलियनि 'देखू हृदय-रोगी पैरोलपर छूटल कैदी जकाँ होइत अछि । कखनो पैरोलक अवधि समाप्त भऽ जा सकैत छैक ।'

ओ बिगड़ि उठैत छलीह । अपने तऽ निश्चिन्त भऽ जायब आ के देखत एकरा सभकेँ जकरा छोड़ि जयबैक ? एहिना करक छल तऽ जन्म कियैक देलियैक ?

आ बड़ जतनसँ आँचर तर झाँपल दीप जकाँ ओ हमर जिनगी बचबैत रहलीह । समयपर दवाइ-पथ्य फराककेँ सभटा भोजन सफोलामे पकाओल । टूरोपर जाइ तऽ संगे जाथि । ओतहु अपने हाथे सभटा बना कऽ खुआबथि ।

सावित्री जकाँ यमसँ लड़ैत रहलीह चारि वर्ष । आ फेर अपने बिछौन धऽ लेलनि । तैयो सभ दिन हमरे चिन्तामे रहलीह— हमरा किछु ने हैत, हमर चिन्ता छोड़ू । अपन ध्यान राखू । अहाँ नहि रहब तऽ सभ धीयापुता बेलल्ला भऽ जायत । हम नहियो रहब तऽ की फर्क पड़तैक ककरो ? आब छीहे कोन जोगरक, सभपर बोझ... । ने पत्नी रहलहुँ, ने माय मात्र, एकटा रोगी रहि गेल छी । आब अइ रोगीक नाम काटिये दिऔक सैह नीक ।

मुदा हम जनैत छलहुँ, आइयो जनैत छी ओ जीबऽ चाहैत छलीह । जीबाक इएह अदम्य इच्छा हुनका दुख सहबाक साहस दैत छलनि । एक्को डेग चलबामे असमर्थ । मुदा विश्वनाथ मन्दिरक गली पार कऽ जाइत छलीह । विन्ध्याचल पहाड़पर अष्टभुजीक दर्शन कऽ लै छलीह । इलाहाबाद डेरामे अयबा सँ तीन मास पहिने धरि अपने स्नान करैत छलीह । पूजा करैत छलीह । तीन मास पूर्व धरि पूजाघर जाकऽ पूजा करैत छलीह । कमजोरी बढ़ि गेलनि तऽ सभटा भगवानकेँ सुतबाबला कोठलीमे जमा कऽ देलिअनि । माथपर दुर्गा, बगलमे विश्वनाथ, दोसर बगलमे गणेश । सामने बाप, पितर, दादा, बाबा, बाबी । एकटा महावीरजीक फोटो दादाजी आनि कऽ देने छलथिन, कहने रहनि कोनो बाबा जे सुतबासँ पहिने एक मिनट ध्यान करब । नियमित ओ ओम्हर घूमि एक मिनट आँखि बन्द कयने बिछौनपर बैसल रहैत छलीह । जीवाक बड़ अदम्य इच्छा रहनि । मुदा क्यो कान नहि देलखिन, एकटा कमजोर जानपर सभ अपन ताकति लगा देलथिन । कोनो टा कष्ट नहि छोड़लथिन । कमजोर देहक सभटा

मांस गला देलथिन । देहक वजन 30 किलोसँ निच्चा । सौंसे देहमे लहरि, कण्ठमे लहरि, पीठ-छातीमे लहरि, देहक चमड़ा एकदम रुच्छ आ हरदम आँखिक आँगा अन्हार । ब्लडप्रेशर 50-60 । तैयो जीबाक इच्छा ओहिना प्रबल छलनि । यद्यपि हरदम कहैत छलीह—आब छोड़ि दियऽ । जाय दिअऽ हमरा ।

आ 7 जुलाइक राति दादाजी (हमर श्वसुर) बेर-बेर कानमे कहलखिन—आब जाह । शान्तिपूर्वक जाह । हम कहैत छिअह जाह । एहन भाग ककरा होइ छै— प्रयाग क्षेत्र, चारू कात घेरने परिवार... स्वामीक कोरामे माथ, जाह, आब कष्टसँ मुक्ति पाबह । आ पाठ करऽ लगलखिन—

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्त्तते ।

राति भरि पाठ कयलखिन । गीता आ विष्णु सहस्रनाम । बेर-बेर जायलेल कहैत रहलखिन आ जखन कखनो जायक गप्प कहलथिन, बन्द भेल वाक् रहितो अस्पष्ट कानब सुनाइ पड़नि आ सुनाइ पड़नि नै... नै । जेना जाय नहि चाहैत होथि ।

साँझसँ एहिना प्रात भऽ गेलनि । घरमे, ओसारापर कनैत लोक प्रार्थना पाठ करैत रहलनि राति भरि आ हमर जांघ पर अपन एकटा पैर चढ़ा आ एक हाथसँ हमर हाथ पकड़ने ओ राति भरि संघर्ष करैत रहलीह । तेना गसियाकऽ पकड़ने छलीह जेना भागि जयबनि ।

प्रातधरि एहिना पड़ल छलीह । डाक्टर अयलाह, आश्चर्यचकित भेलाह जे राति कोना खेपि गेलीह । पेशाबो ठीक मात्रामे भेलनि । ब्लडप्रेशर सेहो किछु नीक छनि । बिन्नीसँ गप्प कयलनि आ रातिमे नौ बजे आबि फेर एकटा इंजेक्शन एलजूभिनक देबाक निर्णय कयलनि । इन्जेक्शन मंगबाकऽ राखि लेल गेलनि ।

शुभम् सिमीक बेटाक मुड़न गाममे सम्पन्न भऽ गेलैक सात तारिखकेँ । सिमी विदा भऽ चुकलीह प्रकाशजीक संग । टेलीफोन आबि रहल छल, दरभंगा पहुँचि गेलाह, समस्तीपुर अयलाह, पटनो आबि गेलाह । सभ कहऽ लगलनि शुभम् अबै छै । मुण्डन कराकऽ । देखबहिक नहि ? जोरसँ मूड़ी डोलबैत छलखिन सकरात्मक ।

शुभम् केर मूड़नक तैयारीमे छलीह । हम भोरे पाँच बजे बनारस लेल विदा भऽ गेल रही । चारि बजे उठलहुँ तऽ ओहो उठि गेलीह । तैयार भऽ कऽ कहिलियनि जाइ छी, परसू चल आयब । ओ मूड़ीक इशारासँ कहलनि बेस ।

शब्द नहि बहरयलनि । हम बाहर जा गाड़ीमे बैसि गेलहुँ । फेर मोन किछु खटकल । किछु दिनसँ धीयापुता सभ कहैत छल अहाँ टूर पर नै जइयौ पप्पा। अहाँक गेलापर मोन आर खराब भऽ जाइत छैक । मुदा उपाय नहि छल । नौ बजे बनारससँ बम्बइ लेल फ्लाइट पकड़बाक छल । तैयो कारसँ उतरि फेर कोठलीमे अयलहुँ । लगमे बैसलियनि । ओरियाकऽ अपन बाँहिमे लेलियनि । ओ छातीमे दुबकि गेलीह । इएह हिनकर भाषा छनि निःशब्द । मोन नीक नहि रहतनि, कतबो देह घिचबनि, शरीर काँट कऽ लेतीह । नीक मोन रहतनि, चुपचाप छातीमे सटि जयतीह । कोनो शब्द नहि । बेशी दुलार करबनि तऽ बाजि उठतीह 'रहऽ दिअऽ ई दुलार । सभटा बुझैत छी ।' आ कने आर सटि जयतीह-एकदम समर्पित आ स्निग्ध भावसँ ।

जाइत काल हम कहलिअनि—आब जाइ छी । ओ फेर मूड़ी डोलौलनि। हम बम्बइ विदा भेलहुँ ।

जहाज एक बजे बम्बइ पहुँचल । तीन बजे सेन्ट्रल आफिस पहुचलहुँ होटल होइत । पहुँचैत फोन कयलियनि । फोनपर पहिने भोलू, फेर दादाजी छलाह— पैरालिटिक अटैक भेल छनि । फेसियल आ स्पीचक पैरालिसिस । एक भाग सुन्न छनि हाथ-पैर । बोली लटपटाइत छहि । लोककेँ कहुना चिन्है छथिन । हँ, नै करै छथि । भोलू मोनू फोन देलकनि । हम घबराइत जोरसँ पुछलियनि— ठीक छी । क्षीण स्वर आयल— हँ ।

बड़ मोस्किलसँ दोसर दिन साँझमे इलाहाबाद पहुँचलहुँ, फ्लाइटसँ दिल्ली, वाराणसी होइत । ओहिना पड़ल छलीह । देखिकऽ आँखिमे नोर नहि अयलनि एक्को बुंद । हम बूझि गेलहुँ जे आब सब समाप्त । लग बैसि हाथमे हाथ लेलियनि । सिम्मी कहलकनि— पप्पा आबि गेलखुन । चिन्हैत छहुन ।

मूड़ी डोलाकऽ कहलथिन— हँ ।

एकटा अबोध पाँच वर्षक बच्चा सन मुँह भऽ गेल छलनि । खाली मूड़ी डोलाकऽ हँ, नै, करैत । लगले सभठाम फोन कऽ देलियनि आबि जाइत जाह। जाइत छथुन ।

पहिने डाक्टर साहब आ बिन्नी सुभाष, विकास, प्रतिभा आ माय अयलीह। नर्सिंगहोममे भर्ती करौलखिन । एक सप्ताह रहि सात तारीख कऽ डेरामे लऽ अनलियनि । सातो दिन नर्सिंगहोममे सैकड़ोक भीड़ लागल रहलनि । क्यो खून देलकनि, क्यो दौड़ि-दौड़िकऽ डाक्टर बजौलकनि । भोरसँ राति धरि लोकक भीड़ प्रार्थना करैत रहलनि ।

सिम्मीकेँ जबर्दस्ती पठा देलिअनि प्रकाशजीक संग । सात तारीखकेँ मुड़न छलैक गाममे, बेटी जमाय जाय लेल तैयार नहि । कहलियनि जाइ जाउ, बड़ मनोरथ छलनि । पूर कऽ दिअनु, रुकल रहलीह ।

ओकरे मुड़नक तैयारीमे छली ओहि दिन बैसल । मोन कने नीक छलनि। हमर बम्बइ गेलाक बाद सभटा चीज-वस्तु देखलनि । धीयापुता सभ बिछौनपर बैसाकऽ बड़ी काल केश झाड़ि देलकनि । माथक सभटा शोणित नीचाँ आबि गेलनि । पक्षाघात ! स्मृति एवं वाक्हरण ।

हम सिम्मीकेँ जबर्दस्ती पठा देने रहिअनि आ आब मुड़न करा ओ पटना पहुँचि गेल छलीह । हुनकर प्रतीक्षामे बाँचल छलथिन । ८ जुलाइक साँझ धरि बाँचल छलथिन । छौ बजे साँझमे टिनी बिन्नी कहलनि— कने काल पड़ि रहू पप्पा । हम सभ देखैत छियैक ।

चौबीस घण्टाक बाद जांघपरसँ हुनकर जांघ हटौलियनि । हाथमे गसियाकऽ पकड़ल हाथ छोड़ा देलियनि । आँखि खोलिकऽ तकलनि । इशारासँ कहलियनि, लगले अबैत छी । फेर आँखि मूनि लेलनि । हम बगलक बिछौन पर पड़ि रहलहुँ । किछु गुलगुल सुनायल । उठिकऽ देखलिअनि, सभ घबड़ायल छथि, बिनी डेपामिनक बुंद एडजस्ट कऽ रहल छथि, ब्लडप्रेशर चेक कऽ रहल छथिन, कहलनि— आब ठीक छै ।

हम कोठलीसँ बाहर अयलहुँ । फ्रीजमे राखल दवाइ चेक कयलहुँ । डाक्टर साहबक अयबाक बेर भऽ गेल छलनि । नौसँ ऊपर भऽ गेल छलैक । सोचलहुँ, किछु खा ली । भनसाघर जा एकटा रोटीमे कने तरकारी लपेटि मुँहमे राखऽ लगलहुँ कि हल्ला सुनायल । हम ओम्हरे दौड़लहुँ ।

मुँह टेढ़ भेल जा रहल छलनि । बिन्नी चम्मचसँ ओकरा खोलबाक प्रयास कऽ रहल छलीह । साँस खूब जोर-जोरसँ चलि रहल छलनि । शरीर गर्म छलनि जेना बोखार होनि । नाकमे फीडिंगवला ट्यूब रातिये हटा देने रहियनि। एक टा पेटीकोट आ टुकुवला टीशर्ट पहिरने पड़ल छलीह अस्पतालेसँ । सभटा दिनेमे हटा देने रहनि बेटी सभ । नव नूआ आंगी पहिरा देने रहनि । हम कोरा मे उठा लेलियनि आ बीच आँगनमे सुता देलियनि । गंगाजल मुँहमे देलियनि । दादाजी गोदान करौलथिन । सिरमामे तुलसीक गाछ गमला समेत राखि देलकनि क्यो । पाँच-सात बेर साँस जोरसँ चललनि आ फेर सभ शान्त ।

माय चीत्कार कऽ लपटि गेलनि । दादाजी ओहि ठामसँ अपनाकेँ सम्हारऽ

लेल हँटिकऽ कानय लगलाह । बिन्नी बेहोश जकाँ भऽ एक कात खसलीह । सब धीयापुता देहपर ओंघरा गेलनि । भरि आंगन लोक भरि गेलनि आ तखने शुभम कें लेने सिम्मी अयलीह, मायक देहपर पछाड़ खा खसलीह । उठबे नहि करथि। हटबैत कहलियनि, तोरे सभ लेल प्राण अँटकल छलनि । आब जाय दहुन ।

पटोर पहिरने शान्त पड़ल छलीह बीच आंगनमे । सींथमे सिन्दुर छलनि आ नाकमे छक । आर कोनो आभरण नहि । देह ओहिना गर्म छलनि । ओही काल डाक्टर गुप्ता प्रवेश कयलनि । पपनी उठा देखलखिन । आ घूमिकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह ।

दिदवल चल गेलीह- चुपचाप । जायकाल किछुओ ने कहलनि । इएह हुनकर स्वभाव छलनि । किछु कहतीह नहि, अहाँ हुनकर मोनक बात बुझिअनु। के बुझलकनि हुनकर मोनक बात ? कहिओ काल तऽ दिन तकाकऽ बजैत छलीह । बजैत छलीह ककरो बड़का बेटासँ विआह नहि होइ । हम कहलिअनि किछु दिन पहिने जे आब अहाँक मोनक बात पूर हैत । अगिला जन्ममे छुट्टी भेटि जायत । अपन पसिन्दक घर-वर हैत । सुखसँ रहब ।

हँसऽ लगलीह, इएह लेखक बनैत छी ! एतबे बात बुझै छियैक ! के अछि हमरा सन सुखी... ककरा छैक हमरा सन वर-घर ! भगवान सभकें एहने वर-घर देथुन ।

हम अवाक् । कहिओ कोनो सुख नहि भेलनि । हरदम अभावमे रहलीह, खटैत रहलीह । अपना हाथे कहिओ एकटा पाइ नहि छूलनि । हमरा लग जे पाइ रहैत छल से हमर पाकिटमे कि सिरमा तर । काज होइत छलनि, ओतऽसँ उठा लैत छलीह- एतेक पाइ लेने छी- हिसाब लऽ लिअऽ ।

हम कोना करबनि हुनकर स्नेह दया आ क्षमाक हिसाब ? चुपचाप चलि गेलीह । किछुओ ने कहलनि । टिनी आ टुकुक विवाहोक गप्प नहि कयलनि, ने गप्प कयलनि भोलू-टोलूक भविष्यक । दुनू नातिकें जकरा जनमसँ पोसलनि तकरो बेटी लग पठा देलखिन । पहिल शशांककें 1994मे जे आब एकरा के देखतैक आ फेर मयंककें जे आठ वर्षसँ संग छलनि । जे आब हमर कोन ठेकान ? सभ टा हिसाब फड़िछा गेल छलीह । खाली हमर नै फड़िछौलनि। मौके ने देलनि । सोचने रही तीन वर्ष बाद रिटायर हैब । दुनू गोटे गाम जाकऽ रहब... । तहिआ हुनकर सब बात सुनबनि । भरि जन्म कहैत रहलीह, अहाँ तऽ

सप्पत खयने छी जे हमर कोनो बात नहि मानब ।

सभ बात माने एकटा बात । एकटा घर पटनामे । से नहि भेलनि । प्रारम्भमे हम कहियनि जे घर तऽ अछिए, तऽ ओ हरदम कहथि घर तऽ अछि, अपन कोन अछि ? जाइत-जाइत कहि गेलीह अपन घर अछि । एहन वर-घर सभकें होइ । तैयो हमर हृदयपर एतेक टा बोझ किएक अछि ?

ओ निश्चिन्त सूतलि छथि बीच आंगनमे । भरि आंगन लोकक ठट्ठ लागल छनि । सभ कानि रहल छनि । माय कनैत-कनैत बेहोस भऽ गेल अछि। सभ ओकरा हवा दऽ रहल छैक, मुँहपर पानि छीटि रहल छैक ।

हम आंगनेमे सीमेंटपर हुनकर बगलमे पड़ि रहैत छी । एतेक दिन साढ़े एकतीस वर्ष संग देलनि । आइ एहि आंगनमे एकसरि कोना छोड़ि दिअनु ? लगले आँखि लागि जाइत अछि ।

आँखि खुजैत अछि तऽ आंगनमे ओहिना भीड़ देखैत छी । धीयापुता सभ आर नीक जकाँ मुँह-कान पोछिक सजा देने छनि । पटोर पहिरा देने छनि । पैर लग मालाक ढेर छनि ।

चचरी लेने आंगनमे लोक सभ प्रवेश करैत अछि । आंगनसँ जयबाक बेर भऽ गेल छनि । हम एकबेर हुनकर मुँह देखि उठिकऽ ठाढ़ भऽ जाइत छी, मुदा लगैत अछि जेना टांगमे थरथरी पैसि गेल हो । कोनो शक्ति नहि रहि गेल हो ओइमे । अही थरथराइत निर्बल टांगे-आगूक यात्रा करबाक अछि, से सोचि हम सिहरि जाइत छी ।

उठब नै पपुअल- जेना फेर क्यो टोकैत अछि । नीक जकाँ प्रात भऽ गेल छैक । खिड़कीसँ इजोत आबि रहल अछि । टोलू बिछौनपर ओहिना सूतल छथि। हम टेबुलपर माथ रखने दिदवलक फोटो सभक सामने सूतल छलहुँ । हमरा जगाकऽ फेर जेना फोटोमे शान्त भावसँ सूति रहल छथि । एहिना हमर संग रहि हमर रातुक भोर करैत रहब दिदवल । करब ने दिदवल !

[1995]

●

खूनी

ओकर आँखि देखितहिँ माय डेरा गेलैक– ''एना आँखि किएक चढ़ल छौक ? फेर जर छौक तोरा, लग आ तऽ देखियौक !''

सुनील मायक लग सहटि आयल । देह छुबितहिँ माय चिहुँकि उठलैक– ''खूब नीक जकाँ छौक । देह जरि रहल छौक । चल, बिछौनपर पड़ि रह । एना पानि-बसातमे जर लेने जहाँ-तहाँ बौआ रहल छैँ !''

सुनील हँस' लगलैक– ''तोहूँ हद करै छैँ माय ! कने बोखार भेल नै कि बिछौन ध' लिअ' ।''

पितामही सभ टा सुनि रहल छलैक । ओहो लग अयलैक– ''नै बाउ ! जिद नै करी । बोखारकेँ एना हँसीमे नै उड़ाबी । चलू, पड़ि रहू बिछौनपर ।''

समर्थन पाबि माय एकदम कनौन सन भ' गेलैक– ''सैह देखिथुन ने, कोना जिद करै छै । एक मास लेल छुट्टीमे गाम आयल से आफत भ' गेलैक । नै जानि ककर नजरि लागि गेल हमर नेनाकेँ !'' फेर बेटाक आर लग सटि ओकर बाँहि पकड़ि झीकैत कहलकै– ''चल, ओढ़ना ओढ़ा दै छियौक । संच-मंच भऽ सूति रह ।''

सुनील नाकर-नुकुर करैत ओढ़ना ओढ़ि बिछौनपर पड़ि रहल । विरोध मुदा ऊपरी छलैक । भीतरसँ अपनो मोन भ' रहल छलैक जे कतहु पड़ि रही । सौँसे देह टूटि रहल छलैक । पपनी भारी छलैक आ आँखिसँ धाह उठि रहल छलैक । सौँसे वातावरण वर्षासँ सिमसिमायल रहितो शरीरमे जेना आगि लहकि रहल छलैक ।

टिपटिप भोरेसँ होइत रहैक । साँझ होइत-होइत नीक जकाँ बरस' लगलैक । जतबे जोर वर्षा, ततबे जोरसँ झँटैत हवा । साँझेसँ राति विकराल भऽ गेल छलैक । बाट-घाट सुन्न, घरक खिड़की-केबारी बन्न ।

सुनील बिछौनपर ओढ़ना गरदनि तक झीकि सूतल छल । सूतल की, आँखि बन्न कयने पड़ल छल । पितामही माथ दबा रहल छलैक सिरमामे बैसि

आ पोथान लग बैसल माय ओढ़नामे हाथ ढुका तरबा सोहरा रहल छलैक । सुनीलक माथ-कपार आ तरबामे लहरि बढ़िते गेलैक आ मुँह आर तमतमाइत गेलैक– एकदम लाल, जेना कोनो भट्टीमे गरम भेल लोहा !

पौथानमे बैसल माय रहि-रहिक' ओकर मुँह निहारि रहल छलैक । बी.ए.क परीक्षा द' गाम आयल छलैक बेटा । जेहने गोर रंग, तेहने लम्बाइ आ गस्सल शरीर । जिम्हरे जाइ छलै टकटकी लागि जाइत छलै गाम-शहरमे । बेटाक बोखारमे तमतमायल मुँह देखैत-देखैत भटभट ओकर आँखिसँ नोर खस' लगलैक ।

पितामही ओकर खसैत नोरकेँ देखलकै आ अपन पुतहुकेँ डँटलक– की अलच्छी जकाँ नोर चुआ रहल छी । बोखार छैक, उतरि जयतैक । देखियनु बौआकेँ, कोनो गोटी-तोटी होनि बोखारक तऽ खुआ देथिन ।

सुनीलक माय नोर पोछैत दोसर कोठलीमे दौड़ल । बिजलीक इजोतमे ओकर स्वामी दिनेश किछु पढ़ि रहल छलैक । लग जा हाथसँ किताब लैत कहलकै– ''आइ फेर सुनीलकेँ खूब बोखार छैक । कोनो गोटी-तोटी होअए त' खुआ' दिऔक आ डाक्टरकेँ देखियौक ।''

दिनेश उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल– ''फेर बोखार छैक ? अहाँ चिन्ता जुनि करू । पछिला बेर जे गोटी देने रहियैक बोखारमे, ताहिमेसँ दू टा बाँचल छैक । दुनू गोटी एक्के बेर खुआ दिऔक । बोखार अवस्से उतरि जयतैक ।''

दुनू गोटी ल' माय फेर दोसर कोठली दिस दौड़ल । गोटी खुअयबा लेल दुनू सासु-पुतहु मिलि सुनीलकेँ उठौलकै । धाहसँ दुनूक हाथ जर' लगलैक । एतबे कालमे छौँड़ा बेसुध भ' गेल छलैक । कहुना मुँह खोलि गोटी खुआ देलकै । नहि जानि कण्ठ तर गेबो कयलै वा नहि । आशंकित सासु-पुतहु एक-दोसरक मुँह तकैत असहाय जकाँ फेर पौथाना-सिरमामे बैसि गेल ।

कहुना आध-घण्टा आर बितलैक । कनेके कालमे जर आर बढ़ि गेलैक । हाथ-पैर चमक' लगलैक, अर्र-बर्र बाज' लगलैक । डेरायलि पितामही दोसर कोठलीमे अपन बेटा लग दौड़लि– ''आब एना बैसने काज नै चलतौ बौआ ! दौड़िकऽ डाक्टर लग जो आ बजौने आ । जरक लक्षण ठीक नहि बुझाइत छौक ।'' दिनेश उठिक' ठाढ़ भ' गेल– ''त' से पहिने किएक नै कहलैँ ? आब त' आरो बिकाल भ' गेल छैक आ ताहिपर एतेक बेसी राति । कोन डाक्टर औतौक एहि बदरी-विकालमे आ कोना ल' जयबैक छौंड़ाकेँ एनामे ?''

दिनेशक माय ओहिना अपस्याँत आ चिन्तित बजलैक– ''से आब जे

कर। डाक्टर लग गेनाइ जरूरी छौक । एकदम बेसुध छैक छौँड़ा आ बेहोशीमे अलबल बाजि रहल छैक ।''

दिनेश दोसर कोठलीमे आयल । बेटा लग बैसि ओकर कपार छूलक । आँगुर जर' लगलैक । चिन्तासँ मुँह कात भ' गेलैक– एकमात्र सन्तान छैक सुनील आ एना बदरी-विकालमे बेसुध पड़ल छैक ।

दिनेश बरसाती पहिरि, हाथमे छत्ता आ टार्च ल' घरसँ बहरायल । बाटपर कोनो आवागमन नहि छलैक । बरखामे सोझ चलब मुस्किल छलैक । कहुना डेग बढ़बैत गेल ।

डाक्टरक डेरा लगेमे छलैक– एक्के किलोमीटर । कहुना पहुँचल, मुदा एहन बदरी-विकालमे ओतबे रस्ता बड़ दूर आ अबूह लगलैक ।

डाक्टर सभ दरबज्जा आ खिड़की बन्द कयने छलैक । बड़ी काल तक घण्टी दबौलक आ दरबज्जा पिटलक, तखन एक टा खिड़की लग डाक्टरक मुँह देखाइ पड़लैक । खौँझायल स्वरमे बिगड़ि क' पुछलकै– ''एहन समयमे एना की हल्ला क' रहल छी ?''

दिनेश नेहोरा कर' लगलैक– ''हालते सैह अछि डाक्टर साहब, नै तऽ एना तंग करितहुँ ! हमर बेटाक हालति बड़ खराब छैक– ज्वरसँ देह तपि रहल छैक आ अल-बल बजैत बेसुध भेल अछि । चलू डाक्टर साहब, चलिकऽ कने देखि लिऔक ।''

डाक्टर तरंगि उठलैक– ''बताह भेल छी अहाँ ? एहन खराब समयमे हम बूढ़ लोक कोना बहरायब ? जाउ, बरखा छुटलापर एतहि ल' अनियौक ।''

दिनेश हाथ जोड़िक' घिघिआय लागल– ''कहुना चलू डाक्टर साहब ! ओकर हालति बड़ खराब छैक । जान बचा लिऔक ओकर । एत' लाब' जोगर नहि छैक आ ई वर्षा नहि जानि कखन छुटतैक ?''

डाक्टरपर कोनो असरि नहि भेलैक । ओहिना निर्विकार बजैत रहलैक– त' हम की करू । हम एहन समयमे बाहर नै जा सकैत छी । ल' अनियौक कहुना एतहि ।

दिनेश ओहिना नेहोरा करैत रहलैक– ''कोना अनबैक डाक्टर साहब ? हमरा त' कोनो सवारी नहि अछि । मोटर साइकिल अछियो त' ओइपर अनबैक कोना ? टैक्सी-जीप किछुओ ने भेटत एहि बदरी-विकालमे । अहाँ चलू कहुना । अहाँ त' पहिनो देखिने छियैक ओकरा । अहाँ चिन्हार छी, लगभग पड़ोसी जकाँ छी । अहाँ नै देखबै त' आर के देखतैक एहन बदरी-विकालमे ?''

दिनेश किलोल करैत रहि गेल । डाक्टर दरबज्जा नहि खोललकै । खिड़कियो बन्द क' लेलकै । हताश दिनेशकेँ मोन पड़लैक जे गाममे तीन गोटेकेँ मोटर छनि । गाम की शहरे छैक ई गाम, शहरक म्युनिसपैल्टीसँ सटल इलाका । पिच रोड, बिजली, सभ किछु छैक– गाममे मुदा अखन बरखा-बसात आ बिजली कटि गेलासँ अन्हारमे सौंसे गामे एक टा अन्हारक टीला सन लागि रहल छलैक ।

अन्हारमे भीजैत-तीतैत दिनेश गाम दिस भागल । पहिने सतीश बाबूक घर छलनि । हाक लगौलक दिनेश । सतीश बाबू बहरेलथिन– की बात छैक हौ ? एना बरखा-बुन्नीमे....

दिनेश खेखनिया देब' लागल– कने अपन मोटरसँ सुनीलके डाक्टर लग पहुँचा दिऔक कका ! डाक्टरबा ओना जाय लेल कतबो नेहोरा कयलपर तैयार नै भेल । सुनीलक हालति बड़ खराब छैक.... कहुना ओकर प्राण बचा लिऔक कका !

सतीश बाबू चिन्तामे पड़ि गेलाह– चलबामे त' कोनो हर्ज नहि, मुदा हमर गाड़ीमे त' पेट्रोले नहि छ' । काल्हि ठेलिक' कम्पाउण्डमे अनने रही । सोचने रही आइ ल' आनब, मुदा सबेरेसँ तेना लधलक जे घरसँ बहराइये नै भेल । पेट्रोल कहुना टीनमे ल' आनह, त' अखने चलैत छी ।

हताश दिनेश आगू बढ़ल । सतीश बाबूक गाड़ीमे हरदम पेट्रोल भरल रहैत छनि– गामक सभ लोककेँ बूझल छलैक, मुदा ई बूझल रहलोपर ओ सतीश ककासँ तर्क नहि क' सकैत छल ।

वरुण बाबूक घरमे हाक देलापर हुनकर पत्नी बहरेलथिन । दिनेश हुनकोसँ नेहोरा कयलक– ''कने भाइ के बजा दिअ' भौजी ? सुनीलक हालति बड़ खराब छैक । ओकरा डाक्टर लग ल' जयबाक अछि । कने भाइ मोटरसँ पहुँचा देथिन ।''

वरुण बाबूक पत्नी बड़ सहानुभूतिपूर्वक कहलथिन– ''अवस्से जैतथि । एहन बेरमे अपन लोक नहि जयताह त' आर के जायत ? मुदा ओ त' घर घुरले नै छथि– कतहु वर्षामे घेरा गेल छथि । अपनेसँ चला लेब त' ल' जाउ मोटर ।''

हताश दिनेश आगू बढ़ल । हाक देलापर कोठलीमे भौजीक संग वरुण भाइक स्वर ओ सुनने छलनि । मुदा ई बेर घर पैसि तलाशी लेबाक नहि छलैक ।

आब ई अन्तिम आस छलैक । ओकरा विश्वास छलैक जे महेन्द्र कका अवस्स मदति करथिन । हाक सुनि महेन्द्र कका अपने बहरेलथिन– ''की बात छक दिनेश ? एना घबरायल किएक छ' ?''

दिनेश कान' लागल– ''सुनीलक हालति बड़ खराब छैक कका । ज्वरमे बेहोश पड़ल अछि । डाक्टर जाय लेल तैयार नहि अछि, ओकरे मोटरसँ आनक अछि ।''

बात सुनि महेन्द्र कका चिन्तित भ' उठलथिन– ''हमर गाड़ीक त' बैटरिये डाउन छैक । एहन वर्षा मे त' स्टार्ट करब मुस्किल– धक्का मारलोपर । दस गोटे मिलि ठेलैत छैक बड़ी काल, तखन स्टार्ट लैत छैक ।

इहो आस टूटि गेलैक । महेन्द्र ककाक गाड़ी सभ दिन बजारमे बिना धक्काकेँ दौड़ैत छनि– दिनेश देखने छैक, मुदा ताहिसँ फायदा !

भीजैत-तीतैत, बोदरि भेल लोथ पयरे दिनेश अंगना घुरल । देखितहिँ पत्नी एकदम हताश भ' गेलैक– एकसरे अयलहुँ ? डाक्टर नहि आयल ? कोनो दवाइयो ने देलक ।

पत्नीक कातर जिज्ञासाक कोनो उत्तर नहि द' दिनेश सुनील लग ओकर बिछौनपर बैसि गेल । माय कहलकै– 'आब त' कनियो सुगबुगी नै छैक– एकदम अचेत भ' गेल छैक । कतबो पानिक पट्टी देलियैक, ज्वर कमिते नै छैक ।

दिनेशक छोट भाइ महेश आ ओकरा संग ओकर दुनू बेटा– प्रदीप आ अशोक सेहो घरमे आबि गेल छलैक । सभ टा बात सुनि एकदम तरंगि उठलैक– देखै छियै आइ डाक्टरबाकेँ जे कोना नै अबै अछि ! अहाँ चिन्ता जुनि करू कका, हम ओकरा लेने अबै छी ।

दिनेश ओकरा रोकैत कहलकै– ''झगड़ा-झंझट नै करैत जाउ । कोनो टैक्सी वा जीप भेटय त' लाउ कहुना.... कतबो पाइ लिए... मुदा ल' चलय...

प्रदीप आ अशोक दौड़ले बाहर गेलैक । आधा घण्टा बाद एक टा जीप लेने अयलैक । सड़कपर जीप लागल छलैक आ ड्राइवर घरमे नुकायल छलैक । ओकरा जबर्दस्ती घरसँ निकालि जीप स्टार्ट करबौलक तखन दू सय टाका माँग' लगलैक । सेहो द' देलकै प्रदीप । जीप लेने डाक्टरक घर गेल । बड़ मस्किलसँ दस मिनट धरि चिचिअयलाक बाद डाक्टरबा खिड़की खोललकै, मुदा बाहर नहि अयलैक ।

–''चलू डाक्टर साहब ! जीप ल' अनने छी । सुनीलकेँ देखि लिऔक । ओकर हालति बड़ खराब छैक । कका अहाँक लग बड़ी राति पहिनहुँ आयल छलाह ।

छौँड़ा सभक रूपरंग देखि डाक्टर डेरा गेलैक । दरबज्जा खोलबे नहि कयलकै । कहलकै– मरीजकेँ एतहि ल' अबियौक । एहन विकालमे हम बाहर नहि जायब ।

प्रदीप दरबज्जा तोड़ि-भीतर घुसिक' डाक्टरकेँ मारबा लेल उद्यत भेल, मुदा अशोक ओकरा रोकलकै– चल, सुनीलेकेँ ल' अनै छियैक ।

जाइत-जाइत प्रदीप चिचिआ क' कहलकै– ''देखि लिहैं बुढ़उ ! यदि सुनीलकेँ किछु भेलैक त' सभ डाक्टरी घोसाड़ि देबौक ।''

जीप घर लग अयलैक त' सभ कियो मिलि भीजैत-तीतैत कहुना सुनीलकेँ ओहिपर सुता, ओकर माय, बाबी आ दिनेश-महेशकेँ ल' डाक्टरक घर पहुँचल । बड़ी कालक बाद डेराइत-डेराइत डाक्टर बहरयलैक । नाड़ी देखलक आ बिगड़ि उठलैक– ''आब अनबासँ की हैत ? एहन मरीजकेँ हम नहि देखब। अस्पताल ल' जइयौक । किछु कालक मेहमान अछि ।''

एतबा कहि डाक्टर भीतर जा किल्ली ठोकि लेलक । छौँड़बा सभ दरबज्जा तोड़' लगलैक । सुनीलक माय सुनीलक देहपर निष्प्राण जकाँ खसि पड़लैक ।

दिनेश कहुना साहस जुटौलक– ''उठाबैत जा सभ क्यो मिलिकऽ आ दहक जीपपर । अस्पताले चलैत छी ।''

फेर सभ जीपमे लदिकऽ अस्पताल पहुँचल । मेडिकल इमरजेन्सीक डाक्टरक कोठली खाली छलैक– खाली एक टा नर्स बैसल किछु लिखि रहल छलैक । बड़ कहलापर बेमनसँ उठलैक आ सुनीलक लग आबि देखलकै आ चोट्टहि घुरि गेलैक– मुर्दा उठा लाया है ।

सुनितहिँ प्रदीप-अशोक जेना बताह भऽ गेलैक । अस्पतालसँ दोगैत बहरेलैक आ जीपपर चढ़ि बिदा भ' गेलैक ।

सुनीलक माय सुनीलक छातीपर झुकल छलैक– ''हे देखियौक । अखनो साँस चलि रहल छैक । ओ नर्स झुट्ठी अछि ।''

दिनेशो झुकिक' छातीपर माथ रखलकै । सत्ते धुकधुकी चलि रहल छलैक, मुदा क्रमशः क्षीण भेल जा रहल छलैक । शरीर अखनो गर्म छलैक । ओ फेर ड्यूटी रूम दिस दौड़ल । नर्ससँ नेहोरा कयलकै जे कोनो डाक्टरकेँ बजाउ । नर्स निर्विकार सुनैत रहलैक । ओ वार्डमे दौड़ल । ऊपर-नीचाँ सौंसे दौड़ल । कतहु कोनो डाक्टर नहि भेटलैक । हताश घुरि आयल आ अपन सामने अपन एकमात्र जवान बेटाक क्रमशः क्षीण होइत साँसकेँ छातीपर कान राखि सुनैत असहाय निरुपाय कनैत रहल ।

ओम्हर प्रदीप-अशोक अपन संगी सभक संग डाक्टरक डेरा लग आबि गरज' लगलैक । बड़ी काल बाद डेरायल डाक्टर बाहर अयलैक । सभ एक्के संग ओकरापर टूटि पड़लैक । लाते-जुत्ते मारैत-मारैत ओधबाध क' देलकै । मारैत-मारैत सड़कपर ल' अनलकै । सड़कपरसँ मारैत-मारैत सड़कक कातक बड़का पोखरिमे खसा देलकै । तैयो संतोष नै भेलैक त' पोखरिमे पैसि गोंति-गोंति क' मारलकै ।

सुनीलक देह निष्प्राण भऽ चुकल छलैक आ ओहिना अस्पतालक बरण्डापर पड़ल छलैक । ओहि निष्प्राण शरीरपर बेहोश पड़ल छलैक ओकर माय आ बाबी आ कातमे कानि-कानिकऽ बेहाल भेल बैसल छलैक बाप आ पित्ती ।

नीक जकाँ भोर भ' गेल छलैक, मुदा वार्डमे अखनो डाक्टर नहि आयल छलैक । रातिवाली नर्सक ड्यूटी बदलि गेल छलैक आ जाइत-जाइत ओ दिनेश-महेशकेँ कहि गेल छलैक– ''हटाइए लाश को जल्दी यहाँ से । रात से दस बार कह चुकी हूँ । आपलोग हटाते क्यों नहीं इस लाश को यहाँ से ?''

दिनेश-महेश प्रतीक्षा क' रहल छलाह प्रदीप आ अशोकक । चारि गोटे हेताह त' लाश उठौताह । गाम घरसँ क्यो आर औतनि त' सास-पुतहुकेँ कहुना उठा-पुठाक' अंगना ल' जैतनि ।

अशोक-प्रदीप मुदा नहि अयलाह । अयलैक- दारोगा-पुलिस । अबितँहि दिनेश-महेशक हाथमे हथकड़ी लगा देलकै– ''डाक्टर श्रीवास्तवपर कातिलाना हमला करने के जुर्ममे आप दोनों भाइयों को गिरफ्तार किया जाता है । आपके भतीजे और उनके साथी फरार हैं– उनके नाम भी वारण्ट है ।''

दिनेश सुन्न भ' गेलाह । एक बेर सामने पड़ल बेटाक लाश देखलनि आ फेर देखलनि अपन हाथमे हथकड़ी । बेटाक देहपर पड़ल पत्नीक कायामे किछु कम्पन भेलैक आ ओ मूड़ी उठा अपन पतिकेँ देखलक । दिनेश घूमिक' पुलिसक संग विदा भेलाह ।

तखने सुनीलक माय बताहि जकाँ उठिक' दौड़लैक आ दारोगा-पुलिसक बाट रोकि लेलकै– ''कोन कसूरपर बन्हने जा रहल छिअनि हिनका ? आगूमे जवान बेटाक लाश पड़ल छनि आ अहाँ हिनका हथकड़ी पहिरा ल' जा रहल छिअनि ! कोन कसूरपर ? ककर खून कयने छथि ई ? खूनी सभ तऽ एत्तहि बैसल अछि । हथकड़ी पहिराउ ओकरा सभकेँ पहिने । ओइ डाक्टरबाकेँ पहिरहाउ जे हमर बेटाक प्राण लेलक । फेर गामक बड़का लोक सभकेँ पकड़ि आनू जे कादो-थालमे मैल भऽ जयबाक डरे अपन गाड़ी नहि देलथिन । आ तखन पकड़ू एहि अस्पतालक सभ डाक्टर-नर्सकेँ । एहि अस्पतालक बरण्डापर हमर बेटा चारि घण्टा टुकुर-टुकुर करैत जीबैत रहल, मुदा क्यो घुरिक' देख' नहि अयलैक । ई सभ खूनी अछि– एकरा सभकेँ हथकड़ी लगाउ दारोगाजी ! हिनका नै ल' जाय देब हम ।'' सुनीलक माय अपन पतिक दुनू पैर अपन छातीसँ सटा कसियाक' पकड़ि लेलक ।

दारोगा सकपका गेल । फेर ओकर हाथसँ दिनेशक पयर छोड़ाब' चाहलक, मुदा सभ मिलियोकऽ ओकरा नहि छोड़ा सकल । पयर पकड़ने हुनका दाँती लागि गेल छलनि । दिनेश लगमे बैसि पुलिससँ पानि मङा मुँहपर छिटलखिन । आँखि खोलि पतिकेँ देखलनि आ हाक्रोश कर' लगलीह ।

हुनकर पीठपर हथकड़ी लागल हाथ फेरैत कहुना हुनका शान्त कयलनि ! दिनेश । उठिक' ठाढ़ भेलाह आ भाइ आ पुलिस-दारोगाक संग विदा भेलाह । पत्नी एक बेर फेर चीत्कार करैत बेहोश भ' गेलथिन ।

*

ओइ दिन ओइ छोटछीन शहरमे बहुत रास घटना घटलैक । डक्टर सभ हड़ताल कऽ देलकै आ अस्पतालक मरीज सभ किलोल करैत रहल । एक टा डाक्टरपर 'कातिलाना हमला'क विरोधमे डाक्टर लोकनि दिनभरि सांकेतिक हड़ताल कयलनि आ साँझमे एक टा पैघ आमसभा, जाहिमे पारित अनेक मांग स्वास्थ्य मंत्री एवं मुख्यमंत्रीकेँ पठाओल गेलनि ।

दिनेश अराजपत्रित सरकारी कर्मचारी छल । सभ सरकारी कार्यालय ओइ

दिन काज ठप्प कऽ देलकै आ कार्यालयक काज ओइ दिन बन्द रहलैक । अराजपत्रित कर्मचारीक संग अन्याय आ पुलिस तथा डाक्टरक जुलूसक विरोध मे एक टा पैघ जुलूस शहरमे निकालल गेलैक जकर समापन एक टा पैघ आमसभाक बाद भैलैक ।

दिनेश आ महेशक जमानति नहि भेलैक । डाक्टरक एक टा बेटा एस.पी. छलैक, जकर रोबदाबपर पुलिस एतेक तत्परतासँ काज कयने छलैक । डाक्टरक दोसर बेटा जज छलैक, जकर पैरवीक कारण जमानति नहि भऽ सकलैक । दिनेश-महेशक सर-सम्बन्धी चेष्टा कयलकै, मुदा कार्यालयक सभ सहयोगी जुलूस आ सभाक आयोजनमे व्यस्त रहलैक ।

सुनीलक लाशकेँ बरण्डासँ हटा अस्पतालक प्रांगणमे रखबा देलकै अस्पतालक डाक्टर-कर्मचारी सभ । जरैत रौदमे ओइ लाशक संग दिनभरि ओकर माय-बाबी बैसल रहलैक । साँझ भ' गेलैक मुदा गाम-घरक लोक गिरफ्तारीक डरसँ नहि अयलैक । साँझखन चारि गोटे हिम्मति कयलनि आ अपना संग दू टा स्त्रीकेँ ल'क' अस्पताल पहुँचलाह । माय-बाबीकेँ ओ स्त्रिगण लोकनि कहुना ध'-पकड़ि रिक्सासँ गाम ल' गेलथिन आ पुरुष लोकनि चचरी बनबा लाश उठौलनि ।

जखन सुनीलक चितामे आगि पड़लैक, ओहि ठाम मात्र चारि गोटे रहैक । ओही कालमे दिनेशक सहयोगी सभ ओकरापर भेल जुलुमक विरोधमे आमसभा क' रहल छलैक जाहिमे हजारो लोक छलैक ।

[1997]

पतिबरता

माइनजन शिबुआ दूरेसँ चिचिआइत अयलैक ।

बाधमे कटनी बजरल छलैक– धमगज्जर । खेते-खेत जनक हँसेड़ी ढूकल छलैक । कोलाक कोला मिनटेमे साफ भऽ रहल छलैक ।

ओना आइ-काल्हि एहन कटनी नहि होइत छैक । एक कोला-दू कोला, बस्स । ओतबे जतबा अपन जन काटि सकैक । बेसी जन देखितहि सभ भड़कि जाइत छैक– ई नै होत मालिक ! हमरो आर के आशा तऽ अहीपर हय । साल भरि जोताइ-कोड़ाइ, रोपनी-कमैनी करू हमरा आर आ कटनी बेरमे बज्जर खसाओत इलाकाक जन । ई किन्नहु ने होत मालिक ! दू बोझा बेसी बोनि, दूटा बेसी आँटी, एतबे तऽ आस हय हमरा आर के । तकरा नै तोड़ू मालिक ।

आ मालिक सभकेँ मानऽ पड़ैत छनि । दोसर कोनो उपायो नै छनि । नै मानथिन तऽ हरबाही-चरबाही बन्न । बेर-कुबेरक बेगार बन्न । बेगार की, उचितोसँ फाजिल नगद बोनि देलोपर बेर-कुबेर लोक भेटब मोस्किल । आब एकरे सबहक राज छैक से सोचि मालिक लोकनि बात मानि इज्जति बचा लैत छथि । जे नहि मानैत छथिन से पलटू बाबू जकाँ बेइज्जत होइत छथि, नोकसान उठबैत छथि । तेसुरका ढुका लेलनि हँसेड़ी एक्के दिन सभ खेतमे । परुकाँ सभ खेत परतिये रहि गेलनि । कतबो हाथ-प्यर जोड़लखिन, खेतमे पयर नहि देलकनि । घर-आंगनक आनो काज बन्न कऽ देलकनि । एहि साल नाक रगड़लनि तऽ खेतमे बीआ खसलनि आ रोपनी भेलनि ।

मुदा अजुका बात दोसर छलैक । आइ फेर बाधमे हँसेड़ी जुटल छलैक । कोलाक कोला साफ भेल जा रहल छलैक ।

तखने माइजन शिबुआ चिचिआइत अयलैक टोलासँ गोधना बाध दिस । हकमैत, पसेना-पसेना आ अपस्याँत ।

परसू राति गोधना बाधक तीन कोलाक धान राते-राति कटि गेलैक । एकदम ओलड़ल, भारी-भारी सीसवला धान आ डेढ़ मनक कट्ठाबला खेत

सभ। हवेली के तीनू पट्टीक एक-एकटा खेत । कोनो एक पट्टीक कटल रहितैक तऽ लोक कहितैक जे दुश्मनी आ पट्टीदारीमे कटबा देलकै । मुदा तीनू पट्टीक खोत कटल छलैक– पुबरिया पट्टी, पछबरिया पट्टी आ नारायणपुर-अवधपुरक पट्टी । ककरो ने छोड़ने छलैक । राताराती साफ आ ककरो कनियो गंधो नहि लगलैक । लगलैक आदंक आ चिन्ता । बचलाहा कोला सभक की हेतैक ? सभ विचार कयलक आ जुमि गेलैक हसेड़ी । जनो सभ विरोध नहि कयलकै, ओहो सभ जुमि गेलैक—एना जँ राता-राति काटिकऽ लऽ जयबैक, तऽ इहो बोनि आ आँटी चल जयतैक । सभ ओस सुखाइते खेतमे जुटि गेल छल आ हब्बर-हब्बर काटऽ लागल छल । पाहिक पाहि कटने जा रहल छल ।

तखने माइंजन शिबुआ चिचिआइत अयलैक– बेजान दौगैत दुसधटोलीसँ गोधना बाध दिस— खसैत-पड़ैत ।

माइंजन शिबुआ आब अपने कटनी नहि करैत अछि । ओकर घरोक लोक सभ नहि करैत छैक कटनी-हरबाही अनकर खेतमे । ने छोट भाइ ने पित्ती । घरक जनानियो सभ नै जाइत छैक आब कटनी-कमैनीमे । टोलक माइंजन बनि गेल अछि शिबुआ । पाँच बीघा बटैया लेने अछि, एक बीघा अपनो खरीदलक अछि– गोधनामे दस कट्ठा आ दस कट्ठा लाइनक पार । टायर गाड़ी रखने अछि आ माल सेहो पोसने अछि । दूधो बेचऽ ने अपने जाइत अछि, ने घरक जनानिये सभ जाइत छैक । उठौना लगौने अछि । उठौनावाला सभ घर आबिकऽ लऽ जाइत छैक । माइंजन शिबुआक बड़ ठाट छैक ।

ठाट तऽ आब सभ टोलबैयाक छैक । खाली दुसधटोलियेक किएक, सभ टोलक ठाट बदलि गेल छैक । दुसधटोलीक मरद सभ दरभंगा जाकऽ रिक्सा चलबैत छैक, धनुखटोलीमे सभ राजमिस्त्री आ रेजा बनल अछि । खतबेटोलीमे सभ दरभंगा जाकऽ दूध बेचैत अछि, आइसक्रीम बेचैत अछि । मलहटोलीक पुरुष सभ गाछी-पोखरिक ठीका लैत अछि– माछ आ आम बेचैत अछि । सभक ठाट बदलल छलैक ।

आ हाल बदलल छलैक गामक पुरना मालिक सभक सेहो । कहबा लेल अखनो मालिक, मुदा हालति गुलामोसँ बत्तर । सभ बातमे नेहोरा-विनती, मुँहतक्की । घर पाछाँ दू-एक टा जनक पुरना घर रहि गेल छलैक । तकरे भरोसे कहुना काज चलि जाइत छलैक ।

मुदा अजुका तऽ बाते दोसर छलैक । आइ फेर गोधनामे हसेड़ी ढूकल छलैक । कोलापर कोला साफ भेल जा रहल छलैक । सूर्य माथपर आबि पछबारी दिस उतरि गेल छलैक । जाड़क मोलायम रौदमे माथपर पसेना चुहचुहा गेल छलैक । हाथक हाँसू अनवरत चलि रहल छलैक आ झुकल डाँढ़ सोझो करबाक पलखति ककरो नहि छलैक ।

तखने शिबुआ चिचिआइत अयलैक– तोहर बाप अयलौक-ए रे मुनुआ !

सुनरीक संग मुनुआक आ ओइ दुनूक संग दुसधटोलीक सभ जनक हाथ एके बेर रुकि गेलैक । सुनरीक आँखिमे किछु भकदऽ जरि उठलैक, मुदा लगले मिझा गेलैक । मुनुआक आँखिमे एक टा धधरा लहकि उठलैक आ लपलपाइते रहलैक । शिबुआ एकदम लग आबि गेलैक– "तोरे घर ठाढ़ रहलौ । हम तऽ चिन्हबो ने कयलियैक । वैह टोकलक "हमरा नै चिन्हलऽ शिबुआ भाइ ! हम छी... परमा, घुरि आयल छी" मोन होल जे समधानिकऽ दू चाट दियै गालपर । बड़ जल्दी घुरल, दसे बरिख त' होलै–

सुनरी मुनुआक मुँह देखऽ लागल– सत्ते दस बरिख बीति गेलैक । पाँचे वर्षक रहैक मुनुआ, आइ फूटिकऽ जवान भऽ गेलैक । बापक नाम सुनिते ओकर आँखिमे धधरा लपलपा रहल छलैक । ओ तऽ नहि कहलकैक कहिओ कोनो बात । फेर ओकर आँखिसँ एना लहास किएक उठि रहल छलैक ?

सुनरी मुनुआकेँ टोकलकै– "जल्दी जल्दी सभटा बोझा बान्हि ले मुनुआ ! पहिले बोझा खरिहन्नामे पहुँचा दहिक, तखन किम्हरो जैहें ।"

मुनुआकेँ आश्चर्य भेलैक– ओ कहाँ कतहु जाय चाहैत छलैक, तखन माय कियैक टोकलकै ओकरा ? ओ किछु बुझि नहि सकल । खाली शिबुआ केँ कहलकै– "ई चलौ कका, हमरा आर बोझा पहुँचौने अबैत छियै ।"

"जल्दी अबिहें, कतेक काल ठाढ़ रहतौक एना तोहर बाप" –एतबा कहैत शिबुआ चल गेलैक फेर अपन टोल दिस ।

मुनुआ जल्दी-जल्दी बोझा बान्हऽक तैयारी करऽ लागल । छौटा हेतैक माय-बेटाक मिलाकऽ । छौटा जुन्ना तैयार कयलक । सुनरी ओहिना ठाढ़ि रहलैक किछु काल जेना मति हेरा गेल होइ । फेर पाँज समेटय लगलैक, मुदा जुन्नापर रखैत काल सभ टा गजपट कऽ देलकै । मुनुआ मना कयलकै– तोँ रहऽ दहीक माय ! हम समेटि दैत छियैक सभटा पाँज ।

सुनरीके लाज भेलैक। छौंड़ा की सोचतै ? सम्हारिकऽ फेर पाँज उठौलक, मुदा धड़फड़ाकऽ खेतमे खसि पड़ल। मुनुआ सम्हारिकऽ उठौलकै– ''रहऽ दहिक माय ! हम सभ टा बान्हि लेबैक।''

ओकरा पाँजमे समेटिकऽ आरिपर बैसा देलकै। सभ टा बोझा बन्हलकै। एक टा बोझा उठा सुनरीक माथपर देलकै। सुनरी बोझ लेने तलमलाय लगलैक। मुनुआ बोझा उतारि देलकै। माथपरसँ मायकेँ मना कयलकै– रह' दहिक माय ! हमही दूटा कऽ बोझ गौंछिकऽ तीन खेपमे पहुँचा देबैक। खरिहन्ना दूरे कतेक हइ !

मुदा सुनरी नहि मानलकैक। फेर सम्हरिकऽ ठाढ़ भेल। मुनुआ बोझा माथापर देलकै। सुनरी डेग सम्हारैत बिदा भ' गेल। मुनुआ अपन गौंछल बोझ अपनासँ उठबैत कहलकै– चल, दुइये खेपमे भऽ जयतौक।

सुनरीक तरमराइत डेग क्रमशः सोझ होब' लगलैक। सौंसे देह सोझ भ' गेलैक। ओहिना गस्सल देह आ चिक्कन चाम छैक आइयो, जेहेन दस वर्ष पहिने रहैक। कतहुसँ घोकचल नहि, कतहु खुरदर नहि। गस्सल-गस्सल देह आ कसल-कसल सभ टा अंग। मुनुआक आगू-आगू चलैत एहन लगैत छैक जेना ओकरे जेठ बहीन होइ, दू चारि बरिस पैघ। मुनुआ अपन मायकेँ एना तरमराइत नहि देखने छलैक। दू-दू टा बोझा गौंछि दौड़ले चल जाइत छलैक सभ दिन। आइ की भेलैक मायकेँ ?

सुनरीकेँ भरि बाट लाज लगैत रहलैक– छौंड़ा की सोचैत हेतैक ?

छौंड़ा सूति गेल छलैक– ओकरे कोठलीमे। छौंड़ाक कोठलीमे 'ओ सभ' सूतल छैक। सभ दिस शान्ति छलैक। किम्हरो कोनो शब्द नहि। पूरा टोले जेना निस्तब्ध छलैक अन्हारमे डूबल। ओना सुनरीक कोठलीसँ बाहरक अन्हार नहि देखल जा सकैत छैक। कोठली अन्हारमे डूबल छलैक। एक कोनामे छौँड़ा अपन चद्दरिसँ मुँह झँपने पड़ल छैक से डिबिया मिझायसँ पहिने देखने छलैक तेँ जनैत छैक। कोठलीमे किछुओ देखल नहि जा सकैत छैक।

सुनरीक आँखिमे निन्न नहि छलैक। भरिसक छौंड़ो चद्दरिमे मुँह झँपने जगले पड़ल छलैक। भरिसक सूति गेल होइ, मुदा सुनरीक आँखिमे निन्न कहाँ ?

ई की भऽ गेलैक आइ फेर ? सभ-किछु ठीक-ठाक चलि रहल छलैक। फेर ई सभ किएक ? घुरि अयलैक दस वर्ष बाद आ सेहो एक टा... कनियो

लाज नहि भेलैक। अंगनाक टाटक भीतर आबि अंगनेमे माटिपर बैसल छलैक। मालिकक खरिहानमे बोझ पटकि, बोनि-आँटीक ताल्लुक लगा दुनू माय-बेटा टोल दिस घुरल छलै। बाटमे दुनू चुप्प छल। एक-दोसरकेँ एको बेर नहि टोकलकै भरि बाट। बाट आब पहिलुका नहि रहलैक। खरंजा बैसि गेल छैक। माटिक उब्बर-खाबर गर्दासँ भरल बाटक बदला खरंजा बैसाओल बाट, जाहिपर हवेलीक मोटर सभ सर्र दऽ निकलि जाइत छैक। तहिना टोलो आब ओहन नहि रहलैक। खोपड़ी सभक बदलामे ईटावला घर। बीस टासँ कम घर नहि। सभ सरकार देलकै बनाकऽ हरिजन सभकेँ। किदन तऽ कहैत रहै शिबुआ भाइ– जमाहर योजना। सुनरीकेँ ठाढ़ कऽ देलकै आ भेटि गेलैक ई दू कोठलीक घर—कोठली की हइ, छोट-छोट पिंजरा नाहित।

ओही पिजरामे अपन बिछौनापर पड़ल सुनरी कछमछ कऽ रहल छल, जेना सौंसे देहमे जुरपित्ती लागि गेल होइ आ ओ नोचने जा रहल हो, नोचने जा रहल हो। कछमछी तऽ बाधमे शिबुआक बोली सुनिते लागि गेल छलैक, मुदा अंगना अबैत देरी ठकमूड़ी लागि गेलैक।

साँझ नै भेल छलैक। अँगनामे ओ बैसल छलैक। पाँच हाथ नाम आ पाँच हाथ चौड़ा अंगना। खूब चिक्कनसँ नीपल। घरमे कोनो ओसारा नहि छैक। दू कोठलीक बाद इएह कने टा आँगन। पहिने एके टा टटही घर छलैक पैघ सन आ कने छोटे सन आंगन। आब दू कोठलीक बाद आँगन आरो छोट भऽ गेल छैक। ओहि आंगनमे ओ माटिपर बैसल छलैक।

आन ठाम देखितैक त' नै चिन्हितैक सुनरी। गोर रंग खकसियाह भ' गेल छलैक। एकदम बिमरियाह सन– हाड़-हाड़ जागल, मैल-चिक्कट कमीजक तरसँ हुलकैत छलैक आँखि धँसल-धँसल आ आँखिक नीचाँ कारी-कारी रेघा आ बढ़ल दाढ़ी मोछ। सुनरीकेँ आंगनमे बैसल मनसा एकदम अनचिन्हार सन लगलैक। ओ अपना बेटा दिस ताकऽ लागल– बेटेसन सुन्नर छलैक ओकर बाप। बेटोसँ बेसी सुनर। बेटाक रंग तऽ मने माय सन छैक। बाप तऽ धपधप गोर छलैक। क्यो नै छलैक टोलमे ओकरा सन।

आ सुनरियो सन क्यो ने छलैक टोलमे। रंग भने कने परमासँ दब छलैक, मुदा मुँह-कान ओकरोसँ सुन्दर– एकदम टेमीसँ लिखल मुँह-कान। भरल-भरल गाल आ छह-छह करैत चाम। पातर ठोर आ पैघ कारी आँखि जिम्हर तकै इजोत भऽ जाइक। जिम्हर चलैक बाट महमह करैक, लोकक टकटकी लागि जाइक।

मुदा तखन टकटकी लागल रहैक परमाक । बिनु किछु बजने तकने जा रहल छल सुनरी दिस । ओहिना छलैक अनमन– जेना समय ठहरि गेल होइ । दस वर्षमे जेना दस मास छोट भ' गेल होइ–– खाली चेहरापर जे एक टा मोलायम सन हँसी रहैत छलैक, ततय आब एक टा दोसरे रंगक भाव आबि गेल छैक– कठोरता नहि, मुदा एक प्रकारक कटल-कटल भाव, जेना ओतऽ भैयो कऽ ओतय नहि होइ... सभ चीजसँ फराक... आ परमाक टकटकी लगले रहलैक।

मुदा सुनरी जेना ओकरा दिस तकितो ओकरा नहि देखि रहल छलैक । आँखिक ओइ ठमकल भावसँ परमा डेरा गेल आ टकटकी हटा बेटा दिस तकलक आ तकिते रहि गेल ।

बेटाक आँखिमे माय सन ठमकल भाव नहि छलैक । एक टा लहास उठि रहल छलैक । धधरा लपलपा रहल छलैक । परमा आँखि हटा फेर सुनरीकेँ देखऽ लागल ।

एहि देखादेखीमे परमाक पाँजर लग बैसलि दुबकलि मौगीकेँ क्यो ने देखि रहल छलैक । ओकर टकटकी सेहो बेराबेरी माय-बेटा दिस लागल छलैक । एकदम कारी रंग, थोपल-थापल मुँह, मुदा आँखिमे जेना कोनो जादू छलैक जे चेहराक सभ टा कुरूपता आ अन्हारकेँ चकमका दैत छलैक । बड़ी काल धरि एहि तक्काहेरीकेँ देखैत आ माय-बेटाकेँ निहारैत ओ मौगी हँसलैक ओ ओकरा हँसैत देरी चारूकात पसरल सकपकाहटि, दबल छटपटाहटि आ लहकैत आगि सभ टा कतहु बिला गेलैक आ इजोत पसरि गेलैक । हँसैत-हँसैत ओ मौगी सुनरीक लग आबि गेलैक– एहीनती माटीपर बैसल रहतैक मनसा ? जाड़ ठाढ़ आ बेरामी देह । घर जाय नहि कहतैक दीदी ?

'दीदी' सुनतहिँ चमकि उठलैक सुनरी । एक बेर परमा दिस देखलकै । ओ माथ झुका लेने छलैक । ओ मौगी आर भभाक' हँसलकै– "अइ मनसाकेँ की देखैत छही दीदी ? हमरा देख, तोहर ई करिलुट्ठी बहीन चुमनी ! कोनो चुमौना नहि कयने छियैक एकरा से । जकरा संग चुमौना भेलैक, सँ तऽ छोड़िकऽ पड़ा गेलैक एकटा मौगी जौरे । एकरे संग करखानामे काम करै छलै आ अगले-बगल खोलीमे रहै छलै । एकसरो जीबि लैत छलियै दीदी । फेर एहि मनसाके देखलियैक– रोगसँ मरैत । काज छुटि गेल छलैक । क्यो देखऽवला नहि । दया आबि गेल दीदी । अपन खोली छोड़ि एकरे जोरे रहऽ लगलियैक। ई माथा के सेन्नुरपर नै जो दीदी । ई मनसा एकरा अछैत ककरो सीथमे सेन्नुर देतैक ततेक बहादुर नै हइ । अपनेसँ लगा लेलियै हम सीथमे ।''

मौगी ओहिना हँसैत रहलैक– "मनसा के आँखि देखहिक दीदी ! लगैत हइ जेना आँखियेमे गीड़ि लेतै । ओहि दिन एहिना आँखि गुड़ेरने रहलै । सीथ महक सेन्नुर मेटाबऽ लगलै । घरसँ निकालैत रहलै । हमहूँ अड़ि गेलियै– निकालि दिहै । पहिले बेरामी तऽ ठीक होमऽ दहीक । हम अपने चल जयबौक। एक टा मनसा अइ करलुट्ठी के छोड़िकऽ भागि गेलै, तकरो बदला सधि जयतैक। हमहूँ एकरा छोड़िकऽ भागि जयबैक ।''

हँसैत-हँसैत मौगी एकाएक खूब गम्भीर भ' गेलैक– "नै भागि सकलियैक दीदी ! तीन बरख इलाज करौलियै, घरे-घरे दाइ नोकरनी बनिके, मजूरी कऽके। मुदा डागदर सभ कहलकै– लऽ जाही । एकरा कतहु लऽ जाही । हवा-पानी बदलतै तऽ देह हरिअर भऽ जेतै । रोग नहि हइ आब कोनो । नीक-नीकुत खाय ले दहिक । हवा-पानि बदलि दहिक । हम एकरा लेल एकरा पास चल अयलियै दीदी, आर कहाँ लऽ जइतियै ?''

मौगी फेर हँसय लगलैक– मनसा आबे लेल मानिते ने छलै दीदी ! हमहूँ अड़ि गेलियै । कतबो मारलकै-पीटलकै, अड़ले रहलियै हम । देख न मनसाक भलमनसी, हमही खुआ-पिआ जान बचौलियैक आ हमरे हड्डी-गुड्डी तोड़ऽ लागल । आब एना अंगनामे बैठौले रहतैक आरो कनियो देरी तऽ फेर हड्डी तोड़तैक हमरा । देखही ने कोना हमर बातपर आँखि तरेड़ि रहलैए, लऽ जैयौ घरमे दीदी !

सुनरीकेँ अपनो एना अंगनामे ठाढ़ भेल-भेल उकडू लागि रहल छलैक। चुमनीक बातसँ जेना बाट सुझलै– "अपन वस्तु-जाति हमर कोठलीमे कऽ ले मुनुआ !'' ओकरा अपने बोली अनचिन्हार लगलैक । चुमनी परमाक हाथ झीकऽ लगलैक– चल, आबो तऽ चल भीतर– दीदी मानि गेलैक ।

मुदा परमाक डेग नहि उठि रहल छलैक । एक बेर सुनरी दिस तकलकै। ओ जेना देखियोकऽ ओकरा नहि देखि रहल छलैक । ओ मुनुआ दिस आँखि घुमौलक । ओकर आँखिमे धधरा लपलपा रहल छलैक । एक बेर बाप आ फेर माय दिस किछु-किछु आश्चर्य आ बेशी विवशतासँ तकैत कोठलीमे गेलैक आ अपन वस्तुजात बगलक कोठलीमे पटकि दनदनाइत अंगनासँ बाहर चल गेलैक। एतेकाल सभ टा सुनैत चुप्प ठाढ़ माइंजन शिबुआ बजलैक– आब हमहूँ जाइत छी परमा ! काल्हि मोलाकात करबौ ।

परमा कृतज्ञता वा विवशतासँ मूड़ी डोला देलकै । चुमनी ओकरा घर दिस घीचिकऽ लऽ गेलैक । अंगनामे सुनरी एकसरि ठाढ़ रहि गेल । जे किछु भेल छलैक, सभ टा अजीब लागि रहल छलैक । दस बरिसपर परमा घुरल छलैक, आ सेहो एक टा मौगीक संग । रोगिआह आ अनचिन्हार ।

अन्हार जखन दुसधटोलीमे चतरि कऽ बैसि गेलैक– तैयो सुनरी ओहिना बैसलि छलि– अंगनामे नहि, कोठलीमे । चुमनी अन्हारमे कोठलीक बाहरसँ बजलैक– एना कबले अन्हारमे बैसल रहतैक ! डिबिया कहाँ हइ... दे', लेसि दियौ ।

सुनरी किछु ने बजलैक । अन्हारेमे हथेड़िया दऽकऽ उपर तक्खामे राखल दुनू डिबिया उत्तारलकै, दियासलाइक संग चुमनीकेँ दऽ देलकै । दुनू डिबिया लेसि लेलकै चुमनी आ भकसँ हँसिकऽ अपन बतीसीक तेसर डिबिया सेहो जरा देलकै– एकरा कोठलीमे डिबियाक कोनो काज नै हइ दीदी ! ओहिना ललटेस जरै हइ एकर रहलासँ आ इम्हर देख, डिबियोक इजोर अन्हरायल जाइ हइ । जल्दीसँ ओइ कोठलीमे रखने अबै छियै दीदी !

जखनसँ आयल छै, 'दीदी, दीदी'क रट मारने छैक, जेना कहियाक अप्पन होइ । चाहियोकऽ सुनरीकेँ तामस नहि होइत छैक ओकरा बातपर । विचित्र बात। एक टा दोसर मौगी उठा अनलकै परमा आ ओकरापर तामसो ने भऽ रहल छैक । भीतरमे जेना किछु आर उमड़ऽ लगैत छैक । तैयो ऊपरसँ ओहिना चुप आ रुच्छ बनल रहैत अछि सुनरी ।

मुदा चुमनी बेरबेर अबैत छैक आ ओकर रुक्षताकेँ कनेक आर खुरचि जाइत छैक । कनिये काल बाद फेर अयलैक ओ– 'एहिना घर भरि उपास रहतैक ? काल्हिसँ एकरे जौरे हम किछु कमा-खटा लेबै । आइ राति तऽ किछु खुआ दहीक दीदी ! बेरामे देह हइ । हमर की हय ! खालियो पेट निन्न आबिये जेतैक । कोनो नव बात नहि होत हमरा लेल । एकरा खुआ की-कतेक राति खाली पेट सुतलियै, तकर गनती हइ दीदी !'

सुनरी अवाक् चुमनीक मुँह देखऽ लगलैक । बेर-बेर एकरा आगू जेना छोट भऽ जा रहल छल । परमाक ई मौगी, ई बिनबिआहलि स्त्री, ई करिलुट्ठी स्त्री बेरबेर ओकरासँ जेना बीत भरि पैघ बनल जा रहल छैक ।

ओकरा एना अवाक् देखि चुमनी फेर भभाकऽ हँसि देलकै– सत्त मानि गेलै दीदी ? हम तऽ चौल करै छलियै । हम कियेक उपास पड़बैक अइ मनसा लेल ? ने बिअहुआ छियै, ने सगौआ । एक टा फेकल-फाकल लूड़-गोबरौर ! जब मोन होतै उठाके फेकि देतैक । हम की एकरा नहित बिअहुआ छियै जे एकरा खातिर बरत-उपास करबै । किछु इन्तजाम करौ दीदी बड़ भूख लागल हय । हमरा समान देखा दौ, हमही बना दैत छियै ।

सुनरी आँटा, तब, चुलहा, जारनि सभ देखा देलकै । बड़ चुमकी छलै चुमनीमे ! झटपट रोटी आ चोखा बना लेलकै ! परमाकेँ खुआ अयलैक । बड़ जिद कयलकै चुमनी, मुदा सुनरी के किछुओ खा नहि भेलैक । सुनरी आ मनुआ लेल सभ किछु झाँपिकऽ राखि देलकै चुमनी आ ओइ कोठलीमे चल गेलैक ।

बड़ी राति बितलापर मुनुआ घुरलैक । सुनरी पड़ले-पड़ल कहलकै– ''रोटी झाँपि के राखल हउ, खा ले ।'' छौंड़ा चुपचाप खा लेलकै आ सूति रहलैक । डिबिया मिझा सुनरी सेहो अपन मुँह झाँपि पड़ि रहल ।

मुदा आँखिमे निन्न नहि छैक । नहि जानि कतेक राति बितलैक ! सुनरीकेँ पड़ल-पड़ल बहुत रास बात मोन पड़लैक । परमाक संग बिआह आ मुनुआक जनमक बात बेर-बेर मोन पड़लै ओ राति ।

घरमे एहिना अन्हार छलैक । परमो घरमे छलैक । दोसर कोठलीमे नहि, ओकरे घरमे, ओकरे बगलमे पड़ल छलैक । मुदा देहपर हाथ पड़िते ससरि जाइत छलैक, हाथ झटकि दैत छलै– ''नै छू हमरा—घिरना होइ हय ।''

साँझसँ कानि रहल छलै सुनरी, नेहोरा कऽ रहल छलैक, मुदा परमा किछुओ सुनऽ लेल तैयार नहि छलैक । एके बातक रट लागल छलैक– नै छू हमरा, घिरना होइ हय ।

''कोन बातक घिरना ! एहन कोन बड़का बात हो गेलै ! सभ तऽ जाइते हइ हवेली । एक दिन हमहूँ चल गेलियै तऽ कोन अन्हेर हो गेलै ! एकर अपन बहीनो तऽ जाइ हइ सभदिन । ओकरासँ किएक ने होइ हइ घिरना...''

परमा आर गुम्हरि उठलैक– ओकर बात आर हइ ! ई किएक गेलैक..

मुनरी ओहिना गिड़गिड़ाइत रहलै– ''से कोनो अपन मोनसे गेलियै । ई ऐना बेरामी पड़ल हइ, छौंड़ा भूखे किलोक करै छलै ! अनाज मांगे हवेली गेलियै आ जबर्दस्ती कऽ देलकै । हमहूँ चुप रहलियै.... कहाँ से अनितियै अनाज, की खुअबितियैक एकरा आ मुनुआकेँ ?....''

परमा अइ बेर गरजि उठलैक– 'जहर दऽ दितै दूनु के से नीक होइतै ।

नाटक करै हय ! हवेलीमे रंग-रभस कऽ आयल आ आब लोर चुअबै हय, पतिबरता बनै हय । हमरा खातिर गेल रहलै हवेली ? अपन मोनक पाप नै सुझइ हइ... हटि जो हमरा लग से...'' परमा लात मारिकऽ दूर हटा देलकै । सुनरी कनिते रहलैक– ''हमरा मोनमे पाप रहितैक तऽ एकरा कहितियैक कियैक ? अनके सभ जकाँ बात नुका लितियैक...

से कोन ठेकान ! परमा ओहिना फुफआइत रहलैक–''कहिआ से जाइत हइ, तकर कोन ठेकान ?'' ''हमही आन्हर रहली एतना दिन— हट छिनरी, रण्डी !''

सुनरी कनिते रहि गेल । परमा लग नहि आबऽ देलकै । देह नै छुबऽ देलकै । कनैत-कनैत भूखलि-पियासलि सुनरी सूति रहलि ।

आँखि खुजलैक तऽ घर सुन्न । घरक फट्टसँ घरमे इजोत आबि रहल छलैक । परमाक कपड़ा-लत्ता सभ निपत्ता । कोँढ़ काँपऽ लगलैक ओकर । भरि दिन मुनुआकेँ छातीसँ दबौने बाट तकैत रहलै । कतहु घरसँ बाहर नहि गेलैक । साँझ भेलैक, राति भेलैक, प्रातो भऽ गेलैक, मुदा परमा नहि घुरलैक । युग बीति गेलैक ।

सुनरीक निन्न टूटि गेलैक । भोरुकबामे आँखि लागि गेल छलैक । मुनुआ उठिकऽ कतहु बहरा गेल छलैक । कोठलीक दरबज्जा खूजल छलैक आ भोरक रौद कोठलीमे आबि रहल छलैक– सुनरीकेँ फेर कोनादन लगलैक । एना रौद उगला तक सुतना कतेक चर्ष भऽ गेल छलैक । उठिकऽ कोठलीसँ बाहर आयल सुनरी । परमा आंगनमे बैसल छलैक आ चुमनी कतहुसँ चाह लऽ अनने छलैक । दरभंगा वाला सड़क पर जे चाहवला गुमती छैक, ततहिसँ अनने हेतैक । जुलुम छैक मौगी ! एके दिनमे की की कऽ लेलकै । सुनरीकेँ देखिते बतीसी बहार क' देलकै– उठि गेलै दीदी ! चाह पीबैं । तोरो वास्ते नेने अबै छियौ । भोरमे बिना दू कप पीने हमर तऽ भक्के ने खुजै हय दीदी ! गेलियै आ एलियै । बदमाशीसँ आँखि नचबैत चुमनी आगनसँ बाहर दौगि गेलैक– ''ताबे अपन मनसा से गप्प करौ दीदी !''

माइंजन शिबुआ बाहरेसँ चिचिआइत अंगना दिस अयलैक ।

परमा भोरे उठिकऽ तैयार भऽ गेल छल । चुमनी बेर-बेर रोकैत रहलैक, मुदा परमा अड़ल छलैक— फेर शहर आपस जयतैक, भूखे मरि जयतैक, मुदा फेर घुमिकऽ गाम आपस नै औतैक । गाममे एक-एक पल पहाड़ सन बितल

छैक । ई एक वर्षमे सभ दिन ओ कै-कै बेर मरल अछि । आब नहि सहल जाइत छैक । जाइये पड़तैक । ओ काल्हिये सुना देने छलैक मुनुआकेँ– ''काल्हि चल जयबौ बाउ ! आब तऽ देहमे ताकति हय, कमा-खटा लेबै कहीं । एकरा आर पर आर बोझ नहि बनबैक आब ।''

शरीर सत्ते ठीक भऽ गेल छलैक । पुरना रंग घुरि आयल छलैक । देह भरि गेल छलैक फेरसँ आ एक वर्षमे परमा दस साल छोट भ' गेल छल । ओहिना जवान आ सुन्नर । ओहि दनि माइंनजन शिबुआ टोकने छलैक– ''आब तऽ तोँ फेर पुरने भऽ गेलैँ रे ! लगिते ने छौ जे गाम से दस बरिख भागल छलैँ आ रागी बनल गाम घुरल छलैँ ।''

परमा हँसैत रहल । माइंनजन शिबुआक बातक कोनो जबाब नहि देलकै। की जबाब दितैक आ ककरा-ककरा जबाब दितैक ? सौंसे दुसधटोली सैह कहैत छलैक । अपने टोल किएक, सभ टोलक लोक—खतबेटोली, धनुखटोली, मलहटोली आ हबेलियो सभमे...

तैयो परमाकेँ चैन नहि छलैक । कोनो वस्तुक अभाव नहि छलैक । चारू जन कमाइ छल– दुनू मौगी आ बेटाक संग अपनो । बेटा आब बापसँ हिलि-मिलि गेल छलैक । ओकर आँखिमे लपलपाइत धधरा आब मिझा गेल छलैक । ओइमे छलैक आब सिनेह आ आदर । बापक संग चुमनीसँ सेहो खूब मेल भ' गेल छलैक । दुनू दिन-राति खुसुर-पुसुर करैत छलैक आ चुमनी खिखिआइत रहैत छलैक ।

सुनरी देखने छलैक ई सभ । ओकरा अधलाह नहि लागल छलैक । बेटाक आँखिक लपलपाइत धधरासँ ओकरा डर होइत छलैक । ओइमे छलकैत सिनेह आ आदरसँ ओकरा कोनो चिन्ता नहि होइ छैक । नीके लगैत छलैक । बिन बापक बेटा बनल रहलैक बापक अछैत दस बरिख । आब बाप भेटल छैक, तऽ दुलारो भेटैत छैक, राय-विचारो भेटैत छैक । आब सुनरी लग नहि अबैत छैक कोनो बात पूछऽ । पहिने सदिखन माय-माय करैत रहैत छलैक । आब खाली सुतबा काल कोठलीमे अबैत छलैक सेहो जाड़ आ बरखामे । गर्मीमे त' अंगनेमे सूति रहैक छैक । सुनरीकेँ आदंक पैसल रहैत छैक– एना केयो अंगनामे सुतै हइ ! साँप-कीड़ा घुमैत रहै हइ राति-बिराति ।

मुदा चुमनीकेँ कोनो डर नहि होइ छैक । ककरोसँ ने—ने मनुखसँ ने कीड़ा-मकोड़ासँ । कखनो परमाक कोठलीमे सुतै छै तऽ कखनो मुनुआक संग

अंगनामे पटिया बिछा सूति रहै छै– आइ तोरे जोरै सुतबौ बेटा ! आ कखनो सुनरीक बिछौनामे घुसिया जाइत छैक– आइ एकरे जोरै सुतबे दीदी ! मनसा बड़ दिक करै हय आब ! बेरामी देह ठीक भेलै से खाउँ-खाउँ करै हय आब ! आइ राति इहे चलि जाउ ओकर कोठली...

ओ बदमासीसँ हँस' चाहैत छैक, मुदा सुनरीक आँखि देखि सहमि जाइत छैक– ''एना किएक तकै हय दीदी हमरा दिस ! हम कोनो अधलाह बात कहि देलियै ? कोनो आन हइ, मरद हइ एकर । चल जाउ दीदी ! खाउँ-खाउँ करे के बात तऽ हँसीमे कहि देलियै दीदी ! मनसा के देह भरि गेल हइ, मुदा मोन मरि गेल हइ । देहोमे सटल रहै छियै तैयो धियान जेना कहीं दोसर ठियाँ रहै हइ। हम जनै छियै दीदी... ओकर धियान कहाँ रहै हइ ! मानि जो दीदी... आइ चल जो ओम्हरे...''

सुनरीक देह काठ भऽ जाइत छैक । ओकर देहसँ सटल चुमनीकेँ डर होइत छैक, मुदा तैयो ओ आस नै छोड़ैत छैक । सुनरीकेँ झकझोरैत रहैत छैक बेर बेर.... ''ई कोनो जोगिन हइ.... सनयिआस लेने हइ ? दस बरिखपर एकर मरद घुरल हइ आ एकरा कहिओ कोनो इच्छा नहि होइ हइ... मरद के संग जे सुख हइ से ई बिसरि गेलै दीदी...

सुनरीकेँ किछुओ ने बिसरल छलैक, सभ टा मोने छलैक । मोन छलैक ओ राति जखन बेर-बेर अपन देह परसँ ओकर हाथ हटा झटकि देने रहैक परमा, लात मारिकऽ अपन देह लगसँ दूर हटा देने रहैक आ घृणासँ कहने रहैक– छिनरी, रण्डी ! दस लोक लग टांग पसारऽवाली रण्डी । खूब नाम देने छलै ओकर मरद आ भोरे निपत्ता भ' गेल छलै । दस बरिस धरि निपत्ता छलै ।

आ सुनरी दस बरिस एकसरे छल । एकसरि मौगी आ लुबधल लोक । हवेलीसँ टोला धरि हबकऽ लेल सभ तैयार छलैक । रससँ लबलब ओकर ठोर आ महमह करैत ओकर शरीर । जिम्हरे जाइत छल टकटकी लागि जाइत छलै, गरम-गरम साँस छूट' लगैत छलैक.... । कतेक त' बाट-घाट छेकि लैत छलैक– ''हमरापर दया कर सुनरी... मरि जेबौ हम । हवेलीक ओ मालिक तऽ परमाक निपत्ता भेलाक एके मास बाद एक दिन बाट छेकि लेलकै– ''फेर कहियो नै अयलेँ सुनरी । आब तऽ मनसो पड़ा गेलौक । जाय दहिक ओकरा... हम तऽ छियौ, कोनो बातक खगता नहि हेतौ– ने पुरुषक आ ने रुपया-पैसाक... ।

सुनरी तनिकऽ ठाढ़ भ' गेलैक– 'हमर मरद भागि गेल हय मालिक, मुदा

अहाँक मौगी तऽ घरे बैठल हय । फेनू अहाँ किएक एना छिछिआएल फिरै छी ? अपन मौगीक खगता किएक ने पूर करैत छियै ? ओकर खगता क्यो आन पूरा कऽ दैत हइ की ?...'

''तोहर एहन मजाल ! एकदिन अपनेसँ टांग पसारने छलेँ आ आइ सतबरता बनै छेँ । कहि देबै भरि गामकेँ ओ बात ।''

सुनरी आर तनि गेलैक– ''तऽ कहैत किएक ने छियैक ? हमरा ककर डर हय ? जकर डर रहलै तकरे कहि देलियै । आब ककर डर हय हमरा ? अहाँ कहबै की हमही कहि दिऔ सबके ओ बात । अहीं अंगनासँ शुरू करू ? बुलाउ अहाँक मौगी के आ सुना दियौ सभटा खिस्सा !''

मालिक डेरा गेलै– ''जो भाग । तोरासँ मुँह लगायब बेकार । घाट-घाटकेँ पानि पीबि पतिबरत्ता बनऽ चलली अछि ! तोड़ि देबौ सभ टा घमण्ड आ नोचबा देबौ दस लोकसँ । सुनरीपर भूत सवार छलै– ''नोचबाउ अपन माय-बहिनकेँ आ अपनो नोचू । एना घरे-घरे किएक छिछिआइ छी ? अपने घरमे जवान जवान बहिन-भौजाइ हय, ओकरे नोचू-खाउ... दस लोकसँ नोचबाउ ।''

मालिक डेरा कऽ भागि गेलैक । फेर कहिओ हिम्मति नहि कयलकै । आनो सभ हिम्मति हारि देलकै । सुनरीक लबलब करैत आकृतिपर एक टा कठोरता तऽ नहि रुक्षता सन पसरैत गेलैक... पसरति रहलैक ।

आ आइ चुमनी कहै छै जे दस बरखपर मरद घुरल हउ... चल जो ओकर कोठली... मरदक सुख की होइ हइ से भूलि गेलही दीदी...

बाजिक' चुमनी अपने सकपका जाइत छै– ''एना नै देखौ हमरा दिस दीदी ! हमरा डर लगै हय ! सभ दिन डर लागल रहै हय । मनसा नहि रहतैक आब गाममे । फेर चल जयतै, ओकरा रोकि लौ दीदी... ! हम एकरा छोड़ि कऽ नै जयबै, हमरा अपना लग रह' दौ दीदी....''

सुनरी कोनो आश्वासन नहि देलकै । चुमनी बेर-बेर डेराइत रहलैक आ काल्हि राति परमा मुनुआकेँ कहलकै– काल्हि चल जयबौ बाउ ! आब त' देहमे जोर हय... कमा-खटा लेबै कतौ ! एकरा आरपर बोझ नहि बनबै आर ।

जोरसँ बाजल रहय परमा । भरिसक सुनरीकेँ सुनबऽ चाहैत छलैक । मुनुआ माय दिस तकलक । ओ दोसर दिस ताकि रहल छलैक जेना किछु सुनने ने होइ । निराश मुनुआ बापक नेहौरा करऽ लागल– अखन शरीर खूब निरोग नै भेलऽहै, किछु दिन आरो रहि जइतऽ...

परमा दुलारसँ बेटाक पीठ थपथपा देलकै– नै बाउ ! आब चिन्ता नै कर। ठीक छियौ आब हम । अपन मायकेँ देखिहेँ । बड़ दुख उठौने छौ ओ । हमरा छमा नै कयलकौ ओ.... हम ओकरा छोड़िके भागि गेल छलियै... तोँ नहि कहियो दुख दिअहिक... सदिखन ओकर बात मानिहेँ....

मुनुआ उठिकऽ कतहु टोलमे पड़ा गेलैक । सुनरी निशब्द बैसल रहलैक। ने किच्छो बजलैक ने आँखि उठा परमा दिस तकलकै ।

आ भोरे माइंजन शिबुआ दौगल चिचिआइत अंगनामे अयलैक ।

माथपर मोटरी लेने चुमनी ठाढ़ि छलैक । परमाक काँख तर सेहो एक टा पोटरी छलैक । दुनू आंगनसँ बाहर विदा भेल छलैक । सुनरी कोठलीसँ निकलि चुपचाप ठाढ़ छलै । जायसँ पहिने चुमनी लग आयल छलै– जाइ छियौ दीदी... मोन रखिहेँ ।

आ कानऽ लागल छलैक । कनिते मोटरी उठा लेने छलैक । परमा आंगनक मुहथरि लग थकमका कऽ ठाढ़ भऽ गेल छलै । किछु काल ठाढ़ रहलै आ फेर घुरिकऽ सुनरी लग अयलै.... 'एतेक घिरना हइ हमरा से तऽ फेर ई ढोंग किएक कयने हय ? ई सीथमे सेन्नुर हाथमे चूड़ी ककरा नाम के हइ ? मेटा दौ ई सेन्नुर आ फोड़ि लौ सभ टा चूड़ी....''

परमा हाथ बढ़ाक' सेन्नुर पोछि देलकै आ पलटिकऽ बिदा भऽ गेलैक– चल चुमनी !... सुनरी तरंगि उठलैक— रुकि जो चुमनी ! हे देख... फोड़ि लेलियै सभटा चूड़ी...''

सुनरी अपन दुनू हाथ देबालपर पटकि सभ टा चूड़ी फोड़ि लेलकै आ फेर बजलै– कहि दहिक एकरा । सोहाग चूड़ी आ सेन्नुर से नै होइ हइ । होइ हइ मरद से । जखन सेहे नै रहलै तऽ ई सभ तऽ ढोंग हइ । सभ दिन तऽ ढोंगे कयलियै हम । सोहाग कहिआ भेलै हमर...

परमा एक बेर फेर घुरलैक आ बजलैक– एकरा सोहाग चाहबे ने करियैक । एकरा मोनमे दया-छिमा-प्रेम किछु नै हइ... हइ खाली घिरना, हइ खाली बदला आ सबसँ पैघ हइ एकर गुमान ! अपन रूपक गुमान, अपन गुणक गुमान, अपन पतिबरता-सतबरता होमे कै गुमान....

सुनरी ओकरा आर बाजऽ नै देलकै । चुमनी के दुनू हाथे झकझोरैत बाजि उठलै– ''सुनहिक अपन अइ मनसाक बोली ! जकरा ई रण्डी बोलि के गेलै, तकरा पतिबरता के गुमान हइ । पुछही एकरा से चुमनी जे की बूझलकै हइ ई सुनरी के ? जे कहलकै रण्डी-पतुरिया, सेहो मरदके देखिते टांग पसारि पड़ि जयतै । कहतैक जे धन्न भाग । दसो बरख पर घुरली मुदा घुरि तऽ अयली । बड़ किरपा कयलियै सुनरीपर, धन्न भाग ओकर.....''

परमाक स्वर अइ बेर एकदम थरथरा उठलैक– सैह तऽ हमहूँ कहै छियै। एकरा बड़ गुमान हइ अपनापर... अपन पतिबरता होबऽपर । ओइ गुमानमे एकरा किछु ने सुझै हइ । नै सुझै हइ ककरो पछाताप... नै सुझे हइ ककरो आँखिक लोर, नै सुझै हइ ककरो प्रेम, ककरो मिनती । सुझै हइ खाली घिरना आ बदला.... हर घड़ी... हरसठे खाली बदला ।

आगू नै बाजि सकलै परमा । सुनरी दिस तकैत बेकल भ' गेलैक । आँखिसँ टपटप नोर खसऽ लगलैक ।

सुनरी आहिना चुमनीकेँ धयने, ओकरा झकझोरैत बताहि जकाँ बजैत रहलैक...सुन चुमनी, सुनि ले अपन मनसाक बात । मौगीक मोनमे होइ हइ घिरना... मौगीक मोनमे होइ हइ बदला ! पुरुखे सन बज्जर होइ हइ ओकर करेजा। सुनि ले एकर बात । एतनी गो बात नै बुझै हइ ई जे मौगीकेँ मोनमे होइ हइ खाली प्रेम... खाली सेवा... खाली सर्वस दान... आर की होइ हइ ओकरा मोनमे चुमनी, तोहीँ बाज चुमनी...

कतेक काल धरि अइ झीकाझोरी आ बाताबातीमे चुमनीक वाक् जेना हेरा गेल छलै । अइबेर ओ फेर अपन सहज मुद्रामे हँसैत बजलैक– ''आइ बजबै हम दीदी ! अबस्से बजबै । जकरा प्रेम नै सुझै हइ, सर्वस दान नै सुझै हइ, से आन्हर हइ । नै रहबै हमहूँ एहन आन्हरक जौरे । जाउ, जकरा जहाँ जाय के होइ । हम तऽ अपन दीदी जौरे रहबै ।''

आ दौड़िकऽ माथक पोटरी घरमे पटकि अयलै.... ।

आ तखने माइंजन शिबुआ चिचिआइत दौड़ैत अंगनामे अयलैक– ''कहाँ हय ओ पाजी ! देखू तऽ एकर करनी ! दस बरिखपर घुरल आ फेर सुनरी भौजीकेँ छोड़ने पड़ायल जाइ हय.... आइ टांग-हाथ तोड़ि देबैक ओकर....''

माइंजनक पीठेपर छलैक मुनुआ । बापकेँ रोकऽ लेल माइनजनकेँ बजा अनने छलैक । माइंजन चिचिआइत-तमसायल अंगनामे आयल छलैक, मुदा अंगनामे कनैत ठाढ़ परमा आ सुनरीकेँ देखि एकदम अकचका गेलैक– की बात हइ सुनरी भौजी !

सुनरीक बदला चुमनी लग आबि बजलै– हमरा से पूछऽ माइंजन भैया ! ई मरदाबा भगल कयने हय । कोना अंगनामे ठाढ़ लेप चुआ रहल हय से देखहक ने ! एहन सुन्नर कनियाँ के छोड़िकेँ अइ करिलुट्ठी के जौरे ई कहाँ जेतऽ माइंजन भैया ? खाली भगल करै हय । रूसल दीदी के मनावे के लूरि नै हइ, लेप चुआकऽ जीतऽ चाहै हय । आ दीदीयो कम नहि हय माइंजन भैया ! बोलबो ने करतैक आ जायो ने देतैक, मोने-मोने चाहबो करतैक आ बोलबो ने करतैक । मुदा आइ सभ बोलि देलकै दीदी । ई मनसा आब कहूँ नै जयतौ दीदी के छोड़िकेँ । आब आफत हमरे हय । आब कहाँ जयबै हम इहाँ से ? के पुछतैक अइ करिलुट्ठीकेँ ?' हमरो अपना संग रखबै ने दीदी !

सुनरी ओकरा भरि पाँज समेटि कऽ बजलै– एकरा कोना जाय देबै हम ! इएह तऽ सभटा घुरा अनने हइ घरमे । ई तऽ छोट बहीन हय हमर । अइ सौतिन के बिना तऽ एको दिन नै कटतै आब अइ घरमे...

बहुत दिनुका बाद सुनरीक पुरान हेरायल-बिसरल बोली सुनि चौंकि उठलैक परमा । आँखि उठा नीक जकाँ देखलैक ओकरा । ओहो इम्हरे ताकि रहल छलैक । ओकर नोर भरल आँखिमे हँसी छलैक ।

तखने माइंजन शिबुआ बाजि उठलैक– ''तोँ चिन्ता नहि कर चुमनी भौजी ! ई परमा नहि रखतौक तऽ हम राखि लेबौ तोरा । एहन सुन्नर मौगीकेँ आब जाय नै देबैक अपन टोलसँ ।''

चुमनीक आँखिमे दुष्ट हँसी पसरि गेलैक– तऽ ई बात हइ ! माइनजनो लोभायल हय हमर अइ रूप पर । मुदा की करबै माइनजन भैया ? अइ मनसाके नै छोड़बै हम । एगो इहे रहितैक तऽ छोड़ियो दितियैक, मुदा आब तऽ एक गो बड़ दीदी हय, जुआन बेटा हय । फेनू ओकर माय से एना बोलबहुक तऽ मारतौ हमर बेटा तोरा माइंजन भैया !''

आंगनसँ भगबाक भगल करैत शिबुआ बाजल– तोँ छौड़ासँ पिटाबेपर लागल छैँ चुमनी भौजी, पड़ाइ छियौक हम ।

हँसैत मुनुआ आगू बढ़ि अपन दुनू मायकेँ अपन बाँहिमे समेटि लेलक । परमा एकटक तकैत रहल।

[1997]

अष्टावक्रक शेष कथा

सरदार बम गाड़ी देखितहिँ कूदिकऽ बरण्डासँ नीचाँ उतरि घोषणा कयलनि– ''राजधानी एक्सप्रेस पटना से सुलतानपुर अपने नियत समय से आ पहुँची है ।'' कन्या पाठशालाक ओइ लम्बा-चौड़ा बरण्डामे पड़ल आ बैसल सभ बम एक्के संग अनघोल कयलक– बोले बोले बोले बम......

प्रसन्नचित्त सरदार बम त्रिभुवनक संग किछु गोटे कारक समीप आबि गेलाह । कारसँ बाहर अबितहिँ त्रिभुवन मायकेँ आ हमरा गोड़ लगैत बजलाह– ''आइ भरि गोड़ लागऽ दिअऽ । काल्हिसँ तऽ पाँच दिन बन्दे रहत ।''

माय त्रिभुवनक माथपर हाथ राखि आशीर्वाद दैत कहलकनि– सभ किछु ठीक-ठाक अछि ने सरदार बम ! अइ बेर कतेक गोटे भेलाह बम पार्टीमे ? पटनासँ हमसभ ड्राइवर समेत सात गोटे छी ।

सिपाही बम कने पाछाँ छलाह, नहि तऽ मायक मुँहसँ सरदार बम सुनितहिँ तुरत प्रतिवाद करितथि– ''जमादार बम कहिअनु काकी बम ! सरदार अखन कहाँ भेल छथि ? सरदारी महादेव बमक छनि, ओ त्रिभुवन बाबू बमसँ एक काँवर बेशी ढोने छथि । भालपट्टीक सरदार बम नहि अबै छथि आब, शिवशंकरो भाइ बम नहि रहलाह आब, तऽ सरदारी महादेव बमक हैतनि । ओ एकैस काँवर ढोने छथि आ त्रिभुवन बाबू बमक अखन बीसे भेल छनि । सभ हिसाब अछि हमरा लग ।''

जखन-जखन एना बजैत छथि सिपाही बम, सभ मिलिकऽ हुनका लुल्हुआ लैत छनि– ''अहीँक कहने सरदार बम नहि ! जखन सभ ठाम बासा फराक रखैत छथि, चूल्हा पूराक फराक अछि, तखन कोना सरदार बम हेताह हमरा सभक महादेव बम ? ओ अपन पार्टीक सरदार छथि आ त्रिभुवन बम अइ पार्टीक ।

सिपाही बम जगन्नाथो जल्दी हारि मानऽवला नहि । सभसँ एकसरे भीड़ि जैतथि– अहीमे तऽ देखार होइ छी अहाँलोकनि ! बम्म पार्टीमे आबियोकऽ

हम्मर-तोहर लागल रहैत अछि, छोटका-बड़का लोक बनल रहैत छी । सिपाही बम गरीब तेँ सभ मिलि लुल्हुआ लेबैक । मुदा ओना कोना मानि जायब हम ? भोरे घाटपर जे आरती करताह से भेलाह सरदार बम ।''

कनेकाल सभ सकदम्म होइतथि, मुदा फेर लगले कुलभूषण बम गरजि उठितथि– ''नहि करायब आरती हुनकासँ । हमरा लोकनिक आरती त्रिभुवने बम करताह । यैह छथि हमरा लोकनिक सरदार बम ।'' बड़ी काल घमर्थन होइत, गरजा-गरजी होइत आ अन्तमे सिपाही बम रामबाण छोड़ितथि– ''तऽ ताकि लिअऽ सिपाहियो बम दोसर । हमरा बुते नहि हैत ई काज आब । हे लिअऽ हमर इस्तीफा । आ सिपाही बम अपन डाँड़मे खोसल सभसँ ओसूल कयल टाका-पैसाक हिसाब शुरू कऽ दितथि । फेर हुनकर मान-मनौबलि शुरू होइत। किछु खुशामद आ नेहोरा आ बीच-बीचमे बड़का होहकारा– बोले-बोले-बोले बम्म... ।

बमरी लोकनि सेहो घेरि लितथिन– ''से कोना हैत सिपाही बम ? कम्मसँ कम एहि बेर तऽ पार लगा दिऔक । साँझ भेलैक, सभकेँ भूखो लागल छैक ।

आ सिपाही बम मानि जैतथि । चरचाँकि (नोकर) बमक संग विदा होइतथि बाजार– दालि-चाउर-लकड़ी-नोन खरीदऽ । तेल आइए भरि । खाली घीमे भानस हेतैक फेर चारू दिन । एक दिन सुलतानगंज छोड़िकऽ । खजाना भरि लेलाक बाद तेल-पियाज-लहसुन वर्जित । खजाना माने बाबाक खजाना । माने अजगेबीनाथकेँ प्रणाम कऽ काँवरपर बोझल गंगाजल ।

तहिना अछिंजलेमे भानस करताह, घीएमे दालि तरकारी छौंकताह टोकना बम । माने मिट्ठू बम । माने मिट्ठू मिसर– बम पार्टीक भनसीया । त्रिभुवन बम तहिआ सरदार नहि भेल रहथि, मुदा नाम वैह रखलखिन– टोकना बम आ चरचाँकि बम ।

मुदा ओइ दिन से सब नहि भेलैक किछु । सिपाही बम कने पाछाँ छलाह आ माय पुछने छलनि– ''अइ बेर कतेक बम भेलाह सरदार बम !''

सरदार त्रिभुवन बम उत्साहित छलाह– ''सभ ठीक अछि काकी बम ! सभ साल नब्बेक फेरामे रहि जाइत छलहुँ । अइ बेर सय अबस्से पुरत गामक बमक– सत्तरि हमरा लोकनि आ तीस महादेव बमक संग हुनकर टोलबैयाक । कहिआसँ आस पोसने रही, जहिया दस गोटेसँ अबैत रही, तहिएसँ जे सय गोटे हैब तऽ बम पार्टीक खर्चसँ एक दिन बाबाक शृंगार करयबनि । से एहि बेर

सपना पूरा हैत...'' हुनका संगे ठाढ़ सभ बम एक्के संग अनघोल कयलनि– बोले बम्म-बोले बम ।

फेर सरदार बम कने उदास होइत बजलाह– ''खाली टोकना बम आखिरी समयमे धोखा देलनि ।'' माय चिन्तित भऽ उठल– ''तखन कोना हैत भानस-भात ? सत्तरि गोटे कहैत छी ।''... सरदार बम त्रिभुवन मुसिकिया उठलाह– ''से चिन्ता अहाँ नहि करू काकी बम ! पाठक बमकेँ अनने छी, आब वैह चलताह सभ साल । टोकना बमक नखरा बढ़ल जा रहल छनि । दुनू पीठक किराया आ फ्री बुतात । उपरसँ दिनका खोराकी लेल पाँच टाका रोज दैत छिअनि । बाबाधाम पहुँचि कऽ सभ बम बमरी सभ दस पाँच दैत छनि– पेड़ा आ सनेसबारी लेल । मुदा हुनका चाहियनि एक सय टाका नगद आ दस टाका रोज खोराकी । हमहुँ छोड़ि देलिअनि अइ बेर । बाबाक काजमे मोल-मोलहइ कयने छथि– देखबनि किछु भऽ कऽ रहतनि ।''

सरदार बम त्रिभुवनक आखिरी बात नीक नहि लगलैक मायकेँ । गरीब लोक छथि मिट्ठू । परिवार छनि । भनसीयेक काजसँ गुजर करैत छथि । भगवानपुर ड्योढ़ी जाइत छथि दुनू साँझ । गाममे कतहु भोज-भात होइ, मिट्ठू मिसरक बजाहटि होइ छनि । भगवानपुरमे भेटैत छनि दुनू साँझ-भोजन आ तीस टाका मास । पहिने पाँच टाका मास रहनि.... बढ़ैत-बढ़ैत तीस टाका भेल छनि । मुदा तहिआ नानी, मामा आ माय जीबैत रहथिन । स्त्री-बेटा नै रहनि ।

मायोकेँ बेर-कुबेर मिट्ठूक काज पड़ैत छैक– भोज-भात आ पाहुन-परक बेशी अयलापर । मिट्ठूकेँ भोज-भातमे देखितहि किछु गोटे भड़कि जाइत छथि– नै, नै, हिनकासँ भात-दालि छोड़िकऽ आर किछु बनबायब तऽ बेइज्जत हैब । तरुआ आ लटपट्टी देवीकान्तकेँ दिअनु आ माछ मासु वीरन मिसरकेँ ।''

माने छोटोछीन भोज हो तऽ तीन-तीन टा भनसीया राखू । मुदा राखहोमे किनको किछु लगैत नै छनि । एक साँझ भोजन आ एक थारी घर लेल । भोजमे ओनाहो नोत पड़बे करतनि । तेँ अपना भोजनक कोनो हिसाबे नहि । खाली एक थारी घर लेल । ताहूपर कतेको गोटेकेँ आँखि लागि जाइत छनि– ''पेट छैक की बखारी ? आ थारी कोना साँठत अपनेसँ जाँति-जाँतिकऽ एक थारीमे तीन थारी ।''

सभ किछु सुनियोकऽ मिट्ठू किछु नहि बजैत छथि जेना अकान होथि । दिन तकाकऽ कहियो काल बजैत छथि आ जहिया बजैत छथि, सभकेँ सकदम्म कऽ दैत छथिन । गरजिकऽ मात्र दू-चारि शब्द निर्णायक स्वरमे– ''नहि हैत

हमरा बुते ई काज । करबा लिअऽ जकरासँ करयबाक हो । हैयै, मिट्ठू चलला अपन घर....

एतबा कहि ओ विदा भऽ जयताह, मुदा सबकेँ बूझल रहैत छैक जे ओ जयताह नहि । लोक मनौतनि आ ओ घुरि औताह । कहताह– ''फेर एना कियो टोक-चाल करताह, तऽ सत्ते चलि जायब हम ।''

तैयो लोक टोक-चाल करते रहैत छनि आ मिट्ठू मिसर धमकी दैयोकऽ काज करिते रहैत छथि । बम पार्टीमे तऽ ई टीप-टाप आर बढ़ि जाइत छैक ।

सभसँ पहिने सभ साल, सभ ठाम सपना माय टीपैत छथिन– ''धुर् जो ! दिन भरि चलबाक थकनीसँ चूर देह आ ताहिपर मिट्ठुक ई काँच तरकारी आ पनिसोह झोर । दालिमे खाली पानि ।'' बिन्दुक माय संग दैत छथिन– ''हम तऽ सभ साल कहैत छिअनि सरदार बमकेँ जे छोड़ू मिट्ठू बमकेँ, हिनका नै कोनो लूरि छनि भानस-भातक ।'' चुन्नीक माय सेहो पाछू नै रहैत छथि– ''आ लाटसाहबी ने देखिअनु ? एक्को कड़छु परसताह नहि । भानस-भात कऽ कात बैसि जयताह ।''

मुन्नीक बाबी सभकेँ रोकैत छथिन– ''हे, केहन स्वादिष्ट तऽ बनल छैक सभ टा... आलु-कोबी-मटर-टमाटर । सभ क्यो भरि-भरि पात परसनपर परसन लऽकऽ खाइतो गेलहुँ आ उपरसँ अधलाहो कहैत छियैक ।'' तीनू गोटे एक्के संग बाजि उठलीह ''से की कहैत छथिन बाबी बम ! गामपर रहितहुँ तऽ एहन काँच पनिसोह तरकारीकेँ कुकुर-बिलाइकेँ खुआ दितियैक । जेहन-तेहन भकोसबाक अभ्यास रहय तखन ने....?

तखने बाल्टी लेने जाइत छौंड़ापर तीनूक ध्यान जाइत छनि आ तीनू संगे बजैत छथि— ''अहि रे बा लालबम, (पहिल बेर आयल बम)... एना तीन-तीन पात छोड़ने पड़ायल जाइ छी । दिअऽ एक कड़छु ।

तीनू मुन्नीक बाबी बमपर व्यंग्य कयने छलीह । गरीब छलीह मुन्नीक बाबी। हुनका नीक-नीकुत खयबाक अभ्यास कहाँ छनि ? मुदा बाबी व्यंग्यपर ध्यान नहि दैत छथिन आ प्रशंसाक स्वरमे बजैत छथि– से जे कहू अहाँ सभ । हमरा तऽ बड़ स्वादिष्ट लागि रहल अछि सभ-किछु । अहूँ सभ तऽ कड़छुपर कड़छु सुरकने जा रहल छी ।

तीनूक बाबी मुँह दूसि लैत छथिन । बाबी गरीबो छथि तैयो बाबाधाम पहुँचलापर मिट्ठूकेँ कोनो बेर पचटक्कीसँ कम्म नहि दैत छथिन । पाँचसँ कम क्यो नहि दैत छैक । क्यो-क्यो दसो । मुदा अइ तीनू जनी लग एकटांगा देने ठाढ़ रहतनि घण्टो, तखन तीनू एक-एक टा दूटकही निकालि तेना देथिन जेना भीख दऽ रहल होथिन– ''बम्बमे कोनो कम्म खर्च होइत छैक ! किराया, मेसक चार्ज, पेड़ा आ सनेसबारी लैत-लैत हजारो लागि जाइत छैक । तखन कहाँसँ मुफ्त बाँटत टाका लोक ?

टाका हुनकासँ लऽ, मुदा आँखिमे आयल तिरस्कार भावकेँ बिना नुकौने मिट्ठू हुनकालोकनिक सोझाँसँ हटि जाइत छथि ।

मुदा ईसभ तऽ होइत छैक बादमे । बाबाधाम पहुँचलाक बाद । बीचमे पाँच दिनक यात्रा आ एक राति सुलतानगंजमे ।

सरदार बम त्रिभुवनक कमेन्टरी अनवरत जारी रहैत छनि– ''टोकना बम का सिगनल हो गया । पहले बमरी लोग पा लीजिए । बम लोग बादमे पायेंगे ।''

बमरी लोकनिक पात लऽ बैसि गेलाक बादो सरदार बम त्रिभुवनक कमेन्टरी जारी रहैत छनि– सुलतानगंजमे डटकर पाइए । कल से दिनमे भोजन नही बनेगा । जो पास मे हो लोकुआ उसे पाइये दिनभर या चूड़ा पासमे हो तऽ दही खरीदकर पाइए । पर सम्हल के । ज्यादा जँतने पर जहाँ-तहाँ लोटा लेकर भागना पड़ेगा । जितनी बार लोटा उठायेंगे, उतनी बार स्नान करना पड़ेगा । कल फिर तारापुरमे आलू-कोबी-मटर-टमाटर, अगली रात जलेबिया मोड़मे चर्चरी और कमरियामे भाटा-अदौड़ी....

पातेपरसँ सपनाक माय टिपथिन– ''खाउ मिट्ठूक असिद्ध भाटा-अदौड़ी अपने सभ । हमरा सभ तऽ उपासे रहैत छी कमरियामे । काँच भाटामे अदौड़ी तकिते रहि जाइत छी ।'' सरदार बम त्रिभुवन हँसी कयलथिन– ''सभ साल कमरियेमे दैत छियैक अठासीसँ आ कहैत छी जे उपासे रहैत छी । भौजी बम, अहाँ चिन्ता नहि करू । बढ़ा देबैक एक सेर अदौड़ी एहि बेर । सभ सालक बदला एही साल ओसूलि लेब आ फेर गोड़िआरीमे आलू-कोबी-मटर-टमाटर..

सिपाही बम बीचमे लोकैत कहथिन– और उसके बाद जमादार बम का सारंगी वादन ।

सभ क्यो एक्के संगे अनघोल करत— बोले-बोले-बोले बम्म...

सिपाही बम कहिओ सरदार नहि कहैत छथिन । हरदम कहथिन जमादार

बम । जहिआ धरि सिपाही बम रहलाह, जमादारे बम कहैत रहलथिन । फेर एकदम्मे रूसि रहला– हे लिअऽ हमर इस्तीफा । ताकि लिअऽ दोसर सिपाही बम....'' बाता-बाती खयबाकाल पातपर भेल रहनि । अन्तिम खेपमे पात घटि गेलनि । दुनू खेपमे लोक पातकेँ पीढ़ी बना बैसि गेलथिन । पाँच गोटे सभ दिन आखिरीमे खाइत छथि । पहिल खेप बमरी, दोसर खेप बम आ अन्तमे सरदार, सिपाही, कुलभूषण, किसुन आ सुनील । अनने तऽ ठीके रहथि सिपाही बम, मुदा एना पात खराब कयलासँ किसुनक लेल एक टा पात घटि गेलनि । सिपाही अपन पात देलखिन, नहि लेलनि । माय अपन बला थारी देलकनि, नहि लेलखिन । खाली गरजैत रहलाह सिपाही बमपर– ''पातमे कथीक कंजूसी ? एक-दू बण्डल बेसी लेब तऽ की भऽ जायत ? सरासर लापरवाही छनि ई ।'' सिपाही बम सेहो गरजलाह– ''ककरो नौकर नहि छी हम । जकरा एतेक छैक, अपनेसँ खरीदय सभ-किछु सभ दिन ।''

किसुन बम रूसि रहलाह– नहि खयलनि । सिपाहियो पात फेंकि उठि गेलाह । प्रात भेने सिपाही बम इस्तीफा देलनि आ फलाहारी बम बनि गेलाह । कोनो मेसमे जहि खयताह । पाँचो दिन फलाहारे करताह । किसुन बम पार्टी बदलि लेलनि । महादेव बमक गुटमे चल गेलाह । सरदार बम त्रिभुवन आ बाँकी लोक मनाकऽ थाकि गेलाह– ने सिपाही बम मानलथिन, ने किसुन बम ।

एक दिन महादेव बम लोकनि सेहो एहिना फराक भेल रहथि । भरि गामक एक बम पार्टी रहनि । सरदार बम रहथिन भालपट्टीक । मुस्किलसँ बीस-पचीस गोटे अबैत छलाह । तहिया टोकना बमक काज नहि पड़ैत छलनि । खाली एक टा वाहक बम रहैत छलनि । माने एक टा भरिया । जेलोकनि, काँवर पर ओ जल नहि लादि पबैत छलीह, से सभ मिलि एक टा वाहक बम कऽ लैत छलीह, ओकर खर्च वैह लोकनि उठबैत छलीह । सबकिछु नीक जकाँ चलि रहल छलनि । मुदा एक वर्ष एहन भेलनि जे साहबगंज हाट पहुँचैत-पहुँचैत देरी भऽ गेलनि । तहिआ जिलेबिया मोड़ नहि ठहरैत छलाह । ठहरैत छलाह साहबगंज हाट । ओतऽ भैरव बम (कुकुर) ततेक तंग करनि सभ वर्ष जे हारिकऽ जिलेबिया मोड़ ठहरऽ लगलाह । पहिल राति तारापुर आ दोसर राति जिलेबिया मोड़ । मुदा ओइ वर्ष साहबगंज हाट पहुँचैत-पहुँचैत बड़ राति भऽ गेलनि । सभकेँ लेने जखन नौ बजे रातिमे कैम्पमे पहुँचलाह तऽ सभ बम्म केँ गुमसुम देखलनि । हुनकर गुटक बहुत रास बम पहुँचल रहनि, मुदा सभ भूखल पिआसल, मन्हुआयल पड़ल । चूल्हियो कतहु ने पजारल । महादेव बमक पूरा

गुट मूड़ी झँपने सूतल । ओइ बेर महादेव बमक गुटक बमरी सभ एकदम नकारि देलथिन– ''एह, सौख ने देखियनु ! सभ ठाम ईलोकनि जानि-बूझि कऽ देरीसँ पहुँचतीह आ हमसभ रान्हि-छान्हिकऽ रखने रहियनु ! गामोमे मालिक आ बमक बाटमे सेहो मालिक । कथीक मालिक आब ! ने गाममे देल खाइत छिअनि, ने एत्तहि । औतीह तऽ भानस करतीह अपन ! हमरालोकनि किएक करबनि सभ वर्ष सभ ठाम ?''

विजयक माय साहस कयलनि– ''अबै जाउ हे बमरी सभ ! ककरो नहि कयलासँ उपास नहि पड़ि जायब हमरासभ ? गामपर भानस करैत छी कि नहि अपन-अपन ? थाकल छी, ताहिसँ की ? अबै जाउ सभ क्यो ।''

वाहक बम चुल्हबा आँच पजारि देलकनि । लाल बम अदहन लेल आ पीबा लेल इनारसँ जल भरलनि । भात-दालिक संग आलू साना बना लैत गेलीह। सन्नामे खाली नून देलथिन, तेल तऽ वर्जित रहनि ।

ओही दिन, ओही ठामसँ चुलहा फराक-फराक भऽ गेलनि । महादेव बम सफाइ देलखिन प्रातभेने ''तऽ अइमे हर्जे कोन छैक ? देखियनु ठाढ़ीबला बम सभकेँ । एक टा बसमे सभ क्यो अबैत छथि, मुदा भानस सात ठाम होइत छनि। हमरोलोकनिक भानस-भात दू ठाम रहत ।''

चुलहा तऽ दू ठाम भेबे कयलनि । बासो दू ठाम भऽ गेलनि । फराक-फराक विदा होबऽ लगलाह गामसँ । सभ ठाम बासा सेहो फराक-फराक होअऽ लगलनि । खाली घाटपर आरती आ पूजा एक्के संग । जा धरि भालपट्टीवला सरदार छलखिन, वैह कयलखिन, फेर किछु दिन शिवशंकर भाइ आ तकर बाद महादेव बम । स्नान कऽ खजाना भरू आ आरती-पूजाक बाद काँवर डोलाउ– बोले-बोले-बोले बम्म ।

जहियासँ दू दल भेलनि, तकर दोसरे वर्षसँ मिट्ठू मिसर आबऽ लगलाह। त्रिभुवन बम नाम रखलखिन– टोकना बम । हुनका संग एक टा नोकर—चरचाँकि बम । साले-साल अबैत रहलाह टोकना बम ।

से टोकना बम ओइ बेर धोखा दऽ देलखिन । अयलाह पाठक बम आ सरदार त्रिभुवन बम कहलथिन– बाबाक काजमे मोल-मोलहइ कयने छथि, देखि लेबनि, किछु भऽकऽ रहतनि ।

माय हुनका रोकलकनि– ''अहा, एना नहि कहियौ सरदार बम ! गरीब लोक छथि मिट्ठू । गरीबक मति तऽ एहिना मारल रहैत छैक । औताह, फेर औताह । बाबा डोरी लगौथिन तऽ अबस्से औताह ।''

बाबा डोरी लगा देलखिन आ मिट्ठू मिसर अयलाह । एकसर नहि, पत्नी आ बेटाक संग । भरि बाट बमक दल अनघोल करैत रहलनि— बोले बोले-बोले-बम.... ।

सुलतानगंज पहुँचिते बम-बमरी सभ स्वागत कयलकनि– ''अलबत्त टोकना बम ! एहि बेर तऽ जमा देलियै अहाँ... । कनिया बुतरू दुनू संग । एक बेरमे दू-दू टा लाल बम... बोले बम... सरदार बम त्रिभुवन तैयो नै छोड़लखिन.... ''से की ओना आयल छथि ! अपन शर्त्तपर अड़िकऽ टाका बढ़बौलनि अछि, पचासक बदला एक सय आ दिनका खोराकी पाँचक बदला दस । ताहीपर ने ई हरियरी छनि....

मिट्ठू मिसर लजाकऽ हँसला । ई एक टा नव बात । मिट्ठू मिसरक भाव-विहीन चेहरापर हँसी कखनो क्यो ने देखने छलनि । एकदम नव बात आ मात्र ओहि हँसीसँ अष्टावक्र मिट्ठू मिसरक सम्पूर्ण व्यक्तित्व बदलि गेल छलनि ।

अष्टावक्र माने मिट्ठू । माने मिट्ठू मिसर । दादा (हमर पिता) नाम रखने छलथिन । कोनो विद्रूपसँ नहि, स्नेहसँ । सभकेँ कहलथिन अष्टावक्र सन विद्वान् नहि छथि तेँ की, छथि एकदम ज्ञानी आ साधु । अपन काजमे निपुण । एक मिनट देरीसँ नहि औताह आ जाधरि रहताह अपन काजसँ मतलब रखताह। असली साधु छथि । कोनो आशा-अभिलाषा नहि, सभ चीजसँ तटस्थ, उदासीन। डाँड़मे बिष्ठी नै छनि, मुदा एक टा ठेहुनसँ ऊपर धरि उठल धोती छोड़ि आर कोनो वस्तु नहि बारहो मास । ढट्ठा बान्हल धोती, गर्मी-जाड़-बरसात सभमे ।

सत्ते अष्टावक्र छलाह मिट्ठू मिसर । शरीर आठ ठामसँ टेढ़ छलनि । डाँड़सँ माथ धरि एकदम सोझ दुनू हाथ छोड़िकऽ आ डाँड़क नीचाँ सेहो दुनू पयर दू-दू ठामसँ टेढ़ । केहुनीक ऊपर दुनू बाँहिमे गुठरिआयल सन आ ओही गुठरिआयल मोट जगहसँ नीचाँ मुड़ल बाँहि । तहिना केहुनीक नीचाँ सेहो दुनू हाथ बीचसँ मुड़ल । डाँड़सँ नीचाँ दूनू जाँघक क्रम एहन सन जेना ओकरा बीचसँ क्यो निबा देने होइ आ ठेहुनक नीचाँ सेहो दूनू पैर अर्धवृत्ताकार सन मुडल आ दुनू पयरक बीचमे बनल एक टा सम्पूर्ण वृत्त । मुदा एतबा भेलोपर मिट्ठू मिसर खूब तीव्र गतिये चलैत छलाह, दहिना कात झुकल आ ओही पयरसँ ढेकी कुटैत । बम पार्टीमे सभसँ पहिने हमहीं बहराइत छलहुँ आ हमर विदा भेलाक एक घण्टाक बाद मिट्ठू मिसर विदा होइत छलाह आ दहिना पैरसँ ढेकी कुटैत सभसँ पहिने अगिला ठेकानापर पहुँचि जाइत छलाह । चूल्हि पजारि, अदहन चढ़ा, सिपाही बमक प्रतीक्षा करैत छलाह । सिपाही बम एक्के बेर सभ सामान नहि कीनैत छलाह– गाड़ीपर सामान जाय लगलनि तैयो । सभ ठेकानापर पहुँचलाक बाद चरचाँकि बमकेँ संग लऽ बाजार जाइत छलाह– चाउर, दालि, तरकारी, नोन, मसाला, पात आ जारनि कीनैत छलाह आ सभ ठामक वस्तुक विशेषताक बखान करैत छलाह । मिट्ठू मिसर ई सुनि तामसे माहुर भऽ जाइत छलाह । सभ ठेकानापर अदहन खदकैत रहैत छलनि आ सिपाही बम बजारमे निश्चिन्त भऽ चाउर दालि पसिन्द करैत रहैत छलाह । टोकना बम हुनका सरापैत रहैत छलाह– ई सिपाही बम सभ टा लाहेब करैत अछि । अखन धरि भानस लगिचिआयल रहैत, एक खेप भात आ दालि उतारने रहितहुँ । नंगट अछि ई सिपहिया... ।

बर्तन सभ छोट छलनि । सरदार त्रिभुवन बम नाम देने छलखिन टोकना बम आ बर्तन देने छलखिन टोकनाक बदला अलमुनियमक दू टा मझौला आकारक बटुक आ एक टा पैघ सन लोहिया । संगमे एक टा झाँझ आ एक टा कड़छुल, बाल्टी सेहो एके टा । एक टा पेट्रोमैक्स छलनि जकरा लेने सिपाही बम सभ ठेकाना पर भँगठी करबैत छलाह आ लालटेनक भुकभुक इजोतमे टोकना बम हुनका गरियाबैत-सरापैत रहैत छलाह– ''बेरपर सभ टा चीज ठीक रखैत लंगटाबा सिपहिया तऽ सबेर-सकाल फुरसति होइत ।''

गामोपर राति बितलेपर छुट्टी भेटैत छलनि मिट्ठू मिसरकेँ । भगवान घरमे दुनू साँझ भानस कऽ रातियोमे सभकेँ खुआ-पिआ दस-एगारह बजे राति धरि घुरैत छलाह । ओइ राति दादा (हमर पिता) सेहो देरीसँ गाम घुरल छलाह, बगलक गाममे एक टा सांस्कृतिक समारोहमे बजाहटि रहनि । मुकरी लग अपन खेतमे झलफल अन्हारमे एक टा छाया जीवैत सन लगलनि । पाछाँसँ लग जा गरदनि पकड़ि लेलखिन । मिट्ठू मिसर सकपकाकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह ''हम छी मालिक, मिट्ठू ।''

धोतीक फाँड़सँ सभटा बड़का उखाड़ल कोबी खसि पड़लनि । छोटे-छोट छलैक, नीक फूल नहि भेल रहैक । उठाकऽ गनलखिन– आठ टा कोबी उखाड़ने छलाह । दादाकेँ हँसी लागि गेलनि– ''जा भागि जा चुपचाप । कोबियो उखाड़लह तऽ गनिकऽ आठे टा । उठाबऽ सभ टा कोबी आ भागऽ एहि ठामसँ। क्यो आर देखतह तऽ बड़ी मारि मारतह । आइसँ हम तोहर नाम एक बेर फेर बदलि दैत छिअऽ... अष्टकोबी ।

सैह नाम पड़ि गेलनि किछु दिन । फेर लोकक‍ेँ बिसरि गेलैक । कहिओ काल ककरो मोन पड़ैक तऽ खूब हँसय । दादे नाम देने रहथिन पहिने अष्टावक्र । विद्रूपसँ नहि, स्नेहसँ । सभकेँ कहैत छलखिन... ''के कहैत छनि जे हमर अष्टावक्र ज्ञानी नहि छथि । केहन जानकार छथि अपन विषयक ! हिनका बिना गामक कोनो भोज-भात सम्पन्न होइत अछि !

चोर-छिनार नहि छलाह मिट्ठू मिसर । कहिओ ककरो दू टा पाइ वा दू कनमा अनाज नै छूने छलखिन । मुदा ओइ राति मति मारल गेलनि । जवान होइत सुन्नरि कनियाक मोन जितबाक प्रयासमे चोर बनि गेलाह ।

दसे वर्षक कनिया बिआहने छलाह मिट्ठू मिसर । बिआहने की छलाह, पाँच हजार टाका गनि मामा एकटा गरीबक अबोध मुदा सुन्नरि बेटीकेँ अपन भागिन लेल लऽ अनने छलखिन । नानी मरि गेल छलखिन, माय बिमारिअहि दिन गनैत जीबैत छलखिन । संगे विवाह-दुरागमन कऽ दस वर्षक कनिया घर अनलनि मिट्ठू मिसर ।

दुर्गापूजामे गाम आयल रही । सुतली रातिमे कोनो बच्चाक चिचिआयब सुनलियैक । चिचिआयब नहि, आर्त्तनाद । जखन बड़ीकाल धरि ओ आर्त्तनाद बन्न नहि भेलैक, उठिकऽ बथान दिस जा, अपन चरवाह महेसराकेँ उठौलियैक । ओ हड़बड़ाकऽ उठल तऽ हम अपन प्रश्न दोहरौलियैक । ओ कने काल अकानलक आ फेर हँसैत बाजल– ''जाउ मालिक ! सूति रहू । एहिना होइ हइ सभ राति । मिट्ठू मिसर अपन घर ढूकल हइ ।''

हम पहिने किछु नहि बुझलियैक । फेर ओकर हँसी आ मिट्ठू मिसरक नाम सुनि अर्थ लागल आ हम घुरिकऽ अपन बिछौनपर चलि अयलहुँ । बड़ी काल धरि ओ आर्त्तनाद सुनैत रहलहुँ । जखन ओ बन्नो भऽ गेलैक, तैयो ओ आर्त्तनाद हमर कानमे गोंगिआइत रहल ।

ओइ जतरामे अनेको राति ओ आर्त्तनाद सुनलियैक । मुदा तकर वर्ष दू वर्षक बाद जखन गाम आबी, तऽ अकानलोपर कोनो आर्त्तनाद नहि सुनाय । फेर सुनलियैक जे मिट्ठू मिसरकेँ एक टा बेटा भेलनि । अपने अखनो ओहिना भोरे भगवानपुर चल जाइत छथि आ हुनकर जाइते आंगनमे गामक रसिया सभक जमाबड़ा लागि जाइत छनि आ टोलबैयासभक नाक कचरी-पियाज आ लहसुनक गंधसँ फाटऽ लगैत छैक ।

ओना टोलबैया सभक लेल ई कोनो नव गंध नहि छलैक । दू बेर पहिनो एहन गंध ओकरा सभकेँ लागल रहैक । मिट्ठू तखन बच्चा रहथि । नानी, माय छलखिन । नानी जतबे गोर-नार, दुबर-पातर आ छोट-छीन छलखिन, माय ततबे कारी, कुरूप आ बेडौल । नानीकेँ सभ कहनि मन्दोक माय । नाम की रहनि, ककरो बूझल नहि रहैक । सभक लेल मन्दोक माय । बच्चामे हमहूँ देखने रहियनि । भरि गामक लेल मन्दोक माय बड़ परिचित लोक । तकर कारण छलैक छठिक ठकुआ, खजूर, भुसबा आ कुसियार । छठिमे सभ घरक अर्घ्य वैह दैत छलीह । वैह सभक सती उपास करैत छलीह आ कमलाक घरमे ठाढ़ भऽ अर्घ्य दैत छलीह । एतेक घरक लेल बेरा-बेरी अर्घ्य दैत देरी भऽ जानि । सझुँका देरी ककरो नै अखरैक । साँझमे पहिनो अर्घ्य देथिन, तैयो किछु भेटऽवला नहि । मुदा भोरमे चारू कात किलोल मचि जाइ– बच्चा, बूढ़, जवान सभक हड़बड़ी 'कहाँ गेली मन्दोमाय, एतेक देरी किएक भेलनि, बड़ सुस्त छथि ।' आ जाड़ मास, भीजल कपड़ामे जलमे ठाढ़ भऽ अर्घ्य दैत मन्दोक माय सभ टा सुनैत छलीह ।

मात्र ओतबे काल । आन बेरमे ककरो मजाल नहि छलनि जे मन्दोमायकेँ टोकथिन । सभकेँ उकटिकऽ राखि देथिन, जोर-जोरसँ चिचिआकऽ । ओइ कालमे हुनकर सुन्नर आकृति दोसरे रंगक भऽ जाइत छलनि– विकृत आ असर्ध। चुप्प रहलापर बुढ़ारियोमे ओ खूब सुन्नर लगैत छलीह– उजरा तूरक फाहासँ बनाओल कोनो आकृति सन जाहिपर अनाड़ी कलाकारक हाथे अनेको रेघा पड़ि गेल होइ । मुदा जतबे मन्दोमाय सुन्नर छलीह ततबे दुनू सन्तान असर्ध आ विकराल । बेटा भुट्टू छलखिन अकादारुण, कारी भुजुंग आ भयावह । बुच्च कान, आ ठाढ़ भुल्ल केश आ हरदम कर्जनी सन लाल आँखि । बेटी मन्दो छलखिन मन्दोदरी सन राजरानी नहि, ताड़का सन राक्षसी । ओही राक्षसी रूपकेँ देखिकेँ स्वामीक प्राण छबे मासमे छूटि गेलनि । मुदा संगे छूटि गेलनि मन्दोक गर्भमे हुनकर सन्तान । अष्टावक्र मिट्ठू मिसर । मन्दोकेँ भानसो-भातक लूरि नहि । देह मजगूत छलनि । कुटान-पिसान कऽ लैत छलीह । मन्दोक माय जा धरि जिलखिन, दस घर धयने रहलखिन, कोनो बातक तकलीफ नहि भेलनि । फेर माय नहि रहलखिन । मिट्ठू भगवानपुरमे भनसीया भऽ गेलाह । पाँच टाका मास बुतातक संग दरमाहो भेटऽ लगतनि ।

भुट्टूझाक कमाइ मुदा बहुत रहनि । गामे-गाम भगता खेलाइत छलाह । जन्तर आ गण्डा बान्हैत छलाह । चढ़ौआ भेटैत छलनि से बीच-बीचमे किछु माय-बहीनकेँ दऽ जाइत छलाह । मुदा एक बेर टाका-पैसाक बदला लऽ

अनलनि बिआहिकऽ एक टा सुन्नर कनिया आ दसे दिन बाद अपने निपत्ता भऽ गेलाह । आ टोलबैया सभकेँ कचरी-घुघनी आ लहसुन पियाजक गंधसँ नाक फटैत रहलैक । मुदा किछुए दिन । आंगनमे जमाबड़ा करऽवला रसियामेसँ दू गोटे ओइ कनियाकेँ अहिल्यास्थानक मेलामे लऽ गेलखिन आ तकर बाद ओ घूरिकऽ नहि अयलखिन । दस वर्ष बाद भुट्टूझा एक टा आर मौगी अनलनि । सभ कहनि जे बिआहलि नहि छथि, भगाकऽ अनने छथि । कनियाँ भगाकऽ अनने रहथि वा नहि, मुदा एक दिन फेर अपने गामसँ भागि गेला आ टोलबैयाक नाक फेर एक बेर कचरी-घुघनी आ लहसुन-पियाजक गंधसँ फाटऽ लगलैक । मुदा ओइ बेर थोड़बे दिन । एक दिन ओइ मौगीक कोनो मसियौत भाइ अयलैक जकरा संग ओ निपत्ता भऽ गेल । निपत्ता की भेल, क्यो तकबे नहि कयलैक । वर्ष दिन बाद भुट्टू झा अयलाह तावत गप्प पुरान भऽ गेल छलैक ।

मन्दोक भाइ भुट्टू झाकेँ रहनि पोखरिक उतरबरिया भीड़पर एक टा टटही घर । चारपर खर, टाटक देबाल चारूकात । टाटेक दरबजो । घरक मुँह उत्तर मुहेँ छलैक जकर दक्षिण पोखरिक भीड़पर किछु उठबा-बैसबाक जमीन छलैक आमक गाछ तर, जकर किछु डारि दक्षिणबारी कात नमरिकऽ पोखरिक पानिक ऊपर धरि चलि गेल छलैक । कने टा आंगन, बिना टाटक घेरल । दक्षिणबारी कात टाटक बदला एक टा कटहर आ एक टा बड़हड़क गाछ । पछबारी कात दू टा लतामक गाछ आ पुबारी कात एकदम खूजल । अंगनाक काते-कात कोड़िकऽ किछु तरकारी उपजा लैत छलीह मन्दो । आम कटहर सभ साल बेचि लैत छलीह । जहिआ किछु ने होइत छलनि– माय बेटा लतामे खाकऽ, थुरी रहैत छलनि तैयो, रहि जाइत छलीह । थुर्री आमक झक्का बना खा लैत छलीह ।

मायक मुइलाबाद जखन मन्दो बिछौन धऽ लेलनि, मिट्ठूक विवाह भेल, भाइक नेहोरा कयलनि । नगद पाँच हजार गनि, भागिनक लेल दस वर्षक कनिया आनि भुट्टू झा फेर निपत्ता भऽ गेलाह । गामसँ नहि, दुनियाँसँ । एक दिन खा-पी ओही गाछतर सुतलाह, से सुतले रहि गेलाह । दिनेमे, सुतलेमे साँप हबकि लेलकनि ।

जाधरि मन्दो जीबैत छलीह, ओइ दस वर्षक सुहागिनक रक्षा भेलैक । सासुए लग सूति रहैत छल । फेर मन्दो सेहो मरि गेलीह आ राति-बिराति गामक लोककेँ मन्दोक घरसँ एक टा आर्त्तनाद सुनाइ पड़ऽ लगलैक । मुदा ककरो ने कोनो चिन्ता भेलैक ने पीड़ा । एक टा विवाहिताक शीलभंग सौंसे गामक लेल कौतुक आ आनन्दक विषय छलैक, आतंक आ याचनाक नहि । शीलभंगक याचनाक अवधि काफी नमरि गेल छलैक ।

आ एक दिन जखन वैह दस वर्षक कनियाँ पाँच वर्षक नेनाक माय बनि गेलैक, मिट्ठू मिसरक जान आफतमे पड़ि गेलनि । अपने जखने भगवानपुर विदा होइत छलाह, आंगनमे जमाबड़ा लागि जाइत छलनि आ टोलबैयाक नाक कचरी, घुघनी आ लहसुन-पियाजक गंधसँ फाटऽ लगैत छलैक ।

ओही कनियाकेँ टोकना बम एक बेर काँवरमे लऽ अनलनि । माय देखितहि प्रसन्नतासँ कहलकनि– बेस कयलहुँ मिट्ठू बम ! कनियाँ बेटाकेँ अनलहुँ से नीक कयलहुँ ।

सरदार बम त्रिभुवन बीचहिमे लोकि लेलखिन– ''से कोनो ओना अनलनि अछि काकी बम ? बान्ह-छेक कयलनि अछि अपना मोने । कनियाँ उड़ाँत भऽ गेल छथिन– एहन-एहन बान्ह-छेक की मानथिन ?'' सभ बम, छौंड़ा-जवान आ बूढ़ एक्के संग अनघोल कयलनि– बोले-बोले-बोले बम ।

छोट-छीन घोघतर कनियाँक ठोरपर उन्मुक्त हँसी छिड़िआयल छलैक, सभ देखलैक– नाकक टुनगी धरि झलकैत हँसी ।

भरि बाट मिट्ठू मिसर अपन कनियाँक आगाँ-पाछाँ नुड़िआइत रहलाह । कनियाँ बेर-बेर छिटकिकऽ छौंड़बा सभक गोलमे मिलि जाइत छलनि आ अनघोल मचल रहैत छलैक– बोले बम बोले बम....

मिट्ठू मिसर लपकिकऽ फेर कनियाँक संग धऽ लैत छलाह, मुदा सरदार बम त्रिभुवन धऽ लैत छलखिन– ई की बमक रस्तामे सदिखन हुंग-भृंग कऽ रहल छी टोकना बम ! मोह-माया त्यागू आ बाबापर सुरति धरू ।'' बम सभ फेर अनघोल करैत छल– बाबा वैद्यनाथपर सुरति धरू....

कुलभूषण बम मुदा टोकना बमक पक्ष लैत छलखिन– नै यौ टोकना बम ! सरदारक झपासामे नै आउ । धयने रहू एहिना पछोड़ । अपना नै देखलिअनि घाटपर सुलतानगंजमे । कोना सरदारनीक संग हुंग-भृंगमे लागल छलाह । बम सभ बेर अनघोल करैत छल— मैया पारवतीपर सुरति धरू ।

मिट्ठू मिसरक कनियाँ घोघ तर हँसैत छलैक । भरि बाट घोघ तनने रहैक। कुलभूषण बम कतेको बेर खोंचाड़लखिन– ''बममे घोघ-तोघ, देओर-भैसुर ने होइ छैक बमरी बम, ठेस लागत, कान-कपार फूटत तखन बुझबै । गाममे पोखरिक भीड़पर ठाढ़ भऽ मुँह उघारि केश खोलि चारू भरि उमकैत लीला करै छी आ एतऽ ई घोघ ! कहलकै जे....

बमसभ फेर अनघोल करैत अछि– बोले बम बोले बम ।

बाटमे एहिना हास-परिहास, मजाक, हँसी-ठठठा, टोका-चाली आ उकटा-पैंची चलैत रहैत छैक— कखनो ककरो संग तऽ कखनो ककरो संग आ बाट कटैत जाइत छैक । किम्हरोसँ पिहकारी, किम्हरोसँ होहकारा आ किम्हरोसँ गीत-नाद आ कीर्तन चारूकात पसरैत रहैत छैक आ कमरियाक पयर अनवरत चलैत रहैत छैक । कखनो-कखनो ई कटाक्ष आ हँसी-मजाक बड़ कटाह भऽ जाइत छैक । मिट्ठू मिसरक बमरीकेँ सेहो कटाह लगलनि भरिसक । ओना ओ भरि बाट सदिखन कखनो घोघतर आ कखनो घोघ उघारि हँसिते रहलीह आ बमसभ अनघोल करिते रहल– "मैयाँ पारबतीपर सुरति धरू....

टोकना बमक बमरी फेर नेहि अयलीह । एहिना साढ़ू बम नहि अयलाह आ जे अयलखिन हुनकर बमरी । वीरू भाइ बम एक बेर अपन साढ़ू आ सारिकेँ सेहो अनने छलाह । भाइक सारि तऽ गाम भरिक सारि । भरि बाट सभ साढ़ू बम आ हुनकर पत्नीसँ हँसी-मजाक करैत रहलनि । दुनू बेकती भरि बाट हँसिते रहलाह । दम्पति नि:सन्तान छलाह आ संतानेक कामनासँ काँवर उठौने छलाह । भरि बाट एकरे लक्ष्य बना हँसी-मजाक चलैत रहलैक... । कखनो साढ़ू बमक संग, कखनो सारि बमक संग मजाक– "चिन्ता नै करू भौजीक बहिन बम । साढ़ू बमकेँ नै पार लगैत छनि तऽ हमरा लोकनि तऽ छी..." फेर सभ बेर अनघोल– बोले बम... बोले बम.... आ कखनो साढ़ू बमकेँ कहैत छनि– "बाबा अबस्स पूर करताह मनकामना साढ़ू बम... सभ गोटे मिलिक जोर लगायब.... ।" आ फेर अनघोल– बोले बम बोले बम । आ बाबाधाम पहुँचिकऽ सभ अतत्तह कऽ देलकै । जहिना बाबाकेँ खजाना उसारि धर्मशालामे अयलाह, दुनू बेकतीकेँ एक टा घरमे बन्न कऽ जिंजीर लगा देलकै– पूर करू मनकामना साढ़ू बम...." आ फेर अनघोल– बोले बम बोले बम ।

मनकामना सत्ते पूर भेलनि । अगिले वर्ष बेटा भेलनि, मुदा साढ़ू बम दोबारा काँवर लऽकऽ नहि अयलाह । क्यो-क्यो हुनक सहानुभूतिमे बाजल– बड़ तंग कयलकनि सभ मिलिकऽ ।

सिपाही बम ओकरा दबारलनि– "जाउ, अहूँ हुनके संग । आब औताह किएक ? जाहि वास्ते अयलाह से तऽ बाबा दैयो देलखिन एके वर्षमे ।

भौजी बम मुदा अबैत रहलीह । भौजी बम माने वीरू भाइक कनियाँ । सभ वर्ष बड़ कष्टसँ अबैत छलीह । छोट छोट डेग आ दस-दस मिनट पर धुस्स

भऽ बैसि जायब । सभ दिन अड्डापर हिनका कखनो बोल-भरोस दैत, कखनो होहकार आ कखनो-कखनो निर्मम व्यंग्य करैत बम पार्टी हिनकर संग चलैत आगू बढ़ि जाइत छलनि आ अन्तमे सरदार बम आ कुलभूषण बमक संग अनिल आ बदरी बम हिनका घीचैत-टङैत अड्डापर राति बितला धरि पहुँचा दैत छलनि । सभ बेर वीरू भाइ बम खिसिया जाइत छलखिन– "आब नै अनबनि अगिला वर्ष ।" मुदा भौजी बम सभ वर्ष हाजिर । हरदम हँसैत-प्रसन्न । वीरू भाइ बम बाटमे छोड़िकऽ कतहुसँ कतहु चल जाइत छलखिन.... भौजी अपन देओर बम सभक संग हँसैत-बजैत बाट चलैत आ बैसैत रहैत छलीह । प्रसन्न मोने कहैत छलखिन– "कहि लिअऽ जे कहबाक हो । नहि चलि होइयैऽ हमरा, सभ के दिक्कति होइए हमरा लेल तऽ बात तऽ कहबे करब.... सरदार बम त्रिभुवनक संग कतेको बम एक्के संग बजैत छलाह– "ककर मजाल छैक जे अहाँकेँ बात कहत भौजी बम ! अहाँ नै आयब तऽ फेर ई रमन-चमन कोना हेतैक ? सभ ठाम ककरा लेल ओहार लगतैक ? आ सभ बम एके संग अनघोल करैत छल– बोले बोले बोले बम ।

सभ दिन ठेकानापर पहुँचैत देरी वीरू भाइ बम बरण्डाक एक कातमे अपन स्थान लैत छलाह आ फेर अपन भीजल धोती आ भौजीक भीजल साड़ी टांगि ओहार लगबैत छलाह– "बुझलहुँ किने कनियाँ बम ! ई टांगि देलहुँ अछि । परदाक परदा आ सुखा सेहो जयताह ।"

भरि बाट छौंड़ा सभ अनघोल करैत छल– "बुझलहुँ किने कनियाँ बम... बोले बम ।

आ ओइ बेर गोरिआरी घाटक घटनाक बाद तऽ भरि बाट छौंड़ा सभ भौजी बमकेँ हँसा-हँसा बेहाल कऽ दैनि– "कोना सोम बाबू बमक कोरा चढ़लहुँ भौजी बम ? केहन लागल कोरामे फूलको (घाट) पार करब... ?"

भौजी बम किछु लजाइत किछु खौँझाइत कहैत छलखिन– धुर् जाउ ! कोरा कथी लेल चढ़बनि ? पानि बेशी रहैक, लागल जे धारमे बहि जायब वा पयर धसि जायत तेँ कनहा पकड़ि लेलिअनि.... छौंड़ा सभ तैयो नहि छोड़ैत छलनि– "से आब की सभ पकड़लिअनि, से तऽ अहीँ दुनू गोटे जानब, की सोम बाबू बम...?

सोम बाबू बम सेहो लजा जाइत छलाह आ छौँड़ा सभ अनघोल करैत छल– युगल जोड़ीपर सुरति धरू...

भौजी बम मुदा नहि अबैत छथि आब । बहुत वर्ष धरि अयलीह– दस वर्ष । फेर किछु वर्ष वीरू भाइ बम एकसरे अयलाह । तखन ओ कोनो ओहार नहि लगबैत छलाह आ सभसँ पहिने अगिला अड्डापर पहुँचि जाइत छलाह । आ छौंड़ा सभक मुँहसँ एक्को बेर अनघोल नहि होइत छलैक– नै बुझलहुँ कनियाँ बम ?'' फेर वीरू भाइ बम सेहो आयब बन्न कऽ देलनि । एहि नि:सन्तान दम्पतिक नहि अयलासँ बम पार्टीक बड़का अनमना कम भऽ गेलैक ।

सभसँ बड़का अनमना छलखिन सम्पादक बम । सपरिवार बड़ उत्साहक संग अबैत रहलाह दस वर्ष । संगमे पत्नी, बेटी, भतिज आ नौकर । चलबामे भौजियो बमक गुरु छलाह । डेग पैघ मुदा चलबासँ बेशी बैसब । भौजी दस-दस मिनट चलि पाँच मिनट बैसैत छलीह आ सम्पादक बम पाँच मिनट चलि दस मिनट बैसतै छलाह । भरि बाट पान-तमाकूक सरंजाम होइत छलनि । कुलभूषण बमक माजुम आ अनिल बमक भांग । नोकर हाथमे पानक पनबट्टा आ कान्हपर बाट महक लोकुआक झोरा । एहि सभ लोक आ सरंजामक बीच सम्पादक बन मंथर गतियेँ डोलैत छलाह आ हुनकर काँवर जाहिमे कुलभूषण बम एक टा घण्टी बान्हि देने छलखिन, भरि बाट टुनटुन बजैत रहैत छलनि आ छौंड़ाक संग बूढ़ाबूढ़ी बम सभ सेहो अनघोल कयने रहैत छलाह– बोले बोले बोले बम ।

सम्पादक बम आब नहि अबैत छथि । एकमात्र बेटा छलनि, एक टा दुर्घटनामे मारल गेलनि । दू साल पहिने विवाह भेल रहैक, एक टा बेटी छैक । बाबाक परम भक्त सम्पादकजीक मानसिक सन्तुलन ओइ आघातसँ गड़बड़ा गेलनि । काँवरक सभ टा सरंजाम घरसँ उठा सड़कपर फेकलनि– ''हटा ऐ बाबा-ताबाकेँ हमरा आंगनसँ । नै छथि बाबा कतौ... ई तऽ मुदा बहुत बादमे भेलैक । पहिने भौजी बम अबैत छलीह, सम्पादक बम अबैत छलाह । ताहि संग अयलीह टोकना बमक बमरी । भरि बाट बम पार्टी अनघोल मचौने रहैत छल– बोले बोले बोले बम....

आ सम्पादक बम लेल जोगाड़ भेलनि एक टा नव संगीक । ऋषिनाथ बम बाटपर खजरी बजा-बजा बम पार्टीक मनोरंजन करैत छलाह । नेना छलाह तऽ माय-बाप शिवरूपमे सजा बाटपर बैसा दैत छलथिन । बम पार्टी आगाँमे पैसा फेकि-फेकि पथार लगा दैत छलनि । पैघ भेला तऽ हाथमे खजरी आबि गेलनि आ ओ बम पार्टीक बाटपर गबैत छलाह– बाबा चाकर राखू यौ । एक बेर सम्पादकजी हुनकर गीत सुनलनि आ तहियासँ हुनका अपना लेल रिजर्व

कयलनि– सुलतानगंजसँ बाबाधाम धरि । आगू-आगू खजरी बजा-बजा गीत गबैत छलाह ऋषिनाथ बम आ पाछाँ-पाछाँ झुमैत चलैत छलाह सम्पादक बम आ तिनका पाछाँ भौजी बम । बाटमे आनो बम पार्टीक बम सभ कहि बैसनि– अहा, जोड़ी जे नीक लगैत छनि ! कनगुरिया लगा दैत जैयनु ।

अगिला वर्ष टोकना बमक बमरी नहि अयलखिन । सरदार बम कहने रहथिन जे उड़ंता भेल जाइत छथिन, से उड़िकऽ किम्हर निपत्ता भेलखिन, टोकना बमकेँ कतहु कोनो निशान नहि भेटलनि । ताकि-हेरिक थाकि गेलाह । अगिला बम पार्टीमे अयलाह तऽ संगमे रहनि अबोध बेटा ।

मायकेँ बड़ दया भेलैक– ''सैह कहू ! बेटोक माया नहि भेलनि । एकदम त्यागि गेलीह सभकेँ ।'' टोकना बम कानऽ लगलाह– ''हँ मलकाइन बम, ककरो दया-माया नहि लगलनि । गेलीह तऽ गेलीह, एकरो अपना संग लऽ जैतथि । एहि छौंड़ा लेल हरदम नोर बहैत रहैत अछि ।''

सरदार बम त्रिभुवन ओहू कालमे लुलुआ लेलखिन– अनेरो छौंड़ा लेल नोर बहत ? नोर तऽ बहैत अछि ओ चमचिकनी लेल । अहीं द्वारे तऽ पड़ायल अछि । एको दिन छोड़ैत छलियैक ?

बम सभ आनन्द लैत अनघोल करैत छल– बोले बम ।

एहिना बमक काफिला चलैत छैक– हँसैत-बजैत, गीत गबैत, फोका भेलापर, ठेस लगलापर सिसिआइत, कनैत, किलोल करैत, मुदा तैयो चलैत, दिन-राति चलैत । कखनो एकदम अमानवीय क्रूर आ कठोर, लगले महान् मानवीय करुणासँ भरल... कखनो देवता सनक, कखनो भांग पीने बुत बाबे सन बौड़हवा । जतबा काँवर ततबा कथा, ततबे जिनगी । ओइ जिनगी करुणा कातरता, आशा-आकांक्षा, स्वप्न-अभिलाषा, प्रत्येक उठैत डेग, दुलकी मारैत डेगक संग एक टा संकल्प, एक टा लक्ष्य, एक टा विश्वास । पहिल बेर अइ बम पार्टीमे अयबामे हमरा बड़ तारतम्य भेल छल । त्रिभुवन कतेको वर्षसँ कहैत छलाह– चलू भैया, एक बेर चलिकऽ देखियौक ।

महादेव बमक गुट तावत फराक नहि भेल रहनि ।

ओहो सभ बेर जोर दैत छलाह– ''चलू हाकिम एक बेर । सभ दलमे एक टा कऽ हाकिम बम आइ काल्हि रहितैक छैक । हमरो सभक संग अहाँ रहब, बम पार्टीक अपन मोटर गाड़ी रहतैक तऽ खूब शोभा सुन्नर रहतैक । गामक किछु हाकिम जाइतो छथि तऽ फराक हाकिम लोकनिक गुट बना

अनगौआँक संग । ओलोकनि संगो जयताह तऽ हाकिमे बनल रहताह, बम नहि बनि सकताह कखनो । अहाँक बात आर अछि । अहाँ हाकिम भैयोकऽ हमरेलोकनि सन लगैत छी सभ ठाम । अहाँ चलबै तऽ बाते आर हेतैक । चलिकऽ देखियौने एक बेर !

हम सभ बेर टारि जाइत छलियनि– ''हमरा बुते नहि पार लागत यौ ! 108 किलोमीटरक यात्रा आ सेहो खाली पयर । खलिये पयर टा नहि– कंकड़ पाथरपर । नै पार लागत हमरा बुते एहन भारी शरीर लऽ कऽ एतेक चलब.... त्रिभुवन बीचमे लोकि लैत छलाह– ''देखबै, तहन कहब । केहन-केहन मोट-मोट देहवला सभ रहैत छैक । साओनमे तऽ खाली सेठ-सेठानी । अहू मासमे भेटत एकसँ एक भिसिण्ड । अहाँ तऽ देह भारी रहलोपर केहन फुर्तिगर छी, फुटबौल, भौलीबौल खेलायल छी । ओकर सभक तऽ पासंगो नहि छी अहाँ ।

उत्साहित कयलाक बादो हमरा अनिश्चयमे देखि त्रिभुवन मायकेँ कहैत छलखिन– ''अहाँ कहिअनु काकी, तखन चलताह भैया । अहाँ चलब तऽ भैया अबस्से चलताह । सभ बेर हमर मुँह ताकऽ लगैत छल । संगहि छोट बहिन प्रभा सेहो । दुनूक मोनक इच्छा हम सभ बेर अनठिया दैत छलियैक, मुदा ओइ वर्ष हमहूँ मानि गेलियनि ।

कतेको गोटे मना करैत रहलाह– ''नै हौ, नै जाह, तोरा बुते नहि पार लगतह ।'' लल्लू बाबू कहलनि । त्रिभुवन हुनका दबाड़ि लेलखिन– ''कियैक ने पार लगतनि यौ ! सभकेँ अपने जकाँ बुझैत छियैक ? गेले तँ रही अहूँ । अहाँ कोन भैया जकाँ मोट-डाँट छी ! सिकिया पहलवान तऽ छी । फेर किएक दोसरे दिन हुर्र दऽ बसपर चढ़ि गेलहुँ रामपुर मोड़पर ? जकरा बाबा डोरी लगबैत छथिन ओकरा जाइये पड़ैत छैक ।

लल्लू बाबू कान पकड़ि लेलनि– ''नै हो त्रिभुवन, एतहिसँ गोर लगैत छिअनि । मौन हैत तऽ बस-ट्रेनसँ जाकऽ दर्शन कऽ अयबनि । ई काँवर लऽकऽ गेल पार नहि लागत । ई तोरे आ महादेव सन-सन हरमोठ लोक बुते पार लगैत छऽ....'' त्रिभुवन बमकि उठलाह– ''हम आ महादेव ने हरमोठ छी अहाँ लेखे, मुदा ई जे पचासो टा बमरी रहैत अछि हमर गोलमे आ हजारो रहैत छैक बाटमे । ई जे दस वर्षक आठ वर्षक नेन्ना सभ जाइत छैक हँसैत-दौगैत.... ओहो सभ हरमोठ अछि हमरा सन-सन !'' लल्लू बाबू हारि मानि लेलखिन– तऽ बेश

हमहीं सभसँ पापी छी । हमरा बुते नहि पार लागल, ने लागत । तोँही सभ कमा सभ टा पुण्य, हमरा बुते नहि हैत.... । त्रिभुवनो शान्त भेलाह– तऽ से कहू ने ! अनका किएक मना करैत छियैक ? अपन-अपन भावना छैक आ अपन-अपन पुण्य ।

हुनका टोकैत मास्टर निरसू बाबू बाजि उठलाह– हौ त्रिभुवन, तखनसँ बड़ बुधियारी बघारने छऽ । भावना खाली पयरे गेने होइ छै ! देवता खाली पयरे गेने बेशी सहाय होइत छथिन ! ई ट्रेन बस हवाइ जहाज कियैक बनल छैक ? जहिआ नहि छलै, तऽ जाइते छल सभ पयरे ।

नरेन बाबू आरो एक डेग आगू छड़पैत बजलाह– ''जयबे किएक करत लोक.... ट्रेनो बससँ । ई धर्म छियैक आन्हर लोकक अंधविश्वास, कपटी लोकक अस्त्र, आधिपत्य आ साम्राज्य बढ़ैबाक षटयंत्र । धर्म मनुखक कमजोरी छैक । संसारमे सभसँ बेशी कुकर्म धर्मक नामपर होइत छैक– हत्या, लूटमारि, आ बलात्कार । सभ पाखण्डी सभ धर्मक अंगा पहिरने समाजमे साँढ़ जकाँ बौआइत अपन स्वार्थ आ वासनामे लिप्त रहैत अछि । अही बम पार्टीमे देखि लिअऽ ने धर्मात्मा सभकेँ ! एक-एक बम-बमरीक पाखण्ड-लीलाक पोल खोलि सकैत छी हम ।'' महादेव आ त्रिभुवन एके संग तरंगि उठलाह– आब एको शब्द बाजब तऽ बेजाय बात भऽ जायत । अहाँ लोककेँ की देखार करबै यौ.... पहिने अपन-अपनक तऽ ध्यान करू । लोक सभ टा देखियो कऽ अनठौने अछि तऽ बड़का बजंता आ कहबैका बनैत छी ! एको टा कर्म छूटल अछि अहाँसँ— चोरि, बेइमानी, घरपैसी आ छिनरपन.... नरेन बाबू लोहछिकऽ ठाढ़ भऽ जाइत छथि– ''हे देखि लिअऽ हिनका सभक धर्म-कर्म ! अपनेक दरबज्जापर हमरा बेइज्जत कयलनि आ अपने चुप्प छी । ई अपने लेल उचित नहि । अपने विद्वान् छी, सक्षम छी । एहि अंधविश्वासी कपटी आ लोलुप लोक सभक फेरामे नहि पड़ू हम एतबे कहब । बाँकी अहाँक अपन निर्णय ।

निर्णय हम कऽ चुकल रही । पटनासँ नियत तिथि आ समयपर माय आ छोट बहिन प्रभाक संग सुलतानगंज पहुँचल रही । चिराग-बत्ती भऽ गेल रहैक । सौँसे सुलतानगंज बम-बमरीसँ गजगज करैत । सड़कपर डब्बा-डुब्बी, गमछा-काँवर खरीदैत काँवरिया, दोकानपर चाह पीबैत, गलिये-गली दोगैत काँवरिया । अपन-अपन धर्मशालामे बैसल बाट चलैत, उच्च स्वरे गप्प-शप्प करैत काँवरिया । त्रिभुवन कहने रहथि अइ मासमे खासकऽ माघक पूर्णिमा कऽ जल बोझि पंचमी कऽ

'खजाना' खाली करऽवला बम मिथिलांचलक रहैत छथि । साओनमे सौँसे देश उमड़ल रहैत छैक । ओइ मासमे कहैत छैक जे यदि हत्थाजोड़ी करब तऽ पहिल काँवरिया सुलतानगंजमे रहत आ अन्तिम बाबा मन्दिरमे, सेहो एकटा पाँती नहि, अनेको पतियानी । ओइ मासमे बेशी बम तीन दिनमे खजाना खाली करैत अछि– पहिन दिन रामपुर हाट, दोसर दिन कमरसारि आ तेसर दिन बाबाधाम । त्रिभुवन आ महादेवो जाइत छथि साओनमे तीनिये दिनमे । मुदा अपन बम पार्टीक संग पाँच दिनक यात्रा रखैत छथि आ बाबाधाममे तेराति । बमरी-बम सभक आ आनो लचरल बमकेँ सुविधा रहैत छैक । हमहूँ कहने रहियनि– ई पँचदिना यात्रा ठीक छइ । अइसँ बेशी पार नहि लागत ।

त्रिभुवन हँसल छलाह– "अपना बुते पार लगैत छैक ? सभ टा बाबा पार लगबैत छथिन । डाक बमकेँ देखबैक तखन बुझबैक ।

हम आश्चर्यसँ पुछने रहियनि– "ई डाक बम की होइत छैक हौ ?" त्रिभुवन हमरा बुझौलनि– "डाक बम कतहु रुकैत नहि छैक, एके दिनमे सुलतानगंजसँ बाबाधाम पहुँचैत छैक । चौदह घण्टा धरिक रेकार्ड छैक– सेहो एकटा छौंड़ीक, पन्द्रहे वर्षक छलैक । सुलतानगंजमे जल भरि दौगैत चल जाइत अछि डाक बम । भरि बाट व्यवस्था रहैत छैक । जलो दौड़िते पीयत । बाटमे लोक सभ थमा दैत छैक । अन्हारमे सिपाही आ टार्चक व्यवस्था रहैत छैक जे संगे दौड़ैत छैक । मुदा ओहूसँ कठिन होइत छैक– दण्ड-प्रणामी बमक यात्रा ।

हम एक टा बुड़बक विद्यार्थी जकाँ पुछलियनि– "ई दण्ड-प्रणामी बम की होइत छैक ?"

त्रिभुवन बुझनुक जकाँ हँसलाह– "बाटमे अपने देखबैक– स्त्री-पुरुष दुनू रहैत छैक । सुलतानगंजसँ हाथमे डाँरि पाड़ऽ लेल एक टा डण्टा लेने दण्डप्रणाम करैत बाबाधाम तक जाइत छैक एक-एक इंच धरती नपैत । बाटमे कतेको सोमवारी बम भेटताह । सभ सोम कऽ बाबाकेँ जल ढारैत छथि । चलू ने, सभ टा देखबैक ।"

सभ टा देखिलियैक हम । पहिल बेर सुलतानगंजमे अपन पार्टीक अड्डा ताकऽमे समय लागल छल । तहिया टिल्हाक पाछाँ कन्या पाठशालामे नहि रुकैत छलाह । संस्कृत पाठशालामे रुकैत छलाह– घाटक लग पड़ैत छलनि । मुदा ओतऽ बड़ भीड़ रहैत छलैक– राति भरि चिकरा-चिकरी, चाँइ-चाँइ । मच्छड़क उपद्रव फराके ।

माय आ प्रभा सभ टा डिब्बा-डुब्बी आ तीन टा काँवर किनलनि । सिपाही बमक संग ओकरा सरियौलनि । हमरा लेल नव धोती रंगलक आ माथमे बान्हऽ लेल लाल गमछा किनलक । घासपर सभक संग बैसि खाइत आलू-कोबी-मटर-टमाटर स्वादिष्ट लागल छल, मुदा बाटक आशंका आ चारूकात मचल हल्ला-गुल्लाक कारणे राति भरि जगले रहलहुँ । भरि राति पाठ मोन पाड़ैत रही– काँवर हमेशा दहिना कान्हपर उठायब, बाबाक खजाना आगू आ मैयाक पाछा । कान्ह हमेशा आगूसँ बदलब । कामर लेने पाछाँ नहि आयब । अपने काँवरसँ ऊपर नहि बैसब । लघुशंका करऽ जायब तऽ हाथ-पैर धो आ पवित्रीसँ ककरो द्वारा गंगाजल छिटबौलाक बादे जल उठायब । तहिना भोजनक बाद सेहो यदि कतहु पखाना जाय पड़य तऽ स्नानक बादे काँवर उठायब । यदि नियममे कोनो गल्ती हैत, कोनो काँवरिया फाइन कऽ सकैत अछि । आरती बेरमे मोन पाड़िकऽ से फाइन दऽ देबैक । भाषा एकदम ठीक रखबै– पानि नहि जल, सभकेँ बम कहबैक, माइयोकेँ बहिनयोकेँ जेना माय बम, प्रभा बम । काल्हिसँ पाँच दिन इएह जीवन रहत । दाढ़ी नहि बनायब, अयना नहि देखब, बाहरक कोनो चीज-वस्तु नहि खायब, माथ तर गेरुआ नहि रहत... बाबाक खजानाकेँ भैरव नहि छूबथि....

हम एक टा नर्वस विद्यार्थी जकाँ सभ टा बेर-बेर मोन पाड़ैत रहलहुँ आ भोरे गंगामे स्नान कऽ, अजगेबीनाथकेँ प्रणाम कऽ जल बोझि पीयर धोती आ गंजी पहिरि माथमे ललका गमछा बान्हि सरदारक आदेशक प्रतीक्षामे ठाढ़ भऽ गेलहुँ । सरदार मालपट्टीक रहथि । आरती लऽ मगन भऽ गाबऽ लगलाह ।

"बाबा बैद्यनाथ अहाँ केन्द्र स्थिति छी, सुरगण वृत्ताकार ।" हाथमे आरती लेने सरदार आ हुनका पाछाँ सिपाही बम धुपकाठी सभ जरौने एक-एक काँवरक पूजा कयलनि । ढोल सेहो अनने छल । ढोल-झालि-थपड़ी बजा-बजा गीत गओलक, आरती कयलक आ खजाना सील करबाक आदेश भेलैक । खजाना सील कऽ आरतीक प्रसाद लऽ ओही ठाम घाटपर सभ जलखइ कयलक— चूड़ा-दही आ लड्डू । स्नान करबाक लेल घाटपर जाइत मोन कोनादन करऽ लागल छल । चारूकात पखाना फिरने, पैर देब मोस्किल । गंध से, नाक फटैत । कहुना एक टा नीक घाट तकने रहथि सिपाही बम । ओही ठाम पूजा-आरती जलपान भेल आ कामर लऽ सभसँ पहिने तैयार भऽ गेलहुँ ।

सरदार बम त्रिभुवन, नहि तावे सरदार नहि भेल रहथि, त्रिभुवन बम

घोषणा कयलनि– ''राजधानी एक्सप्रेस अपने नियत समय पर सुलतानगंज से चलने को तैयार है । सभी बमरियो को आदेश है कि काँवर डोलाकर राजधानी एक्सप्रेस के पीछे लग जाये ।''

आ यात्रा प्रारम्भ भेल । पहिल अड्डा खरिहान धरि अबैत–अबैत रौद माथपर आबि गेल । पैरमे गड़ैत सहस्त्र कंकड़–कुन्नी, अगल–बगल दौड़ल जाइत बम बमरी । एकसँ एक बम— साठि–सत्तरि बरखक । एकसँ एक नेना सात वर्ष– दस वर्षक ।

छोट नेन्ना । हमर उत्साह बढ़ल । ई सभ जाइत अछि तऽ हमरा बुते किएक नै हैत ?

अनगौआँ स्त्रिगण लोकनि, जखन हमरा लग देने जाथि तऽ मगन भऽ गाबऽ लागथि—

''बाबा बड़ रगड़ी
बड़का बड़का सेठसँ भराबय गगरी ।''

आ फेर अपन गुटक संग हाक लगबैत छलीह– ''बाबा नगरिया दूर है, जाना जरूर है ।''

हमरा हँसी लागि गेल छल । हमर मोट काया देखि हमरा सभ सेठ बुझैत छलीह । अनेको बाटमे दयामाया देखबैत छलीह– ''चलू बम ! बाबा सभकेँ पार लगबैत छथिन ।''

माने अहाँ सन अथबल्लकेँ सेहो पार लगौताह– बोले बम ।

पहिल दिन पार लागि गेल छल । खरिहानसँ असरगंज आ असरगंजसँ तारापुर कन्या पाठशाला । दिनमे चारि बजे पहुँचि गेल रही । मुदा तकर बाद जेना सौंसे देह जकड़ि गेल छल । लागल छल जेना आब काल्हि नहि जा हैत । गरम पानिसँ एक घण्टा पैर धोलनि माय प्रभा मिलिकऽ । महादेव बम मालपट्टी कैम्पसँ सरदार बमकेँ बजा अनलखिन– ''अपने पचास काँवर ढोने छी । ई लाल बम (पहिल बेरक बम) कने लड़खड़ा गेल छथि । आशीर्वाद दिअनु ।'' सरदार बम माथपर हाथ दऽ किछु बुदबुदयलाह आ काँवरक आरती बेरमे ठाढ़ कऽ देलनि संग गाबऽ लेल ''बाबा बैद्यनाथ अहाँ केन्द्र स्थित छी सुरगण वृत्ताकार'' आ सभ कमरिया ढोल पीटि, झालि–थपड़ी बजा झूमि–झूमिक गाबऽ लागल– सुरगण वृत्ताकार । हम मुँहमे बुदबुदा कऽ रहि गेलहुँ ।

आ भोरे पाँच बजे सभसँ पहिने नहा–धो, काँवर डोलौने रही आ त्रिभुवन बम घोषणा कऽ रहल छलाह– ''सभी बमरियो से अनुरोध है कि राजधानी एक्सप्रेस के साथ चल पड़ेँ ।''

एकर बाद ओ सभ फेर सुतलाह सात बजे तक । तकर बाद नहा–सोना विदा हैताह आ दौड़िकऽ संग भऽ जयताह । दुलकी चालि चलैत छथि त्रिभुवन आ कुलभूषण । रातिमे बाबाक बूटीक सेवन आ भोर तक सुतनाइ । ई सभ बादमे देखलियैक हम ।

तारापुरसँ रामपुर हाट । ओहि ठाम चूड़ा–दही जलपान । गाड़ीसँ उतरि ड्राइवर शतरंजी बिछा रखने रहैत छल । सभ बम चैनसँ बैसलाह आ बजलाह– अइ बेर बड़ आराम आ सुविधा अछि ।

आन बेर काँवरपर सभकेँ दस–बीस सेर बोझा रहैत छलनि । बमरियो सभकेँ पाँच–दस सेर । अइ बेर सभ गाड़ीमे राखल छनि । भीजल कपड़ा सेहो नहि सुखाबय पड़ैत छलनि । ड्राइवर सुखा लेलकनि । सभ ठाम आगू जा जगह छेकलकनि । गाछ–वृक्ष तर नहि सुतऽ पड़लनि ।

रामपुर हाटसँ कमरसारि आ कमरसारिसँ जिलेबिया मोड़ । बाटक अन्ते नहि । पयर सुन्न भेल जाइत । तरबा लहरैत । आ दुनू कातसँ दौगल चल जाइत बम–बमरी । क्यो–क्यो अपनामे गप्प करैत—

''ई कोना पहुँचथिन गे दाइ, आइए ई हाल छनि !''

''बाबा सभकेँ पार लगबैत छथिन ।''

''हिनका कोन कमी छनि ? कथी लेल बाबाक गोहारिमे लागल छथि ?''

''कयने हैथिन कोनो गोलमाल । धोधि नहि देखैत छहुन केहन बखारी सन छनि ! बाबासँ आरो मांगऽ आयल छथि ।''

''सत्ते मनुक्खकेँ सन्तोख नै होइ छै... हमरा अहाँकेँ नै अछि– बाबा किछु नै दैने छथि तैयो आयल छी । हिनका सभ–किछु छनि तैयो आयल छथि। बाबाक गति बड़ विचित्र छनि ।'' आ मगन भऽ गाबैत आगू बढ़ि गेलीह—

बाबा बड़ रगड़ी
बड़का बड़का सेठसँ भरायब गगरी ।

पाछाँसँ एकटा आर झुण्ड– चलू बम । आब लगचिआयल अछि जिलेबिया मोड़ । वैह देखियौक शिवपुर, तकर बाद...

हम आगू बढ़ैत गेलहुँ । पाछाँ-पाछाँ माय बम । प्रभा बम अपन गुटमे छलीह.... हँसैत-बजैत ठाम-ठाम दूधवला चाह पीबैत । जलमे चाह बम-बमरीक लेल वर्जित ।

माय बम बेर-बेर टोकय– ''बीच-बीचमे कामर डोला लैह । एक्के झोँकमे एहि ठामसँ ओहि ठाम जयबह तऽ थाकि जयबह ।

हमरा डर लागय । बैसब तऽ फेर उठि नहि हैत । चलैत चलू... चलैत चलू....

जिलेबिया मोड़क धर्मशाला गजगज करैत । कतहु पैर देबाक जगह नहि, मुदा ड्राइवर अहू ठाम जगह छेकने रहैत अछि, शतरंजी बिछा । हम एतऽ साँझसँ पहिने पहुँचि जाइत छी । दू-चारि गोटेकेँ छोड़ि सभ बम पाछुए रहैत छथि ।

भोरे सुइया पहाड़ पार कऽ सुइया धर्मशाला पहुँचैत छी आ साँझसँ पहिने कमरिया धर्मशाला । सुइयामे गड़ैत चमचम करैत कंकड़-पाथर । लागल जेना एतहिसँ यात्रा समाप्त । गाड़ी मंगा बैसि जायब, मुदा फेर लागल चलैत रहू... चलैत रहू । केहन विचित्र आ आनंददायक जीवन छैक । दाढ़ी मोछ बढ़ल– अपन चेहरा देखना दू दिन, दुनियाक समाचार सुनना दू दिन । खाली रस्ता आ रस्ता। पहाड़ आ जंगल । यात्री आ रस्ता । जीवनक एक टा नव अनुभव, नव परिचय, नव स्वाद ।

बाटमे भेटैत अनेक सहानुभूति– ''कमरियाक बाट बाबा डोरी लगा अपना दिस घीचैत छथिन । आब चिन्ता नै करू बम.... पहुँचले बूझू... ।'' कहऽवालीक अपन चेहरा थाकिकऽ पस्त । केश-मुँह-देह गर्दासँ भरल । सुलतानगंजसँ चलऽकाल केहन सुन्नरि आ स्वच्छ लगैत छलीह । हमर बहाने अपनाकेँ साहस दैत स्त्रिगण-पुरुष आ बढ़ैत डेग । फोका भेल पयरमे बान्हल पट्टी । तरबा तर भेल फोकाक कारणे पैर उठा-उठा चलैत कमरिया आ विह्वल स्वरमे बाबाक गोहारि करैत कमरिया ''कखन हरब दुख मोर हो भोला बाबा''

कमरसारिमे हमरा मुरही आ चूड़ाक भूजा फँकैत देखि हमर एक टा भावहु बम प्रभा बमकेँ कहलथिन– ''भैया बम भूजा फँकै छथिन । काजू-किसमिस नै खाइ छथिन ? हिनका घूसी कमाइ नै होइ छनि ?'' आ प्रभा बमक हाथे किसमिस-काजू पठा दैत छथि हमरा लेल । कमरियासँ इनरावरणक बाट एकदम मोलायम, मखमलक गर्दा बिछायल । कमरिया दौगले चल जाइत अछि । बाटमे हमरा लगैत अछि जे हमरा सम्बन्धमे सूचना सभ अपन बम पार्टीसँ बढ़िकऽ सभ बम-बमरी लग पहुँचि गेल अछि ।

''बेटा नहि छनि हय, चारि टा बेटिए छनि...''

''बाबाक गोहारिमे आयल छथि ।''

''नहि हे, बेटा छनि एक टा । बड़ कबुला-पातीसँ भेल छनि । तेँ बाबा लग आयल छथि । कबुला हैतनि ।''

आ लग दऽ जाइत कोनो अनचिन्हार बमरी एक टा बड़ चिन्हार आ आत्मीय स्वरमे कहि जयतीह– ''आब पहुँचि गैलौ बम ! गोड़िआरी आ तखन बाबाधाम ।''

झुण्डक झुण्ड बमरी सभ । मिथिलाक नारी । दुख-अभाव बिसरि बाबाक नचारी गबैत, गाम-गामक नारी । भरि बाट अपन दुख-बेगरता एक-दोसरासँ बतिआइत मिथिलाक नारी । भरि बाट अपन दुश्मनकेँ गारि-सराप दैत मुदा लगले कान पकड़ि बाबासँ क्षमा मँगैत उठक-बैसक करैत मिथिलाक नारी । पैंच-उधार लऽ बेटा भतीजा लग घिघिया, पेट काटि जमाकऽ सभ साल काँवरमे अबैत मिथिलाक नारी । हँसैत-बजैत दहोबहो नोर बहबैत मिथिलाक नारी । बाबा आ मैयाक चर्चमे मगन, हुनकर लीला बखानैत सभ-किछु बिसरल मिथिलाक नारी । गरीब-दुखिया । कौखन दीन-हीन क्षुद्र, कौखन उदात्त आ महिमामयी ।

बेशी निम्नमध्यवर्गीय आ निम्नवर्गीय स्त्री-पुरुष । बीचमे कोनो-कोनो दलमे घोसिआयल एकाध हाकिम-हुक्काम आ तिनकर खिधाश करैत हुनके गामक लोक स्त्रिगण-पुरुष ।

''देखू ने एकर तमाशा ! बमो पार्टीमे हाकिम बनल अछि आ ओकर बहुकेँ ने देखियौक– बड़का हकिमाइन । सौखे डाहि देबैक ।''

''केहन-केहन बइमान चल अबै अछि, बम्मोमे बहिनदाइ बम । ई तऽ चण्डाल अछि चण्डाल । अपन मायोकेँ अन्न-वस्त्र नै दैत अछि । बहुक नोकर। दू वर्षसँ सिसपिण्ड अछि, तऽ बाबा मोन पड़ल छथिन ।'' ''हँ यै बहिनदाइ ! कतेक इच्छा छैक एकर मायकेँ काँवरमे अयबाक । मुदा ई चण्डलवा कहतैक– तोरा बुते नै हेतौ । आब बूढ़ भेलेँ । जेना बूढ़ लोक अबिते नै छैक एतऽ ?

''चलू बहिनदाइ बम ! बाबा सभ देखैत छथिन– सभक निसाफ करथिन।

दोसर लोहछिकऽ कहैत छथिन– ''बाबा तऽ बौड़हबा छथि । भंग पीबि

भकुआयल रहैत छथि । नै तऽ ऐ चण्डलबाकेँ सभ किछु आ हमर मुन्नूक बापकेँ किछु नहि । एके रंग पढ़ल छथि दुनू– एकरासँ बढ़िया रिजल्ट छनि । आ ई हाकिम आ मुन्नूक बाप चपरासी । आन्हर बहीर छथि बाबा.....

फेर झट कान पकड़ि उठक-बैठक करऽ लगलीह– क्षमा करब बाबा... दुखसँ कलेजा फटैयै तऽ अलट-बिलट बहरा जाइयै । सभक भल करियौ बाबा, निसाफ अहीँक हाथ अछि ।

गोड़िआरीमे त्रिभुवन बमक सरंगी बाजल । तहिया सरदार नहि रहथि त्रिभुवन । सरदार भेलोपर हुनकर सरंगी गोड़िआरीमे बजैत छनि । यात्रा समाप्त हैबाक खुशी । आब तऽ मात्र चौदहे किलोमीटर । कीर्तन आ गीत । विद्यापतिक गीत... ''आज नाथ एक व्रत महासुख लागत हे.... ।'' वीरू भाइक मधुर स्वर। बामू बमक गीत... 'गौरा तोर अंगना' आ अन्तमे त्रिभुवन बमक सरंगी । दू टा चेरा लऽ, एक टा बामा कान्ह पर आ दोसर दहिना हाथमे लऽ ओकर दोसर चेरापर अपन सम्पूर्ण नाटकीय मुद्राक संग विभोर भऽ सरंगी बजबैत त्रिभुवन बम। बम पार्टी हँसैत-हसैत अपस्याँत– बताह भऽ जाइत अछि ।

फेर आखिरी दिनक उत्साह । जुरमनियामे जुर्माना दऽ डेग झटकारैत चलैत कँवरिया । दर्शनियामे दण्डप्रणाम करैत कँवरिया । शिवगंगामे स्नानक दुलकी चलैत कँवरिया । परिक्रमाक बाद बाबाक मन्दिरक भीतर हर्षनाद करैत कँवरिया । हमहूँ खजाना खाली कऽ बाबाक गली पार कऽ धर्मशाला दिस जाइत रही कि एक टा बाटमे चीन्हल अनुभवी प्रौढ़ा बम टोकि देलनि... 'पहुँचि गेलहुँ ने बम ! बाबा सभकेँ पार लगबैत छथिन ।'

चेहरापर एहन खुशी जेना अपन यात्रा सफल भऽ गेल होनि । सौँसे बाबाधाममे सभ धर्मशालामे भरल एहने निश्छल, ममताभरल, स्नेहभरल, आत्मीयताभरल आ डेग-डेगपर टोकैत मिथिलानगरी... कोन गामक छी बम !''

बाटोमे टोकैत बम सभ । पहिल बेर हम माय आ प्रभा रही । दू तीन वर्षक बाद इन्दु सेहो संग भेलीह । बाटमे कोनो बम पुछलनि– ''माय बहिन आ स्त्रीक संग आयल छी बम !''

माय कहलकै– ''नै बम ! हमर पुतहु नै अबैत छथि । बेटा, बेटी आ बेटाक संगी छथिन संगमे ।

किछु वर्षक बाद उपमा सेहो आबऽ लगलीह, सोम बाबू सपरिवार आबऽ लगलाह । सम्पादकजी सपरिवार संग भेलाह । पहिने मामी तकर बाद मामा

सेहो । पटनासँ जहिया पहिले बेर माय प्रभाक संग इन्दु, उपमा आ मामीकेँ लऽ पहुँचल रही, बमपार्टीमे खूब उत्साह रहय । पटनाक टीममे दससँ बेशी लोक भेल जा रहल छल । एक सयसँ अधिक बम हैताह तऽ बाबाक श्रृंगार करयबनि बमपार्टीक खर्चसँ, सरदार घोषणा कयने छलाह ।

भोरमे विदा हैबा काल हुनकर घोषणा बदलि गेलनि– हाकिम बमक बदला मुँहसँ बहरेलनि दशरथ महाराज बम । माने तीन टा पटरानीवाला बम । दू टा संगी आ एक टा मामी । तीनू पढ़ल-लिखल । घोषणा बुझबामे किनको भाँगठ नहि रहलनि, मुदा एक टा निर्मल आनन्दमे निहित एहि कुत्सित भावकेँ लोक अनठा देलकै आ राजधानी एक्सप्रेस आब दशरथ बमक एक्सप्रेस बनल विदा होइत छल । इन्दु, उपमा आ मामी हँसैत छलीह सुनिकऽ । ताहि बम पार्टीक समक्ष सरदार त्रिभुवन बम घोषणा कयलनि– ''टोकना बम नै रहलाह । पाठक बम आयल छथि । फगुआक किछु दिन बाद रद-दस्त भेलनि आ सभ समाप्त । बेटाकेँ ससुर लऽ गेलथिन अपना संग ।'' मिट्ठू मिसरक घर बिलटि गेलनि । स्त्रीक गेलाक बाद बेटाक संग आयल छलाह । तीन वर्ष धरि अयलाह । स्त्री नहि घुरलखिन, मुदा अपने ओकर बाट तकैत-तकैत दुनियेसँ विदा भऽ गेलाह । बेटाकेँ ससुर लऽ गेलथिन ।

एहिना संसार चलैत छैक । लोक अबैत-जाइत रहैत अछि । बाबाक लीला आ हुनकापर आस्था असीम । सिपाही बम एहि वर्ष बाबाकेँ जल चढ़ा घुरलाह, ओही साल कनियाँकेँ साँप काटि लेलकनि । क्षणमे छनाक भऽ गेलनि । आइयो बाबाक काँवर ढोइत छथि । शिवशंकर भाइ तीस काँवर ढोलनि, सरदार बम बनलाह । अपन पोताकेँ आठ वर्षसँ पन्द्रहम वर्ष धरि काँवरमे अनैत रहला । पन्द्रह वर्षक पोता एक राति अकस्मात दुनियासँ विदा भऽ गेलनि, शिवशंकर भाइ तैयो, जा धरि जीवैत रहलाह, बाबाक भरिया बनल रहलाह । अमृता बम कम वयसमे विधवा भेलीह । मायो विधवे छथिन । अमृताक विवाह कम्मे वयसमे भेल रहनि । एतबे वयसमे पैघ-पैघ दू टा बेटा आ एक टा पैघ बेटी छनि । सभ साल अपन मायोकेँ अनैत छलीह अमृता । भरि बाट बाबाक श्लोकक सस्वर स्पष्ट पाठ करैत अमृता बाट चलैत छलीह आ माय पाछाँ-पाछाँ दौड़ैत रहैत छलखिन, फेर एक वर्ष माय अयबामे असमर्थ भऽ गेलखिन, पयर कज्जी भऽ गेलनि । अमृता आइयो अबैत छथि । सरदार बम त्रिभुवनकेँ आब दुलकी चालि नहि होइत छनि, ठेहुन धयने रहैत छनि । कुलभूषणक डाँढ़ धऽ लेने छनि । कहुना झुकल-झुकल बाट पार लगबैत छथि । एहिना अबैत-अबैत कोनो बम वा

बमरी नहि अबैत अछि कोनो वर्ष । सभ बम-बमरी चर्चा करैत छैक । फेर चर्चा कम होबऽ लगैत छैक । नव बम-बमरी आबि जाइत छैक– लाल बम-बमरी । नव चर्चा शुरू भऽ जाइत छैक ।

पहिने मायकेँ छुटलैक– स्पौँडिलाइटिस भऽ गेलैक । अगिले वर्ष हमर छूटल—हृदयाघात । फेर प्रभाकेँ छुटि गेलनि । तेहन दर्द भेलनि ठेहुनमे जे चलब-फिरब मुश्किल भऽ गेलनि । भरि बाट हँसैत-दौगैत चलैत छलीह आ ठेकानापर पहुँचि सभकेँ एकसरे परसि खुअबैत छलीह । बाबा हुनकर इहो सुख छीनि लेलखिन । वर रिटायर भऽ गेलखिन आ अपने चलबा-फिरबासँ असमर्थ भऽ गेलीह । आर क्यो छनिहे नहि– सभ बाबाक लीला । हुनकर फैसलामे के दखल देतनि ?

हमर पत्नीक संग सेहो बड़ विचित्र फैसला कयलखिन बाबा । कोनो-कोनो वर्ष अबैत छलीह, सेहो कार-ट्रेनसँ । चलिकऽ अयबामे बड़ डर होइत रहनि । हम आ माय चलिकऽ आयब बन्द भेलाक बादो अबैत रही । सुलतानगंजमे जल भरि सिपाही बम आ प्रभा बमकेँ दऽ दैत छलियनि आ बाबाधाम आबि बाबाकेँ चढ़ा दैत छलियनि । हृदयाघात भेलाक दोसरे वर्ष ओहो जोर दऽकऽ अयलीह । पण्डाजीकेँ कहलथिन– ''बाबाकेँ पाग बन्हलनि । पण्डाजी सभ टा इन्तजाम कऽ देलखिन । बाबा मन्दिरमे बान्हि ओ लाल पागक डोरी हुनका हाथमे देने रहथिन । बाबा मन्दिर दिस विदा भेल रहथि, तखने एक टा गाय पाछाँसँ अयलनि आ पाग हाथसँ छूटि गेलनि । आशंकासँ हुनकर मुँह विवर्ण भऽ गेलनि । रुग्ण पतिक जीवनक आशंका । हम आइयो अबैत छी आ ओ फेर घूरिकऽ नहि अयलीह । दू वर्ष असाध्य कष्ट भोगि दू वर्ष पहिने अपने बाबाक बाट धऽ लेलनि ।

इएह सभ सोचैत बाबाक मन्दिरक प्रांगणमे बाबाक खजाना हाथमे लेने ठाढ़ रही । सिपाही बम ढोकऽ अनने छलाह हमर खजाना आ मायक खजाना । एहि बेर सुलतानगंज नहि जा सकल रही, सोझे बाबाधाम आयल रही । सरदार बम त्रिभुवन लग आबि कहलनि– ''एकरा चिन्हलियैक भैया बम !'' ओ बगलमे ठाढ़ नौजवान दिस आंगुर देखौलनि । हम अवाक् । अनमन टोकना बम— ओहने कारी, ओतबे टा शरीर । खाली टेढ़मेढ़ नहि । सभ टा अंग सोझसाझ । बगलमे ठाढ़ एक टा स्त्री । दूनू हाथमे खजाना लेने स्त्रीक माथपर कने टा घोघ आ ताहि तरसँ झलकैत ओकर गोर आकृति आ नाकक टुनगी धरि पसरल ओकर हँसी । हमरा एक टा दोसर आकृति मोन पड़ल, मिट्ठू मिसरक बगलमे ठाढ़ि... घोघ तर झलकैत गोर आकृति आ नाकक टुनगी धरि चमकैत हँसी ।

एहि वर्ष दुर्गापूजामे गाम आयल रही तऽ मिट्ठू मिसरक घराड़ीपर बहुत दिनुका बाद एक टा टटही घर ठाढ़ देखलियैक । माय कहलक ''मिट्ठूक बेटा महेश आब गाममे रहत । नानागाम छोड़लक । कतहु बाहर खलासीक काज करैत अछि । कनियाँ बड़ सुन्दर छैक ।''

हम डेरा गेल रही । माय सहज भावसँ कहने छलि मुदा हम डेरा गेल रही । आ आइ बाबाक प्रांगणमे ठाढ़ मिट्ठू मिसरक पुतहु-बेटाकेँ देखलियैक तऽ एक टा आशंकासँ सौँसे देह थरथरा गेल रहय । हमर पत्नी ज्योत्स्ना बड़ कष्ट सहि गेलि छलीह । सोचने रही जे बाबाकेँ जल ढारैत काल कहबनि जे यदि कोनो दोसर जन्म होइत छैक, तऽ फेर हुनका कोनो कष्ट नहि देबनि । मुदा भीतर जा बाबाकेँ जल ढारैत काल मुँहसँ अनायास बहरायल– ''देखबनि बाबा । हमर दादाक अष्टाबक्र मुनिक शेष कथा फेर ओहने नहि लिखि देबनि ।

तखने पाछाँ आ बगलसँ बम-बमरीक संग पण्डा सभ धक्का देलक । बाबाक स्पर्श करैत हम्मर हाथ बाबासँ हटि हुनकर जलधरीकेँ स्पर्श करैत दूर फेँका गेल आ खसिकऽ पिचा जयबाक अन्देशासँ हम धड़फड़ाकऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ । बमलोकनि मन्दिरक भीतरोमे अनघोल कयने छलाह– बोले-बोले-बोले बम ।

[1998]

●

प्रभास कुमार चौधरी

जन्म : 2 जनवरी 1941
गाम : पिण्डारुच (दरभंगा)
पिता : सुरेन्द्र चौधरी
पत्नी : ज्योत्स्ना चौधरी
सन्तान : चारि कन्या, दू बालक
शिक्षा : एम० ए० (राजनीतिविज्ञान, इतिहास)
वृत्ति : भारतीय जीवन बीमा निगममे वरीय प्रशासनिक पदाधिकारी
सम्मान : वैदेही पुरस्कार-1982
('राजा पोखरिमे कतेक मछरी'पर)
साहित्य अकादेमी पुरस्कार-1990
('प्रभासक कथा'पर)
प्रकाशन : कथासंग्रह
नव घर उठय पुरान घर खसय (1964)
कथा-प्रभास (1988)
प्रभासक कथा (1989)
दिदवल (2004)
उपन्यास
अभिशप्त (1970)
युगपुरुष (1971)
दुनू पुस्तकाकार-1978
हमरा लग रहब ?(1977)
नवारम्भ (1979)
राजा पोखरिमे कतेक मछरी (1981)
विविध
मन्दाकिनी (2004)
सम्पादन : अनामा, कथादिशा, प्रवासी
निधन : 22 फरवरी 1998.



प्रभासजीक कथा-कौशलक सम्बन्धमे किछु कहब अनावश्यक। एहि युगक श्रेष्ठ कथाशिल्पीमे हिनक अग्रणी स्थान छनि। जतबे सहजतासँ लोक हिनक कथा-लोकमे पहुँचैत अछि, ओहि परिवारमे रमैत अछि, ओकर अंग बनि जाइत अछि, ततबे कठिनता होइछ पाठककेँ पुनः अपन लोकमे घुरबामे। घुरियो अबैत अछि तँ मनसँ ओकर झटक हँटैत नहि छैक, ओकर आलोक मद्धिम होइत नहि छैक। प्रभासजीक कथा सोचल आ सुनल नहि, घटल लगैत अछि। ई कोनो पैघ बात नहि भेल, पैघ बात भेल जे ओहिमे अहाँ अपनहुँकेँ घटल पबैत छी। प्रभासक कथा तेज बुद्धिकेँ झिकझोरैत अछि, सामान्य बुद्धिकेँ खोड़ैत अछि, मन्दो बुद्धिकेँ अपना दिस मोड़ैत अछि। अर्थात्, पाठकक सभ वर्गमे हिनक कथा समान रूपेँ सम्मान्य अछि। हिनक कथा मैथिल परिवेशक कथा थिक, मैथिल जीवनक कथा थिक, मैथिल संस्कारक कथा थिक, किन्तु मानवीय संवेदना ततेक परिष्कृत रूपमे प्रकट होइत अछि जे एकरा असीम कऽ दैत अछि आ ई आधुनिक भारतीय वाङ्मयक उच्च मूल्यवत्ताक संग धऽ लैत अछि।